[पिलानी राजस्थानी ग्रन्थमाला का प्रथम ग्रन्थ]

राजस्थानी वाताँ

[राजस्थानी भाषा में लिखित प्राचीन कहानियों का संग्रह]

सम्पादक—

सूर्यकरण पारीक, एम० ए०

वाइस-प्रिंसिपल

बिड़ला कालिज, पिलानी।

[श्री बिड़ला कालिज, पिलानी के संरक्षण में प्रकाशित]

प्रकाशक—

नवयुग-साहित्य-मन्दिर,

पोस्ट बक्स नं० ७८

दिल्ली।

१९३४

प्रकाशक—
मजदूर-साहित्य-मन्दिर,
पोस्ट बक्स ७८,
दिल्ली

मुद्रक—
हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस,
दिल्ली

समर्पण

जिनको पूर्व-राजपूत-संस्कृति और गौरव का गर्व है;
जिनकी रुचि और प्रेरणा से ये कहानियाँ लिखी गई हैं;
जो युद्धवीरता, दानवीरता, प्रतिज्ञावीरता, स्वातंत्र्य-
प्रियता, सत्यशीलता, सहिष्णुता, स्वावलंबन-
प्रियता आदि गुणों से परिपूर्ण आदर्श
राजपूत-सभ्यता के प्रति निस्सीम श्रद्धा
का भाव रखते हैं; और जो वर्त्तमान
काल में उन ओजस्वी गुणों को
भारतीय चरित्र में समन्वित
करने के इच्छुक हैं,

उन

सात्विकशील, उदारमना, सौजन्यसागर, दानवीर,
राजस्थानरत्न,

श्री० सेठ घनश्यामदासजी बिड़ला

की सेवा में तुच्छ भेंट समर्पित

—सूर्यकरण पारीक

क्रम-सूची

भूमिका

राजस्थानी कहानियों का सम्पादन करने के लिए गतवर्ष मुझे श्री० सेठ घनश्यामदासजी बिड़ला की ओर से प्रेरणा हुई थी। यद्यपि लगभग पिछले दश वर्षों से राजस्थानी के प्राचीन साहित्य का अनुशीलन करते रहने से मुझे यह धारणा अवश्य होरही थी कि निकट भविष्य में कभी इन कहानियों का आस्वादन पठित जनता को कराने का अवसर मिलेगा, परन्तु यह इच्छा इस रूप में इतनी शीघ्र कार्यान्वित हो सकेगी, ऐसी मुझे आशा न थी। इसका श्रेय उदारमना श्री बिड़लाजी को ही है। श्री बिड़लाजी के सौजन्यपूर्ण हृदय में मैंने प्राचीन राजपूत सभ्यता के प्रति निस्सीम श्रद्धा और सच्चे उत्साह को पाया और यह जान कर आशातीत प्रसन्नता हुई कि ऐसे २ उत्साही एवं लब्धप्रतिष्ठ महाजनों का ध्यान यदि भारतीय इतिहास और साहित्य के इस चिर-उपेक्षित अंग की ओर प्रेरित होता रहा, तो न केवल राजस्थानी और हिन्दी साहित्य का ही उपकार होगा वरन् भारतीय संस्कृति और सभ्यता का एक गौरवपूर्ण पक्ष जनता के समक्ष अपने उज्ज्वलरूप में शीघ्र ही उपस्थित किया जा सकेगा।

सुसंगठित और स्थायीरूप में राजस्थानी साहित्य के पुनरुद्धार, प्रकाशन और संग्रह के लिए श्री बिड़लाजीने इसी वर्ष एक विशेष आयोजना स्थापित की है, जिसको कार्यरूप में परिणत करने के लिए आपने पर्याप्त धन प्रदान कर अपने साहित्य-प्रेम और सात्विकशील उदारता का परिचय दिया है। इस आयोजना के अनुसार श्री बिड़ला कालिज, पिलानी की अवधानता में "पिलानी राजस्थानी ग्रंथमाला" प्रकाशित की जायगी। साथ ही पुरानी हस्तलिखित पुस्तकें, जो अप्राप्य

अथवा कष्टप्राप्य हैं, अथवा कालान्तर में जिनके नष्ट हो जाने की संभावना है—ऐसी पुस्तकें नकल करवा कर कालिज के पुस्तकालय के हस्तलिखित विभागमें सुरक्षित रखी जाँयगी। राजस्थान के ग्रामगीत, कहानियाँ, लोकोक्तियाँ, दूहे, काव्य इत्यादि प्राचीन साहित्य-सामग्री के संग्रह का कार्य भी इसी आयोजना में सम्मिलित है।

उपर्युक्त पुस्तकमाला के अन्तर्गत "राजस्थानी वार्ता" यह पहली पुस्तक है। इस वर्ष तीन पुस्तकें प्रकाशित करने की आयोजना की गई है। दूसरी पुस्तक—'राजस्थानी दूहा-संग्रह' और तीसरी 'राजस्थानी लोकोक्ति-संग्रह'-भी लगभग तैयार हैं और इसके बाद यथाशीघ्र प्रकाशित की जाँयगी।

जब से कर्नल टॉड ने बड़े परिश्रम और खोज के बाद राजस्थान का इतिहास लिखा है, तब से लोगों का ध्यान राजस्थान के पूर्व-गौरव की ओर विशेष रूप से आकर्षित होने लगा है। अपने इतिहास की भूमिका में टॉड साहब ने एक जगह लिखा है—

"There is not a petty state in Rajasthan that has not its Thermopylae and scarcely a city that has not produced its Leonidas."

राजस्थान के इतिहास के सम्बन्ध में टॉड के ये शब्द प्रायः लोकोक्ति की तरह प्रसिद्ध होगये हैं। परन्तु इन शब्दों की वास्तविकता की खोज बहुत कम लोगों ने अब तक की है। कुछेक गिने चुने विद्वानों को छोड़ कर राजस्थानी का क्षेत्र अब भी उतना ही अन्धकारमय है जितना कि टॉड के पूर्व था। परन्तु इस निराशान्धकार में आशा की नवज्योति प्रातःकालीन उषा की सुवर्णलालिमा की तरह फूटकर निकलने लगी है। इसका एक प्रमाण यह है कि राजस्थानवासियों के हृदय में पूर्वकालीन राजस्थान की प्रतिभा और गौरव की ओर श्रद्धा जागृत हो रही है।

इस छोटी-सी पुस्तक के प्राक्कथन के रूप में राजस्थानी सभ्यता और पूर्वसंस्कृति पर लम्बा निबन्ध लिख डालना अयुक्तिसंगत होगा। प्रस्तुत कहानियों का संकलन करते और लिखते समय यदा-कदा दो एक विशेष बातें हमारे ध्यान में आईं, जिनका उल्लेख कर देना यहाँ अनुचित न होगा। संक्षेप में वे बातें ये हैं—

(१) राजपूत सभ्यता और पूर्वसंस्कृति का एक प्रमुख रूप इन कहानियों और इसी प्रकार की अन्य असंख्य आख्यायिकाओं में देखने को मिलता है।

(२) राजस्थान में कहानी कहने और लिखने की एक सुपुष्ट और अद्वितीय कलात्मक शैली प्राचीन काल से प्रचलित रही है, जो हिन्दी की अपेक्षाकृत अर्वाचीन-कालीन कहानी-कला से सर्वथा भिन्नरूप है।

(३) इन कहानियों में आंशिकरूप में प्रख्यात राजपूत कुलों का इतिहास रहता है। अतएव ऐसी कहानियों की खोज करके प्रकाशन करने से न केवल राजस्थानी और हिन्दी के मनोरंजक साहित्य की श्रीवृद्धि होने की ही सम्भावना की जा सकती है, वरन् बहुत सी इतिहास-सामग्री भी हस्तगत हो सकती है।

पहली बात पर विचार करने पर यह प्रश्न उपस्थित होता है कि क्या वास्तव में राजपूत सभ्यता और संस्कृति का कोई अपना निजी रूप और अस्तित्व है, जिसकी खोज करने से भारतीय इतिहास और साहित्य को लाभ पहुँच सके। यह एक जटिल प्रश्न है, जिसका राजस्थानी साहित्य और इतिहास की वर्त्तमान तिमिराच्छन्न दशा में उत्तर देना न तो पूर्णतया संभव ही है और यदि आंशिक रूप में दिया भी जाय तो लोग उसके तथ्य को स्वीकार करने को तैयार न होंगे। हाँ, इस समय इतना कह देना पर्याप्त होगा कि राजस्थानी जीवन-चर्या, विशिष्ट व्यवहार, सामाजिक उत्तरदायित्व और व्यक्तिगत सैद्धान्तिकता में बहुत

सो ऐसी विलक्षणताएँ अवश्य मिलेंगी जो और देशों और जातियों में इतने प्रमुख रूप में नहीं मिलती। राजस्थान देश और उसमें बसने वाली राजपूत जाति के नाम के पर्य्याय से राजस्थानी और राजपूती विशेषताएँ लगभग एक ही समझी जाती रही हैं। वर्णाश्रम-विभाग के साधारण भेदों को छोड़ कर देखा जाय तो राजपूत क्षत्रिय और इतर राजस्थानी वर्णों के जीवन-निर्वाह में लगभग समानता ही है। परन्तु तो भी राजपूत नामोच्चारण से राजपूत क्षत्रिय ही का बोध होता है। इस संकलन में संग्रहीत कहानियों में क्षत्रिय वीरों के चरित्रों का ही दिग्दर्शन हुआ है। परन्तु इससे यह नहीं समझना चाहिये कि इतर वर्णों में आदर्श वीर, आदर्श दानी, देशभक्त और धार्मिक महापुरुष नहीं हुए हैं।

इन कहानियों में प्रदर्शित राजपूत चरित्र के कुछएक प्रमुख गुणोंका संकलन हम नीचे कर देते हैं जिससे उनकी संस्कृति और विशेषता का कुछ अन्दाजा लगाया जा सके।

(१) सबसे पहली विशेषता जो राजपूत के चरित्र में देखी जाती है वह है उसकी मन, कर्म और वचन से दृढ़-प्रतिज्ञता। प्रतिज्ञापालन से विमुख होना राजपूत अपनी कायरता समझता है, अतएव प्राण देकर भी प्रतिज्ञा का पालन करता है। इन कहानियों में आये हुए प्रायः सभी वीर दृढ़-प्रतिज्ञ हैं।

(२) राजपूत का जीवन-सिद्धान्त सत्य में बद्ध-मूल होता है, अतएव वह दृढ़ और अटल होता है। जहाँ सत्य और नीति में संघर्ष पैदा होजाता है, वहाँ राजपूत संस्कार की विशेषता इसी बात में प्रकट होती है कि वह सत्य पर दृढ़ रहता है, चाहे ऐसा करने में उसे सांसारिक दृष्टि से कितनी ही क्षति उठाना पड़े। यही कारण है कि बहुधा आत्मप्रतिष्ठा और प्रतिज्ञा का धनी एक ही क्षत्रिय वीर, नीति के सर्वथा विरुद्ध, बड़े से बड़े साम्राज्य के बल का सामना करने के लिए अड़ जाता है। वह

अलौकिक वीरता अवश्य दिखला जाता है, परन्तु आधुनिक सभ्यता के नीतिज्ञ उस धूम्रकेतु की सी चमत्कारिणी परन्तु क्षणस्थायी वीरता को मूर्खता अथवा अपरिणामदर्शी दुस्साहस ही कहेंगे। राजपूत वीर पिस जाता है, अपने अस्तित्व को मिटा देता है, परन्तु अपने सैद्धान्तिक सत्य की जीते जी रक्षा करने की भरसक चेष्टा करता है। यह एक विलक्षणता उसके चरित्र में पाई जाती है जो संसार की बहुत कम शूरवीर जातियों में मिलती है।

(३) कठोर क्लिष्टताओं से घिरे हुए स्वावलंबनपूर्ण जीवन से राजपूत को विशेष प्रीति होती है, क्योंकि यह गुण उसे अपनी प्राणों से प्रिय स्वाधीनता की रक्षा करने के लिए आवश्यक प्रतीत होता है। मुगल साम्राज्य के स्थापित होने से पहले के राजस्थानी इतिहास पर दृष्टि डाली जाय तो इस बात के असंख्य उदाहरण मिलेंगे कि किस प्रकार स्वाधीनता-प्रिय इस जाति ने उत्तरी और मध्यभारत की उर्वरा भूमि को छोड़कर जलहीन मरुस्थल में स्वाधीनतापूर्वक अपने छोटे २ राज्य स्थापित किये थे। वीरमदे सोनगरा, [illegible] आदि वीरों के आख्यान इसी स्वातंत्र्यप्रियता के उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

(४) इसके अतिरिक्त पहाड़ के समान अचल संयमशीलता, सहिष्णुता और अटल धैर्य्य, अनुपम निर्भीकता, वैर-प्रतिशोध की तीव्र भावना, आत्मगौरव की अविरत रक्षा, प्रणत-पालन का विरद, दानवीरता और आदर्श शूरवीरता के अनेक ऐसे गुण हैं जो राजपूत चरित्र के विशेष लक्षण कहे जा सकते हैं और जो किसी न किसी रूप में इन कहानियों में व्यक्त हुए हैं। इन सब में भी आदर्श ख्याति प्राप्त करने की कामना की ओर राजपूत की सारी शक्तियों का झुकाव अधिक देखा जाता है। अमर कीर्त्ति प्राप्त करने की लालसा ने न जाने कितने अवसरों पर राजपूतों के हाथ से

ऐसे कार्य करवा दिये हैं जिनकी ऐहिक सम्भावना पर विश्वास करना कठिन हो जाता है। राजपूत में स्पर्धा का गुण भी विशेष मात्रा में होता है। मेवाड़ के इतिहास में शक्तावतों और चूंडावतों का शूरवीरता का आदर्श स्थापित करने की दौड़ में पहले नम्बर आने की चेष्टा करना, एक ही वृत्तान्त नहीं है वरन् हजारों ऐसे प्रमाणों से राजस्थान का इतिहास भरा पड़ा है। राजपूत आदर्श-त्याग करने में अपनी बराबरी नहीं रखता। मेवाड़ के भीष्म राव चूँड़ाजी, कुंवर भीमसिंह, राठौड़ वीर दुर्गादास—ये तो कुछ एक प्रातः स्मणीय नाम हैं। सारांश, राजपूत वीरता को भले ही कोई साम्राज्यवादी नीतिज्ञ दुस्साहस अथवा शक्ति का अपव्यय कहकर पुकारे, परन्तु संसार का मस्तक तो श्रद्धा की भावना से सदा ऐसे ही वीरों की स्मृति में झुकता रहा है और रहेगा। आजीवन युद्ध करने के लिए हृदय में अदमनीय लालसा रखना, सिर कट जाने पर घंटों युद्ध करते जाना, निशस्त्र होकर शेरों से मल्ल-युद्ध करना और आत्मगौरव की भावना से प्रेरित होकर अपने हाथ से अपना मस्तक काट कर देना, ये असम्भव कपोल-कल्पनाएँ नहीं वरन् वास्तविक ऐतिहासिक तथ्य हैं, जिनका कर दिखाना संसार भर में यदि किसी जाति के लिए संभव है तो वह है राजपूत जाति।

इन उग्र और ओजस्वी गुणों के साथ ही राजपूत चरित्र की पूर्णता का द्योतक एक कोमल और स्निग्ध भाग भी है जिसमें स्वर्गीय सौन्दर्य की झलक देखने को मिलती है। यही रणभट्ट राजपूत उत्कृष्ट प्रेमी, शान्तिप्रिय उत्तम शासक और उच्चातिउच्च कोटिका विद्वान और कवि भी होता देखा गया है। महाराणा अमरसिंह, महाराणा राजसिंह, महाराजा जसवन्तसिंह, सवाई जयसिंह, राठौड़ महाराज पृथ्वीराज—ये कुछ उदाहरण हैं

परन्तु विधि-विधान का वैचित्र्य ऐसा है कि पूर्ण-चन्द्र में भी कलंक होता ही है। पूर्णता संसार की वस्तु नहीं है। कालांतर में राजपूत-चरित्र की देदीप्यमान गुणावली में भी कलंकस्वरूप कुछ दुर्गुण ऐसे घुस गये जिन्होंने घुन की तरह उसे अंदर ही अंदर खा डाला। मिथ्या गौरव और पारस्परिक फूट ने प्रायः सभी प्रतिष्ठित राजकुलों का ह्रास कर दिया है; एक जयचंद की ही कौनसी बात है। प्रत्येक कुल में समय समय पर पारस्परिक वैमनष्य से ऐसी परिस्थितियाँ पैदा होगई हैं कि बाध्य होकर उत्तम से उत्तम वीर को दुष्प्रवृत्ति और ईर्षा का दास होकर अपने हाथ से अपने ही कुल-गौरव पर कुठाराघात करना पड़ा है। १२ वर्ष तक वीरता के साथ एक साम्राज्य की शक्ति के सामने जालौर गढ़ की रक्षाकर चुकने पर, उस अभूतपूर्व विजय का मजा एक क्षुद्रातिक्षुद्र भद्दी सी व्यंग्योक्ति के कारण किरकिरा होजाता है। गढ़ का वीर रक्षक दहिया सरदार ही सोनगरा कुल का भक्षक होजाता है।

दुर्व्यसनों ने भी राजपूत चरित्र का कम ह्रास नहीं किया है। जो मदिरा युद्धस्थल में उत्तेजित होने के लिए योद्धाओं द्वारा पान की जाती थी, वही शान्ति के समय में अच्छे २ राजपूत सरदारों के नाश का प्रमुख कारण हो गई। गोले, बारूद और तलवार की चोट से न परास्त होने वाली वीर जाति मदिरा के प्रवाह में बह गई। मदिरा ही क्यों, उसके साथ दुनिया भर के सब मादक पदार्थ, अवसर हो या अनवसर, सेवन किये जाने लगे। युद्ध को छोड़, विवाह-शादी में अफीम, तिजारा, कसूँभा (गला हुआ पेय अफीम) की नदियाँ बहने लगी और जब इन जहरों से काम न चला तो विषैले साँपों से कटवा कर ज़हर का आनन्द लिया जाने लगा। होते होते मामला यहाँ तक पहुँचा कि जहाँ धर्मवीरता, युद्धवीरता, दानवीरता और प्रतिज्ञापालिता के लिए वीरों के गौरवपूर्ण आख्यान

स्मरण किये जाते थे वहाँ मदिरावीर, अफीमवीर ठाकुरों की प्रशस्तियाँ कवियों के मुख पर शोभा देने लगी। "अमल की नीशाणी" नामक एक बड़ी लम्बी, भावपूर्ण कविता मैंने एक राजस्थानी कविताप्रेमी सज्जन के मुख से सुनी थी, जिसमें मारवाड़ के एक प्रतिष्ठित सरदार की प्रशंसा इसी बात में की गई थी कि किस प्रकार एक अफीम-वीर अपने जीवन में मणों-भर अफीम चाब गये। इतनी उच्च कोटि की होनहार जाति का यह परिणाम होगा, किसी को स्वप्न में भी आशा न थी! सचमुच, विधिविधान की बड़ी विषमता है!!

बहु-विवाह की प्रथा ने भी इस वीर जाति का अपकार ही किया। यह माना कि उस कठिन काल में क्षत्रिय कुलललनाओं के सतीत्व की रक्षा करने के लिए कभी कभी किसी समर्थ राजपूत राजा को एक से अधिक व्याह करने पड़ते थे और दूसरा यह भी कारण हो सकता है कि कन्या के पिता की ओर से प्रस्तावरूप में नारियल आजाने पर आन का धनी कोई भी क्षत्रिय उसे अस्वीकार नहीं कर सकता था, परन्तु ये कारण तो केवल अपवाद मात्र हैं। जानबूझ कर विषय-भोग की कामना से पचासों स्त्रियों से रातदिन घिरे रहना, कहाँ की शूरवीरता है। परमात्मा की दी हुई सत्प्रयोज्य शक्ति का ऐसा दुरुपयोग भी इस जाति के ह्रास का एक कारण रहा है। अस्तु।

(२) अपने प्रकृत विषय, राजस्थानी कहानी पर भी दो शब्द कह देना उचित होगा। हिन्दीसाहित्य के वर्त्तमान काल में कहानी-कला का बड़ा विकास हो रहा है और कहानी की लोकप्रियता उत्तरोत्तर बढ़ती जारही है। हिन्दी में कहानी की शुरूवात बंगला की गल्पों के अनुकरण से हुई। परन्तु राजस्थानी का कहानी-साहित्य उसकी निजी सम्पत्ति है। राजस्थान में बहुत प्राचीन काल से कहानी कहना और लिखना

चारणों और भाट कवियों का काम रहा है। इसके रूप की व्यापकता को देखते हुए कहना पड़ता है कि राजस्थानी का अधिकांश गद्य-साहित्य, यहां तक कि ऐतिहासिक सामग्री भी कहानी के ही रूप में प्रकट हुए हैं। राजस्थान के इतिहाक ग्रंथ "ख्यात" कहानियों के संग्रह मात्र हैं।

राजस्थानी कहानियाँ तीन प्रमुख रूपों में मिलती है— (१) केवल गद्यमय रूप में (२) गद्य-पद्य-मिश्रित रूप में और (३) केवल पद्यरूप में। इस जमाने में भी यदि खोज की जाय तो हजारों-ग्रन्थ "वातों" के मिल सकते हैं, जिनमें उपरोक्त तीनों रूपों में कहानियां मिलेंगी।। गद्यात्मक कहानियों को 'वात' कहते हैं और पद्यात्मक कहानियों को 'गीत'। दूसरा रूप सदा से लोकप्रिय रहा है और हमारी समझ में वही राजस्थानी कहानी का सर्वोत्तम रूप है। 'कहवाट' की कहानी इन तीनों रूपों में हमें पृथक् २ हस्तलिखित पोथियों में देखने को मिली। इतना तो राजस्थानी कहानियों के रूपात्मक अंग के संबंध में हुवा।

विषय भी कहानियों के अनेक मिलते हैं। प्रमुख विषय तो वीरता ही है, जिस पर अनुमानतः सौ में से पचास कहानियाँ लिखी मिलती हैं। परन्तु इसके अतिरिक्त प्रेम, भक्ति, स्वामिभक्ति, प्रजापालन, गोरक्षा, पातिव्रतधर्म और नीति के अनेक अंगों पर भी स्वच्छन्द रूप से कहानियाँ लिखी गई हैं। अपने पहले प्रयास में हमने केवल वीरता के मुख्य विषय को लेकर सात प्रख्यात ऐतिहासिक कहानियों का संकलन किया है। यदि ये राजस्थानी और हिन्दी जनता को रुचिकर हुई तो इतर विषयों, यथा धर्म, नीति आदि पर भी संकलन उपस्थित करेंगे।

सब से विचित्र बात जो राजस्थानी कहानी में देख पड़ती है वह है उसकी शैली की विलक्षण वैयक्तिकता। राजस्थानी कहानी की शैली राजस्थानी ही की है, उसकी समता दूसरी भाषाओं में ढूंढना निरर्थक है।

इस भावना को हम तब तक समझा नहीं सकते जब तक हिन्दी के पाठक स्वयं उस मौलिक रूप को देख न लें। यह गूँगे का गुड़ है जो वर्णनातीत है। परन्तु तो भी उस शैली की कुछ विशेषताओं का यहाँ उल्लेख कर देते हैं।

कहानी का पहला आवश्यक गुण है उसका मनोरंजक और चित्ताकर्षक होना। जब तक यह नहीं होता तब तक उसमें हृदय-ग्राहिता का गुण नहीं आता, जिसके बिना उसका कहानीपना असार्थक रहता है। राजस्थानी "वातों" की शैली मनोरंजकता के लिए अद्वितीय है। मनोरंजकता के साथ २ प्रसादगुण कूट-कूट कर उनमें भरा रहता है। कहानी कहने और लिखने वाले राजस्थानी कवियों को सरस्वती की विशेष कृपा से कुछ ऐसा अभ्यास और प्रतिभा प्राप्त थी कि सरल से सरल भाषा में उत्तम से उत्तम स्वाभाविक और लोचभरे भावों को भर देते थे। एक शब्द का भी वृथा प्रयोग नहीं होने पाता था। भरती के शब्द और भावों को उन में ढूँढ़ना आकाश-कुसुम की तरह निरर्थक था। इतनी सूत्राकार सूक्ष्मता होते हुए भी कहानी की गति में वह मतवालापन, वह स्फूर्त्ति और वह सजीवता रहती थी कि उसकी समता का उदाहरण ढूँढ़ना कठिन है। भावभंगी और भावुकताद्योतक चमत्कारों की वो राजस्थानी 'वात' एक तरंगिणी है जिसमें असंख्य भाव-लहरियाँ किलोल और कलरव करती हुई अपने उद्दिष्ट पथ की ओर प्रवाहित होती रहती है। बीच बीच में अलंकृत भाषा की निराली छटा देखते ही बनती है। दृश्यों की प्रभावोत्पादकता बढ़ाने के लिए अथवा विशेष वस्तुओं और परिस्थितियों की पूरी जानकारी कराने के लिए कहानी-लेखक ऐसी मनोरंजक सूक्ष्मता के साथ उसके अंग प्रत्यंग उधेड़ कर दिखलाता है कि आँखों के सामने सजीव रूप में उस वस्तु अथवा दृश्य का जीता-जागता चित्र अपने रंग विरंगे वैचित्र्य के साथ नाचने लगता है। राजस्थान देश और समाज का

चित्र अपनी वैयक्तिक विशेषताओं के साथ इन कहानियों में देखने को मिलता है। परन्तु खेद इस बात का है कि वर्त्तमान काल में इस कहानी कहने और लिखने की रुचि में बड़ी भारी शिथिलता आ गई है और आशंका होती है कि मौलिक रूप में इन कहानियों की नये सिरे से रचना बहुत शीघ्र विलुप्त हो जायगी।

राजस्थानी बातों से उध्दृत करके भाषा और शैली के कुछ उदाहरण नीचे देते हैं।

वर्णनात्मक शैली का प्रसादपूर्ण चमत्कार जगदेव पँवार की 'वात' (कहानी) के प्रारंभ में देखिये—

(क) "मालवौ देश माँहे धारा नगरी। तठै पँवार उदियादीत राज करै। नै तिणरै राणियाँ दो, तिण माँहे पटराणी बाघेली। तिणरै कँवर रिणधवल हुवो। नै दूजी रांणी सोलंषिणी। तिका दुहागण। तिणरा कँवर को नाँव जगदेव दीधौ। साँवलै रंग, पिण ज्योतिधारी नै रिणधवल राजरो धणी।"

दृश्य चित्रित करने वाली सुपुष्ट मनोरंजक वर्णनशैली का भी नमूना दिया जाता है—

(ख) "रात घड़ी एक दो गई। तद डंको सुणियो। तरै योगेसर जांणियो कोई सिरदार आवै छः। तिसै हाथीरी वीरघंट सुणी, तुरही सहनाई सुणी, घोड़ां की कल्हल सुणी। चराकां सौ-एक मूंढा आगै हूवां चँवर ढुल ताँ हाथी माथै बैठो सिरदार दीठो। तिसै कैइक असवार महिलाँ आया। तिसै फरास आय मैलां आगे चौक माँहै जाजम दुलीचा बिछाया, गिलमां बिछाई, तकिया लगाया। तिसै तेजसीजी गादी तकियाँ आय बैठा। जोगेसर तमासा देखै छः।"

(ग) "भाक फाटी। जोगेसर जागियो। देखै तो लोक फिरै छः

देवरै झालरां बाजै छः । जोगेसर संखनाद पूरै छः ।"

जैसा कि ऊपर कह आये हैं 'वातों' के रूप में राजस्थान का प्राचीन इतिहास लिखा गया है, अतएव इन 'वातों' में ऐतिहासिक सामग्री बहुतायत से मिलती हैं। ख्यात की 'वातों' में और मनोरंजनार्थ रचित बातों में एक स्पष्ट अंतर यह होता है कि इनमें कल्पना की मात्रा अधिक रहती है। ख्यात की बातों में जहाँ तक होसका है ख्यातलेखक ने वंशावलियों के क्रम से प्रत्येक व्यक्ति और वंश के जीवन काल की मुख्य बातों का यथार्थ वर्णन किया है। कहानी की बातों में किसी एक ऐतिहासिक कार्य को लेकर और उसमें कल्पना की पुट देकर मनोरंजक सामग्री उपस्थित की गई है। अतएव यद्यपि इन कहानियों की आधारभूत बातें ऐतिहासिक हैं, परन्तु कहानी के समस्त रूप को ऐतिहासिक तथ्य मान लेना भारी भूल होगी। कहानी एक कला है और उसका प्रधान उद्देश्य है मनोरंजक रूप में किसी प्रमुख व्यक्ति अथवा घटना के सम्बन्ध में आख्यान लिखकर सहृदय जनता का हृदय आकर्षित करना। संसार के सभी साहित्यों में जहाँ भी देखा जाय, क्या कहानी, क्या उपन्यास, नाटक, काव्य—सभी में कल्पनात्मक प्रसंगों द्वारा वास्तविक तथ्यों को एक नवीन रागात्मक रूप दे दिया जाता है। वही बात इन कहानियों में भी समझनी चाहिए। इस दृष्टि से यदि देखा जाय तो जगदेव पँवार की 'वात' में यद्यपि जगदेव और सिद्धराव सोलंकी ऐतिहासिक व्यक्ति हैं, और इतिहास से उनका एकत्रित होना सिद्ध भी होता है और एक जगह लिखा भी है—"जगदेव पँवार सिद्धराव सोलंखीरो चाकर। कंकाली देवी ने आपरो सीस दियौ।"—परन्तु तो भी जगदेव का भैरव के गण को द्वन्द्व-युद्ध में परास्त करना तथा दो बार शीश-दान करने को उद्यत होना अतिशयोक्तिपूर्ण कल्पना मात्र है। सम्भव है, जगदेव ने काम पड़ने

पर एक ही बार स्वामी की सेवामें शीशदान किया हो। इसी प्रकार वीरमदेव की कहानी में शाहजादी से उसका प्रेम, युद्ध के कारणरूप में बताया जाना और उस प्रेम की पुष्टि के लिए काशी-करौत वाली पूर्वजन्म की अन्तर्कथा का निर्माण,—ये बातें कवि-कल्पना की करामातें हैं। हाँ, ऐतिहासिक दृष्टि से इतना सत्य है कि जालौर के स्वामी सोनगरा राजपूत, राव कान्हड़दे और उसके पुत्र वीरमदेव ने बड़ी वीरता-पूर्वक बादशाह की सेना के विरुद्ध गढ़ की रक्षा की थी। इसी प्रकार अन्य कहानियों में यद्यपि आधारभूत इतिवृत्त (Fact) ऐतिहासिक ही है परन्तु कल्पनाओं का प्रचुर परिमाण में नीर-क्षीर की तरह संमिश्रण होने से यह नहीं कहा जा सकता है कि यहाँ तक तो शुद्ध इतिहास है और इतना अंश काल्पनिक है। कहानी के लिए ऐसा वैज्ञानिक विश्लेषण करने की आवैश्यकता भी नही है। कहानी तभी तक कहानी रहती है जब तक वह हमारा मनोरंजन करती है, हमें उच्छ्छ्वसित करती है, हमारे हृदय में नई नई भावनाएँ और स्फूर्त्तियों को जागृत करके हमें सजीवित करती है। जब हम कहानी में ऐतिहासिक तथ्य को ढूँढ़ने लग जाँयगे उस समय स्वर्ग की छाया की तरह वह विचित्रता विलीन हो जायगी। तथापि इन कहानियों के सम्बन्ध में इतिहास ग्रंथों तथा इतर प्रमाणों से जो कुछ सूचना हमको उपलब्ध हुई है, उसे पाठकों के सुभीते के लिए हमने टिप्पणियों में देदी है।

वर्त्तमान संकलन में आई हुई कहानियाँ लगभग १५० से २०० वर्ष पुरानी हस्तलिखित पोथियों में से चुनकर ली गई हैं। प्रायः सभी कहानियाँ प्राचीन हैं और परम्परा द्वारा राजस्थान में ख्यातिप्राप्त हैं। पोथियों में लिपिबद्ध होने के समय से अनुमानतः १०० वर्ष पुरानी तो ये कहानियाँ अवश्य होनी चाहिएँ। इस अनुमान से इन कहानियों का निर्माण-काल कम से कम २५० वर्ष पूर्व समझना चाहिए।

यद्यपि राजस्थान के भिन्न भिन्न प्रान्तों को बोलचाल की भाषा में सदा से थोड़ा-बहुत भेद चला आया है और अब भी है, परन्तु मारवाड़ (जोधपुर) प्रान्त की भाषा गद्य-रचना के लिए आदर्श (Standard) मानी जाती रही है। इसका कारण उसका स्वाभाविक माधुर्य्य, प्रसाद पूर्ण शैली और व्यापक शब्द-शक्ति हैं। इसी जोधपुरी भाषा में इस संग्रह की अधिकांश कहानियाँ लिखी हुई हैं।

मूल-पुस्तकों से कहानियों की प्रतिलिपि बनाते समय जहाँ तक हो सका है, केवल सुधार करने की दृष्टि से भाषा का रूपान्तर नहीं किया गया है। जहाँ जहाँ पोथी-लेखक की ग़लती से लिखने की अशुद्धियाँ रह गई हैं, उनको स्थान स्थान पर ठीक कर दिया गया है।

कहानियों के चुनाव और हस्तलिखित पोथियों की प्राप्ति में मुझे अपने अभिन्न सुहृद्वर श्री० ठाकुर रामसिंह एम० ए० तथा श्री० नरोत्तमदास स्वामी एम० ए० की बहुमूल्य सम्मति और सहायता मिली है। एतदर्थ मैं उनका अभारी हूँ।

जैसा कि इस वक्तव्य के प्रारंभ में कह चुका हूँ, यह प्रयास श्री बिड़लाजी की प्रेरणा से इस उद्येश्य को दृष्टि में रख कर किया गया है कि राजस्थानी जनता को अपने गौरवपूर्ण साहित्य का अनुशीलन करने का मौक़ा मिले और हिन्दी जनता को प्राचीन राजस्थानी संस्कृति के आन्तरिक रूप से कुछ जानकारी हो जाय। अतएव इस पुस्तक द्वारा आंशिक रूप में भी यदि मैं इस उद्देश्य को पूर्ण करने में सफल हुवा तो अपने आप को कृतकृत्य समझूँगा।

पिलाणी,
१ जनवरी १९३४

सूर्यकरण पारीक

जगदेव पँवार

मालवौ देस माँहि धार नगरी। तठै पंवार उदयादित राज करै, नै तिणरे राणियां दो। तिण माँहि पटराणी बाघेली। तिणरे कँवर रिणधवल हुवौ। नै दूजी राणी सोलंखणी, तिका दुहागण[1]। तिणरे कँवररो नाम जगदेव दीयो। सांवलै रंग, पिण ज्योतिधारी, नै रिणधवल राजरो धणी। यों करतां बरस १२ मांहि जगदेव हुवौ। तटै राजा उदयादित कामदारांनै कह्यौ, सोलंखणीरै बेटो छै कै नहीं। तदै राजा कह्यौ संसार मांहि बेटा समान काई वस्त नहीं। तदै कामदार बोल्या छै, पिण हजूर दरबार कदेई आवै नहीं। तदै राजा खवास[2] मेल्हि जगदेव-नै तेड़ायो[3]। तदै जगदेव दरबार आयो, तिको वो साडुक[4] रो बागो पहिरणै छै, रुपीया १) री पाघ माथै छै, कानां हाथां मांहि कड़ा, सु इसै सलूकसूं[5] मुजरो कियो। राजा छातीसूं लगाय मिलियौ, कनै बैसाणियो नै पोसाष देखिनै कह्यौ, बेटा इसा कपड़ा क्यूं। तदै कँवर कह्यौ, म्हांरी तपस्या मांहि खोट छै, महाराजरै घरै जनम पायो, पिण महाराजरै माल देस मांहि सीर[6] थोड़ो घलायो, तिणसूं माजीनं गांव

---

१ दुर्भाग्यवाली, जिस स्त्रीको उसके पतिने छोड़ रखा हो। २ नाई, चाकर। ३ बुलवाया। ४ एक मोटा सस्ता कपड़ा। ५ ढंग। ६ भाग।

१ आप दीधो छै। तिणरो हासल माफक[1] ही ज आवै छै। नै मांई जीरे (सौतेली मा के) हाथ राजरो काम छै। तिणसूं गांव नांवै। मोटौ, हासल छोटौ दीधो छै और खांणे पेरणै दासदासी नै रोजगार रथ नै वहलिया अै समाचार छै, और सगला एकै गांवरै हासलमें निभै छै। तरै कपड़ा तो हासल[2] सारू छै। राजा इसौ सांभलिनै कह्यौ, रुपया २) हमेसा थांरैं, रुपयो १) थांरै थालीरो नै रुपया १७) हाथ-खरचनै लीयां जावो। राजा कामदारांनै कह्यौ, हमेसां रुपया २) दीयां जाज्यो। तरै जगदेव अरज कीधी, महाराज तो बगसीस कीधी नै मैं पाई, पिण श्री मांईजी[3] घणी मया[4] फुरमावै छै, निभै नहीं। ज्यूं लिखियो[5] छै त्यूं होसी। तरै राजा खजानची खनैसूं थैली १० मंगाय दीधी नै कह्यौ, कपड़ा पोसाख आछी बणावो नै गाढ़ा सलूक माहे रहो। तद कंवरनै सीख दीधो। कंवर आपरी मांनै आणि थैली दीधी नै सगली हकीकत कही। तिसै केइक बाघेलीरा आदमी बैठा था, देखै था, बात सुणै था। त्यां जाय नै कह्यौ, आज जगदेवसूं महाराजा घणी मया कीधी नै रोजीनै रुपया २) दिराया नै थैली १ दीधी। आ बात सुण पगांरी झाल माथै गई[6]। तरै रांणी खोजांनै[7] मेलिह राजानै मांहे बुलायो, मुजरो कियो, सिंहासण विराजिया। तरै राणी आंख्यां लाल करि कह्यौ, आज दुहागणरा बेटानै कासूं दीधो। तरै राजा

---

१ ठीक ठीक ही, अर्थात् थोड़ा। २ पैदा। ३ सौतेली माताजी। ४ कृपा। ५ विधाता द्वारा भाग्य में लिखा है। ६ पगां री झाल माथै गई (मुहा०)=क्रोध की ज्वाला पैरों से सिरतक दौड़ गई, अत्यन्त क्रुद्ध हुई। ७ दूतों को।

कह्यौ, सोल्‌ खणी दोहागण छै, पिण बैटो तो न छै। रिणधवल्‌ तो पाटवी टीकायत छै, पिण जगदेव माहरी निजर आछो आयो, सखरो[1] रजपूत होसी। तरै बाघेली कह्यो, ऊ दई-मारयो कालियो डील माँहे छै, जिणरै करमांमांहे[2] काला अख्खर छै, थैली उरी मंगावो। तरै राजा कह्यौ, ओ तो गुनो म्हांनै बगसो। अबै थांनै पूछि नै क्यूं देस्यां।

तिसै मांडवगढ (मांडू) राजा, तिणरी चाकरी उदियादित करै छै। त्यांरा कागद बुलावणरा उतावलरा आया। तरै राजा तो उलग[3] नै चढ्या, कंवर दोनूं लारै राख्या। अबै जगदेवरी ऊठि[4] बुलावणरी सबरी[5] दीधी। तिणसूं लोक माहे बास[6] फूटी, नै दरबार ती रिणधवल्‌ करै। जगदेव तो घर माहे रहास[7] छै तठै हीज रहै। तिसै बरस २ बीता। तठै गौड़ देसरो गंभीर राजा गोड़। तिणरा नाल्‌ेर[8] जगदेवनै आयो। हाथी १ घोड़ा ६ सोना रूपासूं मढिया नाल्‌ेर देनै प्रोहित कामदार धार मेल्हिया। तिके धार आया। तद सगल्‌ांने खबर हुई, गोड़ांरा नाल्‌ेर आया। तदि डेरो दिरायो वल्‌रो[9] चारारो जाबतो करायो। अबै प्रोहित व्यास कांमदार मिलि पूछियो, नाल्‌ेर बंदावो[10]। तरै गोड़ाँरो प्रोहित बोलियो, म्हांनै माहरै राजा जगदेव कंवरनै नाल्‌ेर देणो कह्यो छै। तिको कंवर जगदेवने पाट बैसाणो ज्युं तिलक करां अर नाल्‌ेर द्यां। तरै इतरो सांभलि

---

१ अच्छा। २ कर्म में, भाग्य में। ३ विदेश में सेवार्थ। ४ की ओर। ५ मनाही। ६ खबर फैल गई। ७ रहवास, रहने का स्थान। ८ विवाह के प्रस्ताव स्वरूप नारियल। ९ भोजन। १० स्वीकार करो, ग्रहण करो।

अबोला[1] रह्या। परा ऊठया[2]। मांहे बाघेलीरो डर घणो। सघला[3] जाय बाघेलीनैं कह्यौ, नाळे़र तो जगवदेनै कहे छै। तरै बाघेली बोली नैं रीस कीधी नै कह्यो दई-मारयांका कांन फूटा, म्हारा बेटाने नाळे़र आया छै, जावो उण दई-मारयांनैं कहै तोही रिणधवळनैं हरि भांति करि दिरावज्यो जी, नहीं तर थांहरी तो चाकरी करूंली। तरै प्रोहित कामदारां गोड़ प्रोहित कामदारांने कै रुपया देनै राजी कीधा नै कह्यो, जगदेव तो दुहागणरो छै, जिणरी मां पटराणी तिणने नाळे़र द्यो। तरै पईसांरा मार्या रिणधवळनैं नाळे़र बंदाया, तिलक कीयो। नोबत बाजी। तरै प्रोहित कह्यौ,एक बेळा जगदेव म्हांने आँख्याँ देखाळो। तरै बाघेलीसूं मालुम करी। जगदेवनैं ल्याया। प्रोहित मंत्रवी दीठो तरै माथो घूणीयो[4] ज्योतिधारी कळाधारी उद्योतवंत[5] दीसै छै, पिण लेख है जिणसूं हीज है। अबै सीख मांगी। तरै सिरपाव दे नै विदा कीया। तिके आपरे गोडावाटी आया। राजा गंभीरसूं मिलिया। नाळे़र रिणधवळ नै दीधो। राजरो धणी छै पिण ज्योति कांति छः, तितौ जगदेवरी होड न करै। गैंहणो पोसाख नहीं तो पिण रिणधवळ सूरज आगै चंद्रमा दीसै त्यूं दीसै थो। पिण लेखसूं[6] जोर नहीं। तरै राजा कह्यौ, घणा चूका, दीधो विणदीधो[7] हुवै नहीं नै दूजी बाई काई नहीं। तरै जोसी तेड़िनै लगन लिखाय धार मेलियौ नै दूजौ कामदारांनै कागद दीयो, तिणमें लिख्यो, जगदेवजीनैं जांन साथे ल्यावज्यो नै उण

---

१ चुपचाप। २ उठ खड़े हुए। ३ सभी। ४ धुना, सिर हिलाया। ५ जाज्वल्यमान। ६ विधाता के लेख। ७ दिया हुआ बिना दिया हुआ नहीं हो सकता।

बिगर आया तो साहो होसी नहीं। आदमी लगन लेनै धार आया। कागद कामदारांरे हाथ दीधा। कागद बांचि मांहे बाघेलीनै मेल्या। तरै बाघेली कह्यो दई-मारया कालियानैं ही ले जावो। जांनरी तयारी कीधी। तरे जगदेवनै कहायो, कंवरजी जाननै तयारी कीज्यो। जगदेव कहायो, गैणो, पोसाख, घोड़ो, राजारो लाजमो नहीं नै पाळो[1] तो इसे लवेस[2] (लिबास) चालणी आवै नहीं। तरै कोठार मांहिसूं कड़ा, मोती कंठी, दुगदुगी[3] जनेऊ, मोतियांरी माळा दे मेल्या नै चाकर घणा ही छै। इसो भांति जलूस करि बीजारो तो क्यूं कहणो नहीं, असवार हजार २ सूं चढिया, तिका चालतां-चालतां टोडै टूंक महिलाण[4] हुवा।

टूंक चावड़ो राव राज नै कंवर वीज नांमै राज करै छै। तिको राजाराज तो आख्यां संजम[5] छै, पिण हीयारा नेत्र खुल्या छै। आख्यां देखतांसूं घणो सूझै[6]। तिणरे बेटी एक नाम वीरमती बडकंवार[7] छै। तिणरो साहो करणनै सगो सोझता था। तिसै जान आई। तिसै राजा राजजी कंवर वीजनै कह्यो, जगदेव कंवर छै तिको निपट सखरो। वीज हुकम प्रमांण कियो, देस रजपूत छै, तिणनै काल्हे फेरा दिरावस्यां। जान मांहि कंवर वीजजी जुहार करणनै आया नै कह्यो, विहाणे[8] गोठ आरोगनैं चढिज्यो। घणा हठ-सूं गोठ मानी। कोट आय जोसी तेड़िनै लगन बूझियो। तरै प्रभाते

---

१ पैदल। २ लिबास, पहनावा। ३ गहना विशेष। ४ पड़ाव, ठहराव। ५ अंधा। ६ चर्मचक्षुओं की अपेक्षा आन्तरिक चक्षु से अधिक दिखाई देता था। ७ ज्येष्ठ पुत्री। ८ सवेरे।

गोधूलकरो लगन छै। सगली सजाई कीधी। बीजै दिन वीरमती-नै पीठी[१] कराई, खेड़टियो विनायक[२] थाप्यो। तीजे पोर गोठ जीमण-नै आया। आथमण[३] सूधा जीम्या नै चलू भरनै उठै तिसै लगन वेला हुई नै प्रोहित कांमदारांने कह्यो, कंवर जगदेवजीने म्हारी बेटी दीधी। तरै नालेर घोड़ा ४ सूं झलायो[४]। नै कह्यो तोरण बांदि[५] चंवरी पधारो। कांमदारां ही दीठो बडो काम हुवो। कोई थेट गोडांरे गयाँ आंटो[६] उठतो, आरे करि[७] तोरण बांदि चंवरी मांय सिधाया। गोधूलकियांरा फेरा लीया। भात हुवा[८]। हाथी १, घोड़ा २५, दोवड़ी दात[९] दीधी, दासी ६ दीधी। प्रभात हुवाँ सीख मांगी। साहै-बंध्यो कांम[१०]। तरै चावड़ी तो पीहर हीज रही। कह्यो, पाछा फिरतां धार ले जावस्यां नै जांन चढ़ी। तिका गोडांरे जगदेव परण्यारी खबर हुई। राजा गंभीर जगदेवनै देखि प्रोहित विठागरां[११] सूं घणो वेराजी हुवो, पिण लेख-बंधी बात। अब गोड़ भात दिया। दोवड़ी दात दीधी, घोड़ा २५ हाथी १ दीधो, दासी ११ दीनी। देनै सीख दीनी। तिके टोडै आया। जरै चावड़ीनै रथमें बैसाण साथे दीधी। नगर आयाँ बाघेलीनै जगदेव परणियांरी खबर हुई नै मन मांहे घणो दुख पायो। तै कह्यो, इण दईमार्‌या कालियानै हरकोई रावजी बेटी दे, तिको कासूं देखनै दे छै। पछै सामेलो[१२]

---

१ उबटन। २ गणपतिकी मूर्त्ति। ३ संध्या तक। ४ पकड़ाया। ५ तोरण मारनेकी प्रथा करके। ६ झगड़ा खड़ा होता। ७ ऐसा जानकर। ८ भोजन हुए। ९ दुहरे दहेज। १० लग्नके अनुसार काम। ११ धोखे-बाजों। १२ अगवानी, स्वागत, सामनेसे लेना।

कीधो। तठै गोड़ नै चावड़ी सासुवाँरे पगे लागी। देवताँरी जात[1] कीधी। मास पछै गोड़-चावड़ा आया। आपरी बेटीनै ले गया। पीहर गई तदै दायजो दीधो थो, जितरो चावड़ी रे साथे मिलियौ थो, तिको जगदेव राख्यो।

हिवै वरस १८ माँहे जगदेव हुवौ। तठै राजा उदयादित उलगसूँ[2] पधारिया। कँवर रिणधवल मोटी असवारी कर साम्हो गयो। पगे लागो। मूँता[3] सेठ पगे लागा। तिणाँ माँहे सिगलाँरा मोला[4]-मुजरा लीया, पिण जगदेव मुजरै नायौ। तिसै घणा उच्छाह होताँ राजा सिंहासण दरीखाने[5] विराजिया नै मुहतासूँ फुरमायो, जगदेव कँवर कठै छै। तरै कह्यो, सोलंषणीजीरै हजूर होसी। तद खवास मेलि तेड़ायो। तरै जगदेव सादी पोसाख पहिरियाँ पगे लागो। तरै राजा उठि छातीसूँ भिड़ि मिलियो, माथै हाथ दीया, निपट नैडो बैसाणियो नै राजा पूछियो, कँवर, उणहीज पोसाख छो। तरै कँवर अरज कीधी, महाराजा, आप असवार हुवाँ पछै रोजीनारो थाली नै हाथ-खरचरा रुपया दोय फुरमाया चढ़िया[6] था, तिके माँई जी कबूलिया नहीं, तिणरे हुकम बिनां खांनसमाँ न दीया। आपसूं मालूम होज छै। हासल पैदास बिनां लवाजमा कुंकर[7] हुवै। जदि राजा कड़ा, मोती कंठसरी,[8] ढुगदुगी, जनेऊ, हथ-सांकलां, सिरपेच, कड़ीयां री तरवार, ढाल, कटारौ, खंजर, तरगस, बांण, सर्व

---

१ देवयात्रा। २ परदेश की सेवा। ३ मुहता, मन्त्री। ४ मिलना-भेंटना, अभिवादन-स्वागत। ५ दरबार में। ६ चढ़े हुए थे, बाकी थे। ७ क्योंकर। ८ कंठमाला।

बगसीया। तद जगदेव मुजरो करि-करि लीधा। पिण दोनूं हाथ जोड़ि अर्ज कीवी, महाराजा, आप इनायत कीधी तिके पाया, पिण मांईजी म्हांसू घणी महरवानी फुरमावे छै नै आप बाघेलीजीरे महल पधारिया तरै सगली ट्रमां (गहणो) मंगवाणी पड़सी, तिणसूं म्हारी रहवास ले गयां पछै मेलस्यूं नहीं, तिणसूं अै खालसै रैहणरो हुकम हुवै। तरै राजा कह्यौ, बाघेली कहै पिण म्हारे तो रिणधवल नै थे सारिषा कंवर छो। नै वलै तोनैं कुं सरसो[१] गिणती मांहे गिणूं छूं। मैं म्हारो माल दीधो छै नै थारी असवारीरे वास्ते म्हारी असवारी-रो खासो[२] घोड़ौ दीधो। तरै कंवर मुजरो कीधो नै राजा सीख दीधी नै कह्यो, सांझरे दरबार वेगा आवज्यो। इसौ कहि सीष दीधी। घोड़ो खालसारी पायगारी[३] जायगा राख्यो। सोलंखणीसूं मुजरो कियो। इनायत वस्तां थी तिकी देखाई। तरै मा कह्यौ, बेटा, बाघेली आगे रह्यां हीज भरोसो। तिसै खोजां[४] नाजरां[५] दोड़ि बाघेलीसूं कह्यो, आज महाराजा खनै थो जितरौ सगलो जगदेवनैं दीधो और असवारी रो पाटवी घोड़ौ बगसियो। इतरो सुणतसमो हिया मांहि लाय[६] लागी नै कह्यौ, महाराजा जनाने पधारीजे, रसोड़ो तयार हुवो छै, नै महारानी बाघेलीजी दांतण कियां बिना विराजिया छै। पहिली महाराजारी सवारीरो दरसण कर आरोगै था नै आज धन दिन धन घड़ी पोहर महाराज पधारीया तिको दीदार[७] करि दांतण फाड़सी। इतरो राजा सांभलि दरबार बहोड़ि[८] मांहे पधारिया।

---

१ सदृश। २ ख़ास। ३ पायगाह, घोड़ों का अस्तबल। ४ दूतों ने। ५ नपुंसक कंचुकियों ने। ६ ज्वाला, अग्नि। ७ दर्शन। ८ समाप्त करके।

मुजरो करि निछरावल हुई। सिंघासण विराजिया। तिसै वाघेली कह्यो—उवारीं सूरति ऊपरां घोली जावो[१], पुखता हुवा[२], तिणसूँ गहणांरो मोह छोडियो, पिण देसोत[३] कदेही पुखता नहीं। राजा कह्यो—गहणा तो था, पिण कंवर जगदेवनै अडोलो[४] दीठो जद गहणा बगसिया। इतरो सुणतसमो राणी बोली, उँण काल्या दई-मार्याकै यूंहीज बण आई छै, गैहणा तो दोवडा[५] था, जांन चढ़तां कोठारसूं दिया था। सरब गैहणा तोडै चावड़ां पिण दीधा। सो महाराजा बिणनैं समूधा[६] दीधा नै म्हारा बेटानैं एक ही रीझ[७] दीधी नहीं, तिको आधा गहणा मंगवाय रिणधवलनै बगसो। तरै राजा कह्यौ, रीझ गरीब दै तिकोई मंगावै नहीं, तो पृथ्वीरा धणी राजा। और कंवर दोनूं सारीखा छै, मंगावणी नावै। तरै राणी कह्यो कड़ियांरी तरवार, पाटवी घोड़ो बडा कंवर पाटवी राखै, तिकै मंगायाँ दांतण फाड़स्यूं। राजा दीठो, वैरांरा हठ भूंडा[८]। तदि नाजरनै मेलि कहायो, बेटा, तनै निपट सखरी बीजी देस्यूं, तरवार दीधी तिका उरी मेलज्यो[९] नै मांनै चैन चाहै तो इण वारां हठ मतां करिज्यो। नाजर आयर कंवर सूं अरज कीधी। जरै जगदेव तांमस[१०] खायनै दीधी। जगदेव कह्यौ, जो लड़ां-भिड़ां तो कपूत कहावां छां, नै मूंछा आई। रजपूतरा बेटा छां। कठैक

---

१ न्यौछावर होती हूँ। २ विश्रब्ध, प्रतिष्ठित होने पर। ३ देशपति, राजा। ४ आभूषण रहित। ५ दुहरे। ६ उसको सभी। ७ प्रसन्नता से दिया हुआ पुरस्कार। ८ औरतों का हठ बुरा होता है। ९ वापिस भेज देना। १० क्रोध करके।

जाय बाजरी कढावणी[1]। यूं कह्यौ छैः—

दूहा

चंगै माटू[2] घर रह्याँ ए तीन अवगुण होय।
कपड़ा फाटै, रिण[3] वधै, नांम न जाँणै कोय॥
जोवन दरब[4] न खट्टीया[5] ज्यां परदेसां जाय।
गमीया[6] यूँही दीहड़ा[7] मिनख-जमारै[8] आय॥

तिणसूं माजी हुकम द्यो कठै कै करम पतवाणां[9]। पायगासूं घोड़ो मंगावी खजानांसूं आपहीज खोलि थेली दो मोहरांरी लीधी। नै हथियार बांधि मांसूं मुजरो करि रीस मांहे ज चढियां। तिकै पाधरै तोडै आया, बाग मांहै डेरो दीधो। घोड़ो ऊभो चोकडो[10] चाबै छै। कुंवर चंवेली विड़ां[11] मांहे जीणपोस बिछाय बैठा छै। ढाल छाती आगै दे झोला[12] दै छै। सहिर मांहै, जाणै छै, दिन आथमिया[13] जास्यां। पछै दिन दो चार रहि आघा सिधावस्यां[14]। तिसै चावड़ी वीरमती सहेल्यांरा साथसूं चकडौल[15] बैसनै आप रो बाग छै तठै आई। परणूयांनै बरस ७ हुआ छै। तिको बाग मांहै बंगलो छै जठै बिछायत हुई। आप बैठो छै। बाग मांहै माली धुरा-धुर[16] मरद राषियो न छै। पोलिया खोजा पोली बैठा छै। तिसै

१ जीविकोपार्जन करना। २ चंगे, स्वस्थ पुरुष के। ३ ऋण, कर्ज़ा। ४ द्रव्य, धन। ५ इकट्ठा किया। ६ बिताये। ७ दिन। ८ जीवन। ९ कर्म-परीक्षा करूँ। १० घोड़े के मुँह में लगाम की कड़ियाँ। ११ चमेली के वृक्ष-कुंज में। १२ झूल रही है। १३ अस्त होने पर। १४ चला जाऊँगा। १५ पालकी। १६ तक भी।

दासी फूल लेती-लेती असवार दीठो। घोड़ो रुपया हजार दो-तीन रे मालरो दीसे छ। पिलांणरी साजत ऊंची दीठी। तरै छानैछै[1] विड़ाँ मांहे दाठी, बाइजीरे बररी सबी[2] दीसे छै। नाकरी डांडी[3], आंख्याँ, निलाड़[4] डील रोमछर[5] देखि सही कुंवरजी ही छै। तरै दाड़नं आय कह्यो, बाईजी, बधाई पावूं, बाईजी सिलामत उगणीस विस्वा[6] तो श्री श्रीमहाराज कुंवरजी छै। तरै चावड़ी कह्यो, पर-पुरसरा मुंह देखूं नहीं। पिण तूं डाही[7] समझावार छै, तिणसूं आवं छूं। वीड़ारी ऊट[8] देनै देखै तो कंवरजी ही छै। तदि चावड़ी जाय मुजरो[9] करि हाथ जोड़नै कह्या, धन दिन धन घड़ी धन बेला, भलांही श्री सूरजजी ऊगो, आज श्री प्रीतमजी रो दरसण पायो, श्री कंवर जी पधारिया। पिण साथ कठै। इकेला हीज पधारिया, तिणरो विचार कासूं। तरै कंवर सगली हकीकत कही नै हूं चाकरी करण-नै नीकलियो छूं। कोई मोटो राजा, तिणरी उलग[9] करण सारू निकलूयो छूं। थे कठेही बात प्रगट करो मती। तिसै दासी दोड़ि दरबार जाय बधाई दीधी, जंवाई पधार्‌या छै। सैंदाना[10] सरू हुवा, बधाई बांटी, बधावा बांटण लागा। कंवर पाछा हीज आय मिलिया। चावड़ी दरबार आई। कंवर बीज जगदेवनै ले दरबार पधारिया। राजाजीसूं जुहार कीयो। दिन पाँच रहि सीख मांगी। तरै राजा कह्यौ औ दरबार रावलो[11] हीज छै, अठै उठै एकही ज विचार छै। राज

---

१ छिप लुक कर। २ आकृति, मूर्त्ति। ३ नाक की डंडी। ४ ललाट। ५ शरीर की रोमावलि। ६ बीस में से उन्नीसवाँ अंश, सचमुच। ७ चतुर। ८ ओट। ९ सेवा। १० स्वागत के वाद्य। ११ आपका ही।

अठै हीज रहो। तरै जगदेवजी कह्यौ, इण बातरो हठ मत करो, इकेलो एक वार परदेस जायनै ताळा[1] देखणा छै। तरै जोरावरीसूं हांकारो कहायो। रात पड़ियां चावड़ीरै महिल सिधाया, सीख मांगी। तिसै चावड़ी कह्यौ, हूं तो कंवरजीरी चाकरी मांहि रहिस्यूं, दासी बंदगी करस्यूं। जगदेव कह्यौ, हूं एकलो ही जास्यूं, थानै बेगा ही बुलावस्यूं। चावड़ी कह्यौ देहीरी छांहड़ी[2] जुदी देखावो देहसूं अ-ळगी[3] रहै तो मोने अठै रहणरो हुकम करौ। तरै चावड़ीरो वच आरै कीधो[4]। दोई घोड़ां पिलांण करायो। घणा जड़ावरा[5] हलका[6] सोना मांहे जड़िया लीधा। मुकनो[7] चावड़ीनै पहिरायो। जगदेव जी असवार हुवै तिण पहिली चावड़ी आंण ऊभी रही। थेली मोहरां री पाहुरां[8] मांहे घाली। तिसै कंवर बीजजी असवार तीन सौ सूं पौंचावण चाल्या। चावड़ी मां-बापसूं मिली। धाय धावड़[9] सहेली खवाससूं मिली। तरै सासू तिलक काढ़िनै नाळेर देनै चावड़ीरी भोळावण जगदेवजीने दीधी। जुहार करि आसीस लेनै राजा राजजीसूं मुजरो करि असवार हुवा। तिके सहिरसूं कोस एक आया तरै साथरां[10] पूछियो, कंवरजी, घरां पधारो तो ओ मारग छै। तरै जगदेवजी कह्यौ, पाटण सिद्धराव जैसिंघदेव सोळंखीरी चाकरी जास्यां। इतरो कहि सूधो मारग छे तिको पूछियो। तरै एकै कह्यौ, पायरै रस्तै टोकड़ी अठासूँ कोस १२ छै नै निरभै राह

---

१ मौका, ढंग। २ छाया। ३ अलग। ४ स्वीकार किया। ५ जड़ाऊ। ६ घोड़े का जड़ाऊ साज। ७ परदा, बुर्का। ८ जीन में लगे हुए थैले। ९ बड़ी धाय। १० साथ के लोगों ने।

पधारस्यो तो कोस ३० ऊपरां छै, डूंगर दोळा[१] फिरनै सिधारस्यो। तरै जगदेवजी कह्यौ, इतरी अँवळाई[२] खावां सो घोड़ासूं बैर नै छै। तरै कह्यौ, पाधरी राह नाहरी-नाहर बिचै रहै छै, तिणां गांव ५-७ उजाड़ कीधा छै। के देवंसी नाहर छै, नगारा ढोल देनै राजा सिकार चढ़ी, नाहर-नाहरीरो एक रूं वढीयो नहीं[३]। तिणरा डरसूं मारग बंद हुवौ छै। तिणनै बरस ८-६ हुया छै। घास ऊभता दोय बध रह्या छै। बड़ी झंगी[४] मच गई छै, तिणसूं मारग कोस २२ री अँवलाई खायनै लोक जायै छै। तिसूं निरभै राह पधारीजै। जगदेवजी कंवर वीजजीसूं जुहार करि सीख देनै पाधरे मारग खड़िया[५]। हठ तो वीजजी घणो ही कीधो, पिण पाधरे राह चाल्या नै कह्यौ, गंडक-गंडकड़ीरा[६] डरतां अँवळाई खावणी आवै नहीं। हिवै वेहूं[७] सजोड़ै[८] निरभै थकां घोड़ा खड़ियां जायै छै। तरै चावड़ीनै कह्यौ, डावी जीमणी[९] घास मांहै निजर राखतां जावो। यूं करतां कोस ६ पोंहच्या। आगै मारगरै सैं-बिचै[१०] नाहरी बैठी छै। पीछे पांवडा १०० ऊपरां नाहर बैठ्यो छै, निको चावड़ीरै निजर आयो। तरै कह्यो, महाराज कंवरजी, सावज[११] बैठ्यो छै। तरै जगदेवजी ल्हेस[१२] काढि चिलै आंणी[१३] नै कह्यो, नाहरी, तूं रांडरी जात छै,

१ पर्वत के चारों ओर। २ घूम, चक्कर। ३ रोम, एक बाल भी बांका न हुआ। ४ बड़ी जंगी, बहुत बड़ी बीहड़। ५ चले। ६ कुत्ता—कुतिया। ७ दोनों। ८ सपत्नीक। ९ दांये, बांये। १० ठीक बीच में। ११ जंगली जानवर, सिंह (श्वापद)। १२ सेल, भाला। १३ चिल्ले पर चढ़ाया, वार करने के ढंग से सम्हाला।

तूं हत्या मती चाढे,[1] मारगसू उठिनै डावी जीमणी टलि वैसि।
इतरो नाहरी सवद सुणितसमी[2] पूंछ पटकि धरतीसू मूंडा लगाय
उछलनै पड़ै, तिसै ल्हैस छोडी। तिका सामी टीकै[3] लागी नै लदारा[4]
कांनी पार उतरी। नाहरी उछली नै पांवडा १० ऊपरा पड़ी। जीव
निकल गयो। आघा चाल्या तो नाहर बैठ्यो छै। ल्हैस चिल्है आणि
कह्यौ, डावो जीमणो होयजा नहीं तो गंडकड़ी मिलैलो[5]। तिसै नांहर
पूंछि पछाटि धरती मूढ़ो दे नै उछल्यौ। तिसै ल्हैसरी दीधी। तिको
लागी टीकै मांहे नै मूलद्वारै नीकली। तिका पांवडा २० ऊपरा पड़ी।
तरै जगदेव कह्यौ, बापड़ा[6] गरीब जिनावर मार्या, हत्या चढ़ी। तद
चावड़ी कह्यौ, महाराजकंवार, राजांरी सिकार छै।

यों बातां करतां टोकड़ीरै तलाव आया। बड़ पीपल घणा छै; जल
लहर्यां ल्यै छै। तठै जाय घोड़ासूं उतरिया,हथियार खोल्या,गंगाजली[7]
बादलो जलसुं भरि लाया। घोडांरा लालीया[8] छांट्या। आप आख्यां
छांटी, कानांरा गोख[9] छांट्या। चावड़ी मुख धोयो, ठंढाई कीधी। तरै
लारै बीजजीसूं बात मालूम कीधी, कंवर जगदेवजी पाधरै मारग
खड़िया। तरै राजजी रीस कीधी नै कह्यौ, असवार २५ सिलह बग-
तरिया होय बंदूखां तीर बांधि करि जावो, लाभै जठै लाकड़ी देनै
आवज्यो। धायौ[10] नाहर छै, दोय आदमी दोय घोड़ा भखनै पांणी-
री तीर सूतो हुसी। धाया नाहर छै थानै डर कोई नहीं। तरै असवारां

---

१ लगावे। २ सुनते ही। ३ ललाट में। ४ गुदा-द्वार। ५ कुतिया (सिंहनी) की गति को पावेगा। ६ बेचारे। ७ झारी। ८ फेन, झाग, दूर किये। ९ कानों के गावाक्ष (विवर)। १० तृप्त हुवा, पेट भरा हुआ।

चढतां सगला साथसूं राम-राम करि रोजगार-लूणरी तासीर चढियो[1] जोइजै, पिण पाछा आवणरी कांई आस न छै। चढिया डरता २ जायै छै । आगे नाहरी नाहर पड़िया दीठा, मूवा । ल्हेसां दोनूं ही उरी लीधी ।राजी होय लारां दोड़िया । असवारां जाय जगदेवजी सूं मुजरो कीधो। चावड़ी ऊलख्या,[2] घररा राजपूत दीठा । पाछे मेलिया। तिके समाचार कह्या नै रजपूतां कह्यौ, महाराजकंवरजी पृथ्वीरो गायाँरो धरम लीधो। कालरा वरखा[3] किणीं राजा ठाकुरां सूं मूवा नहीं। इसौ पृथ्वीरो दुख राज बिना कुण काटै। इतरौ सुणतसमो रजपूतांने सीख दीधी नै कंवर दिन आथमियै सहिर मांहे आय खाणां-दाणांरी कीधी नै टको १ देयनै घोडाँ रै खुर्रो करायो। रातब दाणों दिरायो। हाटां मांहे डेरो कीयो। रुपिया ४ लागा। यों मजलांरा मजलां चालतां २ पाटण आया। सहसलिंग[4] तलाव सिद्धराव जैसिंघदेजी करायो छै, तिणरी पाल ऊपरां मोटा बड़ छै, तिण हेठे घोड़ासूं उतरिया। घोड़ांने टहलाया, लोयलियां छांटिया, पाणी दिखाइयो। घोड़ा कायजें[5] हुवा ऊभा छै, चोकड़ो चाबै छै। कुं तोसो[6] थो तिको काढि दोनूं ही सिरावणी[7]

---

१ रोजगार और नमकहलाली के कार्य में चढ़े। २ पहचाना। ३ काल (यमराज) के बरसाये (पैदा किये हुए)। ४ सहस्रलिंग महादेव का मंदिर और उससे लगा हुवा उसी नाम का तालाव, जयसिंह देव सोलंकी के इतिहास में उसके बनाये हुए मन्दिर और तालाव का विवरण है, देखो नैणसी मूंता का सोलंकियों का इतिहास। ५ एक साथ जोड़े हुए दो घोड़े। ६ संबल, परिश्रम निवारणार्थ यात्रा में खाद्यपदार्थ। ७ कलेवा।

कीधी। तिसै जगदेवजी कह्यौ—चावड़ीजी, राजि घोड़ां लियां अठै विराजिया रहिज्यो, हूं नगर मांहि जाय काई हवेली भाड़ै ले पछै राजनै ले जावस्यां, नै बेहू जणा साथे फिरता डूंब-डूंबणी[१] ज्यूं फिरता रूड़ा[२] न दीसां। तरै चावड़ी कह्यौ—पधारीजै। तरै जगदेव तरवार कटारी लेनै नगर मांहे हवेली भाड़ै पूछै छै। अै तो सैहर मांहे सिधाया छै नै चावड़ी तलावहीज छै।

इतरै अठै सिधराव जैसिंघदेवरो माहिलवाड़ियो[३] डूंगरसी कोटवाळ पाटणरो छै। तिणरो बेटो एक लालकंवर। तिको मोटियार छै। परण्यो तो छै, पिण मोटूयार, पाटणरै कोटवाळरो बेटो नै माहिलवाड़ियो छै। तठै पाटण मांहे पातरांरा[४] पांचसै घर छै। तिण माहें एक जांबवंती पात्र छै। तिणरै सागरद[५] सहेली घणी छै। छोकरी छोकरा घणा छै। मालरी धणियाणीं[६] छै। तिणरै कोटवाळ रो बेटो आवै। तिणरो सागरदसूं रमै[७]। एकै दिन कह्यौ, जांबोती, काई निपट फूटरी[८] चतुर कुळवंती बालक-बरसां[९] मांहि इसी काइक मिलावै तो खवास[१०] करूं, नै तोनै निवाजूं[११]। जांबोती मुजरो करि आरे कीधी। आपरे चाकरांनैं पिण कहि राखियो छै। जांबवंतीरी सहेली पिण पाटण माहें देखती चोवती[१२] फिरै छै। आछी अस्त्री जोवती[१३] फिरै छै। तिण समीयै जांबोतीरी छोकरी पाणीरो घड़ो

---

१ ढाढ़ी-ढाढ़िन की तरह। २ भले। ३ राज्य महल का नौकर। ४ वेश्याओं का। ५ नौकर, शिष्य, शागिर्द। ६ स्वामिनी। ७ रमण करता है। ८ सुन्दर। ९ बाल्यावस्था में। १० मरज़ीदान, स्नेहपात्री। ११ प्रसन्न होऊं। १२ भालती, खोजती। १३ खोजती हुई।

लेनै दोपारां[१] सहस-लिंग तळाव आई। आगे चावड़ी मुकनों मूंढ़ो ऊपरांसूं परो करि बैठी छै। आदमी फिरतो कोइ दीठो नहीं, तद मूंढ़ो उघाड़ जळरो तमासौ देखै छै, वळे कमठाणों[२] देषै छै। तठै गोली[३] पिण उणरै कह्यै चोघती फिरै छै। तद चावड़ी दीठी, इन्द्ररी अपछरा, हजार चन्द्रमांरी सोभा दीसती देषनै हैरान हुई। घड़ो लियां चावड़ी कनै आई। मुजरो कीयो। पूछियौ, बाईजी कठां सूं आया नै घोड़ांरा असवार सिध पधारिया छै। तरै चावड़ी कह्यौ, हूं उदियादीत राजा पंवाररा छोटा बेटारी परणी छूं। वळै गोली पूछियो जेठ छै। कह्यौ, रिणधवळ। तरै गोली कह्यौ, बाईजी, कंवरजी रो नाम कासूं। चावड़ी कह्यौ, गैली, घररा धणींरो नांम कदेई कैई कह्यो छै। गोली कह्यौ, कै श्री करताररो नांम कहीजै कै भरतार रो नांम कहीजै। आप तो देसोत छो। तरै चावड़ी कह्यौ, कंवर जग-देवजी। वळै गोली बोली, आपरो पीहर कठै छै। चावड़ी कह्यौ, टोडै राजा राजरी बेटी, बीजरी बहिन, चावड़ा छै। तरै गोली कह्यौ, कंवरजी मांहे पधारिया छै, नै घोड़ांरी रखवाळ रखावज्यो। तरै चावड़ी कह्यौ, उण काळा पहाड़रा घोड़ा सामौ जोवे कोई नहीं। वळै गोली कह्यौ, मोटां राजारा कंवर एकेला कुं निकळिया। तरै चावड़ी कह्यौ, मांईसूं रीसाय नै निकळिया छै। लारली[४] बात सगळी कही गोलीनै और गोली सगळी बात ले मुजरो करि[५] पाणी भर घरै आई। जांबवतीनै कह्यौ, कदेई कंवरजीसूं मुजरो करो। इकेली बेटी

१ दोपहर के समय। २ भवन-निर्माण, कारीगरी। ३ दासी। ४ पिछली। ५ प्रणाम करके।

घोड़ा दोय लियां बैठी छै। धू रै मंडलै,[१] वैर[२] जात न दीठी। कहता जिसी छै। और जात, जेठ, सुसरो, धणी, पीहर सगला बताया। तरै जांबोती कपड़ा आछा पहिर पलमादार गुजराती गैहणा पहिर्या, रथ जूतर्यौ[३] जलूसदार। मांहे बैठी चिक पड़दा दे नै। छोकरी आपरी पराई २०/३० पाखती लीधी। चाकर पंचहथियार साथे लीधा। एक मालजादो[४] खोसरो[५] थो, तिको दोजो [illegible] घोड़े चढ़ि लीधो। तिका चावड़ी बैठी थी तठै चाली चाली आई। परेच[६] आडी खंचाई नै जांबोती कह्यौ, बहू, ऊभा हुवौ मिलां। हूं थाहरी भूवा-सासू छूं। मोनै इण बडारण[७], थांसु बात करि गई थी, तिकै मोनैं कह्यौ। तरै हूं महाराज सूं मालूम करि रथ जोताई नै आई छूं। थांनै भतीज जगदेव परणियां टोडै, जरै हूं नाई[८] थी। तिणसूं थे ऊलखो नहीं नै नैतौ रिणधवल री मा मेल्यो थो। भतीज जगदेव कठै सिधाया नै थे मोटे घररा छो अर मोटे घर आया। आ बैसणरी जायगा आपणीं नहीं। तरै चावड़ी देख भरममें आई, कदेही कंवरजी सिधराव री सगाई री बात कही नहीं नै राजारा राजा सगा होसी, यों जांण कपड़ो गैहणो तरै[९] देखि पगे लागी। आसीस दीधी नै कह्यौ, बहू रथ विराजो, भतीज अठै आयो रहसी। नफर[१०] एक अठै ऊभो राखिस्यां तिको दरबार ले आवसी। खोजां नै कह्यौ। घोड़ा नफरां

---

१ ध्रुव मंडल में, पृथ्वीतल पर। २ स्त्री। ३ जुतवाया। ४ मालज़ादा, कामी, दुश्चरित्र पुरुष। ५ वेश्याओं का दूत। ६ कनात, तम्बू। ७ राज्य महल की बड़ी, प्रतिष्ठित नौकरानियाँ। ८ नहीं आई। ९ ढंग। १० नफ़र, नौकर।

नें सुंपणा मांड्या। तरै चावड़ी थेली दोनूं ही उरी लीधी। रथ बैठाय नै रथ खड़ियौ। तिसै खोजांने बडारण साथे कहाड़ियो[1], आदमी अठे एक ऊभो राखो, जगदेव आवै जरै साथे लेनै बेगो आवै। यों करि नै घरै आई। घर मांय पोलीदार[2] छै जठै मांय आघो रथ छोड्यौ नै जांबोंती उतरी, चावड़ी उतरी। तिसै मांहेसूं सागरद थी तिका बडी पोसाख कीधां सामी आई। क्यां[3] मुजरो कीधो, कै पगे लागी, केई सहेली खवास[4] हुई खमां-खमां[5] करती आगै चाली। मांहे गई तरै ऊभौ[6] मालियो निपट बेबाह[7] छात बंधी छै। पाखती कली[8] ऊपरां सोनेरी चित्राम जाली काच जड़िया छै, जाणै सागै[9] हीरा जड़िया दीसै। तिसीहीज बिछायत ऊपरां गाव-तकिया[10], बगल-तकिया, गींदवा[11] बादैला[12] पास्वा[13] मसंद[14] ऊपरै पड़िया छै। तिण मालियै लेनै बैसाणी। तरै थेली दोय मंगाय नै राखी। गरम पांणी दिराया नै तिसै एकै छोकरीनै कह्यौ, जा श्री महाराजा सूँ मालूम करि, म्हांरो सागी भतीज जगदेव अठै पधारियो छै, महाराजा घणी गोर करावज्यो जी। आवै छै तरै पगे लागसी जी। सजोड़ै छै। चावड़ी म्हारै महिल छै। छोकरी मुजरो करि घड़ी दोयनै आय कह्यौ, महाराजा घणा खुस्याल हुवा नै फुरमायो छै, आवत-समो भूवा सूँ

---

१ कहलवाया। २ दरवान, द्वारपाल। ३ कइयों ने। ४ नौकरानी का रूप बनाकर आई। ५ 'खमा खमा' ये शब्द प्रजा द्वारा राजा के अभिवादन में मारवाड़ में बोले जाते हैं। ६ ऊँचा महल। ७ अर्थ संदिग्ध है। ८ दीवार पर की हुई कलई। ९ सचमुच। १० गाल रखने के तकिये। ११-१२-१३ नाना प्रकार के तकिये जो सौख्यपूर्ण घरों में मिलते हैं। १४ मसनद, गद्दा।

पछै पगे लगावज्यो । एक वार म्हांसूँ मिलावज्यो । तितरै जीमण तयार हुवो । तरै जांबोंती कह्यो, बहू, संपाड़ा[१] करो, ज्यां[२] जीमां। चावड़ी कह्यो, मोनै पतिव्रता धर्मरो पण छै, कंवरजी आरोगियां पछै आरोगणरी बात। तिकै तो अजेस[३] पधारिया नै छै । तिसै एकै छोकरी आय कह्यौ, बहूजी साहब, राजरो भतीज जगदेव मुजरो कीयो छै। नै महाराजा कनै पधार विराजिया छै । महाराजारै रसोड़ै थाल पधारियो थो। तरै जांबोंती कह्यौ, जा उतावली जगदेव अबाय[४] तो होय जिसी, महाराजा साथै आरोगिया छै कै नहीं तो म्हाराजा सूँ अरज करि तेड़ ल्याव, भूवा भतीजो भेलाही जीमस्यां। जिसै इणरै ही थाल ल्याया । तरै जांबोंती कह्यो वे कू (कूवे ?) पराडां[५] जगदेव भतीज आयां पेहलां हूषा जूटण (?) नूँ बैसूँ। आरोगियां ही खबर आवै जरां पछै जीमवाकी बात। तिसै छोकरी जाय आई। बहूजी साहब, महाराजरै साथै सांपड़िया नै बडे थाल दोनूँ सिरदार जीमतां देख आई छूँ, पिण रावलो भतीजो होय तिसौ हीज रूप रंग मांहे सांवला छै। जावोंती कह्यौ, आ तो म्हारा घररी खांन[६] छै, भाई उदियादीत पिण रंग मांहि सांवला छै, पिण म्हारा घर जिसो रूप कठैही न छै । इसी भाँति बातां करि चावड़ीरो मन

---

१ स्नान। २ जिससे। ३ अब तक। ४ ले आ, बुला ला। ५ यद्यपि इस वाक्य की भाषा, लिपिकार की गलती से समझ में नहीं आती, परन्तु आशय इस प्रकार समझ में आता है—तब जाम्बवंती ने कहा, जगदेव भतीज के आने से पहले अन्न को छूने (हूँषा जूठण) बैठना (मेरे लिए) कूए में पड़े (कूवे पराडां)। ६ घराने की विशेषता।

परघलायो[१] । थाल दीधो, बहू आरोगी । तरै क्यूँ जीमी क्यूँ न जीमी, थाल छोकरी उठाय लियो । अबै बातां पूछणी मांडी । तीजो पहर आयो । चावड़ी कह्यौ, कंवरजी मांहे भूवाजीसूँ मुजरो करणने पधारीया नहीं । तरै जांबोती कह्यौ, जा ए छोकरी, भतीजने तेड़ ल्याव[२] । जांबोती बहूने बातां लगाई । तिको जगदेव बिना तो बातां अलूणी[३] लागै छै । तरै छोकरी घड़ी-दोय पछै आय कह्यौ, महाराजा उठण दै नहीं । कह्यौ, राति पोहर एक गियां पोढणनै आवसी, तरै भूवासूं मिलि लेसी । इतरो सांभल रीस कीधो, महाराजा सूं अरज करि, परभाते घणी बातां करिसी, पिण अबार मिलण रो हुकम हुवै । छोकरी भलै[४] घड़ी-दोय नें आई । आगे कह्यौ त्यूंहीज कह्यौ ।

तिसै दिन मंदिर पधारियो[५] नै लालकंवर नै कहायो, आज म्हारो मुजरो छै । रात पोर एक गियां बेगा पधारिज्यो, आपणे बस छै । खवास चाहो तो खवास राखज्यो, नहीं तो हूँ सागरदां में राखस्यूं । अबै लालकंवर अमलांरा जमाव[६] मांडिया, गलियो गुलसरो[७] छूटो अमल कियो । पछै बत्तीसौ कसूंभो मिश्री माहें कढाय पीधो । मुफर[८] माजुम लीधो । पछै दारू रुपया ६० सेर लाभै तिको अधेला भर ल्यै तो चार पांच सेररो पीवा कै चांकां रहै[९], तिणरो प्यालो पईसां च्याररो लीधो । पछै पोसाख

---

१ पिवलाया । २ बुला ला । ३ नीरस । ४ फिर । ५ दिन अपने घर गया, सूर्य अपने मन्दिर (मंदराचल, अस्ताचल) को गया, सूर्यास्त हुआ । ६ अफ़ीम जमाना (खाना) शुरु किया । ७ गुलछर्रा । ८ मुख के स्वाद के निमित्त किसी पेय पर खाने का पदार्थ । ९ चार पाँच सेर शराब पीने के बराबर मस्त रहे ।

गहणो पहिरियां, सूंधो[१] चोवो अतर लगाय कस्तूरीरी कंठी बणाइ, सेलरा थेगा दे[२] तोडूंकतो-तोडूंकतो[३] आयो। बतक[४] एक सेर दारू सूं भरी रुपया ६० सेर वालो। तिको ले पान फूल मिष्टान लेनै आयो। तिसै गोल्यां बोली, बहूजी, वधाई देज्यो कंवरजी पधारिया। चावड़ी जाण्यो पधारिया तो घरा। तिसै मालियेरै बारनै आयौ ज्यूं निजर और दीसै। तिलरे छोकरी दारूरी बतक पांन मिष्टान मसंद ऊपरां मेल्हि पाछी हीज घिरी। जाती कीवाड़ जड़ि बाहररी सांकली दीधी। चावड़ी देखै तो दूजो। तरै मन मांहे जाणियो कोइक तो दगो दीसै छै नै हूँ अखीरी जात, औ मरदरी जात नै अमलां मांहे असुर[५] दीसै छै। इण आगै म्हारो धर्म राखणो छै, तो कपटसूं करणौ। यूं जाणि नै ऊभी हुई नै कह्यौ, कंवरजी आघा पधारो, ढोलिये विराजौ, इण अखी कह्यौ। तरै लाल कह्यौ, चावड़ीजी राजि विराजो। रूप देखि नै गोलो रीझ गयो। इण पिण नैणांरा बांणां सूं बींध नाख्यौ, पांणी ज्यूं हो गयो। लाल कंवर कह्यौ, म्हांरी जांबोती बडी चाकरी कीधी। चावड़ीजी, अै मालजादी छै। मैं यांनै कह्यौ थो, कुलवंतो रूपवंत चतुर बालक काई मिलावै तो खवास थापूं। तिसा हीज थे छौ। मोनै हुकम करस्यो सो करस्यूं। तरै चावड़ी जाण्यो म्हारी साली मालजादी मोसूं घणो दगो कीन्हो नै मोनें जोर भोलाई[६]। तरे चावड़ी बतक प्यालो हाथमें लीधां दीठो, अमलां

---

१ सुगन्धित द्रव्य। २ ठेंक देता हुआ, सहारा लेता हुआ। ३ सांड की तरह ताँडता हुआ, नाद करता हुआ। ४ वत्तख, शराब पीने की सुराही। ५ दैत्य के समान। ६ बड़ी आपत्ति में डाला।

मांहे आंधो दीसै छै। तरै प्यालो दारूसूं धकधक छलियो[१] नै आघो हाथ कियो। कंवरजी, आघो हाथ करि म्हारो हाथरो प्यालो लीजै। तरै लाल कह्यौ, ओ पईसां दस भर नै बीजो पांच अथवा सात सेर दारू अमलां पौंचै छै, तिको अजे निपट चाक हीज छूं नै प्यालो निपट करड़ो छै नै बातां करणी छै। चावड़ी कह्यौ बातांरी किसी फिकर छै, पहिली बार म्हारो हाथ ठेलो[२] मति, घूं जिको ल्यौ। मोनैं ही बातांरो कोडि[३] छै। इतरो कह्यौ, तरै प्यालो लीधो। तरै घूजते हाथ लालकंवर प्यालो भरि नै चावड़ीनै दीधो। चावड़ी घूंघटो करि कंचू[४] मांहे ढोल[५] दीधो नै खंपारो कीधो, थूकियो। तिसै दूजो प्यालो चावड़ी वळै भरियौ। जाणियो गोलो अजे सपगां[६] छै। दारू आयो तो खरो[७] पिण लोटपोट न हुवौ। तितरे चावड़ी प्यालो आधो कीधो। तिको गोलानें दारू आयो। वळै प्यालो मूँढ़ै लाग्यो। तरै दूजौ प्यालो लेतसमें ढोलिया ऊपरी पाधरा पग करि दांत तिड़ाय[८] नै पड़ियो। चावड़ी उणनें अमलां मांहे बेखबर देखि, तरै उणरीही तलवार काढि गळो कीधो[९]। हाथ जुदा जुदा काटिया पगांरा जांघाँरा जुदा २ तखता कीधा। करनें चांदणी[१०] मांहे धड़ देनै बांधियो। ऊपरां पिलग-पोस वींटीयो[११]। तिण ऊपर जाजम छोटी थी, तिकी वींटी। गांठ गाढी सैंठी[१२] बांधी। तिण झरोखे नीचै राज

---

१ लबालब भर लिया। २ रोको। ३ चाव। ४ कंचुकी, कांचली अंगिया। ५ गिरा दिया। ६ सुधिवान्, होश सहित। ७ शराब का नशा आया तो सही। ८ निकाल कर। ९ गळो कीधो (मुहा०) = गला काट डाला, मारडाला। १० बिछाने की जाजम। ११ लपेट दिया। १२ जोरदार।

मारग निकलै छै। तिको रात आधीरो समीयो थौ, तिसै चौकीदार चौकी देता आय निकलिया। आगे गांठड़ी दीठी। देखिने जाणियौ किण एक साहूकाररी हाट फाड़ी,[१] तिको चोर म्हांरां डरसूं गांठड़ा नाखि न्हाठा। म्हांरो मुजरो होसी। उपाड़ै[२] तो भार घणो। मांहो माहें[३] कह्यौ, कै तो बादलो पारचो[४] कै नीलक घणोसो माल दीसै छै। खोलो मती। दिन ऊगां दरबार वाहर घालण[५] नै आसी, तिणसूं बांधी ज राखौ नै कोटवाळी चौतरै[६] मेलौ। तरै राजी थकां गांठड़ी मेली। दिन ऊगां मुजरो होसी। अबै चावड़ी गाढी सैंठी मरणरूपी होय बैठी छै।

हिवै जगदेवजी हवेली भाड़ै लेनै पाछा घोड़ांरी ठौड़ आवै तो चावड़ी, घोड़ा दीसै नहीं नै रथरा खोज दीसै। तरै जाणियो चावड़ी नै कोइ भोळाय[७] नै लेगयो। तरै दरबार जाय कहूँ। तरै दरबार आया। आगै ठावा लायक सहाणी[८] घोड़ांरी पायगा बिचै बैठा छै। तिणसूं राम २ कीधी। तरै सहाणी लायक ठावो वणायतो डील देखि उठि मिलियो। पूछियो किठासूं आया नै आगै किसै गांव पधारस्यो। तरै जगदेवजी कह्यौ, अठातांई सेवा करण ने सेर बाजरीने आयो छूँ, पंवार रजपूत छूँ। तरै साहणी कह्यौ, जो घोड़ांरी जाबता[९], रातब, उड़दावो[१०], घासरो जाबतो करावौ तो

---

१ दूकान तोड़ी, दूकान तोड़ कर चोरी की। २ उठावे। ३ मन ही मन। ४ कीमती चाँदी की झारी अथवा अन्य बहुमूल्य पात्र। ५ फरियाद करने, कूक मचाने। ६ चौकी पर। ७ छल कपट करके। ८ घोड़ों का रक्षक। ९ बन्दोबस्त। १० सेवा।

अपे[१] भेला रहां। रुपिया ३०) रो महीनो लियां जावो नै म्हारे रसोवड़े जीमो। जगदेवरो जीव तो थिर नहीं, पिण जाएयो राजरो सहाणी हजूरी छै। तिसै सहाणी कह्यौ, थानें महाराज रे कटूमां लगावस्यां[२]। तिसै थाल परुसियो सहाणी रै आयो। कह्यौ, जगदेवजी, अरोगो। तिको धान भावै तो नहीं; पिण उण देखतां अरोगिया। थाल परो ले गया। रात पड़ियां पायगा माहें होज ढोलियै उपरै आडा-तेडा[३] हुवा।

तिसं दिन ऊगतै कोटवाल कचेड़ी आय बैठो। तदि चाकरां बहिलायतां[४] मुजरो कियो, गांठड़ी दिखाई नै कह्यौ, आपरै परतापसूं म्हारे लोह कोई पचीयो[५] नहीं, धाड़ी-री-धाड़ी[६] चोरां री थी, पिण म्हे रावला रिजक[७] ऊपरां रांमजीरो नाम लेनै हाक करी, चोरां ऊपरि राल्या,[८] तिसै[९] चोर गांठड़ी नाखि न्हास गया। कोटवाल राजी हुवो,कह्यौ, देखो गाठड़ी मांहे कासूं छै। जदै पयादां[१०] उतावलां मुजरायतां[११] खोलणी मांडी। जठै तीजो वट[१२] खोलै तिठै लोही लागो दीठो। सगला चमक्या[१३] नै वीटणो उघाड़ै तो मांटी-मारयो[१४] निजर पड़ियौ। तिसै कोटवाल ऊलख्यो नै कह्यौ, रे म्हांवालो

---

१ अपन, हम दोनों। २ राज्यकुटुम्ब में नौकरी लगा देंगे। ३ आड़ा टेढ़ा, थोड़ा आराम। ४ कृपापात्रों ने। ५ म्हारे लोह······नहीं = हमारा लोहा किसी को बरदास्त नहीं हुवा। ६ धाड़ की धाड़, डकैतों की बड़ी सेना। ७ नौकरी। ८ चोरों के ऊपर पड़े। ९ जिससे। १० पायकों ने, पैदल सिपाहियों ने। ११ कृपाभिलाषियों ने। १२ परत। १३ चकराये। १४ हतभाग्य।

लालड़ो[1] दीसै छै, रे दौड़ो खबर करो। चाकरां कह्यो, कवरजी तो महलां मांहे पोढिया छै। तरै मांहे खवास ने पूछियो। तरै कह्यो, रात पोर एक गयां जांबोती पात्ररै घरे सिधाया था। तरै आदमी बोल्या, पात्रने पूछियो। तरै पात्र बोली, मालिये मांहे घणै सुख मांहे छै। पयादां कह्यो, आ।व बुलावै छै, परा जगाय। तरै दासी ऊँची जाय किंवाड़ांरी छेकड़[2] मांहि मूढो घालि नै कह्यौ,चावड़ीजी कँवरजीने जगाय उरा मेलो। तरै चावड़ी भूंजती[3] बोली, मालजादी रांडाँ, थारे बापने जरै ही मारि गांठड़ो बांधि झरोखेरै मारग नाख दीधो। मो चावड़ी सूं इसो चज[4] करो, जो कठेही कँवरजीनै खबर हुई तो थांरो नाम कहिसो अठै मालजादियाँरा घर था, थां मांहे घणी कुपीच[5] होसी, थांरो सत्यानास नारायण गमै,[6] मो कने गोलाने मेल्यौ। इतरी बात सुणत समों राँडाँरा जीव उडि गया। चाकरां सुणियो, तरै दौड़ जायनै कह्यौ, जांबोती काई चावड़ी रजपूताणी चज करि आंणोथी। तिण लालजीनै मारियो। तरै कोटवाल उकलते कालजे[7] आदमी सौ दोय ले नै पात्ररै घरै आयो। मालियै चढिया। आगै बारणे रा किवाड़ सैंठा[8] दीठा नै बारी एक पसवाड़ा[9] री भीतीं माहे थी, तिण कांनी निसरणी देनें मालियै माहिं जावणनें मूंढो आघो घालियो। तरै चावड़ी झटका री दीनी, तिको मालियै माहें माथो पड़ियो नै धड़ पाछो सूदावाणो[10] घट दे[11]रो धरती पड़ियौ। यों आदमी ४-५ मारिया। अबै किण ही

---

१ लाल कुंवर। २ छिद्र, दरार। ३ जलती भुनती हुई। ४ छल, कपट करके। ५ यातना। ६ खोवे। ७ व्याकुल चित्त से। ८ जड़े हुए, ढके हुए। ९ पास की। १० सीधा होकर। ११ धमके के साथ।

री आंगवण[१] हुवै नहीं। हलचलो[२] हुवौ। तिको सिद्धराव जैसिंघ नै खबर हुई, काई चावड़ीसूं मालजादो दगो कियो थो, तिको राते लालूनै मारियो, अवारू[३] पाँच आदमी मारिया, मालिया रा किवाड़ जड़ बैठी छै। राजा कह्यौ, कोई उणनै कहो मती, म्हें पधारां छां। तिसै राजा पाला[४] लेनै आप घोड़े असवार होय चाल्या। तरै सहाणी लूंब[५] झाली। तरै जगदेव पिण बात सुण राजी हुवौ। तरै दूजै कांनी लूंब जगदेव झाली। राजा जगदेव नै देखै छै, इणनै म्हें कदेई दीठो। यों राजा विचारतो वार वार जोवतो पात्ररै घरै गयो। सहर रो लोक साथे हुवौ। मालियै ऊँचा महाराजा, सहाणी नै जगदेव तीन आदमी चढिया। तिठै राजा बोल्यो, बेटी चावड़ी, थारो पीहर किसै नगर नै किणरी बेटी छै, नै थारौ सासरो किसै नगर छै, सुसरा रो नाम खांप कासूं छै। तरै चावड़ी जाणियो कोई मोटो लायक दीसै छै, इण आगे कह्यौ चाहीजे। तरै कह्यौ, बापजी, पीहर तो नगर टोडै छै। राजा राजरी धीव[६] छूं, वीजकँवररी बहिन छूं, सासरो धार नगररो धणी, जाति पंवार, राजा उदियादीत रै लोहड़ा[७] बेटारी अंतेउर[८] छूं और पाछली सगली मांड़नै[९] बात कही। मोनें छल करनै मालजादी रांडां ल्याई। पछै म्हारो धरम खोलणनें[१०] गोलो आयो। तरै गोला नै मारियो, नै बापजी, रजपूतरी बेटी छूं, घणां ने मारिनै

---

१ आगमन, आगे बढ़ने की हिम्मत। २ हलचल। ३ अभी। ४ पैदल सिपाही। ५ शाही घोड़े की सजावट के लटकते हुए इधर उधर के रेशमी फुन्दे। ६ पुत्री। ७ छोटे। ८ स्त्री, पत्नी। ९ ब्यौरेवार। १० भ्रष्ट करने को।

काम आविस्यूं। जीव ऊपरां खेल्यां ऊभी छूं। नै कँवरजी तो नगर मांहें छै। तरै जगदेव राजा आगै होय बारणै आय बोल्यो, चावड़ी जो किवाड़ खोलो, थे घणो अचैन[1] पायो। तरै साद[2] पिछांण किंवाड़ खोल्यो। जगदेवजीसूं मुजरो कियो। तरै राजा जाणियो, जगदेव ओ होज। तरै राजा कह्यौ, तू म्हारे धर्म री पुत्री छै। चाकरां नै हुक्म कीधो, थे पालषी १ दासी १० सिताब ल्यावो नै खालसारी हवेली दरबारसूं नेड़ी हुवै, तिण मांहे डेरो दिरावो। तिसै कोटवाल कह्यौ, म्हारी घररी गमाणहार[3] नै कासूं फुरमावो छो। राजा कह्यौ, तोनैं सहर इसा कुकरम करणनैं भोलायो[4] छो? इतरो कहि कोटवालीसूं दूर कीधो नै मालजादी तितरी[5] थांणे पकड़ मंगाई, कांन नाक काटि माथो मुंडाय पाटड़ा पाड़ि[6] गधै चाढि सहर भदर[7] कीनी। घर लूंट लीना। अबै चावड़ीनै सुखपाल[8] बैसाण दासी पाषतीं हुवां हवेली माहें उतारिया। राजाजी साथै छै गरढौ[9] एक खोजो, नाम मियाँ मुस्ताक, दोढियाँ राख्यौ। बरस दिन रो धान चोपड़[10]रो आदमियाँ माफक सामों[11] राख्यो। पुखतो एक पोळियो राख्यो। मांयसूँ सुवागो[12] मंगाय दियो। पछै राजा जगदेव, सै[13] साथे करि दरबार आया। बैठा बातां करी। राजा निपट राजी हुवौ। उठै होज जीम्या। रात पोहर एक गई। तरै आया। भारो सिर

---

१ दुःख। २ शब्द, ध्वनि। ३ नष्ट करने वाली। ४ सौंपा था। ५ जितनी थी उतनी। ६ केशपाश उखाड़ कर। ७ लांछित। ८ पालकी। ९ पराक्रमी। १० घी इत्यादि, स्निग्ध पदार्थ। ११ सामान। १२ सुहाग सम्बन्धी मङ्गल समाग्री, जो सुहागिन स्त्री को भेंट की जाती है। १३ सभी।

पाव मोत्यांरी माळा, घोड़ो, कड़ा मोती देनै सीख दीनी। डेरै हवेली आया। चावड़ी सूं मिलिया। मोतियांरी माळा चावड़ीनै बगसी नै कह्यौ, म्हाराजा सूं राज मिलिया, नहींतर दिन १० तथा २० में किणीक नै कहिनै मुजरो गुदरावतो[१], तरै मिलणो होतो। यों वातां करतां रात्र गई। चावड़ी पतिव्रता, तिका निरणी[२] रही। तरै रात पाछिली पोहर एक रहीं जरै रसोड़ो कोधो। रात घड़ी चार रही तरै जगदेवजीनै जगाया। सेतिषानै[३] गया। हाथ पग ऊजिळा करि, कुरला करि दांतण कीनों। तारां[४] हीज थकां थाळ परूस दास्यां लाई। कंवर कह्यो, इतरो उतावळो वेगो थाळ कुँ। चावड़ी कह्यो, आपने दरबार राजाजी तेड़ावसी,[५] थाँसू राजाजी बात कीधी छै, तिको थाँ बिना घड़ी एक रहसी नहीं, नै मोनें ब्रत छै, आप आरोग पधारो पछै म्हारो जीमणो होसी। तरै जगदेवजी साँच जाणि भेळाही[६] आरोगिया[७]। तिसै घोड़ो ले चोपदार आय आवाज कीधी। तरै जगदेवजी सीख मांगी, घोड़े असवार होय हजूर गया। राजा उठि आदर दीयो। वातां करी। कह्यौ, चाकरी करस्यो। जगदेवजी कह्यौ, सेर बाजरीनै हीज आयो छूं। तरै राजा कह्यौ, पटो लेस्यौ कै कोरी वरतन (वेतन) लेस्यो। जगदेवजी कह्यौ, कोरी वरतन लेस्यूँ। हजार एक जीमंणी भुजारा, नैं हजार एक बामीं भुजारा। हजार दोय रुपिया देसी तिकेरी चाकरी करस्युं। विखमी अवढी[८] जाइगारी चाकरी करस्युं। तरै राजा

---

१ मालूम करवाता। २ भूखी, उपवासी। ३ पाखाने। ४ तारे। ५ बुलावागें। ६ एक साथ ही। ७ जीमे, भोजन किया। ८ विषम और टेढ़ी जगह की सेवा।

खानसांमाने तेड़ि कह्यौ, रुपिया हजार दोय हमेसा जगदेवजीनै कोठार सूं देज्यो। मास एक रुपिया हजार साठ दीयां जाज्यो नै सिरपाव दीधो। रोजगाररो परवानो करि हाथ दीधो। वले रीझ दे सीख दीधी।

अबं पाटण रावड़ा बड़ा उमराव कुस राखै छै[1]। एकै डीलरा दो हजार रुपिया दीजै छै तिको इकेलो किसो लाख घोड़ांरीं फौजां भांजसी, यों बातां करै। राजा तो जगदेव आवै तरै घणौ कुरब[2] करै। कन्है साम्हो बैसाणै, रीझ बिना सीख न द्यै। यों बरस एक नें जगदेवजीरे कंवर हुवौ। तिणरो नाम जगधवल दीधो। बरस तीन रे आंतरे वलै कंवर हुवौ। तिणरो नांम वीरधवल दीधो। घणां लाड-कोड कीजै छै। राजारी रीझां लीजै छै। पिण जगदेव काला गहिलारो दातार[3] छै। रुपिया हजार एकरो दान हमेसा करै। दातार-गुरु नाम षट्व्रन[4] कहै। इसी भांति रहतां बडो बेटो बरस पांच में हुवौ नै बरस दो मांहे छोटो बेटो हुवो। एक दिन भादवारी मेह अंधारी रात मच[5] नै रही छै। छरमर छरमर मेंह बरस नै रह्यौ छै। बिजली भलभलाट[6] करनै रही छै। इणी समै तिको रात आधी रो समो छै। तिको राजारै कान सुर पड़यौ। ऊगूण दिसो

---

१ द्वेष भाव रखते हैं। २ आदर। ३ काला गहिलारो दातार (मुहा० =आपत्ति (काला) के समय (गहिला) मार्ग का दिखाने वाला, आरतहरण। ४ छहों वर्ण, समाज की सभी जातियाँ, चार वर्ण+अस्पृश्य हिन्दू जातियाँ+विधर्मी जातियाँ। ५ झुक रही है। ६ चमचमाहट।

नें जणी[१] चार गावै छै नै केईक न्यारी अळगी रोवै छै। राजा सुण नें कह्यौ, जगदेव, थांरे कांन इण मेह मांहे कोई सुर और ही सुणो छो। जगदेवजी कह्यौ, महाराजा केईक बायां[२] गावै छै नै केईक रोवै छै। तिको सुणूं छूं। तरै राजा कह्यौ, इणारी खबर ल्यावो, कुं गावै छै, नै कुं रोवै छै। प्रभाते म्हांसू मालूम करज्यो। इतरो हुकम सुण जगदेव मुजरो करि ढाल माथा ऊपर मेलि नै चालियो। खड़ग हाथ मांहे ले नै चलाया। तरै राजा जाणियो इसी अंधेरी रात मांहे जायै के न जायै, यूं जाणि नें राजा पिण छानो[३] थको लारे हुवौ। तिसै चौकी पोहरे उमराव था, त्यांनै कह्यौ, चोकी किण किण री छै। जिकै उमराव था तिणरा नाम ले ले नै कह्यौ। तरै राजा कह्यौ, देखां ऊगूण दिसि नें कोई गावे छै, कोई रोवे छै, तिणरो विवरो[४] ल्यावो। तणैं किणीक उमराव कह्यौ, दिनरा दो हजार रुपया पावे छै, तिणनें कहौ, हिवरूं[५] तो ऊ[६] जासी। इतरा बरस हुवा फांसू[७] रुपिया ठोके[८] छै। इतरौ राजा सुणियो। तिसै उमरावां कह्यौ, महाराजा, खबर आंण नें कहां छां। मांहोमांहे ढोलियै सुता हीज कह्यो, फलाणा[९]जी फलाणाजी उठो जावो। इतरो कहि ढालांरा खड़भड़ाट[१०] करि पाछा पौढ रह्या। नै राजा तो उणांनै कही नै जगदेवरे लारां हीज हुवौ। हिवां जगदेव उणांरा सबद रै अणुसारै[११] चाल्यो जाय छै। राजा पिण छानौ छानो लारे छै। पोळ खुलाय बारै निकळियो। तरै राजा पोळियां

---

१ स्त्रियां। २ कन्याएँ। ३ छिप कर। ४ विवरण, ब्यौरा। ५ अभी। ६ वह। ७ मुफ्त का। ८ खाता है। ९ अमुक जी। १० खलबली। ११ पीछे, के अनुसार।

नै कह्यौ, हूं जगदेव रो खवास छूं मोनें ही जाण द्यो । तरै राजा पिण बारै आयो । आगे जगदेव रोवै छै त्यां तीरै[1] गयौ । तरै बोली, आवो जगदेव । कह्यौ, थे हिवारूं आधी रातरी रोवो छो, सो थांनैं कांइ दुःख छै । तरै उवै बोली, पाटणरी जोगणियां[2] छां, तिको प्रभात सवा पोर दिन चढतै सिधराव जैसिंहरी मृत्यु छै, तिणसूं रुदन करां छां । म्हांरी सेवा पूजा घणी करतो, सो अबै कुण करसी । तिणसूं रोवां छां । राजा पिण सुणै छै । तरै जगदेव बोलियो, उवै[3] गीत कुं गावै छै । जोगणी कह्यो, तू उणांने ही पूछ आव । तरै जगदेव उणां कनै गयो, ज्यूं उणां पिण कह्यौ, आवो आवो जगदेव । तठै राजा पिण ऊभो नैड़ो[4] सुणे छै । जगदेव पगे लागि नै कह्यौ, आप खंभायची[5] राग माहें सोलो[6] गावो छो, बधावो छो । सो थे कुण छो नै किसी बधाई खुस्याली मांहे गावो छो । जरे कह्यौ, म्हे दिल्ली री जोगणियां छां, जिकै राजा जैसिंह ने लेणनै आई छां । तिणसूं बधावा[7] गीत गावां छां । जगदेव कह्यौ, कुंकर मरसी । तरै जोगणी बोली, प्रभाते दिन सवा पोर चढियां राजा सेवा सारूं[8] संपाड़ो करसी, पीताम्बर पहर[9] बाजोट ऊपरै ऊभो रहसी । तरै कड़ँमांहि[10] तर[11] देस्यां नै बाजोट उलाल[12] देस्याँ । इण भांति देह छोडसी । तरै जगदेव कह्यौ, आजरी वेळा मांहें सिद्धराव

---

१ के पास । २ योगिनियाँ, दिशा अथवा प्रान्त की अधिष्ठातृ देवियाँ । ३ वे । ४ नजदीक । ५ राग विशेष, खम्माच । ६ बधाई का गीत विशेष । ७ बधाई के मङ्गल गीत । ८ पूजा के निमित्त । ९ पाट, लकड़ी का तख्ता १० कटि में । ११ तरी, सन्निपात । १२ उलट देंगी ।

जैसिंघ सो राजा बीजो कोई नहीं। किनी दान पुण्य धर्म कीधां कष्ट टलै। तेरे जोगणियां बोली, जो राजारा जोड़रो माथो आपरा हाथ सूं उतार म्हांने चाढै तो सिधराव की ऊमर बधै। जगदेव कह्यौ, जो म्हारो माथो ल्यो नै सिंधरावरी ऊमर वधारो तो म्हारो माथो तयार छै। तरै जोगणियां बोली, तूं राजासूं चढ़तो[1] छै, जो थारो माथो हाथसूं उतारि कमल-पूजा[2] करै नै म्हांनै चाढै तो राजा री ऊमर बढै। तरै जगदेव कह्यौ, घड़ी २ वा ३ राज अठै विराजि रहज्यो, म्हारे घरे चावड़ी छै, तिणांसूं सीख मांग नै आऊं, इतरे विराजिया रहज्यो। तरै जोगणियां बोली वैर (स्त्री) मांटी[3] नै मारण वेई[4] सीख कांकर देसी, पण भलां, तू वेगो आवज्यै, म्हे बाट जोवां छां। इतरो बात करि, जगदेव पाछो फिरियो। सिधराव जाण्यौ देखां पाछो आवै कै नावै, चावड़ी किण भाणी बोलै। राजा पिण लारै हुवौ। तिकै जगदेव घरे आया, पोल माहें पैठा, मालिये चढ़िया, चावड़ीसूं मिलिया। सिधराव जैसिंघ बातां सुणै छै। तिसा सलवा[5] बैठा छै। जगदेव कह्यौ, चावड़ोजी, एक बात इसो छै। तरै थेट[6] सूं मांडि नै बात कही। तिको थानै पूछण नै आयो छूं। चावड़ी बोली, धन दिन धन रात आजरा दिन नै महाराजारो रोजगार खावां छां सो भर देस्यां, माथा ऊपरै ही रोजगार पटो खेत दीसै छै। आप मोटी विचारी, रजपूतीरी वट छै[7] माथो पेट दूखनै ही मरै, तो धणियांरै सिर अदकै,[8] नै सिधराव जीवतो रहै नै राज करै तो पछै माथो

---

१ अधिक, बढ़ा चढ़ा हुआ। २ मस्तक-पूजा। ३ पति। ४ मारने के निमित्त। ५ चैन से, सुख में। ६ ठेठ, शुरु से। ७ व्रत, प्रतिज्ञा है। ८ काम आवे।

किसै काम आवसी। पिण एक अरज छै । राज पिछे हूं पिण जीवती रहूं नहीं नै दो तीन पौररो औवात[1] देखूँ नहीं। पिण माथो देस्यूं । तरै जगदेव कह्यौ टाबरांरो किसो सूल[2] होसी। तरै चावड़ी बोली, टाबर आपाँ भेला रहसी। इतरो सुण नै जगदेव कह्यौ, तो परा उठो, जेजरी[3] वेळा नहीं। एक बड़ो कंवर जगदेव काख मांहे लीनो नै एक चावड़ी लीनो नै माळियासूं उतरिया। सिधराव देखै नै माथो धूणे छै, धन्य २ रजपूत नै रजपूताणी नें । अै चारूं आगे चलिया जाय छै नै पाछे राजा छै । अै पाधरा जोगणियाँ कनै आया। राजा ऊभो सुणै छै। चारूं जणां नै देख जोगणियाँ बोली जगदेव थारो माथो चाढि। तरै जगदेव कह्यो, माता, म्हारा माथा बदळे सिधरावने किती उमर बगसौ छौ। तरै जोगणीं बोली, बारे बरस राज वळै करसो। जगदेव वळे कह्यौ तो म्हारी अस्त्री चावड़ी नै दोय कंवर प्यारा बारै २ बरस हुआ। अै पिण मो जिसा छै, तिणसूं सिधरावनै बरस अडताळीस बगसो। अै हूं चारूं सीस चाढसूं। जोगणियां इणरो साहस देखि नै वर दीधो। भलां २ कह्यौ। तरै चावड़ी बडा बेटानै झाली[4] नै ऊभो राखियो। जगदेव षडग काढ़ि नै पुत्ररो सीस छेदियो । नै बीजा कंवरनें ल्यावे, तिसै जोगणियां कह्यौ, इणरो सत साहस देखि नै राज बरस ४८ रो दीधो नै थारा महिल[5],बेटा बगसिया। अमी रो छांटो नाखियो । बडो कंवर उठि ऊभो हुवो। जोगणियां हस २ बोली, बरस ४८ रे

---

१ अहिवात, वियोग, दुहाग। २ हाल, दशा। ३ देरी की। ४ पकड़ कर। ५ महिला, स्त्री।

राजरो वर दे नै सीख दीधी । जगदे चारूंसूं घरे पधारिया । राजा ओ सत सामधरमाई[१] देखि नै निपट राजी हुवौ । महिल आया, पोढिया । धन्य जगदेव ४८ बरस रो राज दिरायो । नींद तो काइ नाई[२] । पाछिली रात घड़ी चार रही नै चोपदार खवास मेलियो तेड़नै । तरै जगदेवजी श्री परमेसरजीरी सेवा-पूजा करि घोड़े असवार होयनै दिन ऊगतसमां दरबार आया । सिधराव सिरै[३] दरबार बैठा छै । जगदेवनै देखि नै मंसद ताई[४] साम्हो आय मिलियो । बीजो सिंघासण मांडि बरोबर बैसाणियो । तरै उमरावांरै सामों जोयनै राजा कह्यौ, रातरी बातरी कांई खबर, गीत रोवणांरी हकीकत ल्यावो । तरै थानैं कह्यौ थो, तिण रो जाब[५] द्यौ । तरै उमराव बोलिया, हां म्हाराज, फुरमायो छो तरै ही फलांणसिंहजी[६] ढोकण[७] सिंहजी गया था सो बारै दोय गुढा[८] ऊतरिया था, नै एकण गुढ़ा मांहे एकण रे टाबर मुवो थो, तिणसूं दूपरी[९] करती थी, नै एकण रै जायो[१०] हुवो छौ, सो गीत गावती थी । आ रातरी हकीकत छै । तरै सिधराव जैसिंघ सामो जोयो । उमरावांरी बात सुणि नै राजा हँसियो नै कह्यो लाख लाखरा पटायत छो, सात खुरसीरा मींच[११] छो, थे खबर न ल्यावो तो बीजो कुण ल्यावे । तरै जगदेव नै राजा

---

१ स्वामि-धर्म, स्वामीभक्ति । २ बिलकुल नहीं आई । ३ दरबार के शिरोमणि होकर । ४ मसनद के छोर तक । ५ जवाब । ६, ७ अमुक अमुक व्यक्ति । ८ बनजारों का दल, चलते फिरते व्यापारियों का संघ । ९ रोना-पीटना । १० पुत्र-जन्म । ११ दरबार की सात कुरसियों को घेर कर बैठने वाले, सरदार, उमराव हैं ।

कह्यौ, रातरी बात कहो । तरै जगदेव बोल्यो, अै उमराव कहै त्यूंहोज थो । राजा कहै म्हारो सूंस[1] छै, बात छै त्यूं कहो । तरै जगदेव कहै, कांई ज्यादा दीठी हुवै तो कहूं नै भूठा लपराई[2] करणी आवै नहीं । गंभीरपणो देखिनै सिधराव बोलियो, भायां, उमरावां, आज सवापोर दिन चढियां मृत्यु थी । तिको बरस ४८ रो राज जगदेवजी दिरायो छै, सो हिवै राज करूँ छूं । आपरो, चावड़ीरो दोनूं बेटाँरो माथो म्हारे वास्ते देणां मांडिया नै बडे बेटारो तो माथो जोगणियां ने चाढियो । तिको इणरो सतधर्म नै चावड़ीरो पतिव्रत धर्म देखि नै पाछा बगसिया । कंवर जीवतो कीधो । सामध्रम देखि नै सगळा बगसिया, उमर दीधी । नै थे भूठ बोलिया इणमें कांई नफो दीठो । म्हें म्हारी निजरां दीठा नै कांना सुणिया ! थे इणरा रोजगार रो ईसको[3] करता जिको हमेस इणने लाखां कोड़ां दीजै तोही इसो राजपूत मिलै नहीं । इतरो कहि आपरी बडकंवार[4] पुत्री थी, तिणरो नाळेर[5] जगदेवजीनै दीधो । दोय हजार गांव दीधा, घोड़ा हजार दोय हाथियांरो हलको,[6] पालखी ११०० रथ २०० लाख एक रुपिया रोजीना कर दिया । घणो महत[7] बधारियो नैं सीख दीधी । घरे आया, चावड़ीने कह्यौ । तरै चावड़ी बोली, थे देसोत छो महिल[8] दो चार हुवै । थे भलो काम कीधो, मोटी सगाई छै । तरै जगदेवजी नाळेर झालियो । लगन साहो कीधो । दत्त दायजो घणों

---

१ सौगंध । २ लबारपना, वाचालता, आत्मप्रशंसा । ३ ईर्षा । ४ ज्येष्ठ पुत्री । ५ विवाह के प्रस्ताव स्वरूप नारियल । ६ झूल, झुण्ड । ७ महत्व, प्रतिष्ठा । ८ स्त्रियाँ, पत्नियाँ ।

दीधो। सिधराव जैसिंघजी नै जगदेवजीनें सरब लोक सरीखा करि मांनै।

तिसै बरस २।३ बीता नै जाड़ेचांरो सिधराव नै नाळेर आयो। डोळो[१] ले आया। परणिया। तिका जाड़ेची सूरतिमांहे निपट सखरी[२]। पदमणीं नहीं, पिण सरीसी दीसै। तिको देही सोरम[३] छै हीज[४], ५०० रुपयांरै सुंधामांहे नित संपाड़ो करै। तिकै सुंधामांहे जनाना परनाळा बहै। तठै भला भला भोगी भंवर हीसनाक[५] खसबोई[६] लेणनें ऊभा रहै। तठै रूप सुगं-धाईसूं काळो भैरूं जाड़ेचो रै महल हमेशा आवै। तिको सिधरावने हेठो[७] नाखि छाती ऊपरा पागो देनै जाड़ेची नै भैरूं सोवै। नै दूजी राणियांरै महिल भैरूं जाण दे नहीं। कहै, दूजी राणीरै महिल गयो तो उणहीज दिन मारस्यूं। तिणसूं डरतो जावै नहीं। जाड़ेचीरे महिल पोढ़ै नै रात आधी गयां भैरूं हमेशा आवै। इसी भांति रहै, सिधराव मांहे हेल[८] करै। तिणसूं राजा तूटै लागौ[९], पीळो पड़ियो। फिकर घणी, पिण कहिणी ना आवै। बागबाड़ो, खुस्याली, चूंप[१०] राजारी मिट गई। सारो दिन फिकर मांहे रहै। दरबार करै, बेषातर[११] सो बैसे। इण भांति मास ७ बीतां आधे डील हुवो। तिसं जगदेव दीठौ। आज हूं म्हाराजनें बेखातर

---

१ बड़े राजा को अपनी पुत्री व्याहने के लिए छोटा सरदार राजा के घर ले जाकर अपनी पुत्री व्याहता है, इसे 'डोला' की प्रथा कहते हैं। २ सुन्दरी। ३ सुगन्धित। ४ तो है ही, सही। ५ छैले। ६ सुगन्धि। ७ नीचे। ८ अवहेला, अपमान, यातना। ९ तूटै लागो (मुहा० = शरीर में घटने लगा। १० शरीर की रक्षा में सावधानी। ११ बेखबर।

री समाचार पूछस्यूँ। सांझ पड़ी, रुसनाई[1] हुई। जगदेव हजूर छै। रात पोर एक गई। सिधराव दरबार बडो कियो[2]। नै आप जाड़ेची री दोढियां[3] आया। तरै जगदेव साथे हीज छै। सिधराव और हजूरियांनै देखै तो जगदेव ऊभो छै। तरै राजा कह्यौ, कंवरजी थेही पधारो। जरै जगदेवजी कह्यौ, महाराजासूं एक अरज पूछणीं छै, जो चाकरनै कहौ तो अरज करूं, नहींतर डोढी बैठूं छूं। सिधराव कह्यो, किसी अरज छै। जगदेव कह्यौ, मास ७ हुवा जाड़ेचीजी परणिया नैं। तठा पछै सरीर मांहे उनमाद[4] नहीं, खुस्याली नहीं। तिण री हकीकत मोनें फुरमाईजै। तरै सिधराव निसासौ[5] मेलि नै कह्यौ, कंवरजी, दुख छै तिको तो माहिलो सरीर जाणै छै, कहयांसूं हांसो हुवै नै गरज पिण किणहीसूं सरै नहीं, नै राज म्हांरा जीवरा दातार छो, नै म्हारे भलो परताप दीसै छै सो राजरो उपगार छै। थे पूछो छो तो इण ठौड़े दाड़िमरा बीड़ा[6] छै, दोढी मांहे ढोलियो ज्यूं-रो-ज्यूं निजर आवै छै, दुख छै तिको देख्यां रहसो। इसो कह राजा मांहे पधारिया, नै जगदेव दाड़म नै चंवेलीरा बीड़ा मांहे बैठा। हाथ मांहे खड़ग ढ़ाल कनै छै। तिसै आधीरात बीती। राजा पोढिया था नै कालो भैरूं लूंगी[7] रो लंगोटो पहिरियां केस तेल मांहे गरक कियां[8], सिंदूर लागो, गुरज[9] हाथ मांहे लीधां, चोखा ऐराक[10] मांहे

---

१ रोशनाई, रोशनी। २ बड़ो कियो (मुहा०)=समाप्त किया। ३ जनाने महल का दरवाजा। ४ उमंग, उल्लास, प्रसन्नता। ५ निश्वास, दुःखसूचक दीर्घ श्वास। ६ वृक्ष, दरख्त। ७ मोटा लाला कपड़ा। ८ सने हुए। ९ अस्त्र विशेष। १० अर्क़, शराब।

मैमंत[1] हुवौ थको सिधराव छै तिठै जाय नै हाथ पकड़ नीचौं नाखि पागा नीचे देनै जाड़ेची कनें भैरूं पोढ रह्यौ। जगदेव सारो बिरतंत दीठो, मन मांहे जाएयो सिधराव इणरो किणनै कहै। न्याय, लोह मांस कठाथी चढ़ै नै म्हारा साहिबनें पूरो अचैन छै। इसो मनमें जाणीं नै खड्ग हाथ मांहे झालि सिंहरा सा पांचड़ा[2] भरिनै ढोलिये कनै जायनै उलाल़ दीधो नैं भेरूंनें हेठों नाख्यो। सिधरावने कह्यौ, उठ बैठा हुवौ नै भैरूंसूं दाकल़[3] कीधी। पर-घर-पैसण चोरटा[4], सापचेत[5] हुइ, हूँ जगदेव आयो। तिसै भैरूं नै जगदेव बथो-बथ[6] हुवा। तिकै करैक तो भैरूं ऊपरां, करैक[7] जगदेव ऊपरां। यूं करतां पाछिली रात घड़ी तीन रही। तरै भैरूं बलहीण हुवौ नै भैरूं कूका किया[8], मनैं छोडि, आज पछै इण महिल कदे नाऊं। इतरौ सुणतसमौं जगदेव ऊभौ हुवौ नै लातरी साथल़[9] मांहि दीधी। तिका साथल़ भैरूंरी तूटी। नै भैरूं हेला टसका करतां[10] मांहे जगदेव आपरा कछणा[11] सूँ भैरूंनें अपूठी मसकां[12] बांधियो नै थिरमां[13] मांहे गांठड़ी बांधि कांधौ करि[14] नै आपरै डेरे ल्याया। तिकौ ऊंडो[15] तहखानो थो, तिण मांहे बैसाण आडा ताल़ा जड़िया। प्रभातरा जगदेवजी दरबार सिधाया, जरै गांव हजार दोय वल़ै दीनां।

---

१ मदोन्मत्त। २ मोट कदम। ३ ललकार। ४ दूसरे के घर में घुसने वाला चोर। ५ सावधान। ६ भुजाओं से भुजाएं भिड़ाकर, कुश्ती। ७ कभी। ८ चिल्ला उठा। ९ जंघा। १० ज्यों त्यों, कठिनाई से, हाँफता हुआ। ११ रस्से से। १२ पीठ के पीछे हाथों को बाँधकर। १३······(?)। १४ काँधे पर डाल कर। १५ गहरे।

इसो भाँति दिन सात बीता। चामंडरे[१] अखाड़ै कालो भैरूं नावै। तरै जाणियो हमेसां बरजता पाटण जगदेवदिसां जाये मती, पिण रहतो नहीं, घोड़ो हुयो बंधमांहे पड़ियो छै। तद काला भैरूं छुडावण नै मिनषलोक आय भाटण[२]रो रूप करि आई। तिका काली, डीगी[३], मोटा दांत, दूबली, घणीं डरावणीं, माथारा लटा[४] विखरिया, घणां तेल मांहे चवती, धवला केस, माथै निलाड़ सिंदूर थेथड़ियो[५] थको, लोवड़ी[६] काली, कालो धाबलो[७], कांचली तेल मांहे गरकाब थकी, उघाड़ै[८] माथै कीधाँ, हाथ मांहे त्रिसूल झालियां दरबार आई। तद सिधराव कहै—

कवित्त

सिधराव कहै मुष वैण कर, कर सीकोतर डाकिणी
प्रतक्ख आवै जगड़ कर कै छलाय दै तणी
इसा मानव न थायै, सुणी नह दीठी केण
रूप असंभ्रम दिषाइ, हैरांन थयां क्यां कंपणी
छूटै आवत नयड़ी, जगदेव देष हरषित कहै
जाचण........................डाइण भद्रणी।[९]

---

१ चामुण्डा, चण्डी दुर्गा। २ भाटिनी। ३ लम्बी। ४ केशपाश। ५ चर्चित, लिपा हुवा। ६ ओढने का ऊनी वस्त्र। ७ मोटे कपड़े का गँवारू लहँगा। ८ खुले सिर। ९ कवित्त का अर्थ—सिद्धराव मुख में ये बचन लाकर कहते हैं-क्या है-शिकोतरी (प्रेतिणी) है या डाकिन। प्रत्यक्ष में ऐसा प्रतीत होता है मानो कहीं से झगड़ कर आरही है। अथवा

तिसै दरबार उघाड़ै माथै आई । सिद्धरावनें डावा हाथसूँ ब्रह्माव[1] दीधो । तरै जगदेव सामों देखि मूंछां ऊपरि हाथ फेरियो । जदि कंकाळी[2] माथा ऊपरी पलो[3] लीधो नै जीमणा हाथसूं ब्रह्माव दीधो । तरै जगदेव गिंदवो[4] आघो कीनों । तिण ऊपरां कंकाळी बैठी । राजा जाणियो, म्हारो दरबार मोटो नै हूँ पिण सिद्धराव जैसिंघ छूँ । तिणसूं माथा ऊपरि वड़[5] लीधो छै । इतरै जगदेव सीख[6] कीधी । तिको डेरै आयो । तरै लारे रावां पूछियो, कुण ब्रन्न[7], कठै वास । तरै कंकाळी कह्यौ, ब्रन भाट, नवखंडकेरा राजा[8], सती असतिरी, दातार, भूझाररी निघै[9] करती फिरूंछूं । तरै सिधराव कह्यौ, थे उघाड़ै माथै ऊपरि वड़ किणनें देखि खैंच्यो नै जीमणे हाथसूं जगदेव नै ब्रह्माव दीधो, तिको वड़ किणनें देखिनैं खैंच्यो । कंकाळी कह्यौ, जगदे पंवार सामो देखि मूंछा हाथ फेरियो । तरै हीज जाण्यो, इण सरीखो दातार नहीं । धरती मांहे नै थारे दरबार मांहे इण सरीखो दातार कोई नहीं । तिणसूं लोवड़ीरो वड़ माथा ऊपर खैंच्यो । इमो

छल कपट से रूप बना कर आई है । मनुष्य तो ऐसे नहीं होते; न तो सुना ही और न किसी ने देखा ही है । यह अपने अद्भुत रूप को दिखा कर कइयों को हैरान करती है, कइयों को देख कर कँपकँपी छूटती है । नजदीक आते देख जगदेव ने हर्षित होकर कहा, यह तो कंकाली है जो राजदरबार में याचना करने आई है ।

१ आशीर्वाद । २ दुर्गा की पूजा करने वाली चारणी । ३ पट, वस्त्र । ४ गद्दी । ५ ओढनी । ६ आज्ञा मांग कर प्रस्थान किया । ७ वर्ण, जाति । ८ हे नवखंड के राजा । ९ मैं सती स्त्री, दातार और वीर श्रेष्ठ की खोज में········ ।

सिधराव सांभळ[१] नै कह्यौ, म्हे सवालाख षटअनरा दोकरा[२] नै रूपकरा देवाळ[३] छां, तिको तोनैं दान पाछै देस्यां। एकवार जगदेवकनां लेआव। जगदेव देसी तिणसूं श्री सदासिवजी करसी तो चौगुणों देस्यां। तरै कंकाळी बोली, सिद्धराव, कोई दानसूं पृथ्वी माँहे पंवारां सूं होड किणी कीधी नहीं, न करसी।

दूहो

प्रिथमी बडा पँवार, प्रिथमी पंवारां तणी।
एक उज्जैणी धार, बीजो आबू बैसणो॥[४]

जगदेव देसी तिण बरोबर देणी नावसी[५]। राजा कह्यौ, थे उठै जगदेव कनै लेआवो, पछै म्हे चौगुणो तो देस्यां। राव कनांसूं कंकाळी वाचा[६] देनै उठी जिका जगदेव री पोळ मांहे ऊभी रही नै विरदाव[७] दियो। जिण वेळा जगदेवजी सेवा करै छै। तिसै कंकाळी ऊंचो साद करयौ, पंवार राव, सिधराव जैसिंह तोसूं चौगुणो दान देणो कह्यौ, तिको आज सूधो पंवारांसूं बराबर दान दीधो नहीं नै राजा चोगुणों दान देणो कह्यौ छै, तो कनै सीख दे मेली छै, जगदेव कनां दान लेआव, तोलनै चोगुणों देस्यां, तिणसं दान दे, ज्यूं राजानैं दिखाऊं। इसो सांभळ नै जगदेवरी अखी कनै ऊभी थी, तिणने पूछियो,

---

१ सुन कर। २..........?। ३ देने वाले। ४ अर्थ-पृथ्वी में पँवार बड़े हैं, और पृथ्वी पँवारों पर अश्रित है। एक ओर तो उज्जैन और धार में उनकी राजधानी है, दूसरी ओर आबू में। ५ देतें नहीं बन पड़ेगा। ६ वचन। ७ विरद बखान करना।

दान तो राजासूं किणी बात पोंच आवां नहीं[1], थे कहो तो म्हारो सीस दान द्यूं। तरै राणी कह्यौ—

कवित्त

दियै गाजता गयंद, दियै तोषार विवह परि
दियै गांव कोठारि, दियै रतण थालां भरि
मही दीजिये बहोत, हीर सोवन जो बाहे
नहीं कीजिये नाकार कहैं कामण ऊमांहे[2]
दीजिये दान डींभूसहित भट्टां थट्ट समप्पणां
इम कहै श्री जगदेवनैं, सीस न दीजे अप्पणां ॥

तरै जगदेव कहै—

कवित्त

आपां एक गयंद राव जद पंच समप्पै
आपां पांच तोषार राव पंचास सु अप्पे

---

१ किसी बात में बराबरी नहीं कर सकते। २ कवित्त का अर्थ-गर्जना करते हुए हाथी दीजिये, नाना प्रकार के घोड़े दीजिये, गाँव, खजाना, थाल भर कर के रत्न दीजिये। विस्तृत भूमि दीजिये, जिसमें हीरे और सोना उपजता हो। याचक को नांही मत दीजिये। इस प्रकार उत्साह पूर्वक कामिनी कहती है कि हे भट्टों को रण में समर्पित करनेवाले, डींभू (?) सहित दान दीजिये, परन्तु हे जगदेव, दान में अपना शीश न दीजिये।

आपां हीर सुचीर सोव्रन रूप मोताहल
आपां धन अगिणित थाल भरि भरि चित्त उज्ज्वल
दीजिये सीस कंकालि नै काची देही अति घणो
इण दान राव पौचै नहीं सीस न थायै चोगुणो ॥[1]

तरै राणी बोली, इसी भाटणियां घणी ही आवसी, माथो किण किणनें देस्यां। माथा ऊपर हीज मंडाण[2] छै। इतरी बात करतां मांहे जगदेवजी राजा फूलरी बेटी परणिया छै, जिणरो नाम फूलमादे छै। तिका दुहागपणै छै। तिणसूं कदेही बोलणरो काम नहीं थो। तिण कह्यौ, महाराज बड़ी बात विचारी। इण दानसूं सिधराव हारै, तिको राजरो सीस नै बीजो म्हारो सीस दोनूं हीज दीजै। आठ माथा कठासूं देसी। तरै जगदेवजी कह्यौ, स्याबास रजपूताणी, तोनें इसो हीज चाहीजै। पिण म्हारो सीस कंकालीनें द्यूं नै थे पाछे तिरस्यो नै तारस्यो[3]। पाछली जाबता थे राखो। इतरो कहि नै डीक[4] नै ऊभी राखी नै कह्यो, थे थाल मांडो, थे जायनें देज्यो।

---

१ कवित्त का अर्थ—अपन (हम) जब एक हाथी देंगे तो राव पचास दे सकेगा; हम पांच घोड़े दें तो राव पचास देगा; हम हीरे, सुन्दर वस्त्र, सोना, चांदी, मुक्ताफल, अगणित धन, उज्ज्वल चित्त से थाल भर भर करके देंगे तो भी राव उनसे कई गुना अधिक दे सकेगा। अतएव, कंकाली को शीश देना चाहिए, कारण, एक तो शरीर नश्वर पदार्थ है और बार-बार मिल सकता है, दूसरे, इसी दान में राव हमारी बराबरी नहीं कर सकेगा, क्योंकि शीश चौगुना नहीं हो सकता। २ संसार का प्रपंच। ३ पीछे से अपनी खुद विचार लोगे। ४ बाला।

इसो कहि खड़ग काढि सीस उतारियो। तरै फुलमादे राणी थाल सालू[1] सूं ढाकि नै पोळी आई। तरै कंकाळी कह्यो :—

कवित्त—छप्पै

किसें असूधो कज्ज, किनां निद्रां भर सोयो
कै हुवौ चित्तभंग, किनां रावां दिस जोयो
हूँ कंकाली भट्ट, सती असती नर पेखूं
स्वर्ग मर्त्य पाताल, देव नर नाग परेखूं
विक्रम भोज पूठै मही, जस ज्यारो मन भावियो
कंकाली कहै फुलमादि नै, (थारो) रावत के मन आवियो ॥[2]

तरै फुलमादे बोली :—

कवित्त

राजदेव अवतार, अमरि करि बास समत्थं ।
तिणनैं अप्पण दान, कहा दीजे बहु हत्थं ।

---

१ थाल ढकने का वस्त्र। २ कवित्त का अर्थ—कैसा असम्भव (कठिन) कार्य किया है, अथवा आज यह भर नींद सोया है, अथवा पागल तो नहीं हो गया, या राव से स्पर्धा करके ही ऐसा किया है। मैं भट्टिनी, कंकाली हूँ और सत्य और असत्यवान नर की परीक्षा करती हूँ—स्वर्ग, मर्त्यलोक और पाताल के देव, नर, नागों की परीक्षा करती हूँ। विक्रमादित्य भोज के बाद में जिसका यश मेरे मन भाया है, वह तेरा पति है जो राजा के मन में भी चढ़ा हुआ है। ऐसा कंकाली ने फुलमादे को कहा।

सिद्धराव जैसिंघ कहा तसु होड कराई
नह पूजै मंडली, तो कहा पंमार गिणाई
इम जाण दान मो हत्थ दे, परगट थाल पठावियो
फुलमादे भणे कंकालसूं, रावत मो मन आवियो ।[१]

इसी बात करि थाल उघाड़ै तो हड़-हड़[२] हँसतो देखिनैं मुलकतो माथो पाग मोत्यां समेत सीस देखिनैं कंकाली हँसी । थाल उरो हाथ मांहे लीधो नै कह्यौ, थारो सुहाग भाग चूड़ो कायम[३] । इसी आसीस दे बोली, धड़ ऊपरा माखी बैसणरो जतन राखिज्यो, सिधरावनैं हराय भूंडो मूंढो[४] कराय आवूं छूं । जगदेव ज्यूं-रो-ज्यूं जीवतो करस्युं, पृथ्वी माहें अमर नांव करस्युं । इतरी भळावण[५] दे थाल लोवड़ी[६] सूं ढकने चाली । विचै मारग मांहे जगदेवरो भाणेज सगतसिंह खीची छै । जिणरी पोल आघै थाल लीधा कंकाली आई । तरै सगतसिंह खीची कह्यौ, देखां मामेजी कासूं दियौ । तरै थाल खोल

१ क्षत्रियों में देवता के अवतार (सिद्धराव) सामर्थ्यवान राजा के पास रह कर उसी को अपने हाथों से बहुत सा दान करना ठीक नहीं। परन्तु अब सिद्धराव जैसिंह उसकी क्या बराबरी करेगा ? यदि क्षत्रियों की मण्डली में पूजा न जाय तो पँवार कैसे गिना जा सकता है ? ऐसा जान कर मेरे हाथ थाल देकर भेजा है । फुलमादे कंकाली से कहती हैं, यह रावत (मेरा क्षत्रिकुलभूषण पति) मेरे मन भाया है । २ खिलखिलाता हुआ । ३ सौभाग्य, भाग्य और चूड़ा सुरक्षित रहे । ४ लज्जित मस्तक । ५ सिखावन । ६ ओढनी ।

नै दिखाल्यो। तरै सगतसिंह एक आंषदिसी रुषो[1] छै । तरै देखती आंख थी तिका आंगुळी घालिनै काढि थाळ मांहे मेली नै कह्यौ, मामांजी होड नहीं, पिण इतरी दुगाणी[2] म्हारी ही ले पधारौ । नेत्र ले लोवड़ीसूं ढकिनै दरबार आई । आगै जैसिंह देखै छै, जाणें ही ल्यावे त्यूं ल्याई। देखिनै राव बोल्यौ, कंकाळी ल्याई तो थाळ मांहीज, म्हाने दिखावो ज्यूं चोगुणों द्यां। इतरो कह्यां लोवड़ीरो वड़ ऊंचो कियो, देखै तो जगदेवरो सीस छै, नै पाखती नेत्र झलझलाट[3] करै छै। रावनें कांपणी छूटी । कंकाळी कह्यौ, हिवै चौगुणों दान दे । तिको एक तो थारो सीस, पटराणी, पाटवी कंवर, पाटवी घोड़ो यां च्यारां रो सीस उतारि नै मौनें दे नै च्यार नेत्र दे । राजा उठि मांहे राणी कनै गयो। राणीनें कह्यौ, जगदेव ऊपरि[4] नांम करै छै। रांणी कहै, बीजी होड हुवै, पिण सीसरी होड नहीं। ऊपरां नाम हुवौ भावे नीच नांव हुवो। अे वचन संभाळि नै कंवरनें आय कह्यौ, कंवर ही नाकारो कियो। तरै बाहिर आय कंकाळीनें कह्यौ, म्हारो सीस नैं घोड़ारो सीस त्यार छै। भळी बात। हाथ सूं उतारिने द्यौ । तरै राजा कह्यौ, थे उतारिल्यो । तरै कंकाळो कह्यौ, हूं कोई मांणस-खाणी[5] न छूं, भिच्छक छूं, दीधो लूं छूं। राजा कह्यो, औ तो काम म्हांसूं न हुवै। तरै कंकाळी बोली, एक काम करो, थांरो सीस बगस्यौ[6], ऊँचा माळिये चढ़िनै हेलो[7] करौ, जगदेव पंवार जीत्यौ, हूं हारियो। इसौ सातवार कहौ नै थाळ नीचै सातवार नीसरो। राजा कह्यौ, भली बात। राजा

---

१ निस्तेज, काना। २ नजर, भेंट। ३ झलझल, देदीप्यमान। ४ बढ़ कर। ५ मनुष्यभक्षिणी, राक्षसी। ६ छोड़ा। ७ घोषणा।

सातवार थाळ नीचै निसरियो। पाछो थाळो ले जगदेव री पोळ आई। सगतसिंह एक आंख दीधी तिणनें दोनूं आंख दीधी । तिणरै दोनूं ही आँख्यां हुई नै धड़ ऊपरां सीस चाढ़िनै अमीरो छांटो नाख्यौ। जगदेव खंखारो करितौ उठ बैठो हुवौ। नै दांन भैरूं छूटणरो मांग्यो। तरै काळा भैरूंने छोडयो । तठा पछै खोड़ो भैरूं कहीजै छै। पछै जगदेवनै घोड़ो चाढि साथे कंकाळी होयनें सिद्धरावरे दरबार आया। मुजरो कियौ । तठे राजा कह्यौ, मात, हिवै म्हारे कंवररो, राणीरो, घोड़ारो सीस ल्यौ, थांरी दाय आवै[1] तो परग्रह[2] सुधां सीस लो। राजा सीस उतारणरी त्यारी कोधी । तरै कंकाळी कह्यौ, उवा पळ वेळा गई[3]! हिवै ठंडा पाणीसूं जावो मती[4]। कंकाळी कहै—

कवित्त

जो न भांण ऊगमैं, जो नवि वासग धर भलै
राम बाण न ग्रहै, करण पारथ्थो जु मुलै
ब्रह्मा छोड़े वेद, पवन जा रहै पुलंतौ
चन्द सूर ना वहै, रहै किम अमी भरंतौ
पंमार नाकारो नां करै, मेर-समो जाको हियौ
कंकाळी कीरति करै, सीस दान जगदे दियौ ।[5]

---

१ पसंद आवे। २ कुटुम्बजन। ३ वह साइत ही गई। ४ व्यर्थ को जान मत दो। ५ चाहे भानु न उदय हो, चाहे शेषनाग पृथ्वी को धारण करना छोड़ दे, चाहे रामचन्द्र समुद्र का मानमर्दन करने के लिए बाण न चढ़ावें, चाहे कर्ण अर्जुन को परास्त कर दे, ब्रह्मा वेद को धारण करना छोड़ दें, पवन बहना छोड़ दे, चन्द्र और सूर्य अपनी दैनिक यात्रा को छोड़ दें

दूहा

संवत इग्यारह इकांणवै, चैततीज रविबार
सीस कंकाली भट्टनैं, जगदे दियो उतारि ॥

पछै कंकाली जैसिंघ कनै ही राखी। जिण कंकालीरै सात बेटी छै, सो कनै छै। आप कंकाली रावणखंडी[1]। तिण कंकाली इसो विरुद[2] कीधो।

सिद्धराव जैसिंघजी, खांप सोलंखी, तिणनैं छिन्नूं हजार गाँव हुता। पोरसो[3] एक कोठार मांहे हुवौ। संवत ११३३ तपिया, नै चोटी मांहे गंगा बहे। महारुद्ररौ अवतार हुवौ। सिद्धरौ पिण वर थो, तिणसूं सिद्धराव कहाणो। इसो सिद्धराव हुवौ। भीम भार्या, निर्मलदे पुत्र। कर्णराजा भार्या, मिलणदे पुत्र। सिद्धराव जैसिंघदेव हुवौ, तिण मालवापति, नरवरराजानैं बांध्यौ, मोहबक पाटणधणी मदभ्रम राजानै जीत्यौ। जिणरै ३२ राजकुली[4] सेवा करै। संवत् ११९९ सिद्धराव जैसिंघ बैकुण्ठ गया। सिधराव जैसिंघदेरै प्रधांन कुशल मंत्री साजनदे हुवौ।

[इति श्री जगदेव पंवार री वार्त्ता सम्पूर्ण]

और चन्द्र में से अमृत झरना बन्द हो जाय, परन्तु जिसका मेरु के समान अचल हृदय है, ऐसा पँवार वीर जगदेव याचक को नांहीं नहीं कर सकता। कंकाली कीर्त्तिगान करती है कि जगदेव ने शीश-दान किया।

१ रदन-खंडिता, टूटे हुए ओठवाली। २ प्रशस्ति, यश। अद्वितीय पौरुष वाला। ३ क्षत्रियवंशी।

जगमाल मालावत

—+++—

नगर महेवै रावल मलीनाथजी कंवर जगमालजी राज करै। तिकै रावलजी तो पीर[1] हुवा, तिके भजन समरण माँहे रहै। राज जगमालजी करै। तिण समीयै अहमंदाबादरो पतिसाह महमदबेगड़ो राज करै। तिणरै बेटी गींदोली छः। तिण पातसाहरै उमराव एक हाथीखांन पठांण, तिको मोटो उमरांव, मुनसुबदार। तिणनैं पाटनरो सोबो[2] दियौ। तिन निपट करड़ो[3] अमल[4] कीयो। तठै कोस तीस पाटणथी[5] सोभटो नगर। तिणरो धणी तेजसी तूंवर, तिको धाड़वी[6]। तिण ऊपरां अचाचूक[7] रो हाथीखांन असवारी लियां आयो। तठै तेजसी तूंवर रजपूत सौ तीन (३००) सूं बाज नै[8] काम आयो। हाथीखांन गाँव लूंटियो। तेजसीरी अंतेवर[9] भटियाणी थी। तिणरै बेटी बरस १३-१४ मांहे, तिका वेढ[10] ह्वैतां मांहे बेटी ले नीकल गई। तिका कुसले पड़ी[11] पीहर गई, नै पठांण गाँव मारि नै पाछो पाटण गयौ। नै कोई नारायणजी रा चक्र[12] थीं तेजसी तीन सै रजपूतां

---

१ सिद्ध पुरुष। २ सूबा। ३ बहुत कठोर। ४ शासन। ५ अपादान का चिन्ह, पाटण से। ६ डकैत। ७ अचानक। ८ लड़ कर। ९ स्त्री, अन्तःपुर वासिनी। १० लड़ाई। ११ सुरक्षित अवस्था में। १२ दैव संयोग से।

सूधो भूतरी गति पाई। तिको आपरै गाँव असवारीरी जलूस करि आथण[१] रो आपरै मैहलां आवै, बड़ी मजलिस करि हरहमेस आवै। गाँव सूनो पड़ियौ छः। दिनरै पोहर पाखती[२] रा गावांरा गोरी[३] बैसै, रमै खेलै नै गायां चरावै।

तिण समीयै एकै दिन एक योगीसर आयो नागो; गोरी बैठा देखि मैलां मांहे आयो नै झरोखे बैठो। तिसै संझ्यारा गायां ले नै गोहरी[४] घरांनै घिरिया। तरै जोगीसरनै गोहरयां कह्यो, बाबाजी किणही गाँव जावो परा, अै महल तो सूना छः नै रात पड़ियां मैलां रो धणी तेजसी तूंवर आवै, जिको भूतरी गतिमें छैः। थे धोको खास्यो। पछै थे जांणौ। तरै जोगेसर सुणि नै मन मांहे विचारियो, देखां भूतमाया किसीएक हुवै छः। तरै महिल मांहे हीज आसण कीधो।

रात घड़ी दो एक गई, इक डंको सुणियौ। तरै जोगेसर जांण्यौ कोई सिरदार आवै छैः। तिसै हाथीरी बीरघंट[५] सुणी, तुररी सहनाई सुणी, घोड़ांरी कलहल[६] सुणी। चराकां[७] सौ एक मूंढा आगे हुवां, चँवर ढुलतां, हाथी माथै बैठो सिरदार दीठो। तिसै कैइक असवार महिलां आया। तिसै फरास आय मैलां आगै चौक मांहे जाजम दुलीचा[८] बिछाया, गिलमां बिछाई, तकिया लगाया। तिसै तेजसीजी गादी तकियां आय बैठा। जोगेसर तमासा देखै छैः। तिसै कैइक

---

१ सन्ध्या, सूर्यास्त के समय। २ आप-पास के। ३ ग्वाल, गोपालक। ४ गोरी (ग्वाल) का रूपान्तर। ५ हाथी के शृंगार की बड़ी घंटी। ६ कोलाहल। ७ चिराग़। ८ गलीचा।

चाकर महिल मांहे ढोलियो बिछावणनैं आया। आगै जोगेसर आसण कीधां बैठो छैः। तिकै महिलवाड़ियां[1]रा लक्खण, तिणां जोगेसर आसण कीधां बैठो छैः तिकै महिलवाड़ियां उठावणो मांड्यो नै रीस करणी मांडी[2]। पिण जोगेसर आसण उठावै नहीं। तिसै औ सबद तेजसोरै कांने पड़ियो नैं कह्यौ, किणनैं स्यूं[3] कहो छो। चाकर बोल्या, एक कोई जोगी सरभषड़ो[4] मांणसियो[5] बैठो छः। तरै तेजसी कह्यौ, कोई इण जोगेसरनैं क्यूं ही कहो मती। तिसै तेजसी साद[6] दियो, बाबाजी, उरा[7] पधारो, अठै बातां करां। तरै आसणसूं उठि तेजसीजी कनै बैठो। आगै डावीनै जीवणी मिसल रजपूत ढालांरा कड़ा देनै दरबार बैठा छैः। रसोड़ादार रसोड़ै लागा छैः। चरू कड़ाहा चढाया छैः। खेह दीधी छैः। रोटा खेह मांहे दाबै छैः। मांस, बूटा, सोहिता हुवै छैः। तेजसी नै जोगेसर बातां करै छैः।

तिसै आधी रातरी बलि[8] तयार हुई नैं पाँतियो[9] दीधो, रूपा[10]रो बाजोट[11] बिछायो। तेजसी तीन सै रजपूतांसूं पांतियै बैठा, थाल दीधा। तिसै जोगेसरनैं पिण आपरी पाखती बैसाण्यौ, पतर[12] मांहे परूसगारो[13] कियौ। मनुहारे मनुहारां जीमिया। तठै जोगेसर जांण्यो, औ भूत माया छैः, कि जांणीजै जीमण कांई छैः। यूं जांण हाथ खांच बैठो। तेजसी कह्यौ, बाबाजी, अरोगौ[14] क्युं न

१ महल में काम करने वाले नौकर चाकर। २ करना शुरू किया। ३ कुछ भी। ४ सरभंगी, वीतराग। ५ मानव योनि का। ६ शब्द। ७ इधर, यहाँ। ८ मांस का भोजन। ९ पंक्ति। १० चांदी। ११ पट्टा, चौकी। १२ पत्तल। १३ परोसना। १४ भोजन करो।

छो। जोगेसर कह्यौ, अबार तीजै पोहर रोटी खाई थी, सो गाढो[1] चांकां[2] छूं। इतरो कहि पतर ढक मेल्यौ। तिसै घड़ी दो मांहे सगळो साथ जीमियौ। चळू[3] कीया, पांन, लूंग, मुखवास[4] दीधा। तिसै तेजसी ऊंचे ढोलियै पौढण सारू[5] उठियो नै जोगेसरनै पिण कह्यौ, थे पिण ऊंचा आय बैसो। तरै जोगेसर ऊंचो आसण मांड तेजसीजी कनै बैठो छः। तठै तेजसो बातां करै छः। तठै कह्यौ, बाबाजी, एक म्हारो सन्देसो तो मोनैं निवाजो[6]। तरै जोगेसर कह्यौ, बाबा, तुम कहो। तेजसी कहै छः—हूँ इण गांव नै इण मैलांरो धणी तेजसी तुंवर छूं। तिको हाथीखांन पठांण ऊपरां आयो, वेढ कोधी, धार तीरथ[7] करि तीन सौ रजपूतांसूं खेत पड़ियौ[8], अगति गयौ। प्रेत तीन सै हुवा, तिकै अै रजपूत थे दीठा हीज छै। तद मैं श्रीपरमेस्वर जीरै दरबार पूछियौ, म्हाराज, म्हे खत्रीधर्म धारातीरथरी मौत पाई, नै भूतरी गति दीधी, तिको किसै प्रायछित[9]। तरै कह्यौ, असुररै हाथ मौत पाई, तिणसूं अगति लाधी। अबै थारी बेटी परणाय कन्यावळ[10] लै, तो वैकुंठ आवै। तिको बाबाजी, म्हारे मिनखजमारा[11] री बेटी भटियाणीरै पेटरी नीपनी[12] मामांरै छै, तिका परणै कुण, तिणसूं औ सन्देसो कहणौ। नगर महेवै राठोड़नाथ रावळ मलीनाथजी कंवर

---

१ खूब। २ छका हुआ, तृप्त। ३ भोजनान्त में आचमन। ४ मुख शुद्धिकारक द्रव्य। ५ के लिए। ६ कृपा करो। ७ रणक्षेत्र में वीरतापूर्वक युद्ध करके सुगति-लाभ करने को 'धारा तीरथ' कहते हैं। ८ रणक्षेत्र में पड़ा। ९ पाप के फल से। १० कन्यादान का पुण्य। ११ मनुष्य योनि की। १२ पैदा हुई।

जगमालनै कहिज्यो, बडो सगो छै, म्हारी बेटी इयां मेहलां आय परणीजै, तो मोनैं वैकुंठ हुवै। इतरो सन्देसो बाबाजी कहिज्यो। नैं तो बिना बीजारी अठै आवणरी आसंग[1] नहीं छै। जोगेसर प्रमांण कीयो[2]। तिसैं जोगेसरनै पगे लागा। तरै तेजसी चाकरांनै हुकम कीयो, जावो जोगेसरनै मेहेवै पोहचाय आवो। कोस पचासरो आंतरो छै। चाकर मिनखां सूतां ही जोगेसरनै मह्वेवारी हाटां मांहे मेल्हि[3] आया।

भाक फाटी। जोगेसर जागियो। देखै तो लोक फिरै छः। देवरे[4] झालरियां बाजै छः। जोगेसर संखनाद पूरै छः। तद एकण नैं जोगसर पूछियौ, बाबा, औ किसौ नगर छः। उण कह्यौ, नगर मह्वेवो छः, रावल् मालोजी कंवर जगमालजी धणी छः। जोगेसर पूछियो, कंवर करै[5] ही बारै आवै छः। तरै उण कह्यौ, अबार घड़ी एक दो दिन चढियां बाग पधारसी। तिसैं जोगेसर स्नान करि, काल़ग्नि[6] पढि बभूत चढाई। तितरै[7] जगमालजी रजपूत सौ च्यार (४००) लियां बाग पधारै छः। तरै जोगी पिण लारै[8] हुवौ। बाग मांहे गया, तरै जोगी पिण बाग मांहे गयो। तरै कंवार जोगेसर देखि नमो नारायण शिवाय कियो नै पूछियौ, कठीसूं[9] आया। तरै जोगी-सर नैड़ो आय नै कह्यौ, बाबा कंवर, एक तो संदेसा है। जगमालजी बोल्या, कहो किण कह्या है। तरै जोगेसर कह्यौ, इहां थी कोष पचास ऊपरां किस तुंवर को गांव भी थो। कंवर कह्यौ, तेजसी तूंवर आछो

---

१ सामर्थ्य। २ वचनबद्ध हुआ। ३ छोड़ आये। ४ देवालय में। ५ कभी। ६ योगियों के इष्टसम्बन्धी मंत्र। ७ तब तक। ८ पीछे। ९ कहां से।

देस-रजपूत थो, तिण तुरकसूं वेढ करि कांम आयो। तिके सुणां छां भूति गति पाई। जोगेसर कह्यौ, तो बाबा, तेजसी का संदेसा है। तेजसी कही तिका नै आपरी बाधू बाधू[1] पेटसूं[2] सरब कही कै ओ संदेसो कह्यौ छः,—बड़ा सगा छो, म्हारी बेटी मामारै छः; तिको बडो रजपूत छः तो मोनै गति मेलज्यौ[3]। बाई परणियां म्हारी गत होसी। इसी बात सुण जगमालजी मन मांहे राखी नै जोगेसरनैं आटो दिरायो नै सीख दीधी।

अबै दिन ५-७ नै नवलखै घोड़े पिलांण मंडायो। जगमालजी इकेला ही ज असवार हुआ। तिकै दिन घड़ी एक थकां महलां पोहता-सोभटैं पोहता। घोड़े सूं उतरिया, अमल कीधा नैं टेवटा[4] लीधा तितरै घड़ी एक दो गई नै एक डंको सुणियौ, घोड़ां री पोड़ि[5] हौकार[6] सुणिया। ज्यूं जोगेसर बात कही थी, तिम हीज दीठी। तितरै कंईक भल-घोड़िया[7] आगै आया। त्यां जगमाल मालावतनैं आगे दीठा था, त्यां जाय बधाई दीधी। तरै तेजसीजी बहुत राजी हुआ। इतरै तेजसीजी पिण आया। जुहार[8] हुआ। जद तेजसी भूतांनै पिण हुकम कीनों, जावो बाईनैं लेय आवो। नै जगमालजीनै विछायत करि पधराया। तिसै रात घड़ी चार जातां बाईनै ले नै आया। बिचै आवतां बाईनै भूतां सगली बात कही—थारो बाप तोनै परणावसी जगमाल मालावतनै, पछै गति

१ अधिक, बढ़ा कर (बात)। २ अपनी ओर से। ३ सद्गति करवाना। ४ शौचादि से निवृत्त हुए। ५ घोड़ो के खुरों की ध्वनि। ६ कोलाहल। ७ अच्छे घोड़ों के सवार। ८ मिलन के समय नजर, न्यौछावर।

मिलसी । तिण बाईनै मैलाँ माँहे बैसाणी । भूतणियाँ आई । ब्याह री आरी-कारी[१] माँडी, पीठी[२] कीधी, पीठीरा गीत गाया, बेह[३] चौंरी[४] बंधाई । राति पोहर १।। जाताँ फेरा[५] लीधा, मौड़[६] बाँधिया, कर-मूँकांवणी[७] री बेळा तेजसी कह्यौ, कँवरजी राजरै जोईजै[८] तिको माँगो । तद जगमालजी जाण्यौ, मोनै परणाई तिका मनुष्य छः किना[९] भूतणी छः, इणरी निघै[१०] करणनै कह्यौ, एक बार रजपूताँगीसूँ दोय बात करूँ, पछै माँगूँ । तदि भूतणियाँ मझिल्यों[११] गावतीं ऊँचा माळियै गया । तठीं जांणी तो, पिण बूझिया, थे मिनष छो कै भूत छौ । तरै तुँवर हाथ जोड़ी मुजरौ करि नै कह्यो, हूँ मिनष छूं, मामारै घरे थी । तठासूं ल्याय नै परणाई छः । इतरौ सुणि नै बारै आया । नै जगमालजी तेजसी कनै माँग्यौ,—हूँ रजपूत छूं, घणा आटा-नाटा[१२] छः, कोई सबळो[१३] कांम पड़ै वेढ-राड़ि[१४] रौ, तठै रावळा[१५] रजपूत मदत माँहे आवै । और म्हारे काँई कुमी[१६] नहीं । तरै तेजसी तीन सै रजपूताँ नैं भेळा[१७] करि कह्यो, जिको म्हारौ लूंण-पाँणीं[१८] खाधो छः, तिको जगमालजी याद करै, तेजसीरा रजपूताँ वेगा आवज्यो, इतरो कह्यौं

---

१ लोकाचार । २ उबटन । ३ विवाह-वेदी में सौभाग्य-कलश । ४ च्यौंरी अथवा विवाह-मंडप । ५ भाँवरी । ६ वर का मुकुट । ७ वर-वधू का विवाह के उपरान्त कर-ग्रहण छुड़वाने का लोकाचार । ८ चाहिए, आवश्यकता हो । ९ अथवा । १० तलाश, खोज । ११ विदाई का गीत । १२ कष्ट और आपत्ति के समय । १३ कठिन कार्य । १४ युद्ध अथवा झगड़ा । १५ आपके । १६ कमी । १७ एकत्रित । १८ नमक-जल, अन्न-जल, दाना-पानी ।

ऊभो रहै, तिणनैं लूंण हराम छः। तद रजपूतां प्रमांण कियौ। नै तिसै तेजसीनैं पालखी उतरी, तिको रांम रांम कहि नै तेजसी बैकुंठ गयो। तद जगमालजी भूतां मांहे मुदो[1] थो उमराव, तिणनैं कंवर कह्यो, कोस ५० घोड़ो खड़ियो[2], तिको आलस करै छः, तिणसूं नगर महेवै पोहचायो जोईजै। तदि च्यार भूतांनैं साथै दीधा। तिके पोहचाय नैं आया।

बाग मांहे राते रह्या। दिन ऊगां बागवान साथे भोपति हुल[3] परधांन[4] नै कहायौ, परणीज आया छां, पैसारो, साम्हेलो[5] लीजो। तरै नगर बाजार ओछाड़ि[6] सुखपाल ले नै दास्यां आई। तिके घणां रली-रंग[7] करतां दरबार आया। घणी खुस्याल[8] हुई। गोठां[9] करावै। व्याहरी बात सगली रजपूतांनै कही नै सिरपाव केसरिया कराया, जाचकां[10] नै दुगांणी[11] दीधी। घणा तरंग[12] मांहे रहै छः।

तिण समीयै हाथीखांन पठांण सुणी, महेवारी तीजणियां[13] निपट सखरी[14] छः। तिणनैं देखणरो कोड[15] घणो छः। पिण जगमालजी

---

१ अगुआ। २ चलाया। ३ मेवाड़ के गुहिलोत वंश की प्रधान ४ शाखाओं में से एक शाखा "हुल" भी है। यह प्रधान भोपति हुल शाखा का राजपूत था। देखो, नैणसी की ख्यात (ना० प्र० सभा) पृष्ठ ७७। ४ प्रधान, मन्त्री। ५ अगवानी करना। ६ पार करके। ७ रंग रलियाँ। ८ खुशी, आनन्द-विनोद। ९ खुशी के उपलक्ष में भोज। १० याचकों को। ११ दान, बख्शिस। १२ मन-मौज। १३ चैत्र शुक्ला तृतीया के दिन गणगौर का त्यौहार मनानेवाली और गौरी का व्रत रखने वाली कन्याएँ। १४ उत्तम। १५ लालसा।

रो अति भौ[1] घणो, तिणसूं जासूस लगाया। इतरै दैवरे जोग जगमालजी भाटियांरै वीकूंपुरै बैर[2] ऊपर दोड़ि[3] गया नै जासूस जाय पाटण कह्यो । तरै सावणरी तीज[4] ऊपरां चढियो तिको पाछिले पोहर घड़ो दोय दिन थकां महेवै तीज मिळी छः, तीजणियां ळूहर[5] गावै छः। तिसै हाथीखांन हजार पाँच (५०००) घोड़ांसूं आयो, तिको सात-बीसी[6] साईन्यां[7], डावड़ी[8] बरस १५।१६ मांहे थी। तिके पकड़ि नै पाछो हीज बूहो[9] । महेवारा लोकांसूं कूं ही ज सम्भियो[10] नहीं। तिसै रात आधी जातां मांहे जगमालजी बैर काढि नगर आया। लोकां बाहर घाली[11] । सगळी बात सुणी, पिण जोर कोई चालै नहीं। महेवारै झाड़ां खेह लगाय[12] नै कूंस[13] ले गयो। तरै जगमालजी पाघ खोलि लपेटो बांध्यो। वळे आखड़ी[14] लीधी, कपड़ा धोवणा, दाढी सुधरावणी मीयांसूं आंटो[15] काढियां करिस्यां। इसी बात मियां सुणी, तरै धूजियो[16] । तद हजार सात-

---

१ भय। २ बैर-प्रतिशोध के निमित्त। ३ धावा किया। ४ राजस्थान में दशहरे के त्योहार के बाद, चैत्र शुक्ला तृतीया के दिन गणगौर का त्यौहार बड़े समारोह और आनन्दोत्सव के साथ मनाया जाता है। यह विशेषतः कन्याओं का त्यौहार है। इसे "तीज" कहते हैं। ५ राजस्थान का गीत विशेष, सारंग राग का भेद। ६ एक सौ चालीस (७×२०)। ७ सम बयस्का। ८ कन्याएँ। ९ चला गया। १० सजा नहीं, बन पड़ा नहीं। ११ बाहर घाली (मुहा० =फरियाद मचाई। १२ झाड़ां खेह लगाय (मुहा० = मान मर्दन करके, (वृक्षों पर अपवित्र पदरज लगा कर)। १३ छीन कर। १४ अक्षय प्रतिज्ञा। १५ बैर। १६ काँप उठा।

आठ पषरैत[1] तबलबंध[2], सेर-जुवान[3] सीपाही राखिया। कदेक बारै चढै, तद ५०० घोड़ची[4] सुतरनाळ[5] रामचंगी[6] लियां चढै। इसी भांत मास दोय बीता। तरै भोपत हुळ जाणियो, राजा रा वचन, वळे आंटा नीकळता नीकळै, नै आखड़ी पिण टणकी[7] घाली। तदि घोड़ी ब्यावर[8] अढाई सौ षालसै[9], तिण मांहे २५ बछेरा अैराकी[10] बापता[11]। जिण मांहे तिणरा पेटरा ऊपना[12] टळाया[13]। त्यांनैं रातब[14] देणी मांडी। दोनां ही टंकां[15] सेर दोय घीरत[16], रातब मांडी। धपाऊ[17] धांन दीजै। तिकै बरस एक तांई अपटां[18] चराया। तिकै घोड़ांरी तळियां[19] घीसूं भरीज गई[20]। तठै टाळका[21], आपरै समझा[22] रा,साखैत[23], मोटा पटायत उमराव त्यांनै बछेरा फेरणनै सूंप्या[24]। तिकै पच्चीस असवार साथै फेरै। कोस पांच फेर पाछा आया। बीजै दिन कोस १० जाय पाछा आया। तिको भोपति हुळ रजपूतांनैं कह्यो, बात मन मांहे राखज्यो, कांई तुरकसूं इसड़ी[25] करां, तिका पृथमी प्रमांण[26] रहै। प्रधान कह्यो सू

---

१ कवचधारी। २ घोड़े। ३ शेर-जवान, साहसी। ४ घुड़सवार। ५ ऊँटों पर लदी हुई तोपें। ६ बड़ी तोपें। ७ जबरदस्त। ८ गर्भिणी, बच्चा देनेवाली। ९ खालसा, राज्य में। १० ईराक़ देश के प्रसिद्ध घोड़े। ११ पैदा हुए। १२ पैदा हुए। १३ चुन लिए। १४ घोड़ों का पौष्टिक खाद्य विशेष। १५ समय। १६ घृत, घी। १७ भर पेट। १८ खूब, निपट। १९ तलुवे। २० भर गई। २१ चुने हुए। २२ पसंद के। २३ पैजधारी, कुलप्रतिष्ठ। २४ सौंपे। २५ ऐसी। २६ पृथ्वी में यश प्रमाणित रहे।

सगलां कबूल कीधो नै ऊठी[१] दोय अहमदाबाद राख्या जाबता[२] करण नैं।

अहमदाबादरो पातसाह महमद वेगड़ो। तिणरी बेटी गींदोली नांम, तिका हिंदू राह[३] मांहे चाले। गणगोर्यां दिनांसूं गोर[४] मांडीजै, गीत गाईजै। तिण ऊपरां जासूस दोय डोढी[५] राख्या। तिको ऊठी एक आवै खबर ले नै; एक उठै ही जाबतो करै। दिन दो री खबर दें। कोस एक सौ दूसरो आंतरो छः। पिण ऊठी दिन दोय मांहे पाछो जावै। इसी जासूस पोहचावै नै तिसी भांति बछेरा सझाया। साठ कोस जाय नै साठ कोस पाछा आवै। तद पचीस असवार गणगोर्यां पहिली दिन दोय आगूंच[६] अहमदाबाद गया। तठै बीज[७] रो दिन, संझ्यारो पूजण, नैं पांणी पीवणनैं गोर काढी। तठै गींदोली चकडोल[८] बैसि गोर पाछै पांणी पावण चाली। तठै असवार हजार दस जाबतामें पातसाह दीधा। नगारा, ढोल, सहनाई बाजै छः। लुगायां[९] गीत गावै छः। हजारां लेखै[१०] गोरां नैणां-सरणै[११] रही छः। धूड़रो डोरो[१२] ऊछलियो छः, तिको कोई किणनैं जाणणी आवै नहीं। तिण समीयै तळाव मांहे गोरां मेल्ही छः। तठै भोपति हुल एकेलो असवार हुवो नै चाल्यो नै बीजा असवार पाषती[१३] जाबता सारू[१४] राख्या। अठी उठी असवार चार

---

१ संदेशवाहक। २ बन्दोबस्त। ३ प्रथानुसार। ४ गौरी, पार्वती की प्रतिमा। ५ ड्योढ़ी। ६ पहले। ७ द्वितीया। ८ पालकी। ९ स्त्रियाँ। १० के लिए। ११ नैंणा सरणै=नेत्रों का लक्ष्य। १२ धूलि का बादल, बगूला। १३ सारे। १४ के लिए।

सल्वा[१] राख्या नैं हुल ठाकुर घोड़ां छूटारो मिस करि नै अपूठे[२] पगै घोड़ानैं चलायो नैं गींदोली साहिजादी कनै आय बांह पकड़ घोड़ा ऊपर घाली, नै हूल[३] पड़ी। तरै भोपति हुल गींदोली ले जातां कह्यौ, जगमाल मालावतरो रजपूत छूं। तिको महेवा नगर मांहे कोई छो नहीं, तद हाथीखांनियौ सात-बीसी तीजणियां महेवासूं ले गयो थो, तिको सूनै गांवमें सूं ल्यायो थो। नै कंवरजी बोकूंपुर दोड़ि[४] पधारिया था, तरै सूनी जायगा[५] थी ले आयो थो। नै हूं इतरा सिपायां देखतां आगै साहिजादी ले जावूं छूं। अबै ताता[६] घोड़ां रो धणी, ऊकलतै[७] कालजै हुवै, सो वेगो पोचज्यो। तरै तुरकांरी चढी असवारी थी, तिके ज्यूं-रा-ज्यूं घोड़ा लारै मार फीटा किया[८]। तिको कोस एकरो आंतरो पड़ि गयौ। तुरकांरा घोड़ा ठांणै[९] रा छूटा, रातबां-दाणांरा खुराकी था। छांह बांधा रहता, तिके एक-ससिया[१०] दोड़ता हांफण लागा। परसेवो[११] गरमी हुई, झाग काछौं चढिया, तंबोल[१२] मूंढांसूं पड़ै। तिकै घोड़ा थाका पगफाड़ा रालता[१३] देखि फोज ऊभी रही। पातिसाहनै खबर हुई। तरै महमद बेगड़ो

---

१ पराक्रमी, उत्तम। २ पीछे। ३ भगदड़, कोलाहल, कुहराम। ४ बैर लेने के लिए आक्रमण। ५ जगह। ६ तेज। ७ ऊकलतै कालजै= व्याकुल कलेजेवाले। ८ मार फीटा किया (मुहा०)=थका कर घोड़ों को हैरान कर डाला। ९ घोड़ों का ठाण (स्थान)—अस्तबल। १० एक सांस से, बेतहासा। ११ प्रस्वेद, पसीना। १२ मुख से झाग, (फेन) का गिरना। १३ पगफाड़ा रालता (मुहा०)—चौड़े, ओछे, डिगमिगाते हुए, पैर पटकते हुए।

फोजरा डेरा उठै मारग मांहे हीज कराया। हाथ वाढ वाढ[1] खावण लागो, पिण जोर कोई लागै नहीं।

अबै पातसाह फोजांरो सामांन करणो मांड्यो। अबै भोपति हुल गींदोली ऊठीने सूंपि चढाई लीधी। तिकै असवार पचीस नै दोय ऊठी एकै रातिवासै[2] पाछलै[3] घड़ी चार दिन रह्यां महेवा री सींव मांहे आया, जठै कंवर जगमालजी गौर बोलांवण[4] सारू चढिया। असवारी बणी छः, गीतां रा रमिझोल[5] लाग रह्या छः। तठै चोपदारनै बूझियौ, भोपतजी कूं नाया[6]। तरै चोपदार भोपतजीरै डेरै जाय रजपूतांनैं पूछियो। तरै रजपूतां कह्यौ, ठाकुर तो कनै[7] आजरो तीसरो दिन छः, सहलाँ[8] सिधाया[9] छः। तिकै समाचार चोपदार आयनै कह्या। तरै जांणियौ अठेई हुसी, कठै सखरै रूड़ै[10] काम सिधाया हुसी। तिसै असवार निजर चढिया। तरै खबर करै। तिसै भोपतजी निजर चढिया नै भोपतजी घोड़ासूं उतरि पगे लागा, मुजरो कीयो। नै गींदोली ऊठीसूं हेठी[11] उतार निजर कीधी नै हाथ जोड़ि अरज कीधी। कह्यौ, पतिसाह महमद बेगड़ो, तिणरी बेटी साहिजादी छः। तीजणियांरै आंटै[12]

---

१ हाथ वाढ खावण लागो (मुहा०)=क्षोभ और अपमान के आवेश में अपने ही हाथ नौंच-नौंच कर काटने लगा। २ रात्रि के समय। ३ पिछली। ४ किसी समर्थ पुरुष का, असमर्थ की रक्षार्थ, उसके साथ सहायतार्थ जाना। ५ झकझोर, झड़ी सी। ६ नहीं आये। ७ न जाने। ८ सैर को। ९ गये हैं। १० अच्छे, उत्तम। ११ नीचे। १२ बैर-प्रतिशोध।

मांहे रावलजीरा भजनसूं[1], कंवरजीरा तेज, प्रतापसूं घणा सिपायां चढियां बिचै मूंढो मारि नै[2] ल्यायो छूं। आ बात कंवरजी सुणि अति मौज चढिया। तरै आपरा कड़ा मोती सिरपाव, मोतियां री माळा, असवारीरो घोड़ो, आप कनै सामान थो तिको बगसियो[3] नै सुखपाळ मंगाय गींदोलीनैं बैसांण नगरनैं चाल्या नैं गीतणियां[4] नैं हुकम कियो, म्हांने नैं सहजादी गींदोलीनैं गावो। गीतेरणियां नैं सवागा[5] मंगाय दीया, चूड़ा पहिरावणे हुकम दीयो। तिको गींदोली गवावतां गवावतां महिलां दरबार पधारिया। अबै खवास[6] थापी सुखमैं रहै छः।

तरा पछै पातिसाह फोजां भेळी कीधी। बाईसी[7] एक तठा भाषर[8]रो सोवायत[9], फोज एक सोरठ[10]री, फोज एक पाटणसूं हाथीखांन ले चढियो, फोज एक पंचाळ[11]सूं चढी। इसी भांति पांच फौज करि असवार हजार अस्सीरै साथसूं पातिसाह महमद बेगड़ो तिण महेवा ऊपर चढाया। तिकै महेवासूं कोस तीन ऊपरां डेरा दिया। पहाड़ांरा मोरचारी मारसूं अळगो[12] ऊतारो लीयो। तरै जगमालजी घोड़ो हजार ३/४ भेळो कीयो। तठै जांणियौ असुरांरी फोजां घणी, तरवारियां लड़ियां पिण पावां नहीं। तरै ज़गमालजीनै

---

१ प्रताप से, बल से। २ मूंढो मारिनै (मुहा०)=मुंह मार कर, साहस करके। ३ बख्सीस की। ४ गीत गानेवाली स्त्रियों को। ५ सुहाग-सम्बन्धी वस्त्राभूषण। ६ रखैत, पासवान, प्रेमपात्री। ७ सेना। ८ पहाड़ की। ९ शोभायमान। १० सौराष्ट्र प्रान्त की। ११ पांचाल प्रान्त की। १२जुदा, अलग, दूर।

तेजसीरा रजपूतांरी बात याद आई । तरै लापसी, बाकुळा[१], तिलट[२], दाळिया[३], सांकुळियां[४] कराई मण सै-पांच अथवा छः सै मण धांन रंधायो[५] । पछै दारूरी तूंगां[६] मण ५०/६० री भराई, कसूंभो[७] मणांबंध[८] कढायो, तिजारो[९] मणाबंध कढायो । तिसै राति घड़ी च्यार गई । तठै ताळी दीधी तीन नै जगमालजी कह्यौ, तेजसीजीरा रजपूतां, आ थांइरी वेळा छैः, बेगा आज्यो । इतरो कहत-समांन तीन-सै रजपूत प्रेतरी गति मांहे था, तिकै आया नै वळै[१०] कैइक साथे लेनै आया। तिजारा, कसूंभो, दारू पाई । लापसी, तिलवट, बाकुळा, दाळिया सरजांम[११] कीधो थो, तिणसूं धपाय[१२] आंधा कीधा[१३] नै मस्त हूवांनै तरवारियां हाथां मांहे दीधी। तरै जगमालजी कह्यौ, लोह करो[१४] तिको म्हांरो नांव लेनै करिज्यो नै कहिज्यो, "आ ही जगमालरी तरवार" । इतरो सुण भूत अमलांसूं आंधा हूवा थका तुरकांरो फोज मांहे पड़िया । तिका "जगमालरी तलवार" कहिता जावै नै नर, कुंजर, हैवर एके झटकै कितरा एक ढाहै[१५]। जठै कितरा एक जीव लेनै भागा । पातिसाह जीव लेनै भागो नै घणा मारिया नै जगमालजीरी फतै हुई । नाठा[१६] तिकै अहमंदाबाद

---

१ उबाले हुए नाज के कण । २ तिल । ३ पीसी हुई दाल की पकोड़ियाँ, बड़े । ४ तेल में तली हुई चपातियाँ । ५ पकाया । ६ हौज । ७ द्रवरूप में घोटा हुआ अफीम का पेय । ८ मणों के परिमाण में । ९ एक मादक पेय । १० फिर । ११ बन्दोबस्त । १२ तृप्त करके । १३ आँधा कीधा (मुहा०) छकाकर अंधा-धुंध कर दिये । १४ लोह करो (मुहा०)= वार करो, तलवार चलाओ । १५ गिराते हैं । १६ भागे ।

गया । लाज सरम छोडिनै भागा नै कहण लागा, यारो, काई मुनी यादम[1] लड़ै तो तिण सैं लड़ियै। पिण, क्या जांणां केते ही जगमाल थे। "जगमालरी तलवार" कहै अर[2] मारै। इह तमासा अजब देखा। हिवै पातसाह हीयो हेठो घालि[3] अबोलो[4] रह्यो नै कह्यौ, जिसके पीछे खुदा ई[5] मदत करै तिणसूं जोर कोई चलै नहीं। यारो, रजपूतांसूं आंटा न करियै। तठै राते जनानै पातिसाह गयौ, तरै हुरमां पूछियो,—

बीबी पूछै खांननै जुध कितरा[6] जगमाल ।
पग पग नेजा पाड़िया[7] पग पग पाड़ी ढाल ॥

अठै जगमालजी री फतै हुई। भूतांनैं सोख दीधी। गींदोलीनैं खवास थापी। तिको गींदोली[8] गाईजै।

इतरी वारता। संवत् १३२५ चैत सुदी ३ मंगळवार ल्याया, औ विरुद[9] आयो। जगमाळजी नै गींदोळीरी बात फ्ररमूल[10] सूं कही।

[इति श्री गींदोली री बात सम्पूर्णम्]

---

१ मानव या आदमी। २ और। ३ हियो हेठो घालि : मुहा० =हृदय हारकर, मुंह की खाकर, लज्जित होकर। ४ चुप। ५ भी। ६ कितने। ७ गिराये। ८ अहमदाबाद के बादशाह मुहम्मद बेगड़ा की लड़की गींदोली के हरण के पीछे राजस्थान में इस वृत्तान्त का स्मारक गीत "गींदोली" नाम से प्रसिद्ध हो गया, जो गणगौर के त्यौहार पर अब भी गाया जाता है। ९ प्रशस्ति, प्रसिद्धि। १० जड़-मूल से, आदि से।

वीरमदे सोनगरा

—○:o:○—
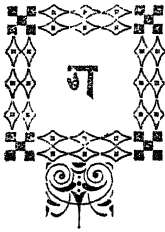
गढ जालोर सोनगरा बणवीरजरै कंवर दो हुवा। बडो कंवर कांनड़दे, छोटो कंवर रांणकदे। टीकै कांनड़देजी बैठा। सुखै राज करै। तिके एकै समैं सिकार चढिया। तिके जालोरसूं कोस सात तथा दस ऊपरै गया। तठै राति पड़ी। कनै एक खवास रह्यो। तिणरो नाम बीजड़ियौ। तारां रावजी नै बीजड़ियो चाल्या जगलरै विचै एक देहरै आया। बासौ लीधो। देहरैमें पाखाणरी पूतली, सा घणी रूड़ी फूटरी[1]। कान्हड़देजी उणरै रूप दिसी[2] घणो गोर करि जोवण लागा। तिण समैं कोई देवरै जोग उवा पूतली थी तिका अपछरा हुई। तरै रावजी कह्यौ, थे कुण छो। तरै उवा बोली, अपछरा छूं, मैं थांनै वरिया[3] छै। पिण म्हारी आ बात किणी आगै कही तो परी जासूं[4]। तरै रावजी सारी बात आरे[5] कीवी। पछै दिन ऊगां कोस चार ऊपर बराड़ौ गांव। तठै सांखलौ सौमसिंघ घररौ धणी[6] रहै। तिणरै घरे अपछरा मेली[7] नै कह्यो

---

१ बहुत अधिक सुन्दर। २ की ओर। ३ वरा है, पति संकल्पित कर लिया है। ४ चली जाऊंगी। ५ स्वीकार की। ६ गृहस्थी। ७ भेजी।

म्हे आथण[१] रा आवाँ छाँ, तोरण-थाँभरी[२] तयारी कर राखज्यौ म्हे परणीजण[३] नै आवाँ छाँ। नै रावजी लारे आया। उठासूं चूड़ौ बरी[४] दे मेलियौ, ग्रहणा[५] सर्व मेल्या नै गोधूलकरै साहै जाय परणीया। सुखपालमैं बैसाँण गढ ल्याया। अलाहिदो[६] महिल एक अंभोगत[७] पैली करायो थौ, तिण माँहे राखी। घणा सूंधा[८] अतर तेल चोवा माँहे कपूर कस्तूरी माँहे गरकाब राखै। यूं वरस दोयनै बेटो हुवो। तिणरो नाँम बीरम दीधौ। दूजी राँणीरै बेटी हुई, तिणरो नाँम वीरमती दीधो। मोटा हुवाँ बरस सात माँहे वीरमदेवौ। तठै पाटरो[९] हाथी मदरो आयो[१०] छूटो। तिको पाधरो[११] दोढी आयो। आगै वीरमदे माहिलवाड़ियाँ[१२] रा टावराँसूं रमतो थो, तिको दोढ़ी कनै बारै भींतर पाखती वीरमदे दोड़ियो नै हाथी लारै दोड़ियो। तिसै माहिलवाड़ियाँरा टाँवराँ कूका[१३] कीया, रजपूताँ पिण कूका कीया, 'कँवरनै मारियौ, कँवरनै मारियौ'। तिसै अपछरा झरोखै बैठी सुणियौ। तरै अपछरा धरती सांमो जोवै तौ वीरमदेनै हाथी लपेटियो महे[१४] छै। तरै

---

१ सन्ध्या के समय। २ विवाह के समय लड़की के घर के द्वार पर लकड़ी का 'तोरण' बाँधा जाता है, जिसे विवाह करने को आया हुवा वर मारता है-इसे 'तोरण' की प्रथा कहते हैं। थाँभ से यहाँ आशय विवाह वेदी के स्तंभ से है। ३ व्याहने। ४ बधू का सौभाग्यसूचक हाथीदांत का चूड़ा और वस्त्राभूषण (बरी)। ५ गहने। ६ पृथक, जुदा, एकान्त में। ७ अभुक्त, नया। ८ सुगन्धित द्रव्य। ९ पाटवी। १० मतवाला। ११ सीधा। १२ महल के नौकरों के। १३ चिल्लाहट। १४ लपेटने ही को है।

अपछरा झरोखै बैठी हाथ पसारनै झरोखा मांहे लीधो। तिको रजपूतां दीठो नै सगलांनै अचरज हूवौ। राति पड़ियां रावजी महिलां आया। तद रंभा बोली, अबै म्हांरो मुजरो छै, हूं जावूं छूं, म्हारी बात कानेकाने[1] हुई नै आपसूं कोल[2] कीनो थो। रावजी घणां ही नोरा[3] कीना, पिण अलोप[4] हुई नै जांती[5] कहियो, म्हारा बेटारी हूं मदद मांहे छूं, छांनी[6] थकी रहिस्युं। यों कहि अलोप हुई।

अबै वीरमदे पंजू पायक कनै घाव—दाव[7] सीखै। पंजूसूं घणो जीव बांध्यो[8], देह दोय नै जीव एक, लोक इण बिध जांणै छै। तिसै वरस १२ मांहे कंवर हूवौ। तिण समै जेसलमेर भाटी रावलजी लाखणसीजी राज करै। तिणां रै मैल बैठां सांवण[9] बोल्यो। तिण जिनावर क्यों कह्यौ, दिन पोहर एक चढतां सवारौं[10] कांनड़दे सोनगरानै बिस देसी। इसो सांभल नै राइकौ[11] एक ताती[12] सांढि चाढि कागल लिख नै जालोरनै दोड़ायो। रावलजी कह्यौ, म्हारा[13], पोहर दिन चढतां महो जाजे, कोस सात-दसरो[14] आंतरो छै। सांढियौ[15] चाल्यौ। तिको दिन घड़ी चार अथवा पाँच चढतां कोस एक माथै आवतां सांढ थाकी। तितरै वीरमदे मैल चढियां सांढियो निजर चढियो नै कह्यौ, कोइक सांढियो ताती सांढ खड़तो

---

१ हर किसी को प्रकट हो गई। २ प्रतिज्ञा, वचन। ३ निहोरा, प्रार्थना। ४ अन्तर्धान। ५ जाती हुई। ६ गुप्त। ७ दाव-पेंच। ८ मोह, स्नेह जोड़ा। ९ शकुन-पक्षी। १० कल प्रातः काल। ११ ऊँट का चरवाहा। १२ तेज। १३ सम्बोधन, मेरे प्रिय!। १४ सत्तर कोस। १५ ऊँट का सवार हरकारा।

आवै छै। सबलो[१] कांम दीसै छै। तिसै सांढियो पिण आय पोतो[२] नै आवन-समा[३] पूछियौ, रावजी, दांतण करि नै आरोगिया कै नही आरोगिया। तद पूछणवाल़ै कह्यौ, रावजी अबै अमल करि नै दूध मिश्री आरोगसी। तरै पोलियै[४] मांहे रावजीनै गुदरायौ[५], भाटीराव लाखणसीजीरो सांढियौ आयो छै, दोढियां कागद हाथ मांहे लीधा ऊभो छै। तरै रावजी मांहे बुलायौ। तरै ऊठी[६] मुजरो करि कागद हाथ दीयौ नै अरज करि नै हाथ जोड़ि नै कह्यौ, दूध मिश्री मांहे विष छै, देख नै आरोगज्यौ। तितरै खवास दूध मिश्री भेला करि ल्यायौ। तिको कांनड़देजीरै आगै चमक[७] हूंतीज नै तरवाल़ा[८] निजर आया। तरै खवासनै कह्यौ, औ दूध मिश्री तूंहीज पीव जा। खवास नै पहलै दिन चोट घालो[९] थी। तिण रीससूं खवास बिस घाल्यौ दूध पिवै नहीं। तरै रावजी दूध मिश्री थो तिको कुत्ती नै पायो। कुतरी[१०] मुई। तिसै खवासनै गाढ करि पूछियो, साच बोलि, किण कँवर कै रांणी, प्रधांन, मुंहतै, उमराव, दुसमण, जिण दिरायो, तिणरो नांम लै। तरै खवास कह्यौ, अणहूंतो[११] किणरो नांम कहूं। तद खवासरो जनवचो[१२] (?) पी लियो। ऊठीनै सिरपाव दे नै रावलजीनै घणी मनुवारां[१३] करि कागल़ लिख पाछो मेलीयो नै लारै राव कांनड़देजी, राणकदेजी, कंवर वीरमदेजी मिसलत[१४] कीधी, आंपांसूं रावल़जो विगर-सनमंध घणो

---

१ जबरदस्त, बड़ा भारी। २ पहुंचा। ३ आते ही। ४ द्वारपाल। ५ मालूम किया। ६ दूत ने। ७ सन्देह, भ्रम। ८ तेल या घी की चिकनाहट। ९ यातना दी थी। १० कुतिया। ११ झूठा, अनहोता। १२ ······(?)। १३ विनय। १४ सलाह।

उपगार कीधो, घणो आसांन[१] कीयौ, तो इणरो बदलो रावल़जीनै कांसू दीजै। तरै कांनड़देजी कह्यौ, बाई वीरमतीरो नाल़ेर द्यां; गढ़पति छै, मोटा सगा छै। आ वात तीनांहीरै दाय बैठी[२]। तरै घोड़ा पांच, सोना रूपासूं नाल़ेर मढाय, ठावा[३] उमराव व्यास प्रोहित साथै दे जेसलमेर मेल्या। तिके बडी जलूस कीयाँ पौता। तठै रावल़जीनै खबर हुई, सोनिगरांरा नाल़ेर आया छै। आ वात सुणि रावल़जीनै घणो सोच हूवो नै कह्यौ, म्हां तो सोनिगरांसूं भलो कीयो थो, पिण मांहिजै[४] गल़ै अलवदौ[५] छोकरीरो नांखियौ। हमैं ठाकुरे किसूं कियो चाहीजै। तरै उमरावां कह्यौ, सोढीजीनै पूछौ। आगै रावजीरै ऊमरकोटरी सोढी[६] रांणी छै। तिका डील मांहे माती[७] घांणी रै फेर[८] छै, रूप कुढबी[९] छै, पिण रावल़जी सोढीरे बस छै। सोढीजी करै ज्युं ज्युं करै छै। तिण दिसां[१०] उमरावां कह्यौ, सोढीजीनै पूछौ। तरै रावल़जी कह्यौ, मूवां[११], पूछाँ कि पाछा मेलां तो भूंडा दीसां। आगै तौ माहिजै सोढीजी घणा ही छै। तरै रावल़जी उठ दुमना थका[१२] रावल़ै[१३] माँहे गया। सोढी पूछियो, तरै नाल़ेररी बात कही। सोढी

---

१ अहसान, कृपा, उपकार। २ पसन्द आई। ३ प्रतिष्ठित। ४ मेरे (जेसलमेरी भाषा में 'जे,' 'जा' सम्बन्धकारक के संयुक्त विभक्ति-चिन्ह की तरह प्रयुक्त होते हैं)। ५ आफ़त। ६ इन्दुवंशी भाटी क्षत्रियों की एक शाखा 'सोढा' है, जो उमरकोट के रहने वाले थे। ७ मोटी। ८ तेली की घानी की तरह। कुरूपा। १० इसलिए। ११ सम्बोधन, अरे मरे हुओ!। १२ व्यग्रचित्त होते हुए, दुखी होते हुए। १३ रनिवास में।

ता'र खाय[1] बोली, हुई साठो नै बुध नाठी[2], किसूं पुखता हुवा[3] छो, रांडोचा[4] नै करिस्यो किस्यूं, खांणै पीवणे पोहचां नहीं, थे रीसावो[5] मती । रावल़जी कह्यौ, पाछा मेल देस्यां । तरै सोढी कह्यौ, पाछा मेल्यां थांहरो भलो दीसै नहीं, नाल़ेर झालो, पिण हेक बांह द्यौ[6], ऊथि[7] जावो तरै सोनगरांरो सामेल़ो आसै[8], जरै थे कहिया, आछो आछो, पिण सोढांरा तोरणरी होड हुवै नहीं । चंवरी बैसो तरै युंहीज कहिया, हथलेवो झालो तरै कहिया, सोनगरीरो हाथ आछो, पिण सोढीरा हाथरी होड ह्वै नही । नै फेरा लेनै तुरत अंण-जीम्यां[9] चढि एथ[10] आया । रावल़जी कह्यौ, भल़ो २ कहि दरीखानै विराज लगन नाल़ेर झालि सिरपाव दे विदा कीया । अबै रावल़जी जांनि करि नै चढिया। वधाईदारां वधाई दीनो । तरै वीरमदेजीनै रावल़जीनै घणो कोड[11] छै । तरै आपरा घोड़ा हाथी सिणगार जल़ूस कर साम्हा आया, माँहो मांहे जुहार हुवा, बाँह-पसाव[12] कर मिलिया । तरै रावल़जी अठी उठी देखि बोल्या, सोनगराँरो साँमेल़ो सखरो, पिण सोढाँरै सामेल़ा[13]री होड ह्वै नहीं । इतरो साँभल़तसमो[14] वीरमदेरा डीलमें आग लागी ।

---

१ क्रोध खाकर । २ 'हुई·····नाठी' राज० कहावत =साठ वर्ष ले लेने पर मनुष्य की बुद्धि नष्ट हो जाती है । ३ वृद्ध हो गये । ४ रांड, अभागिन । ५ कुपित मत होवो । ६ एक वचन दो, वादा करो । ७ ऊथि । जैसलमेरी भाषा =उधर । ८ आवेगा (जे० भाषा) । ९ बिना भोजन किये । १० यहाँ, इधर । ११ चाव, लालसा । १२ आलिंगन । १३ अगवानी । १४ सुनते ही ।

सोढाँ रो नेस[1] छै, तिके दोड़ा छै। भोमिया-भूंव, धरतीरा वासी[2] त्यांरो साँमेलो आछो, तो रावल माँहे परमेसर[3] नही, गधैड़ाकी बूझ[4] छै। सुणियौ थौ त्यूंहीज छै। तरै वीरमदेजी आगै बधि गढ आया, तठै रावलजी तोरण पण त्यूंहीज कह्यौ। चंवरी निपट जलसरी[5] थी, पिण रावलजी देखनें कह्यौ, चंवरी सखरी सखरी, पिण सोढांरी चंवरीरी होड नही हुवै। पछै हथलेवौ[6] दीयौ नै बोल्या, सोनिगरीरो हाथ आछौ आछौ, पिण सोढीजीरै हाथरी होड न है। औ वचन सोनगरी साँभलतसमाँन भस्म हूवै। आगै सोढीजीरी सोभा सुणी हीज थी। तिसै उतावला फेरा लेनै चालवारी तयारी कीवी। तिसै रावलजी सीख मांगी। घणो ही हठ कीनौ, पिण चढिया। तरै कानड़देजी राँणकदेजी वीरमदेजी तीने मिल बात कीनी। ऊपगार ऊपराँ बाई दीनी, पिण रावल माँहे गधेड़ारा लक्षण दीसे छै, बाईरो जमारो[7] डबोयो, पिण एक बार तो बाईनै गढ पोहचावणी। तरै तयारी कर असवार सौ एक साथे दे रथ माँहे बैसांण साथे सहेल्याँ दे चलाई। राजड़ियो खवास साथे मेल्यौ पोचावण नै। आगैं कोस ४० गया, तठै तलाव आयो। तद रजपूत अमल करणनै साराँ—फेराँ[8] रा टेवटालण[9] नें ऊतरिया। रथ छोड़ियो। तरै सोनगरी दासीनै कह्यौ, झारी पाँणीसूं भर ल्याव। तरै दासी झारी भरणनै गई। आगै देखै तो

---

[1] नाश। [2] मामूली भूमिपाल (जागीरदार), थोड़ी सी जमीन के मालिक। [3] राम, दम। [4] गदहे की अक़्ल। [5] शानदार। [6] कर-ग्रहण। [7] जीवन। [8] सैर सपट्टा। [9] टेव (आदत-Nature's Call), टालने (जरूरत पूरी करने के लिए)—शौचादि के लिए।

नीबों सिवाळोत[१] सात-बीसी साँईनाँ[२] री साथसूं झूलै[३] छै। तिको केवा[४], चंपेल[५], अरगजारी पाँणी माँहे लपटाँ[६] आवै छै। केसर रा रंगसूं पाँणी बदल गयो, रंग फिर गयो छै। दासी झारी झकोळ[७] पांणीसूं भरी नै सोनगरीनूं दीधी। तद सोनगरी पाँणी माँहे लीधौ। तद पाँणी ऊपरै तेलरा तरवाळा आया। तरै सोनिगरी दासीनै रीस कीधी, तैं हाथ धोय नै झारी भरी नहीं, जा दूजी वार माटीसूं हाथ धोय नै भर ल्याव, आँधी[८], तेल लागो देखै कोई नहीं। तरै दासी कह्यौ, बाईजी, सिरदार कोई साथसूं साँपड़ै[९] छै, घणा सूंधा[१०] तेल केसर माँहे हुवा छै। दासी कनै इतरो सुण सोनगरी कह्यौ, तूं पूछि आव कुण साखि, किसो सिरदार छै। छोकरी आयि नै पूछियो। तरै एकण चाकर कह्यौ, साखि राठोड, नींबो सिवाळौत, लाखाँरो लोड़ाउ[११] बडो झोकाऊ[१२], सैंणा रो सेहुरो[१३] दुसमणरो साल[१४], जाताँ-मरताँरो साथी[१५], लाखाँ रो लहरी[१६]। इतरो सुंण छोकरी जाय पाछो कह्यो। तरै सोनगरी छोकरी वळी

---

१ शिवलाल का वंशज 'सिवलोत'-नींबा नामक। २ एक सौ चालीस (७×२०) समवयस्कों सहित। ३ नहा रहा। ४ केवड़ा। ५ चमेली का इतर, तेल। ६ तीव्र सुगन्धि। ७ पानी से साफ करके, झकझोर कर। ८ सम्बोधन, अरी अन्धी। ९ नहाते हैं। १० सुगन्धित। ११ लाखों के साथ अकेला युद्ध करनेवाला वीर। १२ बड़ा पराक्रमी। १३ अपने मित्रों को शिरोभूषण। १४ दुश्मनों के हृदय का शल्य। १५ जाते मरते हुवों का सहायक, असहायों का सहायक। १६ लाखों का धन दे डालनेवाला तरंगी, मनमौजी।

पाछी मेली, जा पूछि आव, वीरमदे सोनगरारी बैंन कांनड़देरी धी[१] नै राव लाखणसीरी परणी[२], वीरमती नाम छै, तिको फेरां[३] रो दोष लागो छै। जो थांसूं मोनें घरमै घालणी[४] आवें तो हूं आवूं। दासी जाय नै कह्यौ। तरै नींबै आरे[५] कीवी। जल बारै आय कपड़ा पहरि हथियार बाँधि घोड़ाँरा ऊगटा[६] षाँचि नै असवार हुवा। दासीनै कह्यौ, रथि जोति वेगा पधारौ, म्हारी आँख्या छाती ऊपरां राखिस्यूं। तरै दासी आय कह्यो। तरै रथ जोति तलावनै हाली[७]। रजपूत केइक पोढिया छै। केईक टेव टालण नै गया छै। राजड़ियै पूछियौ, रथ क्यूं जोतरियो। तिसै रथ थौ तिको पॉवडा सै-पाँच परो पोहतो। नींबोजी असवारी लीयाँ साम्हाँ आय मूंढा आगै रथ करि नैं चलाया। तरै रजपूत हथियार बाँधि राजड़ियौ दौड नैं पोहतौ। वेढ[८] हुई। राजड़ियौ काँम आयौ। घणा रजपूत काँम आया। केइक लोह[९] पड़िया। नीबोजी सही-जीत होय सोनगरी ले आपरै गाँव आया। आ बात वीरमदेजी सुणी, तद रावळांनें कह्यौ, गधेड़ौ छै, बाईरो हाथ छवियो[१०] जँणे बाईरो जमारो खराब हूवो नैं काँम भूंडो[११] कीयो बाई, पिण नींबो म्हाँरो मोटो सगो छो, इण बातरी सगाई[१२] काई राखी नही। हिवै रावळजी नैं खबर गई। तद रावळजी भालो घड़ायौ-"एथ बैठा ऊथ वैरै धाँ"[१३]

---

१ पुत्री। २ विवाहिता। ३ भाँवर। ४ ग्रहवास कराना, पत्नि करके रखना। ५ स्वीकार किया। ६ कमरबंध, कसने, फीते। ७ चली। ८ लडाई। ९ घायल होकर। १० छुआ, स्पर्श किया। ११ बुरा। १२ कांन, कायदा, आन। १३ जेसलमेरी भाषा में —यहाँ बैठे वहाँ तक मार करें।

भालो घड़ावताँ मास छः लागा। पछै लोहाररी बेटी अरज कीवी, रावजी, भालो तयार हुवो छै। तरै रावजी बोल्या, म्हारी[१], उरो ल्याव ज्यूं नीबलै नै पोय रालाँ[२]। तरै डावड़ी[३] कह्यौ, रावल़जी, हेक तो बडो सोच छै। मूं[४] बैरी किसूं। तरै डावड़ी बोली, ऊ[५] मोटियार छै, थे बूढा छो, कदे[६] भालो पकड़ खोस[७] नै पाछो ही चलावै नैं रावल़जीरै दै तो हाथ कै ठोड़ घालाँ[८] तरै रावल़जी कह्यो, हिवै हिवै[९], म्हारी, भलो कह्यौ, जावो भाँजि रालौ[१०] नैं रावल़जी कह्यौ, भाई, माँहजी[११] नीबला तूं ले गयो छै, ताँहजी[१२] सूरज ले जाइया। इतरो कहि सुख माँहे रहै।

हिवै सोनगरीरै बेटा दोय हुवा। कागद वीरमदेजीरा आवै। इम वरस दस हुवा। तठै दूजी बहिन वीरमदेजीरै छै, तिणरो साहो थापियो। दहायाँ[१३] नै नाल़ेर मेल्या। तरै प्रोहित मेल वीरमतीनै बुलाई। तिका जलूस करि नै आई। पिता माता भाई भोजायाँ सूं मिली। घणी खुस्याली हुई। दिन २/३ बीताँ भाई वीरमदेस्यूं बाई कह्यौ, थाँरा बेहनेई[१४] नैं बुलावौ तौ भली बात छै। मोनै गिणो तो म्हारी एक अरज छै। मोनै काँचल़ी दीनी, हूं जाणस्यूं अमर-काँचल़ी[१५] भाई दीधी।

---

१ सम्बोधन, मेरी···। २ पिरो डालें, बींध डालें। ३ लड़की। ४ मेरा। ५ वह। ६ यदि, कदाचित्। ७ छीनकर। ८ हाथ···घालाँ (मुहा० = हाथ किस जगह डालें, किसे मुंह दिखावें। ९ ठीक, ठीक। १० तोड़ डालो। ११ मेरी स्त्री। १२ तेरी। १३ क्षत्रियों की एक शाखा। १४ बहिन का पति, बहनोई। १५ मेरे पति को अभय देने को मैं भाई की ओर से 'कांचली' का दान समझूंगी; भाई बहिन को जो पोशाक देता है उसे 'कांचली' कहते हैं— वास्तव में 'कांचल़ी,' कंचुकी को कहते हैं, जो स्त्रियाँ वक्ष पर पहनती हैं।

थांहरै नै उणांरै मन खतरौ भाजै[1] । वीरमदे रावजीनैं पूछि नै बात आरे कीधी । कागद लिख नींबांजीनें तेड़णरौ नैंतो मेलियौ । तिको कागद नींबाजीनैं दीधौ । घणूँ राजी हुवा । आदमियाँनैं घणौ सनमाँन दीधो । दिन २/३ राख नै कह्यौ, मोनें चाकर सेर बाजरी रौ रजपूत गिण्यौ । पिण म्हारी निसाँ-खातर[2] जालोर जाय सोनिगराँ तळी बैसण[3] री न वैसै[4] छै, नैं पंजू पायक[5] मो कनै आय ले जावै, तो मुजरौ करूं । अै बचन आदमियाँ आयनैं कह्या । तरै वीरमदेजी पंजूपायकनैं कह्यौ, थे सिधाय नै नींवा सिवालोतनै तेड़ ल्यावो । तरै पंजू कह्यौ, थे देसोत राजवी छो, काई बाँकी चूकी[6] मनमें होय तो मनै मती मेल्यौ, आयाँसूं ऊंची-नींची करस्यौ[7] तो मोनैं चाकरीसूं गमास्यौ । तरै वीरमदेजी बाँह बोल दे[8] पंजूनै मेलियो । तिको समाज सूं नींबाजी कनै आय मिलियो । नीबैजी घणो प्यार आदर कीधौ । पंजूनैं सर्व बात कहि नै बांह देनै[9] नींबाजीनै जालोर ल्याया । कान्हड़देजी रांणकदेजीस्यूं जुहार हुवो । घणा प्यारसूं मिलिया, डेरो दिरायौ, मोदी बतायौ[10] ब्याह हुवो, गोठ जीम्या ।

एकै दिन राजड़ियारो बेटो वीजड़ियौ बीरमदेजीरी खवासी करै छै । तिण आँख भरी, चोसरा[11] छूटा । बीरमदेजी पूछियौ,

---

१ शंका मिटे । २ विश्वास । ३ हेठा देखने की, आश्रित की तरह बैठकर अपमानित होने को । ४ नहीं जँचती है । ५ नौकर । ६ मोटा बैर, टेढा कपटभाव । ७ बुरा भला कहोगे । ८ प्रतिज्ञाबद्ध होकर । ९ अभय देकर । १० खांन पांन के सामान का स्थल नियत किया । ११ अश्रु धारा ।

बीजड़िया क्यूं, किण तोनैं इसा दुख दीधो। तद बीजड़िये कह्यौ, राज माथै धणी, मोनैं दुख दे कुण, पिण नींबो म्हारा बाप रो मारणहारौ, गढाँ कोटाँ माँहि बडा बडा सगाँ माँहे धणीयाँरो हासा-रो-करावण-हारो[1], वळे गढ माँहे खंखारा[2] करै छै नै पोढै छै, तिणरो दुख आयो। वीरमदेजी कह्यौ, म्हे तो पंजू नै बाँह बोल दीधा, सूंस[3] कीधा, तिको कुं ही कहणी नावै नै थारै बापरो मारणहार छै, तोसूं मरै तो मारि राखि। तरै बीजड़िये कह्यौ, धणियाँ[4] रा माथै हाथ चाहीजै। गोठ करि मोनैं हुकम करौ तौ मारि राखिस्युं। वीरमदेजी कह्यौ, सखरी कही। परुसगारै[5] री वेळाँ म्हे तोनैं कहाँ, बींजड़िया, पुरसगारो करि। तरै बीरमदेरा कड़ियां[6] की तरवार कनै राखी थी। तिका अजांण[7] में वाही। तिको नींबाजीरो माथौ अळगौ जाय पड़ियो नै बीजड़ियौ थांभारै ऊंलै[8] आय गयौ। तदि नीबैजी आपरी तरवार माथै पड़िये पछै आडी वाही, तिको थांभारा नै वीजड़ियारा दोय वटका[9] हुआ। तिण समीयैं रो दूहो—

वही वही तै वाहि नर थांभो नीम्फौड़ियौ
नीबड़ा तणौ नेठाहि मरियै वीजड़िये मुणास[1] ॥१॥

---

१ हँसी (अपमान) कराने वाला। २ गर्वसूचक ध्वनि। ३ शपथ। ४ स्वामियों का। ५ भोजन परोसना। ६ कमर की। ७ अनजान में, अचानक। ८ ओट में, ओल्हे में। ९ टुकड़े। १० तलवार तो उसी बार चली (बही) थी जब (उसने) आदमी (बीजड़िया) समेत थंभे को काट डाला था। पुरषार्थी नींबा ने मारे जाने पर भी बीजड़िये को मार डाला।

पैला वीरमदेजी नीवाजीरा साथ, उमरावांरा हथियार सिकली-गररै दीधा था, तठै गुल[1] रौ वाढ दिरायौ थौ। कांम पड़ियां एकै सूंही अवसांण[2] सम्मियो नहीं। रजपूत था तिकां सगलां सत करै त्युं कीनौ। हाथीदांतांरी वाहि करि करि बाथां आय आय नै नींवाजी कनै आय पड़िया। वीरमती आपरा बेटानूं लेनै नीसरी, तिका आपरै गांव जाय बैठी।

औ दगौ हुवौ, पंजू पायक सुणियौ। तरां मूंछां दाढी ऊपरि हाथ फेरि रीसायनैं नीसरियौ। तिको अलावदी पातिसाही करै तठै गयौ। पातिसाहसूं मिलियो। घाव-डाव[3], फुलतारो खेल[4] दिखाय घणो पातिसाहनै रीझायो। एकै दिन पातिसाह फुरमायो, पंजू, तो जिसो थारी बरोबर खेलै इसो पातिसाहि मांहे दूजो कोई नहीं। तरै पंजू कह्यौ, एक जालोर कानड़दे सोनगरारो बेटो वीरमदे छै, तिको मोसूं कुंहीक[5] सखरो छै। तद पातिसाह कानड़दे ऊपरां फुरमान मेल्या। तिण मांहे लिखियो, तीने ही सिरदार हजूर आवज्यो, नहीतर हमकूं फेरा दिरावोगे[6]। औ फुरमांन वाच घणौ सोच हूवौ। जांण्यौ, ऐ पंजूरा चाला[7] छै। तरै तीने ही आलोच्यौ[8], जो बैस रहीजै तो दिलीरा धणींसूं पोच आवां[9] नहीं। नै हजूर गयां काई बात झूठी साची रफै दफै करिस्यां[10]। यों जांण घोड़ा हजार एक री गांठ[11] करि

---

१ धार। २ औसान, मौके का काम। ३ दाव पेंच। ४ फुरती का कौशल। ५ कुछ कुछ। ६ इनकारी करोगे; स्वयं आने की तकलीफ़ दोगे। ७ कपटमय व्यवहार। ८ सोचा। ९ नहीं पहुंच पाते, बराबरी नहीं कर सकते। १० रफा दफा करेंगे, तय करेंगे। ११ समूह, समारोह।

सखरै मोहरत सखरां सांवणां चढिया । तिके कितरेक दिनांनै दिली पोहता । पातिसाहजीसैं मालुम कराई । तरै पातिसाहजी आपरा खासा तनवगसी[१] अमीर उमराव मेल्ह दरवार अंब-खास मांहे ल्याया। तीने सिरदारे मुजरो कीयौ। पातिसाहजी घणो सनमान दीयौ। सिरपाव दीधा, रौजीनौ[२] हजार तीन रुपीया कर दीना। सिरपाव, मोतियांरी माळा, घोड़ा देनै डेरै मेल्या।

हिवै एकै दिन पातिसाहजी पंजू पायकनै नै वीरमदेजीनै खेलणरो हुकम दीयौ। तिकौ खेलतां खेलतां पंजूरै मनमैं आई वीरमदेनै मारूं। जठै वीरमदे खेलणने दरबाररो तयारी कीधी। जरै अपछरा गुपत आय कह्यौ, पंजूरै पगरा अंगूठा मांहे पाछणौं[३] छै, जाबतो राखे, सावधान थको रहे, हूं थारा डाव[४] पंजूरै लगावस्यूँ। आ वात सुणि वीरमदे आपरा अंगूठारै नीचै पाछिणो बांधि रेतीमैं आया। पातिसाहजी झरोखै बैठा देखै छै। उमराव पाखती[५] रेती मांहे खड़ा छै। कान्हड़देजी रांणकदेजी परमेश्वरजीनै समरै छै। तिसै दोनूं खेलतां खेलतां वीरमदे इसौ डाव खेल्यो तिको उछलतौ साहमैं काळजै पंजूरै काळजै दी। तिको पेट फाड़ि आँत, ऊझ[६], फेफरी[७] नीकळ ढेर हुवा। धरती पड़ियौ। पातिसाहजी क्युं मसळायौ[८], पिण खेल मांहे घाव डाव मोटीयारां[९] री फुरती, तिणसूं क्युं कह्यौ नही। तरै वीरमदेजीनै सिरपाव दे डेरामें विदा कीया।

---

१ अंगरक्षक। २ नित्य का वेतन। ३ उस्तरा, छुरा। ४ दाव, पेंच ५ सभी, चारों ओर। ६ ओझरी, पेट की अंतड़ियाँ। ७ फेफड़े की नाड़ियाँ। ८ उदास हुवा। ९ मर्दों का।

एकै दिन वीरमदेजीरै पहिरण सारू पगांरो मोजड़ी[१] करावण सारू मोचीनै हुकम कीयौ । तरै मोची लाल, मोती, कलावतू, बादलौ दे खवासनं साथे दीधो । मोची दुकान ऊपरि आयौ । कनै खवास बैठो छै । मोची परवाना-माफक मोजड़ी करै छै । मोती, लाल-पटा[२], पना लगाया छै । तिसै पातिसाहजीरी बेटी साह बेगम, तिणरी दासी मोची कनै मोजड़ी करावणनें आई । आगें मोजड़ी करतो देखि पूछियो, आ किणनै मोजड़ी हुवै छै । मोची कह्यौ, जालोरकौ धणी कांनड़दे सोनिगरौ, तिणरो कंवर वीरमदे छै, तिणरै पगांरै सारू मोजड़ी बणै छै । दासी मोजड़ी देखि देखि हैरान हुई । तद दासी कह्यौ, देखाँ, एक मोजड़ी दे ज्यूं बेगम साहिब नै दिषाऊं । मोची कह्यौ, छांनै-सै ले पधारौ । तद दासी मोजड़ी लेनै मांहे गई । कह्यौ, बेगम साहिब आप दीनु[३] पातिसाहां के फरजन[४] हो, तिको निपट सुचूंपसूं[५] रूंसदार[६] मोजड़ी पगां पैहरौ हौ, पिण एक रंघड़[७] का पगांरो मोजड़ी देखो । बेगम मोजड़ीरा पटा देखि कह्यौ, इणको पैहरणवालौ न देख्यौ । दासी कहै, न देख्यौ ? तद बेगम कह्यौ, मोची नैं पूछि डेरो देखि । कह्यौ, सिरदारांरो नांम, सबी निजरां देखि आवजे । पछै पातिसाहकै मुजरै आवै, तद हमकूं दिखाए । ऐ वातां करि दासी पाछी जाय मोचीनें मोजड़ी दीधी नैं सिरदाररो डेरो देखि आई । सिरदाररी सबी, देही री मरोड़[८], आख्यां रो पांणी,

---

१ जूती । २ लाल रेशम । ३ दीन-दुनिया के । ४ फर्जंद, सन्तान । ५ बड़ी ही सफाई-चतुराई के साथ । ६ शानदार, ठसकदार । ७ राजपूत । ८ अकड़ ।

मछर[1] देखि देखि हैरांन हुई। दासी पाछी आयनै कह्यौ, बेगम साहिब, नर-समंद[2] मुरधर[3] रा भलां ही कहावै, जठै वीरमदे सरीखा जवान नीपजै, देख्यांहीज बणि आवै । और दूजो कोई पातिस्याही मांहे होय तो कहूं । इतरो सुणि बेगमरौ जीव बांध्यौ[4], नेह बिणदीठां जाग्यो । मन मांहे देखणरी घणी ऊपनी[5] । तिसै बीजै दिन दरबार कान्हड़दे, रांणकदेजो, कँवर वीरमदे बड़ी जलूससूं पातिसाहजीरी हजूर आवै छै । तठै दासी बेगमनै झरोखै की झांखो[6] मांहे वीरमदे जीनूं दिखाया । बेगम तो देखत-समान भरतार धारयो । जीव तलबलाटा[7] लैणा मांडिया । वीरमदे-बाहिरी[8] घणी दोहरी[9] छै । तिको पैलांतर[10] रौ नेह वाचा-बंधियो[11] छै । तिणरो संबंध कहै छै—

कासी वांणारसी मांहे एक साहूकार कोड़ीधज[12] बसै । तिणरै पुत्र एक । तिको मोटो हुवो, ठावी जायगा परणायौ । जुवांन हुवो । एकै दिन आपरी सौंणहर[13] मांहे सांपड़ै[14] छै नै आपरो अंतेवर[15] हजूर चलाकी[16] कर संपड़ावै छै । तिसै झंखेरो[17] आयो । तरै अस्त्री दोड़ि महिला मांहे पैठी नै साहूकाररा बेटारो डील सारो धूल मांहे लपेट गयौ । तरै साहूकार मन मांहे जांण्यो, घर मांहे माता पिता,

---

१ गर्व, वैभव, गौरव । २ नर-समुद्र, समुद्र के समान गंभीर पुरुष । ३ मरूधरा, मारवाड़ । ४ चित्त आकर्षित किया । ५ लालसा हुई । ६ छिद्रों, झांकी, झांकने का मार्ग । ७ अकुलाने लगा, तलमलाने लगा । ८ वीरमदेव के बिना । ९ दुःखिता । १० पूर्वजन्म का । ११ प्रतिज्ञावद्ध । १२ करोड़पति । १३ स्वपन गृह, शयनागार । १४ स्नान करता । १५ स्त्री । १६ कुशलता सहित । १७ आंधी का झोंका ।

जमारो[1] सखरो[2] लाधो, पिण अस्त्री लाधी नही । तरै पांणीसूं सांपड़ि रीस मांहे उठि कासी-करवत[3] छै, जठै गयो । करवत लेतां कह्यो, औ हीज घर, माता पिता लाभूं नैं म्हारा आधा अंगरी अस्त्री होज्यौ नै आधा अंगरो हूँ होज्यो । इतरो कहि कासी-करोत लीयो । पाछो उण हीज साहूकाररै अवतार लीधो नै डावा-अंगरी मोटा साहूकाररै पुत्री ऊपनी । मोटा हुवा, परणिया । संसार-सुख भोगवै छै । एक दिन आपरी आगली सुणैर[4] मांहे छै, पोढै तठै संपाड़ो करै छै । अस्त्री हजूर पांच संपड़ावै छै नै आगला भवरी[5] अस्त्री झरोखै अहिवात[6] मांहे बैठी छै । तिका सांपड़तो देवरनै देखै छै नैं ओ साहूकार बैठी जांणैं छै । तिसै आँधीरो झंखेरो अड़वाय[7] आयो । जरै अस्त्री आपरा कपडासूं साहूकारनैं लपेट लीयो, रज कपड़ांरै लागी, पिण साहूकाररै रज लागण दीधी नहीं । झंखेरो टलियो । तरै साहूकार अठी उठी देखि हसियो । तरै साहणो[8] पूछियो, कंवरजी साहिब, आप हसिया तिणरो विगरो[9] फुरमाईजै । तरै साह कह्यो, आ थारै जेठाणी, तिका पैलै भवरी अस्त्री छै । आज सांपड़तां झंखेरो आयो थो, ज्यूं आयो । जरै आप दौड़ि सालि[10]

१ जीवन । २ उत्तम । ३ काशी में विश्वनाथ के मन्दिर में एक गुप्त, जमीन के नीचे स्थान था, जिसमें पातालेश्वर महादेव के सामने भक्त लोग आत्म-बलिदान कर मोक्ष अथवा अपना मनोरथ-लाभ करते थे । ४ शयनागार । ५ पूर्वजन्म की । ६ विधवापने में । ७ वातूल, बगूला, हवा का चक्राकार तेज झोंका । ८ साह की स्त्री । ९ ब्यौरा । १० बैठने का कमरा ।

में गई, नै हूं रजीसूं भराणो[१]। तरै मोनै रीस आई। घर माता पिता लाध्या, पिण वैर[२] म्हारा जतन करै तिसै लाधी नही। तरै खरली ले[३] रीस मांहे ऊठि करोत लीधो। जठै आधा अंगरी थे अस्त्री हुवा नै आधा अंगरो हूं हुवो। ऐ वातां झरोखै बैठी सुणी। तरै साहणीनै रीस चढी। झरोखासूं उतर पाधरी करिवत छै, तठै गई। करोत लेती कह्यौ, म्हारै भरतार ओही साहूकार होज्यो। इसो व्रत ले नै करोत लीधो। दइवरै जोग पग हेठै गायरो हाड आयो। तिणरा फरस[४] सूं अल्लावदीन पातिसाहरै बेटी हुई। लारै[५] साहरै बेटै सुणी, साहणी थारै नांम धारा-करोत[६] लीधो। तरै इण साहूकार बीजी वेळा वले, करोत लीधो। लेतां कह्यौ, आगली अस्त्री सूं वाड़ि कांटो मती देज्यो[७] नै मोटा राजवीरै देसोतरै[८] जनम होज्यो। करोत ले नै देह त्यागी। तिको जालोर कांनड़देरै घरै वीरमदे कँवर हूवो। तिणसूं पैला भवरी नीयांणासूं[९] वेगमरो नेह लागो।

हिवै अठै वेगम पातिसाहसूं अरज कीधी, मैं वीरमदे सोनिगरानै कबूल कीधो, मेरा व्याह नका[१०] करो। मेरा खावंद सिर-पोस[११] जालोर का धणी है। पातिसाह कह्यौ, बेगम, ऊ तो हिंदू है,

---

१ भर गया। २ स्त्री, पत्नि। ३ जल्दी से स्नान करने को राजस्थानी में "खरली लेणो" कहते हैं। ४ स्पर्श। ५ पीछे से। ६ काशी-करौत का कठिन व्रत। ७ वाडि कांटो·········दीज्यो (मुहा०)—किसी प्रकार का सम्बन्ध न देना। ८ देशपति, राजा के। ९ धारणा, लालसा से। १० निकाह, मुसलमानी रीति से शादी। ११ शरोभूषण।

मेरी तरफसूं गाढ भांति भांतिसूं करिसूं, पिण मेलो[१] तो खुदाय के हाथ है। ऐ वातां करि पातिसाहजी अंब-खास तखत विराजिया। खांन सुलतान दरीखांनै मिलिया। कांनड़देजी पिण आया। जरै पातिसाहजी रावजीनै घणो आदरसूं सगाविध[२] सूं बतलावण कीधी नै कह्यौ, रावजी, हमारी लड़की तमारा लड़काकुं दीधी, सलांम करौ। हम तुम समधी का नाता है। हमारै तुम बडे रवेस[३] हौ। रावजी कह्यौ, पातिसाह दीन-दुनीरा छो, हूं पाधरियौ[४] घर रौ धणी रजपूत छूं, पातिसांहा सगावल[५] करो, रोम सूंम[६] विलायत रा धणी छै। हूं तो बंदगी करूं छूं। पातिसाहजी घणो हठ कीनो। जरै कह्यौ, मोटीयारनै बूझूं; उणरी रजावंध[७] री बात छै। तरै हाथी, घोड़ो, मोतियांरी माला, खंजर देनै विदा कीया, नै कह्यौ, सुबे कँवर कुं लेनै वेगे आइयौ। कांनड़देजी आय नै कंवरनै सगली हकीकत कही। तरै कंवर कह्यौ, रावजी, जो कबूलां नहीं तो तुरकड़ो अठै ही मारै। तिणसूं प्रभाते हूं साथे चालस्यूं नै हूं वातां करलेसूं। प्रभात हुवां कांनड़देजी, रांणकदेजी वीरमदेजी तीने वडी पोसाख कर हजूर आया। मुजरो कीयो। तद पातिसाहजी वीरमदेजीनै फुरमायो, कँवरजी, हम तुमारै तांई हमारी लड़की साह-बेगम दीधी, कुरनस[८] करो। वीरमदेजी सिलांम करि कह्यौ, हजरत, म्हे घररा

---

१ मिलाप। २ सगापन के ढंग से। ३ प्रिय सम्बन्धी, माननीय आत्मीय जन। ४ सीधा-सादा। ५ सगपन, सम्बन्ध। ६ रोम सूंम'—प्राचीन काल में भारतवर्ष से बाहर के राष्ट्रों के लिए साधारणतः, प्रयुक्त होता था। ७ रजामंदी, आज्ञा। ८ स्वीकारसूचक अभिवादन, कृतज्ञता-प्रकाश।

धणी रजपूत जमीदार भोमियां[1] छां, पातिसाहरा पूंगड़ा[2] म्हारै घर लायक नहीं, नै पातिसाहां हमकूं दीवी तो कबूल कीवी, पिण परणस्यां म्हांरी हिंदूरी राह[3]। तदि पातिसाह कह्यौ, तुमारी राह कैसी ? तद कँवर कह्यौ, बरस २/३ वांनै जीमैंगे[4]। पीछै जांन[5] वणाय, तोरण बाँदि, चँवरी बंधाय परणैंगे। दिल्लीरा धणीरै घरे परणां जिसो सांमो[6] खजांनो म्हां कनै न छै। तिणसूं नाकारा[7] री अरज करां छां। पातिसाह कह्यौ, लाख १२ रुपीया खजांनांसं ले जावो, नै तीन बरसरी सीख दीवी। वेगे तुमारी राहमें आइयो। सिरपाव दीधो। रुपीया खजांनांसूं कढाय डेरे मेल्या। अबै तीनां मिसलत[8] कीधी। देशमें पाँच गढ सम्हो तो इयांरो मुँहडो तोड़ाँ। आ वात करि चालणरी तयारी कीधी। तरै साह-वेगम पातिसाहसूं अरज कीधी कि रैवले-जहां, ऐ हिंदू है दगादार[9], जाणां[10] आवै नावै, तिसै इणका चचा (?) राणकदे कुं ऊवाल[11] मांहे राखो। पातिसाह कह्यौ, खूब कही। अबै

---

१ भूमिपाल, जागीरदार। २ प्रतिष्ठित संतान। ३ रीति, रस्मपूर्वक ४ व्याह होने के कुछ दिन पहले वर अपने कुटुम्बी और प्रियजनों के यहाँ भोजनार्थ निमंत्रित किया जाता है, इसे "बाँन जीमणो" कहते हैं। वीरमदे बादशाहों का दामाद है, अतएव कुछ दिन नहीं, बल्कि कुछ वर्ष तक, बादशाह के धन पर 'बाँन' जीमेगा। ५ बरात। ६ सामान। ७ नाँही। ८ सलाह। ९ धोखेबाज। १० न जाने। ११ बदले में—वैरी के किसी आत्मीय जन को किसी शर्त पर अधिकार में रखना और शर्त पूरी हो जाने पर छोड़ देना—इसे 'उवाल' (Ransom) कहते हैं।

कान्हडदेजी सीख मांगणनूं आया। तरै पातिसाहजी फुरमायौ, रावजी, एक तुम्हारा छोटा भाई राणगदे हमारै पास राख जावौ, ज्यूं हमारै निसां-खातर[१] रहै। कान्हड़देजी आरे कीधी। तरै रांणकदेजीरै असवारीरो घोड़ो भींथड़ो देवांसी[२] छै, तिको घणो चलाक छै। एक आसो चारण रांगणदेजीरै। तिणसूं घणो जोव[३]। तिणनै राखियौ। एक चाकरीनै खवास, तीन आदमी नै तीन घोड़ा राखिनै जालोरनै चाल्या। तरै राणगदेजी कह्यौ, गढ वेगौ करावज्यौ। कांनड़देजीरै सोनांरो पोरसो[४] तो आगै हीज छै, पिण दिलीरा धणीरी तपस्या करड़ी[५]। तिणसूं कुंही कहणी नावै थी। इण वात ऊपरां जीव आसंग[६] पृथ्वी मांहे नाम राखणनै इतरो कांम कीधौ। गढ कराय वेगो समाचार देज्यो। अठारो चढियो उठै हीज पागड़ो छोडस्यूं। इतरी वात कह राइ कूच कीधो। तिके मजलां-रा-मजलां जालोर आया। सखरौ[७] मुहरत जोय गढरी नींव दिराई, पिण गढ करावणरो उतावळो घणौ गाढ मांडियौ। रुपीयो पइसा-जूं जांणै नहीं। पछै पातिसाहजी तगै मुगल, तिणनै कह्यौ, राणकदे सोनिगरानूं म्हारी हवेली मांहे राखो। इणका जावता तुमारै हवाले है। तगै कबूल करी। रांणकदे पइसा एक भर अमल गळियो पीवै, नै अमल पइसा एक भर आसौ चारण करै। नैं रांणकदेजी अमल करि कटारी बांधि भींथड़ा ऊपरि असवारि होई नै खुरी

---

१ विश्वास। २ देववंशी, दिव्य। ३ प्रेम, मोह। ४ प्रतिष्ठायुक्त सुवर्ण, खजाना इत्यादि (?)। ५ भाग्य अधिक प्रवल है, पूर्व जन्म के कर्म अधिक प्रवल हैं। ६ हिम्मत करके। ७ शुभ।

करावै[१]। तद अमल ऊगै[२]। तिको तगो देखे। तगे पूछियो, रांणकदेजी अमलकी तुम्हारै या क्या तरै है। तरै राणगदेजी कह्यौ, अमल नै जिण सभाव घातै तिण ढीज ढालै[३] ऊगै, जिको झोंथड़ारी खुरी विना मीयांजी, अमल ऊगै नही। अबै दिन ५/७ में मुजरै जाय। पातिसाहजी बहुत प्यार करै। समाचार वार वार पूछै। मास २/३ नै पातिसाह पूछियो, रावजी नै कँवरजी पौता[४] की कुसल खेम के कागद आए। रांणगदेजी कह्यौ, चाल्यां पछै रावजी पोतांरो समाचार आयो, पण वीरमदे दोड़ गयो थो, तिणरो सहिर पोतो नहीं। तिणरो समाचार नायो छै। तिणरी फिकर घणी छै। आदमी च्यारे तरफनैं दोड़िया छै। ऐ समाचार छै। वले समाचार आसी तद मालुम करिस्युं। मास १/२ नैं वले पातिसाह पूछियो। तरै रांणकदेजी कह्यौ, अजे स काई खबर नाई छै। तिणरो म्हांनै घणो सोच हुवै छै। दीसैं पातिसाहसूं मूंढामुंढ[५] नटणी[६] नायौ। तिकौ चाल्यां पछै कठै ही गयौ, सो परमेसरजी जांणै, हजरत, बहुत फिकर है। तद पातिसाहजी कह्यौ, या तौ बुरी हुई, खुदाइ भली करैंगे। पातिसाह मांहे बेगमनै कही। तद बेगम कह्यौ, हिंदू दगैदार है, झूठ कहै है। जहांपना, इनकी जाबता रखियौ, हिंदू नाठ[७] जायगा। पछै पातिसाहजी गवेसौ[८] छोडियौ नैं न छोडियो पिण छै।

---

१ घोड़े को फेरते थे। २ अफीम का नशा चढ़े। ३ ढंग से। ४ पहुँचने की। ५ मुँह पर, प्रत्यक्ष में। ६ नांही, निषेध करना। ७ भाग जायगा। ८ पूछताछ, गवेषणा।

तिसैं बलखरै पातिसाह भैंसो एक मातो, जिणरा सींग थेट वांसां तांई[1] आया, वांसो सगलो ढक गयो छै, तिण साथे आदमी ठावा इका[2] दे दिल्ली मेलिया छै नै कहायो छै, इणनै जभै[3] मत करज्यो नै इणनै झटकासूं मारि नै हमारा चाकरांनै सीख देज्यो। देखां, तुमारै सिपाई कैसे है। पातिसाही मांहे इसो समाचार लिख मेलियो। तिके भैंसो लीयां दिल्ली आया। पातिसाहांसूं मिलिया, हकीकत कही। कागद दीधा। पातिसाहनै भैंसो दिखायौ। तद पातिसाह भला भला सिपाई इका बहादर था, त्यांनै बुलाय बुलाय नै तरवारियां बहावै, तिके तरवाररा बटका[4] २/४ हुै, पिण सींगरी छोंती[5] ही उतरै नही। इणरो पातिसाहनै घणो सोच हूवो। आदमी आया छै, त्यांरी जावता घणी करै। दिलासा घणी करावै। भैंसो रातबां खायै, तिणरो किणहीसूं सींगरी छोंती ही करणी नावै। तरवारियां खुरासांणी थी, तिके सगली भागी[6], सिपाई वलि करि करि हार्या। यों वरस २/३ तांई रह्या। पातिसाह कनै सीख मांगी। तरै पातिसाह बेदल[7] थकै घणी खुसामद कर सिरपाव खरची देनै बिदा कीया। तिके चालता चालता जालोर आया। तिसै गढ पिण तयार हुवो। क्यूं कांगुरा हैणा रह्या था। तठै वीरमदेजी असवार होय वाग जायै छै। विच माहे जमरांणा[8] रो वाहण[9] होय, तिसौ भैंसौ मातो हाथीरो सो कांधो, सींग जाडा[10], वौड़ा[11] लांबा, वांसौ[12] सगलौ

---

१ पिछाड़ी तक, पीठ तक। २ विश्वासी, ताकतवर पहलवान। ३ जिबह करना। ४ टुकड़े। ५ छिलका। ६ टूटगई। ७ बेमन, दुःखी। ८ यमराज। ९ वाहन, सवारी। १० मोटे, पुष्ट। ११ बहुत, बहुल। १२ पीछे का भाग, पीठ।

ढक गयो। देखि कँवर वीरमदे ऊभौ रह्यौ नैं पूछियो, दुरत[1] भैंसो कठै ले जावो छो। तरै मीयां कह्यौ, बलखरै पातिसाह दिलीरा पातिसाह कनै मेलियो थो, जभै करौ मती। झटकासूं माथो वाढि हमारै तांई सीख दिराई थी। तिको वरस तीन रहे, पिण पातिसाही मांहे कोई सिपाई नहीं। दिली का पटैल[2] है, जमींपट में भे[3] खाये है। इतरी वात सुंणि वीरमदेनै रीस ऊपनी। तिको पाखती भैंसारै पसवाड़[4] आय चरतालै कड़ियांसू तरवार वाही, तिको सींग नै माथो वाढि दोय वटका कर नांख्या। मीयां देखता हीज रह्या। वाह वाह सगलां कह्यौ। कँवर तो पाछा गढ सिधाया नै मीयां तो पाछा दिल्ली गया। जाय पातिसाहजीनै माथो, सींगांरा वटका दिखाया नै कह्यौ, ऐसा सिपाई हजूर राखीजै। जालोर कांनड़दे का कँवर वीरमदे नां कुछ बल कीया नां तरवार तोली, कँवरानै लोह करै त्युं कीधौ, पातिसाहांरो बोलबाला हूवा। इतरो कहि मीयां सीख मांगि वलखनै गया। इण भैंसारा मुजरासूं पातिसाहजी घणा राजी हूवा। वीरमदेरी खबर पाई। तरै पातिसाहजी इण मुजरांसूं रांणकदेनै क्युं ही कह्यो नही। तरै सोनैरो छड़ीदार मेल नै राणकदेनैं बुलायौ। रावजी, तुम्ह कह्यौ, कँवररी खबर नही, सो तो हमारी पातिसाहीका कँवर बोलबाला[5] कीया। तिणसूं तुम ऐसा दगा कीया, झूठ हजूर कह्यौ, तिणको गुन्हौ माफ वगसियो।

---

१ बेसमय, बेऋतु अथवा दुरंत, भद्दी शकल वाला। २ स्वामी। ३ अर्थ अस्पष्ट है; संसर्ग से अर्थ लिया जा सकता है, मुफ्त ही जमीन का मालिक बना बैठा है। ४ एक बाजू की ओर। ५ यशप्रशस्ति।

पिण, अब कँवर सिताब हजूर आवै, त्यूं करो । राणकदेजी कह्यो, हजरत, मोनें अजेस[१] ठीक खबर नहीं छै । पातिसाह फुरमायौ, तो अबै ताकीद करि बुलावूं छुं । सीख मांगि तगारै भेळो डेरो छै तठै आया । इण भैसारै लोह करणैसूं रांणगदे घणो विराजी हूवो । झूठी साची वात कहि भूलाई[२] थी । पाछासूं पातिसाह तगा मुगलनै कह्यौ, हिंदू हमारी निजर दगादार-सा आवता है नै हरा[३] रह्या तो चढि चालतौ रहैगो । तिणसैं घणो जाबतो राखज्यो । वळे सोनारी बेड़ी दीधी, आ राणगदेरै पगां माहे घालिज्यो । चोकी प्रोहरै[४] घणी जाबता राखज्यो । इसो हुकम लेनै तगो हवेली आयौ । तिसै पातिसाह ओठी[५] आदमी जालौर चासभास[६] लैणनै मेल्यो थो, तिकोई आय पोतो । आदमी कह्यौ, गढ सभियौ, उठै तो वेढरी[७] त्यारी छै । बारै बरस तांई धांन, घृत, तेल, गुळ, खांड, अमल, भांग, तिजारो, किरांणौ[८] कपडौ, मूंग, धणो[९], दारू, सीसो लोहरो सांमान कीयो छै । दहीसूं रुईरा फूंभा[१०] लपेट बावड़ी भरै छै । इसी वातां बेगमसूं कही । तरै बेगम आदमी पातिसाहरी हजूर मेलियो नै अरज थी ज्यूं कही । ऐ समाचार तगानै दे मेल्या, घणो जावतो करज्यो । अबै सोनारा थाळ मांहे सोनारी बेड़ी तगौ घालि ल्यायौ । तिण वेळां रांणगदेजीरै अमल करणरी वेळा छै । तठै तगै कह्यौ, रावजो, पातिसाहरो हुकम छै, बेडो पगां मांहे राखो । तठै आसौ चारण हसनै कहै—

---

१ अभी तक तो । २ भुलावा दिया था । ३ बेफ़िक्र । ४ पहरे पर । ५ जासूस, संदेशवाहक । ६ खबर । ७ युद्ध की । ८ फुटकर चीजें । ९ धनिया । १० रूई के पहल (घावों की मरहम पट्टी करने के लिए ।

दूहा

रणका रुणझणकेह, राय-आंगण रमियो नहीं ।
(तौ) पहिरस केम पगेह, वड़नेवरी वणीरउत ।[१]

ओ दूहो सांभलि[२] राणकदे कह्यौ, मिरजाजी, अमल करूं, पछै हुकम प्रमांण छै । तगै कह्यौ, खूब कड़वा आरोग ल्यो । तरै अमल करयौ, कटारी बांधि नै झींथड़ै असवार हूवा । तरै तगै कह्यौ, हिंदू अजब गिवांर है, वरजतां मांहे घोड़ै असवार हुवै छै । तठै तगारो वचन सांभलि आसो कहै—

दूहो

तगा तगाई मति करे बोले मुंह संभालि ।
नाहर नै रजपूतनै रेकारै ही गाल ॥१[३]
तगो न जांणै तोल, मूरख मंछरीकां तणो ।
वायक सुणतहु बोल, मारै कै आपै मरै ॥२[४]

---

१ हे राणकदे, ये बेड़ियां रुनझुन करके झनक रही हैं । तू तो अभी राजदरबार में खेला ही नहीं (अपना पराक्रम दिखाया ही नहीं) । तो हे बनबीर के सुत, क्या अब इन बेड़ियों को पहन कर बंदी की तरह दरबार में जायगा ? । २ अरे तगा, तू धृष्ठता मत कर, मुख में से सँभाल कर बचन बोल । शेर और राजपूत को अरे, या रे कहने से गाली लगती है । ३ मूर्ख तगा पौरुष पूर्ण (मंछरीकां) पुरुषों का तोल (मूल्य) नहीं जानता । ये लोग ओछे वचन सुनते ही या तो शत्रु को ही मार देते हैं, या स्वयं मर जाते हैं ।

इतरौ सुणतसमो राणकदे कटारी काढ तगारी छाती मांहे जड़ी, कै[1] भर भाद्रवारी कड़क नै वीजली पड़ी । तिके तीन कटारी जड़ि हेठो धरती भेलो कीयो। तरै आसा नै खवासनै रांणगदे कह्यौ,थे थांहरै पापे पुण्ये होज्यो[2] । म्हेतो थेट[3] जालोर गयां पागड़ो छोडिस्यां नै थे डावा-जीमणा[4] होयनै वेगा पधारिज्यो। इतरो कह्यां आसो नै खवास सैर मांहे रमता रह्या[5]नै राणकदे चलाया । तिसै हवेली मांहे कूक पड़ी । सैहर हलचलै चढियो । तठै--

दूहो

सुध पूछै सुरतांण ओ केहो कोलाहल कटक ।
कै रीसवियो रांण कै मैंगल थांभ मरोड़ियो ॥[6]

जरै अरजवेगी जाय हजूर वाको दीयो[7], सोनिगरो रांणगदे मिरजा तगानै मारि भागो । पातिसाहजी कह्यौ, हम जांण्यौहीज थौ। भलां, खूब सिताब[8] बगसीनै हुकम दीयो, वरजरूर जब्बर अमीर उमरावांरी वाबीसी बिदा करौ नै सिताब मेर करनाल[9] कूच की करावौ । मीर मजल डोरी दे[10] विदा कीया । मजल चोकै तुरत

१ मानो, कि। २ पापे······होज्यो (मुहा० =अपनी आप सँभालना। ३ सीधे, ठेठ। ४ दाँये बाँये, लुक छिपकर। ५ अन्तर्धान हो गये। ५ दिल्ली का सुलतान खबर पूछता है कि कटक में यह कैसा कोलाहल है । क्या राणा कुपित हुआ ? अथवा मदोन्मत्त हाथी खम्भे से छूटा है ? ७ खबर दी। ८ जल्दी। ९ तोप की आवाज (कोई विशेष सार्वजनिक सूचना देने के लिए)। १० अभय देकर, सेना देकर।

बावीसी[१] विदा चढियां घोड़ां करि आपरा डेरा खड़ा कराया नैं बावींसीनैं कह्यौ, हम तुमारै पीठ लगै आवते हैं।

अबै रांणगदे दिन घड़ी चार चढियां दिल्ली थी चढियो थो, तिको राति घड़ी चार पाछली थकां रोहीठ गांवसूं उरै[२] कोस चार एक गांव पाखती नीसरै छै। तठै डोकरी[३] एक गोबर वीणै छै। तिणनैं रांणगदे पूछियौ, डोकरी, औ किण प्रगनारो गांव छै। तरै डोकरी कह्यौ प्रगनो सोझतरो छै, तरै जांणियो जालोर तो नैड़ी कीधी। वळे पूछियो, डोकरी, काई नवी वात सुणी। तरै डोकरी कह्यौ, बेटा, घणी वेळा हुई वात सुणियांनैं। रांणकदे कह्यौ, कठारी वात सुणी। डोकरी कह्यौ, रांणकदे सोनिगरो तगा मुगलनै मारि भागो नै वांसै[४] बावीसी विदा हुई छै नै तिणरै पूठै पातिसाह आप छै। इसी वात सांभळि रांणगदे तांमस[५] खाय कह्यौ, फोट[६] झौंथड़ा, तो पहिली वात आई। तठै घोड़ो देवंसी, तिको फिटकारो सुणतसमो धूजणी[७] खाय हीयौ फूट हेठो[८] पड़ियो। रांणगदे ऊतर अळगो हुवो। सोच करण लागो, चढीजै किण ऊपरां। तरै डोकरी कह्यो, बेटा रांणकदे, तैं फिटकारौ क्यूं दीयो, म्हे तो सीकोतरी[९] छां। जरै तैं तगानैं मारयौ, तरै हूं उठै हीज थी। इसा घोड़ा फिटकारै गमीजै[१०] नहीं। तरै रांणकदे कह्यौ, माता, अबै थेट आज दिन ऊगतां पहली जालोर पौहतो जोईजै। तरै सीकोतर सांवळी[११] हुई नै कह्यो, म्हारी पूठि ऊपरि चढौ। तरै रांणगदे पूठि

---

१ बाईसी (२२,००० संख्यक सेना), सेना। २ इधर। ३ वृद्ध स्त्री। ४ पीछे से। ५ क्रोध। ६ फिटकार। ७ कम्प। ८ नीचे। ९ शाकिनी, तान्त्रिक स्त्री। १० खोये जाते। ११ श्यामा चिड़िया।

ऊपरां बैठो नै सीकोतर उड़ी, तिका राति घड़ी दोय पाछली थकां गढ मांहे मेल्यो। सीकोतर पाछी आई। तरा पछै झींथड़ारौ थड़ौ[१] करायौ। झींथड़ारै नांवै गांव बसायो। तिको कूवाजीरो झींथड़ो कहीजै छै। कांन्हड़देजीनूं मुजरो कीयौ। वीरमदेजीरो मुजरो लीयो। दिल्लीरी सगली मांड नै[२] बात कही। तठै गढरा घणो गाढ जाबतो कीयो। तठै रजपूतांनै बारा बरसांरौ रोजगार चुकाय दीयो। कड़ा, मोती, सिरपाव, घोड़ा, बधारो[३] दीयो नै कह्यौ, रावतां, गढ थांरी भुजा ऊपरै छै, गढ थांहरै खोलै[४] छै, गढ फूटरो[५] दीसै, सोनिगरांनै पाणी चढै[६], त्यूं करिज्यो। रजपूत बोल्या, महारावजीरो लूंण ऊजलो करिस्यां[७]।

अबै पातिसाहजी घोड़ो लाख दोय लीयो नै गढरौ घणो गाढ सुणियो। जरै बडी बडी नाल सो जूंट-जूटै[८], तिसी सईकड़ांबंध[९] लीनी। जिके दोय मण तीन मणरो गोलो खाय। हाथी पूठै टल्ला देतरै[१०] खिसै। तिसै नालां लीधी। और नालांरी किसो किसी गिणत छै। अगन बरसै। इसी भांति फोजरो चकारो[११] लीयां गढ लागा। साह वेगम रो चकडोल साथै छै। कोस दोयरै आंतरै डेरा दिया। वेढ हुवै, पिण गढरो जोम[१२] दिन दिन चढतो दीसै। इसी भांति वरस बारह हुवा। गढ भिलै[१३] नहीं। गढ माहे सांमो[१४] खूटो। तरै वीरमदेरी कूतरी[१५]

---

१ स्मारक गृह। २ ब्यौरेवार। ३ वृद्धि। ४ पुत्र करके ग्रहण करना। ५ सुन्दर। ६ यशवृद्धि हो। ७ लूंण···करिस्यां (मुहा० —स्वामि-भक्ति का प्राणपण से प्रमाण देंगे। ८ झुंड की झुंड इकठ्ठी हुई। ९ सैकड़ों ही। १० हाथियों द्वारा पीछे से खींचने पर खिचैं। ११ चक्र, मंडल। १२ ओज। १३ टूटे, विजित हो। १४ सामान, रसद। १५ कुतिया।

ब्याई थी, तिकारो दूध ले नै खीर कराई । तिके पातलांरै खीर लगाय नै लसकर दिसी नाखी । तिके ज्यूंरीज्यूं पातलां पातसाहरी हजूर ले दिखाई । जरै पातिसाहजी उमरावांसूं मिसलत कीधी नै कह्यौ, जिण गढ मांहे अजेस खीर खाईजै छै, तिण गढरो भिळणरो[1] किसो भरोसो । तिणसूं बारै बरसरो जोग, बारां बरसां री तपस्या, ज्यूं बारा बरसरी वेढ फते होय तो भलां, नहीं तौ ही भलां । तिणसूं पाछा दिल्लीनै चालो । इसो मचकूर[2] करि पाछा डेरा चलाया । कूच री अवाज हूई । करनाळ कराई । मोरचा उठाया । बेगम साथे ले पाछो कूच कीयो । तिके खंडप-भवराणी[3] आय डेरा दीया । तठै लारै कान्हड़देजी रांणगदेजी वीरमदेजी गढरी पोळि खोली । बारै बरसां गढरोहो[4] टळियो । सैंदाना[5] वाजै छै । चारण भाट जाचक गीत-गुण ले नै मिलै छै । बिरद दीजै छै । गोठरो हुकम हुवै छै । तिके रसोड़ा-दार गोठ बणावै छै । दारू रो पैणगो[6] हुवै छै ।

तिण समै आगै बरस पैली दहिया दोय रजपूतां मांहे मोटो खून[7] पड़ियो । जरै दोन्यां ही नैं सूळी दिराया था । तिके सूक खेलरा[8] हुइ गया छै । तिको बायरो[9] सबळो वागो । तिणसूं बेऊं जणां दहियांरो मूंढो भेळो हूवो । तिके वीरमदेरै निजर चढिया । तरै वीरमदेजी दारू री मतवाळ मांहे कहणरी सुध न छै । तिण वेळां वीरमदेजीरै बहिनेवी

---

१ जीते जाने का, गढ के गिरने (हाथ आने) का । २ निश्चय । ३ संभवतः रणथम्भोर का क़िला (?) ४ गढ़ का शत्रु द्वारा अवरोध । ५ धौंसा । ६ शराब की गोष्ठी । ७ कसूर, अपराध । ८ सूखा हुआ कंकाल । ९ हवा ।

दहियो छै तिको बैठो छै। तिणसूं मसकरी माथै कह्यौ, आजरा दहिया मतौ भंडो[1] करता दीसै छै, गढ भिळावै ला। जरै दहियै बहनेवी कह्यौ, मड़ांनै[2] किसा बोल वचन कहो छो। तिको वाचा-बंधी[3] कासी-करोत लीधी थी, तिको चूकै नही। भवस्य माथै वीरमदे कह्यौ, मूवांरा थे जीवता भाई छो, मदत करो नै भायांरो बैर ल्यो। पातिसाहसूं मिलि नै गढ भिळावो। तद दहियै कह्यौ, बडा सिरदार, नर निंदवीजै नहीं। नरांरी अणमापी रासि[4] छै, चाहै ज्यूं करै नै म्हे तो थांहरी भली चितवां छां। पिण, मोटा बोल तो श्रीनारायण छाजै[5]। मूंढै तो इसी कहै, पिण मन मांहे जाणै छै, कदि सीख मांगि पातिसाहजीसूं मिलूं। तिसै दारूरा प्याला फिरिया। सगळांनै प्याला दे दे चाक[6] कीया। गोठ जीमिया। राति आधी गयां सीख हुई। बीजै दिन दहियै कह्यौ, बारै बरस टावरांसूं बिछोहै रह्या। अबै फतै हुई, तुरक पाछो गयो। हुकम हुवै तो घरे जावां। तरै वीरमदे मोती कड़ा सिरपाव दे घोड़ो देनै घरांनै बिदा कीया। तिके असवार हुइ पाधरो खंडप-भवरांणी आयो। आगै पातिसाहजीरै कूचरी भेर हुई छै। तठै दहियो दोढो जाय अरजबेगी[7]नै घणो राजी करि मांहि कहायो, जालोरसूं रजपूत जात दहियो वीरमदेरो बैनोई वीरमदेसूं विराजी थको गढरा लैणरी अरज करण आयो छै, हुकम हुवै सो करां। तरै पातिसाहजी हजूर हाथ बंधाय बोलाया। पगे लागा। हाथ खुलाया

---

१ बुरा विचार, बात का विचार। २ मरे हुओं को, मुरदों को। ३ प्रतिज्ञाबद्ध, वचनबद्ध। ४ पुरुषार्थ। ५ शोभा देता है। ६ छका दिया। ७ अर्ज़ करनेवाले सेवक को।

पातिसाहजी फुरमायो, तुमारा आवणा क्यूं हुवा । तरै दहियै कह्यौ, हूँ वीरमदेरो बहनेवी छूं । गोल[1] मारिया । पातिसाहाँरा भाग मोटा छै । गढ मांहे सांमो खूटो छै, खीर कूतरीरा दूधरी थी । हूं कहूं जठै जठै गाढ करि मोरचा लगाईजै । म्हे गढरा पूरा भेदी छां, गढ भिळावणो म्हां हाथ आयो । पातिसाहरा तप तेजसूं चाढियां घोड़ां गढ फते करिस्यां । जरै साच आयो । जद दहियारा माणस[2] खालड़ बोड़ावड़रै[3] परगनै रखाया । तिके दहियावाटी कहीजै छै ।

अबै पातिसाहजी पाछो कूच कीयो, तिके गढ जाय लागा । तठै वळे गढरी पोळि जड़ी । अठै वीरमदेरै वाघो वानर रजपूत छै । रोजगारी छै । तिको हमेसा वीरमदेरै रसोड़ै छै । आदमी सौ-चार जीमै त्यांनं सोनारा थाळ दीजै । त्यांमें वाघो चळू करि ऊठतो थाळरै ठोलारी[4] दे, तिको बिच मांहिसूं आंगुळ चार टुकड़ो उड जाय । तिके हमेसां संधाईजै[5] । यों दोइसै तीनसै थाळ संधिया । तिके एके दिन वीरमदेनै निजर आया । थाळ असंध कोई दोसै नहीं । तिणरो कासूं बिचार । जरै रसोड़ादार कह्यौ, रावळै[6] वाघो वानर रजपूत आरोग नै थाळरै ठोलारी दै तिको बिच मांहिसूं टुकडा हो जाय, सो हमेसां संधाइजै छै । इतरो सांभळि वाघा वानरनै तेड़ाय[7]नै मिळिया, वांह पसाव कीयो नै कह्यौ, थाळ तो सगळा असंध कीया; तिसाहीज गढ कांम हाथ वाहिज्यौ[8] । वाघै कह्यौ, श्री कँवरजी, करड़ो मोरचो

१ ताना, व्यंग्य । २ स्त्री, बालबच्चे आदि । ३ मारवाड़ में एक स्थान । ४ उँगली के बीच के हड्डीवाले जोड़ के प्रहार करने को 'ठोला' कहते हैं । ५ जोड़ लगाये जाते हैं । ६ राज्यगृह, राज-परिवार में । ७ बुलाकर । ८ चलाना ।

जांणो, तिको रावळा रजपूतनै भळावज्यो। हूं कहूं त्यूं करज्यो। पछै श्री परमेस्वरजी करसी त्यूं होसी।

दूहो

सूरा सूरा आहुडै भाजै जाय भरम।
तैं बरियां कास्यिवसुतन सूरज हाथ सरम॥[1]

कँवर कह्यौ, थे कासूं कहो छो। वाघै कह्यौ, मोनै एक वार विना लोह करणरी आखड़ी[2] छै। उण हथियारसूँ बीजो बार लोह करूं नहीं। तिणसूं मोनै जायगा सूँपो तठै हजार ३/४ तरवारियाँ, तितरी कटारियां, सेलड़ा घणां तीर मेलाज्यो। पछै रावळो लूँण ऊजळो कर देखाळसूं। आ बात कंवर आरे कीधी। तिसै पातिसाँहाँ नै दहियां कह्यौ, तिको गढरो लगाव छै तठै सुरंग लगावो, ज्यूँ गढ भिळै। तरै पातिसाह कारीगर बुलाय मुसालो मंगाय बेलदार[3] ढुकाया। तिके हमेसां सुरंग चलावै। तिका सुरंग ऊंमाड़ा[4] कनै नीचै जाय नीसरी। तिण वेळा राणी थाळी मांहे मोती छूटा मेल हार पोवै छै। तिको बेलदार हींसु[5] बाह्यौ। तिणसूँ थाळी वागी नै मोती नाच्या। जरै रांणी दासी मेलि कंवर वीरमदेनै तेड़ायो नै कह्यौ, अठै सुरंग लागी दीसै छै। तद वीरमदेजी तेल मण सै-च्यार बडा बडा कड़ाहां मांहे घणो बळतो ऊन्हो करायो। जिसै सुरंगरो बारो खुलियो, तिसै

---

१ शूरवीर शूरवीर से ही भिड़ते हैं। रणक्षेत्र से भागनेवालों की शर्म जाती है। उस समय सूर्यवंशियों की लज्जा सूर्य के हाथ रहती है। २ प्रतिज्ञा। ३ खोदनेवाले मज़दूर। ४ रनिवास का एक भाग। ५ फावड़ा, खोदने का औजार। ६ बजी, झंकार उठी।

कड़ाहा नाया। त्याँसूं घणा तुरक भस्म हुवा। पिण बारो[१] हूवो। जरै बीजै दिन पातिसाहांरा हठ, तिको सोर[२] सूँ भरनै उडायो, तिको भींत उडी। घणो चोड़ो बारणो हूवो। जरै वीरमदेजी तिण मोरचे बाघा वांनरनै राखियो, सेलांरो गंज[३] करायो, कटारियां रा पूज[४] दिराया। उणहीज मोरचै पखरैत[५] सिपाई हाको करि आवै। त्यांनै बाघो तरवार छूटी वाहै, तिको घोड़ो असवार दोनूँ ही टूक होय। यों हजार च्यार तुरकांरो गरो कीयो[६]। सगळा सस्त्र नीठिया[७]। तुरक हाको आयो जरै विगर हथीयाराँ बाघो ऊभो। तुरक आंवतो देखि बाघै तांमस खाय पाहणसूँ हाथ पछांटियो। तरै हाथ वेगी[८] माहिसूं ऊड पड़ियो। हाथ तीखो रह्यौ, तिको हाड सूं लोह करै[९], जांणे कटारी लागी। इसी भांत सिपाई ४०/५० मारिया। पछै तुरकां कह्यौ, विण-हथियारौ मारै नै आंपै देखाँ। तद तीनसै भेळा होय हाको करि बाघा ऊपरी आया। तरवारियाँरी छांहड़ी हुई। जरै बाघारी बूथ[१०] बूथ हूई पड़ी। तिके बूथाँ उडि उडि तुरकांरै डीलरै जाय लागी नै चहटी[११]। इसी तरै बाघो वांनर खेत रह्यौ। आ खबर सुणि वीरमदे गढरी पोळ खुलाय दीनीं नै कांन्हड़देजीसूं मुजरो कीयो। तरै सर्व राज-लोक वाढ उतारियौ[१२] नै कांन्हड़दे राणकदे सोनारो पोरसो थो, तिको बावडी

१ द्वार। २ शोरा, बारूद। ३ पचासों का ढेर। ४ ढेर। ५ कवच-धारी। ६ ढेर कर दिया। ७ समाप्त हुए। ८ कलाई। ९ वार करता है। १० मांस के टुकड़े। ११ चिमट गये। १२ तलवार के घाट उतरवा दिये।

मांहे नाख्यो । कांन्हड़देजो देवरा[१] मांहे, अलोप[२] हूवा । तरै बीरमदे पेट आपरो परनाल्यौ[३] कटारी सूँ । सो बूकड़ा[४] काढि बारै ग्रीजाँ[५] नै दीधा और आंताँ ऊझ[६] भेळा करि पेटी सैंठी[७] बाँधि ऊपरि हथियार बाँध्या । आदमी हजार दोय रजपूतांसूं पोळि माथै गढ मांहि साको[८] कीयो । घणां तुरक मारिया । बडो गजगाह[९] हुवौ । तरै पातिसाहनै अरज पोहचाई, बीरमदे बहुत जंग जुलम करै है । तद पातिसाह कह्यो, बीरमदे मारै सो मारणे द्यौ । पिण बीरमदेनै लोह कोई मतो करो । ढाळांरी ऊंट[१०] देनै जीवतौ निळोहो[११] पकड़ि हजूर ले आवो । तरै सिपायां ढाळांरा कड़ा दे देनै सांम्हां पाखतियाँ[१२] आयनै सांम्हां धरिया । तिसै बीरमदेरा हथियार खूटा, तद झाल्यो[१३] । तरै बीरमदे कह्यौ, मो नैड़ो कोई तुरक आवो मतो नै श्री पातिसाहजीरी हजूर चालो । जरै सिपाई दोळा बींटा[१४] हजूर ल्याया । तरै मुजरो न कीयो न जुहार कीधो । तरै पातिसाहजी मुळक[१५]नै कह्यौ, कँवरजी, हम तो हमारी लड़की दीवी नै तुम ऐसा जंग जुलम कीया । हम टकै तैं खरच भए, क्या हाथ आया और बेगम तुम्हारै तांई कबूल कीया । हम हुकम दीया, हमारा हुकम मेटणे ऊपर एता हसम ले[१६] गढ लागे । बीरमदेजी कह्यौ, पातिसाहजी, म्हे

---

१ देवालय । २ अन्तर्ध्यान हुए । ३ काट डाला । ४ छिद्र, मांस की झिल्लियाँ । ५ गृद्धों को । ६ ओझरी, मांस की झिल्लियां । ७ मजबूत, कसकर । ८ युद्ध क्रिया । ९ घमासान युद्ध । १० ओट, आश्रय । ११ बिना घाव,अक्षत । १२ बगल वाले । १३ पकड़ लिया । १४ चारों ओर से घेर कर । १५ मुसकराकर । १६ साज सामान फौज इत्यादि लेकर ।

हींदू हां, ख्यत्री धरम छां, श्रीनारायणजी नै श्रीगंगाजीनै मांनां, गऊ पूजाँ, तुळ्छी मांनां, श्री साळगरामजीरो चरणामृत ल्यां, ब्राह्मण षट दरसणरै आधीन रहां। नै जिण मुखसूं श्रीराम-श्रीराम जप्यौ, तिण मुखसूं असुर-मंत्र कलमो कहिणी नावै। पिण श्रीपरमेश्वरजी करै तिकूं प्रमाण छै। तरै पातिसाहजी कह्यो, हम तो तुमारी राह व्याह कबूल कीया था। पिण तुमारै निका पढण की दिल हुई। साहिब एक है, राह दोय कीया है। तरै हजूरी चाकरांनै हजरत कह्यौ, जावौ काजी मुल्लांनै तेड़ो, और वेगमकूं संपाड़ो करावो, सेहरा ल्यावो। बांदी सहेलीकूं कह्यौ, सेहुरे गावै, नौबत चौघड़िये[1] सरू करावै। हुकम कीयो, कँवरजी, तुमही गुलाबके पांणीसें न्हावो। अै वातां सुणि, मोटा-मोटा मनसबदार हजूरी था, तिका नाजर साथे होय गोसलखांनै बीरमदेजीनै ले गया। तरै बीरमदेजी कनै नैड़ा जांण लागा। तरै बीरमदेजी कह्यौ, थे कइस्यो ज्यूं-ज्यूं म्हे करिस्यां। तरै आपरा हाथथी कड़छणो[2] खोल्यो नै घूमतो नेत्र फाड़तो मूंछांरा केस सरब ऊभा हूवा। जांणे कोई जम सर्ब तुरकांनै गिण[3] जायै तिसो दीसै। तिसै पेटी खोली। तरै-आंत-ऊंभरां, फेफरांरो ढिगलो[4] हूवो। तिसै बीरमदेजी नेत्र फेरिया। तरै हजूरी चाकरां दोड़ पातिसाहजीसूं दीठी त्युं कही। कँवर तो भ्यस्त[5]कूं पोहता। तरै पातिसाहजी सुणि-नीसासो राल्यो[6]। खूब हींदू जुवांन था। वेगमनै कहायो। नाजरां थी ज्यूं कहो। वेगम कह्यौ, पातिसाहजीनै मांहे मेलियो। तरै पातिसाह

---

१ वाद्य विशेष। २ कमरबंध। ३ निगल जाय। ४ ढेर। ५ बहिस्त, स्वर्ग। ६ निश्वास डाला, अफसोस किया।

जी मांहे गया। वेगम बोली, बाबाजी, हींदू मेरा पैलांतर[१] का खावंद है। आगै छःवेळां इण पाछै मेरी देही जळाई है। वांसली[२] कासीजी री बात कही। आ सातमी वेळा है। पातिसाहजी जांण्यो पैलांतर का बैर-नेहसूं इतरा धोकल[३] हूवा। वेगम कह्यौ, रजपूत का सिर काट ल्यावो ज्युं फेरा ल्यूं, और मैं पाछै जळूंगी। तरै पातिसाहजी कह्यौ, तेरी खातर आवै त्यूं करो। तरै बीरमदेजीरो माथो काटि वेगम कनै ल्याया, थाळी मांहे घालिनै। तरै वेगम ऊठि सांमी आई। तरै माथो फिरियो नै पूठि दीधी, नेत्र सांमो न जोवै। तरै वेगम बोली, साहिबजी, मैं करोत लेतां भव-भव राजिनै भरतार[४] मांग्यौ नै थे मांग्यो, इण लुगाईसूं वाड़ कांटो मता[५] दीज्यो, तिको ज्युंहीज हूवो। अबै हूं फेरा लेनै राजवांसै[६] सती हुस्यूं। कुँवारी काठ लैणी नावै[७]। तद मूंढो सांमो फिरियो। वेगम फेरा लीया नै कहायो, हजरत, कासीकरोत लेतां गाइ को हाड पगांरै लागो, तिणरा दोषसूं मुसलमांनरै घरै अवतार लीयो। पिण म्हारो सात भवांरो खावंद छै, मोनै लकड़ी द्यौ। खावंद सूं आंतरो पड़ै छै, ज्यूं जायनै भेळी हुवूं नै रूसणो[८] भांजूं। तरै पातिसाहजी कह्यौ, हमारा कतेब[९] मांहे आ बात कबूल नहीं। पिण, इणरै वाचा-बंध्यो काम है। तिको वेगम कहै त्युं करो। जरै अगर चंदणरो घर बणायो। हींदू तुरक साथे हुवा। तरै वेगम बीरमदेजीरो

---

१ पूर्वजन्म का। २ पिछली। ३ युद्ध-विग्रह। ४ पति। ५ वाड़...... दीज्यो (मुहावरा—कोई सरोकार न देना। ६ आपके पीछे। ७ कुँवारी कन्या को सती होने का अधिकार नहीं होता। ८ कोप। ९ किताब, धर्म-पुस्तक, कुरान।

धड़ मंगाय माथो धड़ गोद माहे लेनै सती हूई। रांम-रांम कहिती सत्यलोक पोहती। खावंद भेली[1] हूई।

वडी वेठ हुई। रावजीरा रजपूत हजार पाँच काम आया। हजार दोय लोहां पड़िया नै पातिसाहजीरा सिपाई हजार १५ काम आया, हजार १०/११ लोहां पड़िया। बडो गजगाह हुवो। इण समीयारा गीत गुण-भावन[2] घणा ही छै। पछै पातिसाहजी दिली गया।

॥ इति श्री वीरमदे सोनिगरारी वात पूर्ण ॥

---

१ इकठी, मिलाप। २ गुणगान।

कहवाट सरवहियो

—++++—

समुद्र रै विचै कोइलापुर पाटणरो धणी अंनतराय सांखलो छत्रधारी। तिणरै वडो गढ, वडी जमींत[१]। तिणरै एकसौ एक भाई-भतीजा छै। तिका भेळा[२] गढ मांहे रहै। हुकमी थका चाकरी करै। त्यां कनै असवारीनैं घोड़ो एक नै खवास[३] एक नै सागड़द पेसारा[४] आदमी च्यार कनै रहै। सगळां कनै इसी जमींत राखै। च्यार आदमी उपरांत राषण पावै नहीं। ऊगमणी मसंध[५] बारै धरती कोस सौ-तीन तांई आंण बरतै[६]। घोड़ा लाख दोढरी जमींत लीधां रहै। दरियाव मांहे जेहाज मारै। तिणरो माल चीजां घणो ही भेळो हुवै। तिणरै सुजांणसाह मंत्रवी छै। गढ मांहे बसती घणी, व्यौपारी घणा रहै।

एके समीयै दरियाव गाज्यौ। तरै अनंतराय भायां-भतीजारै विचै दरबार बैठो। तरै कह्यौ, इण लूंड[७] नैं बूर[८] नांखो। वळै मो समान धरती मांहे बीजो कुण छै, सो मो कनै गाजै। तरै सुजांण

---

१ जमीन, राज्य। २ इकट्ठे। ३ नाई अथवा नौकर। ४ शागिर्द पेशेवाले, चाकर। ५ पूर्वीय मसनद, पूर्वीय राज्यसीमा। ६ धाक बैठती है। ७ घमंडी, धृष्ट। ८ मिट्टी डालकर छुला दो।

मंत्री कह्यौ, महाराज, धरती माँहे बडा बडा राजा छत्रपति, गढपति अनेक छै, नै औ दरियाव तो न्याव[1] गाजै। इण मांहे नवसै निन्नाणँ समाहि जावै छै, नैं धरती माँहे इण समान दरियाव बीजो कोई नहीं, तिणसूं गाजै छै। तरै अनन्तराय बोल्यो, वळे धरती मांहे बीजो मो जिसो कुण छै, कनां कोई मो उपरांत रह्यौ छै। तरै मुंहतै कह्यौ, हां महाराज, धरती मांहे मोटा मोटा छत्रपति, गढ़पति अनेक छै। तरै अनन्तराय भाई-भतीजांनै कह्यौ, थे एकसौ डील[2] छो, तिके एकेक गढपति छत्रपति पकड़ पकड़ नैं मो कने ल्यावो। इसो हुकम सुण घोडाँरा घमसाण[3] लेनै चढिया। तिणां बडी बडी वेढ[4] करिनै भला भला गढपति पकड़ आण सूंप्या। तिणांरै अनन्तराय पगां मांहे बेड़ियां घालि कैद कीया। हाथां मांहे हथकड़ियां घाली, सगळां कनै[5] सिलामां कराई। आछी ठौड़ राख्या। जीमणरो जाबतो करै, पिण दिन ऊगै दरबार करै, चांदणी बिछाईजै छै। तठै अनन्तराय सिंघासण बिछाय बैसे[6] छः। छत्र धरावै, चंवर ढुळावै। भाई-भतीजा डावी जीमणी[7] मिसल बैसै। सनमुख कलावंत मृदंग मजीरा ले अलाचारी[8] करै। पाषती[9] सागड़द पैसारो लोग ऊभो रहै। तिण समीयै सौ राजा कैद मांहे छै। त्यांनै बुलाईजै, सलांम करायनै पछै भूंगड़ा[10] सेर ५/६ आंणि चांदणी ऊपरां बिखेर दै। तिकै राजावां कनांसूं मूंढासूं चुगावै नै चुगतो

१ ठीक ही। २ शरीर। ३ घमासान, दल, फौज। ४ युद्ध करके। ५ सब के पास, सब से। ६ बैठता। ७ दाहिनी बांई। ८ सेवा, मनोरंजन। ९ चारों ओर। १० भुने हुए चने।

जेज[१] करै तो लांबा पिरांणी,[२] तिणरै तीखी आर[३] दिराई छै, त्यांरा चपरका[४] ढूंगरै[५] दीजै। इसी निपति देसोतां[६] मांहे घालै। हमेसां करै।

तद एकै दिन कह्यौ, ठाकुरे, धरतीरा राजा तो सगला बंध कीधा। तिसै एकै कह्यौ, महाराज, अजे[७] स गढ गिरनाररो धणी कहवाट राजा सरवहियो, साखरो मांझी[८] नायो[९] छै। तरै औ बचन सुण भाई-भतीजांनै कह्यौ, चढौ, झालनै[१०] ल्यावौ। तिको आगै भाई भतीजां राजा पकड़िया, तरै अठी उठीरो साथ घणो कटियो थो, जरै पकड़णी आया था। जरै सुजांणसाह कह्यौ, थों म्होंने विदा कियो हूंत[११] तो बातांसूं पकड़ ल्यावतो, साथनैं जोर तिलभर आवण देवतो नहीं। तद भाई-भतीजां अरज कीधी, गढ गिरनाररै ऊपरै सुजांणसाह नै विदा करौ। तद सुजांणसाह कहै—

दूहो

विणजारो होइ पोठ[१२] ले, जाऊं नदी उदांण[१३] ।
ग्रह ल्याऊं गिरनारपति, तो हूं साह सुजांण ॥

इसो कहि बीड़ो लीधो। अवै पोठ भरियो नै भांति भांतिरी चीजां लीधी। त्यांमें दोय ढाल असल गेंडारी लीधी, नै दोय घोड़ा जलहर[१४] रा लीधा, जिणसूं राव कहवाट रीझै। पोठ लाख एक

---

१ देर। २ भाले, अणीदार शेल। ३ फल। ४ चुभाना। ५ चूतड़ पर, नितम्ब पर। ६ देशपतियों। ७ अब तक। ८ अधिपति, अगुवा। ९ नहीं आया। १० पकड़ कर। ११ किया होता। १२ सामान का भार, लदाव। १३ उलांघ कर। १४ जलधर, समुद्र का।

कीया। त्यां मांहे असवार हजार दस साथे सुखपाल[१], रथ, नीसांण नगारा लीधा। विणजारै रै सदाई हुवै छै, इसो वहानो करि चालतौ चालतौ गिरनाररी तलहटी पाबासर मांहे राजथान[२] छै, तठै आय पड़ियौ। राजा कहवाटरै पगै लागो। केइक राजांवाळी टूंम[३] निजर कीधी। विणजारै कह्यौ, मास एक-दोय अठै वाळध[४] चरसो नै व्यापार करसूं, लाख पोठ छै। जरै[५] राजा कह्यौ, भली बात छै। राजरै हमेसां मुजरै जायै। बडा डेरा कनातां[६] खड़ा कराया। राजा कहवाट सूं घणो प्यार बांध्यो।

हिवै[७] पैला बरस दोय पहिलां राजा कहवाट केइक मोटा-सा उमरावां कनै कोठार मेलणनै[८] टको[९] लीधो थो। तिके उमराव फिर गया था। तिके कहवाटरै छोटो भाई छै। तिणसूं मिलिया नै कह्यौ, म्हे तोनैं गिरनार बैसाणां[१०]। इसो कहि भाईसूं फाड़ि[११] नैं उमराव दिलीरा पातिसाह कनै ले गया। पगे लगायो नै चाकरी कबूली[१२]। तरै पातिसाह साथ खजांनो दे घोड़ो लाख एक साथै गिरनार ऊपरै विदा कीधा। तद आ खबर कैवाटजीनैं पोहती[१३]। तरै तारापुर पाटणरो धणी बालो नैं छोटो ऊगो, अै कैवाटरा भांणेज छै, साख[१४] राठोड़ छै। तिणनैं खबर दीधी। तद साथ सामांन लेनै आया। ऊगारै असवार हजार दसरी जमींत छै। बरस १५ मांहे छै। तिणनैं खबर देत-

१ पालखी। २ राजधानी। ३ नजराने के उपयुक्त गहने इत्यादि। ४ बैलों की कतार। ५ जब। ६ खेमा। ७ अब। ८ कोठार मेलण नैं=राज्य कोष की कमी पूरी करने के लिए। ९ कर। १० राज्यगद्दी पर बैठावेंगे। ११ विरुद्ध करके। १२ कबूल की। १३ पहुँची। १४ वंश।

समो[1] आपरी जमींत असवार हजार ५० लेनै आयो नै कह्वाटजीरै पगे लागो नै कह्यौ, मांमाजी, म्हारो कीधो आरे राखज्यो[2]। तरै कह्वाटजी कह्यौ, भांणेज, थे करस्यौ तिको प्रमांण छै। नै कह्वाटजीरै कँवर जेसो, तिको बालक ९।१० बरस मांहे। ह्विवै ऊगो कहै त्यूं करै। तिण समीयै ऊगै मचकूर[3] करिनै फोजांरा तूंगा[4] कीधा। तिके एके दिन चढिया, जिके उमराव फिरिया[5] था, भाईसूं मिलिया था, तिणांरा मांणस[6] टावरां सूधा पकड़िनैं ल्याया नैं कैद कीधा। आ खबर उमरावांनें पोहती। तरै उमरावां भेला होय नैं मसलत[7] कीधी। भांणेज ऊगै रजपूताई मांहे धूल नांखो, पाघ माथे रही नहीं, मूंढै मूंछां रही नहीं, नैं धणियां[8]सूं साम्हां हुवां पड़ां नहीं[9]। तो चालो पगे लागां, नै धरती पिण[10] छूटसी नहीं। तरै कैवाटजीरा भाईनै ले डेरा ऊभा मेल्हि[11] रातिरा चढिया। तिकै सोरठरै गड़ासंधै आय पड़िया नै ऊगा सूं बतगाव[12] कीयो। जरै वांह-बोल बोलनैं पगां लागा, मांणस सूंपिया। पटा आधा-आधा दीधा। माथै वले[13] टको ठहरायो। राजा नैं पिण कह्वाटरै पगे लगायो। खरची पातिसाहजी दीधी थी तिका उरी लीधी[14]। अमल[15] निपट करड़ौ[16] कियो। जरै कह्वाटजी कह्यौ, भांणेज ऊगा, तूं म्हां कनै अठै हीज रह। तरै उठै हीज रहै।

---

१ देते ही (समय)। २ आरे राखज्यो=ध्यान में रखना। ३ व्यवस्था करके। ४ टुकड़ियाँ। ५ विरोधी हुए थे। ६ स्त्रियाँ। ७ सलाह मसौरा। ८ स्वामी। ९ साम्हा हुवां पड़ां नहीं=सामना करते बन नहीं पड़ता। १० तो। ११ ऊभा मेल्हि=उठाकर। १२ बातचीत, सन्धि। १३ फिर से। १४ उरी लीधी=ले डाली, ले ली। १५ शासन। १६ कठोर।

डीलरो खरच लागै तिको कहवाटजी दै नै उमराव पटायत छै त्यांरै घरांसूं खरची आवै नै गिरनार रहै।

तिसै सुजांण साह आयो। अबै ऊगो आछी चीज कहवाटजीरै देखै तो तिका उरी लेवै। एकै दिन सुजांण साह ढाल दोय असल गैंडारी थी, तिके निजर कीधी। तरै बडी रामचंगी[1]रो गोलौ बाहि[2] दीठो, तिको चापटो[3] होय पड़ियो, पिण ढालरै रंगरी चिटक[4] उतरी नहीं। तरै मोल पूछियो। सुजांणसाह कह्यौ, जीवरा जतन[5] में तिणरो मोल नहीं, नैं मोल बूझो तो लाख दोयरी छै, तिकै महाराजरी निजर छै। राजा कहवाट घणो राजी हुवौ। तिसै ढाल एक जेसो कँवर बरस १३ मांहे छै, तिण हाथ घाल उरी लीधो। ढाल एक ऊगै उरी लीधी छै। तदि कैवाटजी मळसाय[6]नैं कह्यौ, भांणेज, एकै हाथ ताळी बजावो छो[7]। तरै ऊगै कह्यौ, मांमाजी, म्हारै तो एकै हाथ ताळी बाजै छै, मामैजी दीठी छै ही। तरै कैवाटजी कह्यौ, भांणेज, म्हारो देह, म्हारा रजपूत, ज्यांसूं जोर कर अमल करणो किसी भारी बात छी, पिण कदेहीक वणसो[8] जद कहिस्यां। ऊगै कह्यौ, मामोजी कहसो जद त्यार छूं, हुक्म ठेलूं[9] तो रजपूतीनैं छराप[10] लागै। इसी भांत बातां हुई। डेरा गया।

एकै दिन सुजांणसाह अकेलो राजा कनै एक खवास देखनै

---

१ तोप। २ चला कर। ३ चपटा। ४ खरोंट। ५ हिफाजत। ६ झल्लाकर। ७ एकै.....छो=(राजस्थानी मुहाविरा)—एक हाथ से ताली बजाते हो, अपनी सामर्थ्य के बाहर साहस करते हो। ८ आपत्ति आ बनेगी। ६ उलाँघूं। १० श्राप।

कह्यो, महाराजा, ढालां ऊपरि भांणेजनैं कह्यो, तिके ढालां तो नापैद[१] छै, पिण म्हारे डेरे दोय घोड़ा जल़हररा छै, तिके देखौ तदि रीझो[२]। पृथ्वी मांहे वस्तां[३] छै। तिण मांहिलो[४] एक घोड़ो महाराज री निजर चढै[५] तिको रखावज्यो। तरै राजा कह्यौ, देखां मंगावो। तरै साह कह्यौ, च्यार सुंम[६] उघाड़ो[७] राखूं छूं। पांणी पिण डेरा मांहे पाऊं छूं, धूप खेवीजै[८] छै। हमेसा लूंण उंवारीजै[९] छै। तिणां आगै पोथी हमेसा बंचै छै। तिणसूं म्हाराजा, म्हारै डेरै पधारो नै घोड़ा फेरौ, पछै पायगा[१०] आंण बंधावो। राजा सुणि खवास साथै ले बारी[११] दिसि नीसरिया, तिके पाधरा[१२] डेरां मांहे आया। घोड़ा दीठा। तिसै चरवादार[१३] घोड़ा दोनूं ही माथे जीण कसिनै मंडावै छै। तिसै साह ऊठ डेरा बाहिर आयो। नकीब[१४] साथै सगल़ा साथनै कहायौ, तैयार होयनै म्हां भेल़ा वेगा होज्यो। इतरो कहायनैं मांहे आयो, सो आगै सांणी था हीज, तिसै घोडां पिलांण[१५] मांड तयार हुवा। राजा मुंहतो[१६] दोनूं असवार हुवा। हथियार तो खवास कनै छै। डेरा बारै[१७] आया। घोड़ा छकड़ी[१८] करै छै। तरै साह कह्यौ, इणां घोडांरी धाव[१९] कोस च्यार तांई एकै सिराड़ै[२०] देस्यौ, तरै इणां

---

१ नाचीज़, तुच्छ वस्तु। २ प्रसन्न होवोगे। ३ वस्तुएँ। ४ में से। ५ निजर चढै=पसंद आवे। ६ खुर। ७ खुला हुवा। ८ धूप किया जाता है। ९ लूंण उँवारीजै छः=नमक न्यौछावर किया जाता है। १० पायगाह, घुड़साल। ११ पीछे का छोटा दरवाज़ा। १२ सीधे। १३ सईस। १४ छड़ीदार, दूत। १५ जीन कसकर। १६ मंत्री। १७ बाहिर। १८ चौकड़ी भरते हैं। १९ दौड़। २० एक साथ, एक साँस में।

री हांम[१] पूरी पोचसी, तिणसूं महाराज, सिराड़ो साथे दिरावां। तरै खुरी कराय[२] कुंडाऴै फेरनै[३] सिराड़ौ दिरायौ। कोस च्यार गया। तठै[४] साथ पिण सगऴो आय भेऴो हुवौ। तरै रथ आंण[५] हाजर हुवौ। तरै साह कह्यो, राजा कैवाटजी, घोड़ासूं उतर रथ मांहे विराजो, हूं अनंतराय सांखलारो मुंहतो छूं। आगै सौ एक राजा कैद मांहे छै। थे अनमी[६] था, तिणसूं इसो चोज[७] करि पकड़िया छै। इसो राजा सुंण मन मांहे विचारियो, कनै हथियार नहीं, रजपूत कनै नहीं। तरै रथ बैठा नै चाल्या, तिकै कोइलापुर पाटण पोहता। अनंतराय सांखलारी हजूर[८] ले गया नै सुजांण साह कह्यौ—

दूहो

करि तसलीम[९] कहवाट, इम आखै[१०] राजा अनँत।
पाछो मेलूं[११] पाट, परणाये[१२] गिरनार पति ॥

जरै कहवाट दूहो कहै—

दूहो

राजा राजस[१३] जोय, किण आगै मुजरो करूं।
ऊगो भांणेजोय[१४], लाख रुपियां कसूंभो गळै[१५] ॥

---

१ हौंस, इच्छा। २ घोड़े को ब्रस से साफ करने को 'खुरी करना' कहते हैं। ३ चक्राकार फिरा कर। ४ वहाँ। ५ आकर, लाकर। ६ नहीं नँवने वाला, अदम्य। ७ कपट, हठ। ८ दरबार में। ९ अभिवादन। १० कहता है। ११ स्थापित करूँ। १२ व्याह कर। १३ राजा के सदृश। १४ भानजा। १५ जिसके लिए लाख रुपये के खर्चे से कसूंभा (द्रव रूप में अफीम) गलता है।

तरै कैवाट कहै, नाळेर[1] बेटीरो द्यौ नै सिलांम करावौ। तरै बांध नै आरांरा चपरका देणा मांडया[2]। वळे भूंगडा आंण नाख्या। कह्यो, चुगो। तरै कहवाट कह्यौ, थारा जंमाई[3] नै दुख मती द्यो, रजपूत छै तो माथो वाढि राळि[4], अथवा वसोला[5]सूं वाढि, पिण थारो जंमाई ओ काम न करै। तरै घणो ही आरांरो अचेन[6] दीधो, प्रिण नमैं नहीं। जरै अनंतराय कह्यौ, बेड़ी पहिराय कठंजरा[7] मांहे दरबार आगै राखो, धरती मांहे कंठजरो गाडो नै दरबार आवै जिके कठंजरा ऊपरि मारग वहै। पगांरी धूळ मूंढा[8] मांहे पड़ै, ज्यूं दुख पावै। इसी भांति उघाड़ो कंठजरो मेलौ। कंठजरारै भाला तोनूं कानी[9] दिराया। पसवाड़ो[10] फेरण पावै नहीं नै खाणा-पैणारो घणो जाबतो करावै। अठै राजा कहवाट इसी भांत रहै छै।

हिवै लारै रांण्यां जाण्यौ मरदानै छै, मुहता उमराव जांणै जनानै छै। इम दिन तीन हुवा। चौथे दिन ऊगै पूछियो, मांमोजी दरबार पधारियांनै दिन तीन हुवा छै, सु कठै छै। तरै किण ही कह्यौ, जनांनै गैर मैहलां में छै। तद नाजर[11] मेलि खबर मंगाई। दिन चौथो छै मांहे पधारियांनैं, इसो नाजर आयनै कह्यौ। जरै खवासनै कह्यौ, महाराजा कठै। तद खवास कह्यो, महाराजा नैं[12] साह घोड़ा फेरणनैं

---

१ नारियल। २ प्रारम्भ किया। ३ दामाद। ४ काट गिराओ। ५ लकड़ी काटने का औजार, कुल्हाड़ा। ६ दुःख। ७ काष्ठ का बना पिंजरा। ८ मुख। ९ तरफ। १० करवट। ११ प्राचीन समय में हिन्दू राजाओं के अन्तःपुर में नपुंसक लोग सेवक की तरह रहते थे, जैसे संस्कृत नाटकों में कंचुकी नामक पात्र। १२ और।

विगर हथियारां सिधाया था। साह कह्यौ, कोस ४।५ री धाव पूगो छै। जरै हूँ तो घरै आयौ। मैं तो जांण्यौ महाराजा गैर मैलां[1] छै। जरै ऊगै कह्यौ, ठाकुरे दगो पाधो[2], सकै तो अनंतराय सांखलारा रजपूत नैं वांणिया था। जरै तुरत हीज मेंगल भाट घररो, पीलां आंषांरो धणी,[3] तिणनैं कह्यौ, मांमाजी, सही राजा कहवाटनैं अनंतराय सांखलारै ले गया। आगै घणा राजा बंध मांहे छै, जिणसूं राजि उठै पधार खबर ल्यावो। जरै मेंगल भाट चाल्यौ, तिको दोढसै कोसरो आंतरो छै। विचै दरियाव छै, तिण मांहि गढ छै, जेहाजां मांहि बैसनै जाईजै छै। तठै किणी जोर पोंचे नहीं। चारण भाटनैं अटकाव[4] नहीं, और कोई हुकम विना जांण पावै नहीं। औ भाट पाधरो अनंतरायरै दरबार गयो नै अनंतरायनैं विरुद दीधो,—बडा-बडा गढपतियांरो मांनरो मोड़णहार[5],गढपतियांरो पड़गाहणहार[6], छत्रपतियांरो नमावणहार, भाई अनंतराय सांखला, तो जिसो अबार[7] इण समै कोई हुवो न होसी। अै बचन सांभलि[8] राजा पूछियो, भाटराजारो कठै बास। तरै भाट कह्यौ, सोरठ गढ गिरनार रहूं छूं। राजा कह्यौ, तो घर रा धणी कहवाटसुं मिलिया, ब्रह्माव[9] दीयो। भाट कह्यौ, हुकम पाऊं तो जाय ब्रह्माव द्यूं। तरै कह्यौ, जावो, मिलि आवौ। तद भाट मेंगल जठै कठंजरो छै तठै गयो। कैवाट ढोलियै ऊपर सूतो छै। बैठी तो होणो आवै नहीं। तीखा लोहरा खोला हाथ-हाथ लांबा-सा घणा

---

१ दूसरे महलों में। २ दगो पाधो=धोखा उठाया। ३ पीली आँखों वाला। ४ रोक-टोक। ५ मान मर्दन करने वाला। ६ प्रतिग्रहण करने वाला, पकड़ कर कैद करने वाला। ७ अभी। ८ सुनकर। ९ आशीर्वाद।

जड़िया छै। तिणसूं ढोलियै सूतौ हीज रहै छै। तठै आय अह्लाव दीयो। सूतै हीज कुरब[1] कियो। समाचार पूछिया नै कह्यौ। जरै कहवाट दूहा कहै—

मैंगल़ ऊगानैं कहै, कठपींजरै कैवाट।
छाती ऊपर सेलड़ा[2], माथा ऊपर वाट[3] ॥

तूं कहितो ज तिकाय[4], ताल़ी ताल़ाहर[5] धणी।
बाला[6] हिवै बजाय, एकण हाथै ऊगला ॥

अै दो दूहा सीखाय दीधा। पाछो अनंतराय कनै आयो। दिन २।४ रहि सीख मांगी। घोड़ो सिरपाव ले गिरनार आयो। भांणेज ऊगानैं दूहा सुणाया। घणो निपट सोच ऊपनो[7]। तरै ऊगो दूहो कहै—

मामा मैंगल़ सांभलै[8], दूजो न जांणाह।
चौड़ै धूपट बांध नैं, अनंतराय आंणांह[9] ॥

इसो कहि महिलां सचिंतो[10] गयो। तिसै गहलोतणी मैहलां छै, तिणरै अनंतराय फूंफो लागै छै। तिका हजूर आई, पिण ऊगो बोलै

---

१ आदर किया। २ शेल, भाले। ३ मार्ग। ४ वैसीही है। ५ तारा-पुर का स्वामी। ६ राठौड़ क्षत्रियों की 'बाला' जाति विशेष, जो सौराष्ट्र के इतिहास में प्रतिष्ठित हुई है। ऊगा बाला जाति का राठौड़ था। ७ उत्पन्न हुवा। ८ हे मैंगल भाट, मामा को कहना। ९ मैं सरे-आम सिरपर पगड़ी बांध कर (प्रतिष्ठा सहित) अनंतराय को पकड़ कर न लादूं तो जानना। १० चिंतित होकर।

नहीं। रूसै ठांसणी[1] ढालरी दीधाँ बैठो घणो सचींत दीठो। जदि गहलोतणी कह्यौ, आज तो महाराज घणा साफिक्र[2] दीसै छै। तद ऊगै कह्यो, चिंता सांभली[3] नहीं। गैहलोतणी कह्यौ, इणरी चिंता मत करो। अनंतराय म्हांरो सगो फूंफो छै। बडी मासी उणरै मैहल छै। तठै हूं कँवारी थकी मासीजी कनै मास चार रहिनि,तिका उठारी सारी बाताँरी मोनैं खबर छै। तरै ऊगै कह्यौ, स्याबास रजपूतांणी बडी ओगाल[4] उतारी नैं म्हांनै जोवाया, थे उठारी हकीकत जांणो तिका कहो। तद गहलोतणी कह्यौ, दरियाव मांहे गढ छै। तठै घोड़ा सौ-दोढ पायगा मांहे छै। तिको सोकलि षारचो[5] घास खाये छै, रातब दांणारै पांण[6] सिंहमंसा[7] है रह्या छै, तिणसूं कोरड़[8] नहीं, दोब[9] (...) नहीं, करड़[10], धामण[11], गांठियौ[12] अै घास घोड़ा कदे ही लागै नहीं। जो घास कोरड़रा दगासूं ऊ हाथ चढै तो चढै। तरै आ बात सांभलि ऊगौ राजी हुवौ। अषाढरो मास थो, तिसै मेह हुवा जदै खालसै[13] कोरड़ बुवाई[14]। जोड़ि[15] घास वलै ठोड़-ठोड़ रखाया। दोब रखाई। यों करतां आसोज आयो। कोरड़ उपाड़ी[16], घास कटायो। दोब भेली कराई। पछै जेहाज एक कोरड़ सूं, घाससूं, दोबसूं भरायो नै असवार लाख एकरी जोड़ि करि तूंगा जुदा जुदा कीधा नै कह्यौ, कोई बूझै तो कहिज्यो, अनंतराय

---

१ टेक, सहारा। २ चिन्ताग्रस्त। ३ जानी। ४ मदद की। ५ घास की उत्तम जाति विशेष। ६ रै पांण=की वजह से। ७ शेरकी तरह हृष्टपुष्ट। ८,९,१०,११,१२, घास की जातियाँ। १३ राज्य की जमीन पर। १४ बोई। १५ इकट्ठा करके। १६ उखाड़ी।

सांखलारा चाकर छां, भाई-भतीजांरा छां। इसो बहिनो[१] करि हौळै-हौळै[२] कोई कठी कोई कठी होय जेहाजां बैस नै कोई सोवत[३] रो मिस करि चारण होयनै बेगा आय भेळा होज्यो। हिवै पाछो मुहरत लेनै सिधाया[४]। ऊगो हजार १० घोड़ो ले नै कोयलापुर पाटण उरै[५] कोस ६ दिखणाधी डेरा उतारो लीधो[६]। जठै जिहाजांरो मारग छै तठै जाय उतारो लीधो। त्यां मांहसूं सातसै टाळका[७] रजपूत ऊगै लीधा। त्यांनै करसावाळा[८] झगा[९] पहिराया, गोडां[१०] तांइ पांण काढी दोवटीरी दुपटी पोतां[११] पहिराई, माथै मैला पोतिया[१२] बंधाया। एक आप पाघ बांधी। हाथ मांहे ढाल तरवार ले बडेरो चोधरी होय बीजां[१३] रै हाथ मांहे मोटी डांगां[१४] दीधी। जाटांरो रूप कर नावमांहे बैसगढ मांहे पोंहता। पोळियां[१५] करसा देख अटक्या नहीं। मांहे राजासूं मालम करियो, करसा ऊभा छै, हुकम करौ तो आवै। तरै हुकम हुवौ। तरै मांहे पोहता। त्यां मांहे ऊगो मुदी[१६] बोल्यो, राज्याजी, रांम रांम, राज्याजी समाध्या[१७] छो। राजा हस्यो। तरै ऊगै कह्यौ, महाराज, जाट गधेड़ा की तरह छै, वेड़[१८] का रहिणवाळा छां, बोलण की कूं[१९] ही जाणां छां नहीं,

---

१ बहाना। । २ धीरे-धीरे। ३ सोहबत, संघ। ४ चले। ५ के इधर, इस ओर। ६ पड़ाव डाला। ७ चुने हुए। ८ कृषकों के से। ९ कपड़े। १० घुटनों तक। ११ पांण काढी······पोतां=मांडी लगी हुई रेजी की धोती की फर्द। १२ साफे, पगड़ी। १३ दूसरों के। १४ लट्ठ। १५ द्वारपालों ने। १६ अगुआ। १७ (समाधिस्थ) बैठे हुए हो। १८ (बीहड़) जंगल के रहने वाले। १९ कुछ भी तमीज।

माफ करियो। तरै राजा कह्यो, कठै रहो नै इतरी दूर कूं आया। तद ऊगै कह्यौ, गरीबनवाज, मालवै का परै[1] छां, हूं सगलां को मुदी छूं नै मालवै सिंघू[2] घणी खेचल[3] करै नै दुख दै छै, दूध-दही, मावो, खांथड़ी[4], गाडी, वेठ पड़ि पावां नहीं[5]। आथध[6] का देवाल छां। एक थांहरै[7] रैतनै चैन सुणियो, तैरा थाका पावां[8] आया छां। तद राजा कह्यो, म्हे थांने आध[9] में ही रवायत[10] करस्यां,वेगा आवज्यो, आछा खेत थांहरा छै। तिसै एकै घोड़ा कनांसूं घास लेनै ऊगानै दिखायो, देख्या चोधरी, राजा का घोड़ा घास खै छै। तरै ऊगै कह्यौ, महाराजा, बारै-बारै मास कोरड़ घास सूपंखी[11] म्हांकै मायै[12] छै। पूळा[13] ७/१० ले गया था, तिके निजर कीधा। राजा, बीजा भाई भतीजाँ सगलां सराह्या नै राजा कह्यौ, जा घास नै कोरड़री निचिंताई[14] कीधी तो म्हे थासूं निपट घणी[15] गोर[16] करिस्यां, हासल[17] मांहे रवायत करस्याँ। सालूरी[18] पाघ बंधाय सीख दीधी। तरै ऊगै कह्यौ, पोळियांनै कहावौ, म्हांनै आवतांनै रोकै नहीं। तद राज-दुवाइती[19] दीधी। ऊगो डेरै आयो। दूजै दिन ७०० पोट[20]

---

१ आगे। २यवन। ३ कष्ट, अत्याचार। ४ खांथड़ी=?)। ५ वेठ पड़ि पावां नहीं=युद्ध कर सकते नहीं। ६ हासल, कर, लगान। ७ तुम्हारे। ८ थके पाँवों। ९ आधे लगान की। १० रियायत, माफी। ११ सुवापंखी रंग का, हरे रंग का। १२ रहता है, जमा रहता है। १३ घास का गट्ठड़। १४ निश्चितता। १५ निपट घणी=बहुत ज्यादा। १६ गौर करेंगे, कृपा रखेंगे। १७ लगान। १८ कीमती वस्त्रविशेष की जड़ाऊ पघड़ी। १९ दुहाई, आज्ञा, फरमान। २० भार, गट्ठड़।

कोरड़री बांधी नै सातसौ भारा घासरा बंधाया । तिण मांहे ढाल नरवारियां बंधाई । परभात-समांन[१] जाटरो लबेस[२] करि नाव मांहे भारा मेल्हि पोलि आया । जरै चवदै-सै पोटां लेनै दरबार पोहता । राजा सूं मिलिया । राजा सूवापंखी दोब रा भारा देखिनै घणो राजी हुवौ । भाई-भतीजा उमराव सारो साथ रहणो दरीखाने[३] बैठा छै । तद ऊगै कह्यौ, हुकम करौ जठै नांखां[४] । राजा कह्यौ, भुरज[५] मांहे भरौ । तिसै भुरज कनै आया नै समस्या[६] कीधी । तरै पोटां मूंधी[७] मारि ढाल षड़ग काढ़ि नै ऊपर पड़िया तिकै जाणै जवाररी कड़ब[८] बाढै ज्यूं साथरा[९] कीना नै राजा अनंतराय सांखलानै ढाल्यांरी ऊट[१०] देनै जीवतो पकड़ लीधो । बीजा सरब मारिया, जीवतो एक न छोड़ियो ।·········सोर दरबार मांहे सबलो[११] हाको हुवौ । जरै कैवाट दूहो कहै—

दूहो

रूकां वागी रीठ, भोठ पड़ै माथा भड़ाँ ।
तोड़ण मामा ठीड़, आयौ दीसै ऊगलो ॥[१२]

---

१ सवेरा होते ही । २ लिवास, पोशाक । ३ आम-खास, राजा का प्रजाजन से मिलने का स्थान । ४ डालें । ५ कोट की दीवारें । ६ सलाह । ७ उलटी डालकर । ८ कड़बी, भूसो । ९ काट-काट कर बिछा दिये । १० ओट । ११ जोर का हल्ला । १२ दोहे का अर्थ—तलवारों का जंग बज रहा है, भटों के माथों पर अग्नि (भोठ) बरस रही है । मालूम होता है, मामा के कष्ट को दूर करने के लिए ऊगा आया है ।

कोलाहल कटकेह, कहिजे पाटण में किसौ ।
झीक वागी झटकेह, आयो सही त ऊगलौ ।।[1]

सांखलाँ[2] नै मसकां[3] बांध सहर लूटि डेरै आया । खवास दोय च्यारि पकड़ि ल्याया । दूज्यूं सांषलो बरस पाँच नीचलो[4] राख्यो और सगला कतल किया । ऊगो, खाँप[5] राठोड़, साख कमधज[6] हुवौ। डेरै आय खवास एक अनंतरायरो तिण कनांसूं सुजांणसाहनैं तेड़ायो[7]। आय मुजरो कियो । तद ऊगै कह्यौ, थारा धणीनैं छुडावै तो म्हांसुं रदल-बदल[8] करि । तरै सुजांणसाह आयो । कजी[9] होय नैं सुखपालां के रथां मांहे सांखलियां बैसांण नै मझनीयो[10]। बाण्यांरी जात, इसो दगो करै तिणनैं हमेसां च्यार आंगल वाढीजे। पिण लूंणरी[11] संसार छै, धणी फुरमावै तिको सिर माथा ऊपर छै । कासुं बाणियौ नै कासुं रजपूत, धणीरा भलानैं दौड़ै । तद सुजांणसाह कह्यौ, महाराजा सर्वजाण छै, लूंणरो कांम तरैदार[12] छै । तरै ऊगै कह्यौ, म्हे थारा धणीनैं छोडां, म्हे कहाँ त्युं करै तौ । तरै सुजांणसाहनैं कह्यौ, जितरा राजा बंध मांहे छै, त्यांनै एक एक बेटी भायां-भतीजां

---

१ पाटण में सेनाओं का कोलाहल कैसा सुनाई दे रहा है, तलवारों के झटके बज रहे हैं, प्रतीत होता है कि ऊगा सचमुच आ पहुँचा । २ अंनतराय जाति का सांखला क्षत्रिय था । ३ कलाई बाँध कर । ४ नीचे की उम्रका । ५ जाति । ६ कमधज्ज नाम की शाखा का वंशज । ७ बुलवाया । ८ अदला बदला कर, अर्थात् विवाह-संस्कार कर, अथवा प्रतिज्ञा कर । ९ लाचार । १० आगे होकर आया । ११ नमकख्वार, नमक देने वाले स्वामी का भक्त । १२ बेढब ।

री परणावै नै पाटवीरी बेटी मामाजीनें परणावै तो छोड दूं। तरै साह अनंतराय कनै जाय नै मसलत करी, नै सांखलै कह्यौ, धरती जीवरै आंटै[1] तुरक ह्वै, तुरकांनै बेटी दीजै छै, तो औ तो राजा आपणा सगा छै, थारी दाय आवै[2] त्यूं दे लेनै बुझाय। बेड़ी हथकड़ीसूं घणो दुखी छूं। तरै साह ऊगा कन्है आय सरब बात कबूल कीधी। तिसै ऊगारी फोजांरा तूंगा था, तिके आय भेळा हुवा। ऊगै साहनैं कह्यौ, आज गोधूळक[3] रा फेरा लिवाय द्यौ, जावौ, तोरण चँवरी जुदी जुदी बंधावो। साह सगळी तैयारी कीधी। गोधूळकरी वेळा हुई। तद कैवाटजी तो दुलहा नै दूजा राजा जानी[4] ज्यूं छै। एक सौ सेहरा मंगाय सौ ई राजांरै बांधिया। सरब राजा घोड़ा असवार होय कैवाटजी साथे सांखलियां परणिया। गोत, सेहुरा[5], बधावा गाया। सैंदानाँ[6] नौबत बागी[7]। राति माळियै पौढ्या। दिन ऊगाँ सगळा कैवाटजी साथे करि असवारी बणाई नै मुदै[8] कैवाटजी होयनै सुखपाळां के रथां मांहे सांखलियाँ बैसांण[9] नै मझीटा[10] नैं योग वाड़तां वाड़तां[11] जठै ऊगारो डेरौ छै तठै आया। ऊगो साम्हो जाय मामारै पगां लागो। तद राजा कह्यौ, ऊगा, धन थारी माता पिता, सांखलो लोड़[12] म्हां मांहे विपत्ति पाड़तो[13] नै जीवतो कदेई न छोडतो। इतरो उपगार सगळां राजासूं तैं कीधो, थारो पृथमी मांहे

१ रै आंटै=के वास्ते। २ दाय आवै=पसंद आवे। ३ गोधूलि वेला। ४ बराती। ५ सेहरे का मंगल गीत। ६ निशान। ७ बजी। ८ अगवाई में। ९ बिठा कर। १० आगे चले। ११ घुसते घुसते। १२ दुष्ट। १३ डालता।

नाँव अमर हुवौ । राजा कैवाट दूहो कहै—

राठोडांरी कुलत्रिया, सीला गरभ न धरंत ।
ज्यां भरतार न भंजणां, से भंजणा न जणांत ॥[१]

यों बाताँ करता डेरा मांहे आंण पोहता । मसंद[२] माथे कैवाटजी बैठा. । डावी जीवणी मिसल[३] बीजा राजा बैठा । मूंढा आगै कंवर बैसै त्यूं ऊगो बैठो । साह सुजांण ऊभो छै । तिण समीयै अनंतरायरै पगां मांहे बेड़ी, हाथां हथकड़ी, माथा ऊपर चींधी[४], तिण ऊपर पाघ लपेटियां हजूर बुलायो । तरै कैवाटजीसूं लेनै[५] सगला राजांनै सिलाम कराई । अनंतरायनै वले भूंगड़ा सेर एक मँगाय चांदणी ऊपर बिखेराया नै कह्यौ, भूंगड़ा चुग । तरै चुगै नही । तरै पिराणियांरै तीखी आरां, तिणसूं चपरका देणां मांडया ढूंगांरै । तरै मूंढासूं भूंगड़ा चुगण लागो । भूंगड़ा चुगायनै ऊगै कह्यौ, सुणि हो सांखला, ठाकर मोटा मोटा गढपती छत्रपती था, तिणांरै नै थारै कोई लांबो[६] वैर नहीं, धरतीरो विरोध नहीं, कोई हाड-वैर[७] नहीं । तैं इणांरी इसी भाँत इज्जत गँमाई । सदाई सबलो राजा निबला राजां नै झालता[८] आया छै, बंद मांहे सदाई राखता आया, पिण तो ठाकुर ज्यूं कोई अति-गति[९] मांडे नहीं । तिका परमेश्वरजी तोनैं

---

१ राठौड़ों की कुलबधुएँ व्यर्थ ही गर्भ धारण नहीं करतीं । जिनके पति रणभूमि से विमुख होने वाले नहीं हैं, वे रणभूमि से भागने वाले पुत्र पैदा नहीं करतीं । २ मसनद । ३ प्रतिष्ठाद्योतक क्रमबद्ध पंक्ति । ४ चिथड़े । ५ कहवाट से लेकर और सब । ६ बहुत बड़ा, लम्बा । ७ पुश्तैनी द्वेष । ८ पकड़ते, कैद करते । ९ अनीति, अत्याचार ।

आंख्यां दिखाई छै। तोनै दिनांई[१] च्यार-च्यार आंगुल़ बसोलासूं वढाईजै[२]। सगाविध[३] पिण हिवै, सगौ हुवौ तो साम्हो जोवण आवै नहीं, सगाविध देखणी। इसो कहि बेड़ी कटाई, हथकड़ी कटाई, कड़ा मोती दे घोड़ै चाढि पाटण पोहचायो।

ऊगै सगल़ां राजां साथे करि कूच कीयो। तिकौ कोस सौ दौढ सौरो आंतरो[४] छै। तिके मजलांरी मजलां[५] गिरनार पोहतो। दिन ४/५ राजांनै राखि नै सोख दीधी। हाथी १ घोड़ा ७ देनै साथ दे आप आपरा गढां पोहचाया। बडो पृथमी मांहे राठोड़ ऊगारो नांम हूवौ। हिवै कैवाटजी गिरनार राज करै। बरस पांच पछे ऊगो पिण आपरै तारापुर सहर आयो। सुखै राज पाल़ै छै। कैवाटजोरो कंवर जेसो बरस १७ मांहे हुवौ, तरै कैवाटजी रांम कह्यौ[६]। जेसो टीके बैठयौ[७]।

---

१ प्रतिदिन। २ कटाना चाहिए। ३ समधीपना, सम्बन्धीपना। ४ अन्तर, फासला। ५ मंजिल पर मंजिल। ६ रांम कह्यौ=मरगये। ६ राजगद्दी बैठा।

जषड़ा मुषड़ा भाटीरी बात

पछिम दिसनै पाटण गांव छः । तठै ऊढो भाटी राज करै । तिणरै दोय बेटा हुवा । त्यांरा नांम भींवो नै देवौ दीधा । तिणांरै गाँव अढाई-सैरा धणी घणा रजपूत पांच-पांचरा रहै । असवार सातसै अथवा हजारीरी साहिबी छै । तठै ठावां सगांरै भींवा देवानै परणायो । तठै बरस १६ मांहे भींवो हुवो । तठै ऊढजी रांम कह्यौ[2] । भींवोजी टीकै बैठा । उमरावांनैं घणी रीझां[3], सिरपाव, घोड़ा, कड़ा दीया । दोनां ही भायां मांहो-मांहे घणो मेळ रहै छः । पिण भींवासूं मातारो घणो जीव[4] । तिकै सुषै राज करै ।

तिण समै दिलीरो पीरोजसाह पातिसाह, कुतबदीन साहिजादो राज करै । त्यांरै उमरावांरो घणो लाड । खोटां खरांरा पारिषा । आ बात भींवै ऊढाणी चारणां-भाटां आगै सुणी । तरै भींवैजी रातै सूतां सोचियो, जिके बडा बडा राजवी पातिसाहांरी चाकरी करै, तिके घोड़ा हाथी मुनसप वधारो[5] पावै, बडा कुरब[6] नें पोंचै । तौ हूं पिण पातिसाहांरी चाकरी करूं । इसो विचार नै प्रभात हुवां

---

१ प्रतिष्ठित । २ स्वर्गवास किया । ३ कृपापूर्वक दिया हुआ इनाम । ४ मोह, प्रेम । ५ वृद्धि । ६ प्रतिष्ठा ।

माताजीरै मुजरौ करणनै मांहे गयो। तरै मुजरो करिनै हाथ जोड़िया नै कह्यो, जे बडा बडा राजवी गढपती नामजादीक हुवै तिके दिल्ली रा धणीरी चाकरीं कियांसूं बडा हुईजै, नै कह्यो छः—'दिल्लीश्वरो वा जगदीश्वरो वा'—मनरा मनोरथ पूरणनै समथ छः, तिणसूं श्री माजी साहिब, हुकम करो तो पातिसाहांरी उलग[1] करूं। इण.वही बेस मांहे सारो विवहार छः—

दूहो

जोवन दरब न षट्टिया,[2] ज्यां परदेसां जाय।
गमिया[3] यूं ही दीहडा,[4] अहिल[5] जमारो[6] जाय॥
ज्यांनैं पांच न ओलषै,[7] भरी गरदह[8] मांहि।
तिणही हंदो[9] हे सषी, जीतब[10] ही कुछ नांहि॥

तिणसूं पीरोजसाह पातिसाहरी चाकरी करां। तरै मा कह्यौ, बेटा, थारै किसी बातरी कुमी छः। थारा बाप-दादारी षाटी[11] जमा घणी छः, तिका खाव नै चाकरी मांहे किसूं छः, पारके[12] आधीन रहणो, रातदिन चाकरी करणी, सेरां धांन खांवणो नै सूं घर बैठां ही बाटो खातां बूजी आवै[13] छः। सुष छोड नै दुष कुण आदरै[14]।

---

१ सेवा, परदेश में जाकर सेवा करना। २ एकत्रित किया। ३ गमाये। ४ दिन। ५ व्यर्थ। ६ जीवन, जिन्दगी। ७ पहचानते। ८ सभा। ९ तिण ही हंदो=उनका तो। १० जीवन, जीना। ११ एकत्रित। १२ दूसरे के। १३ बाटो खातां बूजी आवै (मुहा०)=चैन से जीवन-निर्वाह करते हुए को उन्माद होता है। १४ स्वीकार करे।

तूं ही ज पिण राजियो[१] छः। थारै बडेरां लाषा फूलाणीरी चाकरी कीधी, रजपूतांरो नांम दैणां नै मारणासूं छः। इतरो सुण मा कनै वले भींवैं घणा हठसूं हुकम करायो। तरै बाहिर आय रजपूतां सूं मसलत[२] कीधी। चाकरीरो बैंहराव[३], डेरा कनात सामान खरची लीधी। असवार सौतीन (३००) सूं चढियौ। लारली[४] भौलावण भाई देवानै दीधी। सषरै सावणे[५] चाल्या, तिके दर-मजले दिली पोहता। सषरीं ठोड़ आपरी मिसल मांहे डेरा कीधा। पातिसाहजी सूं मालुम करायो। हजूर आवणरो हुकम कीयो। तठे मीर-मजलस रै साथै होय पातिसाहांरै निजर पेस कीधी। पातिसाहजी आछो रजपूत देषि, चरको[६] डील, रौबरो मरोड़ देष नै तीन हजारीरो मुनसप दीधो, ठोड़ बताई, सिरपाव, हाथी, घोड़ो, मोतियांरी माला किलंगी, खंजर दे विदा कीयो। जागीरो नीसरो। मोटै तोल[७] में वधियो। पातिसाही मांहे नामजादीक हुवौ। इसी भाँत बरस दोय तथा तीन बीता। तठै काबलरै दिसी नवनेजा पठांण छः, त्याँ ऊपरां पातिसाहजी बावीसी[८] विदा कीधी। तठै बडा बडा मीर उमराव विदा किया। त्यांमें भींवा ऊढाणीनै सिरपाव दीधो। जरै भींवैजी अरज कीधी, म्हारै कनै पातिसाहांरो सुषी निजर सूं हजार तीन असवार छः, वले सिरबंधीरा घाड़ा साथ राषिनै हुई जावुं। जरै पातिसाहजी पूठि[९] थाप ली नै कह्यो, तुम्ह सेर जुवांन अैसे हीज हो, पिण आगै जायगा विषम छः, तुम तुम्हारी नौकरी सिपागारी आछी करियौ।

---

१ राज्य का स्वामी है। २ मसौरा, सलाह। ३ ......(?) ४ पीछे की। ५ शकुनों से। ६ ओजस्वी। ७ गिनती में। ८ सेना। ९ पीठ।

इतरो कहि विदा किया। तिको सगलां उमरावांरो साथ हजार तीस असवारांसूं कूंच कीयौ। तिके पठांणांरै देस मांहे गया। पठांण सांमा आया। वेढ[१] टणकी[२] हुई। उलांरा[३] पग छूटा। तठै भींवो ऊढाणी आपरै तीनसै असवारांसूं तरवारियां धाप उतरियो[४]। साथ सगलो कांम आयो। भींवाजीरै एक बाजू लोह[५] ४/५ लागा। निबला सबला तद घणां रजपूतांरी लोथां मांहे घणा जाड़[६] मांहे पड़ियो। तठै घोड़ांरो चरवादार[७] थो, तिको घोड़ो लेनै नीसरियो, तिको पाटण जाय सगली हकीकत मांडिनै कही। भाई मा घणो दुष कीनौ नै कह्योः—

दूहो

रिण रहचिया म रोय, रोए रिण छाडै गया।
इण घर तो आगी लगै, मरणै मंगल होय॥

हिवै भींवाजीनै रिणषेत पड़ियांनै दिन दोय हूवा। तिसै तिसां मरै। तिण समीयै कैइक जोगेसर अकलपंथ हींगुला जंफरस[८] आवै था। तिकै रिणोइ[१०] देषि बातां करै छै, भाई भाई, रजपूतांणियां धवड़ी[११]रै षरणे[१२]रा लोहां धाप पोढिया छै, औ सुर भींवारै कांने आयो। तरै भींवै माथो ऊंचो कीयो। तरै योगीसर रिणोई मांहे होयनै कनै आया। तरै भींवै बोक[१३] मांडि दिखाई। जोगीसरां कनै तूंबी

१ युद्ध, मुठभेड़। २ भीषण, ज़ोरदार। ३ शत्रुओं के। ४ मन भर के तलवार चला कर गिरे। ५ घाव। ६ झुंड। ७ सईस। ८ अनुरंजित, लवलीन। ९ योगियों का एक पंथ विशेष। १० रणभूमि। ११ वीरांगनाओं। १२ कोखके। १३ पानी पीने के निमित्त हाथों की बनी अंजलि।

मांहे पांणी थो, तिको पायो नै अमल खवायो। सावचेत हुवो। तद भींवो बोल्यो, गरूजी, मोटी कूंडरो ठीकरो छूं[१] नै म्हारा पाषती म्हारा रजपूत रिणषेत पड़िया छै। मो कनै मोती कड़ा छै, कटारीरी पड़दड़ी[२] मांहे २५ मोहरां छै, तिको मोनै चेलो करो। तरै जोगीसरां झोली मांड़िनै उठायो, तिको किणहेक सहर ल्याया। पाटाबंध[३] तेड़[४]नै पाटा बंधाया। भींवारा जाबता भांति-भांतसूं कीना। कड़ा मोती बेच नांणौ[५] कीधो। तारां मलीदा करै नै भींवानै षवाड़ै नै आप होज खावै। इसी भांति लोहसारां हुतां बरस एक लागो, घाव फूहे आया[६]। तरै महंत जोगेसर कह्यौ, अब भींवा, तूं थारै घरे जा, थारा कुटंब मांणसां भेलो हुइ। तरै भींवो बोल्यो, म्हारा देस मांहे मोटी एक कुरीत छै। कोई ठावो गाँमेती वासड़ियो तथा घररो धणी रजपूत मरै, मोटियारकै कांम आवै, तो उणरी वायर[७] गाघरांणो[८] करै। तिणसूं किसूं करूं घरे जायनै। तरै जोगीसर कह्यौ, गाघरांणो क्या कहीजै। भींवै कह्यौ, देवर होय तिणसूं घरवास करै, भोजाई देवररै घर मांहे पैसे। तिकै म्हारै वांसै[९] देवौ छोटो भाई छै, तिणसूं देसरी रीत रजपूतांणी कीधी होसी। म्हारै चाकर खबर दीधी छै। तिणसूं घरे किसे मूंढै जावूं, म्हारो परणी लहुड़ा[१०] भाईरी अंतेवर[११] कहावै, तिणसूं औ सबद मोनैं जरै[१२] नहीं। मोनैं दरसण हीज द्यौ। ताहरां जोगेसर छोटै

---

१ बड़े घराने का बालक हूँ। २ कोष। ३ मरहम-पट्टी करने वाले। ४ बुलाकर। ५ रुपया-पैसा। ६ घाव भरने को आये। ७ स्त्री। ८ नाता, पति के मरने के उपरान्त स्त्री पति के निकटतम पुरुष की स्त्री बन कर रहे-उसे 'गाघराणो' कहा है। ९ पीछे। १० छोटे। ११ पत्नि। १२ सह्य होना।

आसण बैसांण थोड़ो सो चीरो दीधो, कासमीरी मुद्रा घाली, नाद सूं'प्यौ, माथै टोपी पहिराई, सेली गळा मांहे घाली। तिको भींवोजी भींवरावळ् कहावै, धरतीरा तीरथ करै जोगीसर साथै। तिसै आपरा गाँवसूं कोस तीन ऊपरै कोई गाँव छै, तठै ऊतरीयो। तरै भींवैजी गुरसूं अरज करि कह्यौ, गरूजी, हुकम करो तो अठासूं कोस तीन ऊपरां म्हारो राजस्थांनरो पाटण गांव छै नै माता भाई छै, थे कहो तो कुटंबजात्रा करि आऊं। गुसाईं कह्यौ, जावौ। तरै भींवो चाल्यो, सो पाटण आय पाधरो कोटड़ो आयो। आगै देवो पोळ् मांहे मांचा[1] विछाया छै। त्यां ऊपरां देवो नै रजपूतांरो साथ छै। आइस देषि सगळां आदेश कीयो, पिण किण ही ऊळ्ख्यो[2] नहीं। तरै भींवो एकै डैंचा[3] ऊपर बैठो। देवै तीरथांरी बात पूछी। तिसै देवानै जीमणरो तेड़ो आयो। देवो मांहे जीमणनै गयो। तद देवै मानै कह्यौ, मा, एक जोगेसर पोळि बैठो छै, तिणनैं थाळी परूस मेल्हौ। तरै बाजरारो खीच, रोटा, काचरीरी भाजी, पईसा तीन भर घी परूस छोकरी लेनै आई। तठै छोकरी पिण ऊळ्ख्यौ नहीं, थाळी पत्तर मांहे खीचड़ो रोटा घालि मांहे गई। भींवै जांण्यौ इतरां मांहे किणी ऊळ्ख्यौ नहीं, नै मातारो मोह मोथीं घणो थो, पिण बरस ६ हूवा छै, कि जांणोजै तिसौ हेत छै कै न छै, पिण मातारो दरसण कीधां बिन जाऊं नहीं। जो माता ऊळ्ख्यौ तो पाँच दिन टिकसूं, नहीं तो दरसण कर मेलो[4] दे रमतो रहिस्युं। इसो विचार पाँणी मांगणनै दोढियां जाय अवाज कीधी, माई, पांणी पांवणा। तिसै माता सबद सुणिनै कह्यौ, हे देवारी

१ खाट। २ पहिचाना। ३ खटिया पर। ४ मिलाप।

११ मांहे हुई। तरै आंटै भीलसूं सगाई कीवी। तिसै कागड़ै बलोचरो डील बेचाक[1] हूवौ। तरै कागड़ै कह्यौ, तुस्सांडे[2] जीवनै चैन रख, अस्सांडा लेष है त्युं ह्वैगा। कागड़ै कह्यौ, तुस्सांनै अल्ला जांणै, पै एक बात अख्खूं[3] सो सुणो। सिकारपुर में पठांणांदी घोड़ियां लैण नैं दोय तीन बेला भूका[4] दिया, तहां अस्सांडा दांत षट्टा किया, हथ पगां पड़ अन्त आया। सो पुत्र नहीं, पुत्र होय तो सिकारपुर पठांणां दी घोड़ी ल्यावै। इसो सुण पिडसंधी बोली, मैंडा बोल सच्चा जांणे, तुस्सांडी पुत्री हूं तो घोड़ी ल्याऊं। ओ वचन सुणि कागड़ै कह्यौ, तो पंजा[5] दे। तद पिडसंधी आघो हाथ करि कोल कियो। कागड़ै देह छोडी। तरै पिडसंधी कफन देनै चालीसो कीनो।

अठै पिडसंधी कागड़ैरी असवारीरो घोड़ो, तिण ऊपर घोड़ांरी असवारी सीखै। बरस एक मांहे घोड़ो सारियो[6] नै पक्की असवार हुई। तरां पछै पठांणांरै बेटां साथै तीरंदाजी सीखै। षाकंदाज[7] मांहे हाथरी साचौट[8] सफाई सीखै, सो कागड़ो तीर सूँ पांचसै पांवडा[9] रै आंतरै आदमी जिनावर उठाय लेतो नै पिडसंधी हजार पांवडां ऊपर चोट करै, तिका जांणीजै पांवडा दससूं कीधी। इसो भांति बरस पांच सीखतां लागा। माथै केसां रो भूलो[10] रहै नै ऊपरां लपेटो बांधै। वागो, चिलकता[11] बगतर पैरै।

---

१ असमर्थ। २° तुस्सांडे, अस्सांडे, दी, अक्खूँ, ये सिंधी, पंजाबी के शब्द हैं-भाषा की यथार्थता दिखाने के लिये प्रयुक्त हुए हैं। तुस्सांडे=तेरे। ३ कहूँ। ४ आक्रमण, डाका। ५ ताली देकर वचन दे। ६ तैयार किया। ७ ......(?)। ८ सच्चाई। ९ कदम। १० जटाजूट। ११ चमकते हुए।

लोही मार्यौ[1] । तरै अवै बरस सोलै मांहे हुई । तरा पछै सिकारपुर री घोड़ियां लैणनै चाली । तरै तरगस तीन भूथड़[2] लीना, कवांण तीन अढारटंकी[3] लीवी, तरवार दोय, कटारो एक, सिलहै सावत[4] होय घोड़ै पाखर[5] लगाय सिकारपुर सांम्हां मांड्या । तिका दिन ५/६ नैं सिकारपुरसूं उरै कोस पांच तलाई छै, तठै घोड़ांनै झेल्यौ छै ।

अवै भींवै ऊढाणी एकै दिन रजपूतांनै कह्यौ, मिनष जमारै आय कोई प्रिथमी मांहे नांम न कीधो तो यूंही ज आया । तरै रजपूतां कह्यौ छै—

दूहो

नह खाधा नह मांणिया[6], लछ[7] दे सुजस न लिद्ध ।
मांनहै[8] त्यां मानव्यां, केहा कारज किद्ध ॥

तरै रजपूतां कह्यौ, म्हांरो मन यूं कहै छै, एकरसूं सिकारपुर पठांणांरी घोड़ी पांचसै सातसै ऊछरै[9] छै, तिके ल्यां, कुसलै घरे आवां, प्रिथमी प्रमांण नांव रहे । रजपूतां कह्यौ, वाह वाह, निपट मोटी विचारी, सांवण सघरा लेनै पधारो नै श्री माताजी करै तो पठांणांनै भूंडा[10] दिषाय नै घोड़ियां ल्यावां नै खुरी करां । तरै सारां आ वात ठहराई । तरै भींवै असवारी मांहिसूं चुण-चुण कालरा चरषा[11]

---

१ लोही मारया (मुहा० =किशोरावस्था की उमंगों का दमन किया, अथवा सहनशील होगई । २ भाथड़े । ३ अट्ठारह टंक भारवाली । ४ कवच (सिलह) से सुसज्जित होकर । ५ घोड़े का कवच । ६ सुख भोगा । ७ लक्ष्मी । ८ मानव जीवन में, मानखे में । ९ निकलती हैं । १० नीचा दिखा कर । ११ काल के समान बली ।

असवार हूवा। जिके ३०० टालिमा चढिया। सावण निपट सषरा हुवा। तिको दिन सात मांहे कोस पाँच सिकारपुर डरै घोड़ा झेलिया। जठे राति पड़ी। जरै भींवै एक आपरो जासूस सिकारपुर घोड़ियांरै हेरै[1] मेलियो। राते तो घोड़ां रजपूतांनैं वल रातब हुई नहीं। तठै दिन ऊगै पोहर भींवाजी टेवटा[2] लेवणनै गया। तठै उजलाई[3] करण नै जल सोझै। तिकै तलाई दो तीन सोझी[4], पिण खाली लाधी। तिसै एक सांमी[5] नाडी[6], तिण मांहे धूंवो उठतो दीठो। तरै भींवै जांण्यौ कोईक आदमी छै, तठै जल होसी। यूं जांण नाडी मांहे आयो। आगै देखै तो मोटा लाकड़ा हुवाया[7] छै नै जिनावर एक मोटो खिणसायो[8] छै, तिको सेक-सेक नै पठांण खावै छै नै घोड़ां नै पिण खवाड़ै छै। इसी देष भींवै कह्यौ, क्यूं पांणी छै तो कहो, ज्युं उजलाई करां। तरै कह्यौ, म्हारा घोड़ारै हांतै वादलो[9] जलसूं भरियौ छै, सो ल्यौ। तरै जोड़ी[10] मांहे जल लीधो, उजलाई करनै पाछो आयो, रांम रांम कियो। तरै पठांण कह्यौ, आवो भाईजी रांम रांम, हींदू हो तिणसें मनवार[11] करणी नावै। तरै भींवै कह्यौ, भाईजी, राज अठै ही रहो छो कै और कठे ही। तरै कह्यौ, हूं पठांण छूं, कागड़ा बलोच को वेटो छूं, तुम कौण हो। तरै भींवै कह्यौ, हूं पाटण ऊढा भाटीरो बेटो, भींवो म्हारो नांम छै। आंपे तो गड़ासंधरा रहणवाला छां। आप अठै कुं पधारिया छो। तरै पिडसंधी कह्यौ, भाईजी, सिकारपुर

१ खोज में। २ शौचादि के निमित्त। ३ स्नान। ४ खोजी। ५ सामने। ६ तलैया। ७ जलाया है। ८ नष्ट किया, मारा। ९ जल की झारी। १० पानी इकट्ठा हुआ स्थल, डाबर। ११ मनुहार।

की घोड़ी लैण कूं आयो छूं। तरै कह्यौ भींवैजी, म्हे पिण इण हीज कांमनै आया छां। असवार सै-तीन (३००) छै, थांसूं नैड़ा हीज छै। पिण रावल़[1] लारै साथ कितरो एक छै। तरै पिउसंधी कह्यौ—

दूहो

कंता फिरज्यो[2] एकला, किसा बिडांणां[3] साथि।
थारा साथी तीन जण, हियो कटारि हाथि॥

या बात है। आंपे भेल़ा ही घोड़ियां ल्यां, पछै थांरी पातर[4] हुै तो घोड़ी टोल़ज्यो;[5] थांहरी पातर आवै तो बाहर पालज्यो,[6] साथ बहुतेरा है। तरै भींवैनैं घणो प्यार करि आपरै साथ में ल्याया। जिसै जासूस आयनै कह्यौ, प्रभात हुवां आपणा दिसीनै घोड़ियां ऊछरसी। तरै मचकूर[7] कीयो, बल़[8] रातब करणी छः, सो सांम्हो गाँव कोस ऊपर छः, तठै चालौ, निभरमा[9] पिण रहां। तरै गाँव गया। बल़ रातब कीधी। दिन ऊगै घोड़ी पाँचसै बछेरां-सूधी ऊछरी। तिके ताता[10] करि पासरणो[11] करिनै घोड़ियां भींवै नै पिउसंधी लीधी नै पासरणा करि देसनै चलाया। तिसै घोड़ियांरै साहणी कह्यौ, रे धाड़व्यां, काल़रा पांच्या आया, घोड़ी टोल़ो छो। इसो कहि किरल़ी[12] कीधी। घोड़ियां धाड़ो फूंवियो[13]। तिसै पठांण सातसै इका वाहादर

१ आपके। २ घूमना, विचरण करना, रहना। ३ दूसरों के। ४ विश्वास, पसंद। ५ घेर चलना। ६ आक्रमण का सामना करना। ७ निश्चय किया। ८ बलि, भोजन। ९ निश्चिंत, निस्संक। १० घोड़े तेज करके। ११ (प्रसरण)-चलकर, धावा करके। १२ चीत्कार। १३ धावा हुवा।

सिलह साबत कीयां बैठा था, तिके घणां-सा तुरत हीज हजारी षंधारियां[1] माथे चढिया नै वांसै[2] मार फीटा कीया। तठै बलोच कह्यौ, भाई भींवा, वाहर पाछो कै घोड़ी टोलो। तरै भींवैजी कह्यौ, थां इकेलांसूं टोळणी आसी नहीं, तिणसूं राज वाहिर पाछो नै वेगा पधारीज्यो। इसो कहि घोड़ी टोली। तरै पिउसंधी कह्यौ, धीमा धीमा सुसते-सुसते चाल्यां जाज्यौ। तिसै वाहरू[3] देठाळै हुवा[4]। तरै पिउसंधी कह्यौ, पांवडा इग्यारैसैरै आंतरै खड़ा रहिज्यो नै ठाढा पांणीसूं जांण-मतै[5] है तिको आघो वध[6] नै आवज्यो। इतरो डीलरो फुरत देपनै वचन सुणनै धीमा पड़िया नै कह्यौ, रे तूं तो इकेलो दीसै छै, तिसका पाप कैसे लेवां। सारो साथ हुवै तो मुकालवा करां। तरै पिउसंधी कह्यौ, हजारां लाषां घोड़ा हुवै तो डरूं, इतरा तो थे म्हारी चार छो। इतरो कहि पांवडा सातसैं आठसैं ऊपर एक बांवळ[7] रो सूको बूंठ छै, तिको ऊभो दीठो, तिणरै लेसरी पिउसंधी दीधी, सो पंषारा बारै रह्या, नै कह्यौ, तुम इसको लगावो। तरै पठांण लेस चलाई, तिका पांवडा च्यारसै भूधी पोहती। तरै पठांणांरो सारो साथ चमकियो नै कह्यौ, भेटण-जोगो पठांण नहीं, जांणै द्यौ। तरै क्याँ हीक कह्यौ, इतनां हीज देखकै कैसी भांत जांणि दैंगे। इतरो पिउसंधी सांभळि नै कह्यौ, अब खबरदार हुवो, य्यो मेरा तीर आवता है। तिण तीरसूं पठांण १०/२० वींध्या नै मुदी पाड़ियो[8]।

---

१ कंदहारी घोड़े। २ पीछे। ३ बचाव करने वाले। ४ दिखलाई दिये, मुठभेड़ हुई। ५ ठाढा पाणीसूं जांण मतै (मुहा० = ठंढे पानी मरना हो, बेमौत मरना हो तो। ६ आगे बढ़ कर। ७ बबूल का वृक्ष। ८ गिराया।

इसा तीर वेला ५/७ बाह्या, पठांणां सौ-दौढ़रो साथरो[१] हुवो। घोड़ियांरो सोच भूलि गया। सगलांनै जीवरो सोच हूवौ, नै पठांण तीर बावें तिको थेट[२] तांई पौचे नहीं। तरै एकै कह्यौ,खांजी, सिधारो। तरै पिउसंधी दुवा-सिलांम करि राह वुही नै तिके आगला साथसुं जाय पोहच नै कह्यौ, घोड़ा जलद ताता खड़ो मती, पाछली फिकर बीजी वार घोड़ियां लेवो तद करज्यो। इण भांति बातां करता दिन दोय नै राति दोय मारग चाल्या। तठै पाटणसुं कोस तीन ऊपरां मारग दोय फाटै। पिउसंधी घोड़ो ठांभ नै कह्यौ, भाई भींवा, अब अै मारग तुम्हारा है नै अै मारग हमारा है, घोड़ियां बांटि ल्यो। तरै एक रजपूत कह्यो, घोड़ी मूंडका[३] माफक बांटो। तरै ऊ बचन सांभल पिउसंधी कह्यौ,कुट्टण[४] मूंडका क्या, आधी हमारी है,आधी तुमारी है। तठै क्यूं चड़भड्यो[५] रजपूतांरो साथ।तरै भींवैजी कह्यौ,आपरी खातर आवै त्युं करो। तरै पिउसंधी आधोआध कीधी। तरै घोड़ो एक सांड थो, तिको वधतो रह्यौ। तरै वलै एकै रजपूत कह्यौ, औ सांड आपणे घोड़ियां नै रापां। तरै पिउसंधी रीस करि कमचीरी[६] घोड़ारी कमर मांहे दीधी, तिको दोय तपता हुवा। तरै पींडां दोय आपरी असवारी रा घोडारी पताकां लगाई, रीस मांहे चाल्यो। तरै भींवै कह्यौ, साथ नै थे अठे वल[७] करौ; गाँवसूं जाजम, चांदणीं मंगाय नै विछायत करावज्यो, खेजड़ा[८] री छाया छै, तठै गोठरी तारी करिज्यो।

---

१ खातमा, काम तमाम हुआ। २ ठेठ, पूरी दूरी तक। ३ प्रति मनुष्य एक। ४ कुट्टिनी, एक प्रकार की गाली (क्रोधके आवेश में)। ५ कुपित हुए। ६ कोड़े की। ७ भोजन करो। ८ शमीवृक्ष।

जुलगा[1] मांहे दांवणा देनै छोडज्यो। भींवैजी कह्यौ, म्हे, पठांण रीसांणो जाय छै, तिको इसांनै बांह-बेली[2] राखोजै, किण हेक वेला आडो आवै, तिणसूं अठै पाछो ल्याय, गोठ जीमायनै सीख देस्यां, गाढो रजावंध[3] करि हसि हसायनै सीख द्यां नै सीख करां। इसो कहि आप पालो[4] हीज दोड़ियो। आगै पिउसंधी कोस एक पोहती। तठै बावड़ो एक जलसूं भरी दीठी। तरै अठी-उठी आगो पाछो दीठो। देखनै मारगरी गिरमीसूं डील बेहोस होइ रह्यौ थौ। तरै मन में ऊपनी, संपाड़ो[5] करूं। तरै घोड़ासूं उतरि घोड़ी जलगा मांहे चरती कीधो, आप बावड़ी मांहे ऊतरी, सिलह खोल नगन होय नैं पांणी मांहे सांपड़ै छै। तिसै भींवो आय पोहतो। भींवै मन मांहे जांण्यो, वावड़ो मांहे किसूं करै छै। यों जांण वरंडी[6] रा छेकड़ा[7] मांहे जोवै। तठै देखै तो अस्त्री छै। देख नै माथौ धूंणै छै। नै जांण्यो परमेश्वररा घर-मांहे घणी रीध[8] छै, नै आ जो म्हारै बैर[9] होय नै इणरै पेटरो कोई नग नीपजै तो हूं पृथ्वी मांहे अमर होवूं। पिण हिवारू[10] बतलाऊं[11] तो माथो वाढै। तरै पाछो पांवडा ५० जाय नै षंषारा करतो आवै छै। तिसै पिउसंधी कपड़ा सिलह पहर हथियार लगाय बायर आयी। तिसै भींवैजी रांम रांम कहि नै कह्यौ, म्हां चाकर ऊपरै इतरी इतराजी[12] फुरमाई, हूं तो निपट

१ जलाशय के पास का बीहड़। २ (मुहा०) भुजा का सहायक। ३ खूब रजामंद, प्रसन्न। ४ पैदल। ५ स्नान। ६ छोटी सी दीवार। ७ छिद्र। ८ ऋद्धि। ९ पत्नी। १० अभी। ११ बात करूँ। १२ ऐतराज, नाराजगी।

ऊंडो, साघणो[१] जमारीक[२] भेला रहणरो प्यार करण-मतूं छूं, मोनै चाकर करो। यों कहतो जायै नै सांमो तीखा भर लोयणां मुळ-कतौ[३] चोघै[४]। मूंढारै वचनांरो और हीज तरै नै पगां मांहे पाघ उतार नै मेली नै हाथ जोड़ नै कह्यौ, कै तो माथो वाढि राळो[५] कै मोनै चाकर करो। तरै पिङसंधी कह्यौ, भीवाजी, साच कहौ, थे आगे बावड़ी आया छा के नाया छा। तरै भीवै आपरी तरवार काढि नै मेली नै कह्यौ, आप सरबजांण छो। तरै पिङसंधी कह्यौ, तैं मोनैं छली, पिण हूं तूरकणी छूं नै आंटा भीलरी मांग[६] छूं। इणरो जाव[७] कासूं छै। तरै भींवै कह्यौ, मैं सरब कबूल्यौ। तरै पिङसंधी पिण भींवाजानैं आरै कीधो[८]। तरै घोड़ै चढ़ि घोड़ियां टोळ नैं साथै हुई। तठै चाकर एक भींवै माता कनै मेल्यौ नै कहायौ, गोधूळ-क्यांरो[९] साहो छै, बींदणी ले आयो छूं, बरी[१०] चूड़ारी गैहणांरी तयारी कीज्यौ, चंवरी मंडाज्यो। आ बात माता सांभळ राजी हुई। घर मांहे सारो सरजांम थो। तरै बाग मांहे ढोल नगारा वाजा ल्याय चंवरी बांधी। तिसै भींवै गोठ जीम नै असवार होय पिङ-संधीनै राजलोक[११] में मेली, आपो परकास्यौ[१२]। तरै स्त्रीरो रूप वणायो, मैंहदी दीधी, पीठी कीधी, पेहटियो[१३] विनायक थाप्यो,

---

१ सघन, गाढा। २ जन्मस्थायी। ३ मुसकराता हुआ। ४ देखता है, घूरता है। ५ काट डालो। ६ सगाई की हुई कन्या। ७ जवाब, उत्तर। ८ स्वीकार किया। ९ गोधूलि वेला में। १० स्त्री का दातव्य धन, वर की ओर से दिया हुआ स्त्री का वस्त्राभूषण। ११ राजमहलों में। १२ आपो परकास्यौ= निजत्व प्रकाशित किया। १३ गणेशजी का नाम विशेष।

गोधूलक्यांरा फेरा लीधा, सेहरा बधावा गाया। तठै महल एक नवो वणायो। तिण दोला[1] कोट सात कराया। सात खंदक दिराई। पाषती रजपूत सौ-दोढसै, दोयसै बैसे। पोलांरो जाबतो निपट घणो राखै। तिकै तंबाखूरी ठरडां[2] लागी रहै, गलां-बातां करै, बंदूखांरी आवाजां करै। तिको आंटा भीलरो घणो बीह[3] राखै।

तिसै बरस दोयनें बेटो एक हूवो। तिणरो नांम जषड़ो दीधो। पछै बरस एकनैं आशा रही[4]। तिको मुषड़ो पेट मांहे छै। तिसै भाद्रवैरी अंधारी रात, मेह बरसनें रह्यो छै, दादुरा डरराट[5] करै छै, मोरिया झिंगोर खायनें रह्या छै, बीजली सिहर-सिलाव[6] करनै रही छै, परनाल्यांरा पड़ताल[7] वाजि नै रह्या छै। तठै पोहराइत[8] था, तिके आप आपरै पाषती कोटसूं बैठा छै। तिण समीयै आंटो भील आयो। आगै ५/७ वेला आयो थो, पिण जोर लागो नहीं, तिको आयो कोट सात कूदि नै मैल चढियो। परनालांरा पड़सादां[9] थी षड़कारो निचै पड़ी नहीं। तिण वेला भींवो रातिरा श्रमसूं दारूरा जोससूं भर नींद मांहे सूतो छै नै पिउसंधी आंटारा भौसूं जागै छै। दीवो तो गुल करि दीधो। इणनैं आयो जाणि नै पिउसंधी तरवार झागड़ा वलोचरी कड़ियां[10] री छै, तिका भींतसूं पड़ी कीधी छै। तिसै आंटै झरोषे चढि मूंढो काढियो। तरै बीजलीरा चमकासूं पिउसंधी दीठो, जांणियो उलगाणोजी[11] पधारिया। तिसै सूती हलवै से ऊठी

१ चारों ओर। २ ठाठ। ३ डर। ४ (मुहा०)गर्भाधान हुआ। ५ मेंढकका डरडर् शब्द। ६ चमक दमक कर। ७ शब्द। ८ पहरेदार। ९ घोर शब्द। १० कटि की। ११ विरही परदेशी प्रिय।

नै तरवार काढी नै उबाह्यां[१] ऊभी । तिनरै आंटो हेठै आंगणै[२] आयो नै जांण्यो सूता छै, तिको बीजळीरा चमकासूं दोनां ही नैं बाढसूं । तिसै बीजळी चमकी नै पिउसंधी तरवार चलाई, तिको कड़ियां मांहे बूही[३] । दोइ टूक हुवा नै हेठो पड़ियो । लोहीरो चीपलो[४] हूवो । तरै पिउसंधी तरवार दलै[५] करि भींवारै पापती पोढ़ि रही । घड़ी दोय नैं भींवो नाड़ो[६]-छोडणनैं जागयो । तिको ढोलियासूं पग नीचो दीयो । तरै पगां मांहे कीच लागो । भींवै जांण्यो, कठै हो परनाळ छिटकी कै छात फाटी । तरै भींवो कहै—

दूहो

'राति अंधारी चीपलो'

तरै पिउसंधी बोली—

"आंटो बीयरियो ।"

"मैं पिउसंधी झाटकियो, तु ऊढो ऊबरियो[७] ।"

वळे पाछली बात पिउसंधी कही, तरै सगळी बात जांणी । आंटै रै भाई सात छः । त्यां मांहे एक तो रहियो, नै बीजो अकाई निपट टणको[८] छः । त्यांसूं दोय वैर ठैहर्या ।

अबै पिउसंधीरै बीजो बेटो हूवो । तिणरो नांम मुपड़ो दीधो । नै पहली वरस दोयरो जपड़ो हूवो थो । तरै गुजरात पापती झाला-

---

१ उत्+बाहु हाथ उठाकर तलवार को तौले हुए खड़ी । २ आंगन में । ३ चली, प्रहार किया । ४ कीचड़ । ५ दळै करि (मुहा०) =तलवार को कोषगत करके । ६ पिशाब करने को । ७ बचगया । ८ पराक्रमी ।

वाड़ छः । तठै षड़रो[1] दुख हूवो, नै पाटण-समीयो[2] अवल चरणोई[3] घणी हूई । तरै झाला उठै आया था । तिको हठी झालारो बेटी मास ६ माहे थो । तिका जषड़ानैं परणाई । ब्याह थाली मांहे कीधो । पछे मास ६ रहि झाला देस गया पाछा । तरां पछै वरस १०/११ मांहे जषड़ो हूवो । तिको गांवरै बारै साईनां[4] रै साथै रेती मांहे रमै छः । गांवसूं अधकोसेक माथै रमै छः । तिसै गोवालियो एक दोड़ियो आवै छः । तरै जषड़ै कह्यो, दोड़ियो इकसासियो[5] कुं जायै छः । तरै कह्यौ, दरबार वाहर घालण[6] नें जाऊं छूं, नाहर बहिड़[7] एक मोटी मारिनै खायै छः । तरै जषड़ै कह्यो, रे मानैं बताय । तरै कह्यो, म्हारी पाधर[8] नैड़ो हीज छः । तरै जषड़ौ टाबरांनैं छोडि तरवार लेनै दोड़ियो, तिको नाहर भषतां ऊपर गयौ नै कह्यौ, फिट[9] काळी ढांढी[10] रा खांणहार, पसुवांनैं ही मार जांण्यो छः । तरै नाहर करांछ[11] ले नै जषड़ा ऊपर आयो । तिसै जषड़ै नाहरनैं मार लीयो । तरै टाबरां कनां सूं बेऊं[12] तषता नाहररा घींसाइ[13] दरबार आंण राख्या । तरै भींवै जी कह्यो, बेटा, आछो कांम कीधो, पिण नाहर सिंघरा धणीरा सिकार रो छः, तिणरो सोच छः । तरै जषडैं कह्यो, बद[14] कीधो छः । तिसै करोळां[15] जाय सिंघरा धणीसूं कह्यो, सिकाररो नाहर थो, तिको

---

१ खाद्यपदार्थों का दुष्काल । २ पाटण की ओर । ३ खेती, घास इत्यादि । ४ समवयस्क बालकों । ५ एक साँस से, बहुत तेज । ६ फरियाद करने । ७ पहिलीवार प्रसूता होने वाली जवान गाय । ८ सीध में । ९ फिटकार, धिक्कार । १० ढोर (स्त्रीलिंग), पशु का खानेवाला । ११ कलांछ, छलांग । १२ दोनों । १३ खिचवाकर, घसीट कर । १४ बध, हिंसा की । १५ शिकारियोंने ।

[illegible] तिणरै बेटे मारियो । तरै असवार ५० तलब हुइनै हजूर बुलाया। तरै भींवो जपडो बेऊं, [illegible] चढिया, तिके हजूर गया नैं रांम रांम कीयो । तरै राजा कह्यौ, माहरी रपत[1] रो नाहर कुं मार्‌यौ । तरै जषड़ो बाल्यो, रजपूतांरो हींदू धरमरो जमारो छः, गऊ ब्राह्मणरा प्रतिपाल कहीजां छां, तिको गाइ मारी सुणी, दूजो बसतीरै नैड़ो आयो, तरै सरीषां साटो[2] थो, श्री परमेश्वर जी मोनैं ही जसरो तिलक दीयो, नैं नाहरसूं काई समी नहीं । आ बात जषड़ारा मूंढासूं सांभलि भींवा सांम्हो जोयो । भींवो डीलां तोवरदार[3] तो खरो, पिण जषड़ारी सिबी डील रोव-रोमंछर[4] रंग मिले नहीं । तरै जांण्यौ, बाप जिसो हुवै कै माता सरीसो हुवै । तिको इणरी माताको रंग चहिरो दीसै छः । तरै कह्यो, भींवाजो, घरे सिधावो, पिण इण जषड़ारो खेत[5] दिषावणो पड़सी, नहींतर थांहरै नै माहरै रस[6] रहैली नहीं । यों कहि सीष दीधी । भींवोजी घरे आया, पिण घणा सचींता होयनैं एकण तूटा[7]-सा ढोलिया ऊपर सूता । तरे पिउसंधी जांण्यो, सिध गया, कोई समाचार कह्यो नहीं, कांइ जांणीजे, देखां पूछूं । इसो मनमें विचार नैं उठ ढोलिया कनै आयनै पूछियो । कह्यो, राज सिध पधारिया, पिण मोसूं समाचार कह्या नहीं नै दिलगीरो[8] किण बातरी दीसै छः । तरै भींवै

---

१ रक्षा का, पालतू । २ सारीषां साटो (मुहा०) बराबरी वालों में बदला था । ३ तौरदार, रौबदार । ४ रोम-रोमावलि । ५ क्षेत्र, वह क्षेत्र (स्त्री) जिसकी कोख में जाषड़ा पैदा हुवा । ६ प्रेम । ७ टूटे हुए । ८ दिल की म्लानता ।

कह्यौ, कै तो देस छूटै कै घर छूटै कै जमारा मांहे छराप[१] लागै। तरै पिडसंधी कह्यौ, क्यूं ? तरै भोंवै कह्यौ, राजा जपड़ारो खेत देषणनैं कह्यौ, तिको घररी बैरां[२] किण किण देषाई नै नाकारो[३] करां तो देस छूटै। पिडसंधी कह्यो, इणरो किसो सोच छः, थे अमल[४] करो। तरै दूणां अमल कराया, दारूरा प्याला दीधा नै भींवानै अमलांसूं आंधो[५] कीधो नै सुवांण दीयो। तरै पिडसंधी घोड़ो सांहणी[६] कनांसूं मंगाय पिलांण करि वागो पहिर हथियार बांधि नै सिधनै चलाया। तिकै दिन-ऊगतै पहली पोल जाय ऊभो रही।

तठै राजानै सिकाररो घणो इसक छः। तठै चोबदार कनां स्युं मुजरो कहाय नै कहायो, कागड़ा बलोचरो भतीजो-बेटो छः, सो आयो छः, तम मालम करो नै हम सुण्यां है महाराजाकूं सिकार खेलणरी घणी इसक छः नै हमकूं पिण इसक छः, सो महाराजानैं कहो सिकार चढीजै, ज्यूं सिकाररो खेल देखां नैं दिखावां। तरै चोपदार आ बात राजासूं मालूम कीवी। तरै राजा घणो राजी हूवौ, करनाल[७] कराई, भला भला सिकारी साथे लीधा, सिकारी जिनावर —चीता, स्याहगोस[८], कुतरा[९] बाज, सूर, फूडी[१०] साथे लीधा नै असवार हुवा नैं वन मांहे गया। तिके आप-आपरै मुहांगै[११] खेलै छः। तठै पिडसंधीरै धकै चढै[१२] जिके जिनावर, तितरांरो डावो

१ कलंक। २ स्त्रियाँ। ३ नांही। ४ अफीम खाओ, चैन करो। ५ छका कर बेसुध कर दिया। ६ घोड़ों की रक्षक, क्षत्रिय जाति विशेष। ७ विशेष घटना सूचक तोप की ध्वनि। ८ एक पालतू शिकारी जानवर। ९ शिकारी कुत्ते। १० एक शिकारी जानवर। ११ सामने। १२ धकै चढ़ै (मुहा०,=सामने आवे।

कांन काट काट नै घोड़ारो तोबरो भरियो नै कैइक सूर, सांभर, हिरण निजर किया नै अउर उमराव सिकार निजर करि करि नै मुजरो करै, पिण डावो कांन न दीसै। इसी भांत पोहर ३/४ खेल नैं डेरां आया। तरै राजा कह्यौ, मोरजी, थांहरो नांव कहो। तरै कह्यो, नांव श्री परमेश्वरीरो कै महाराजरो, पिण लोक सिकारखां कहै छः। इसौ सुणि राजा सिकारसूं घणो रीझ्यौ। तरै कड़ा मोती सिरपाव दीधा, पिउसंधी सीष मांगी। तद राजा कह्यौ, थांहरो दरबार छः, अठै ही रोजगार मिलसी, घर तो छताही[1] छः, तिणसूं पांच दिन अठै हीला[2] रहां। तरै पिउसंधी कह्यौ, फेर चाकरीनै हाजर छां। इसो कहि सीष कीधी, तिका आपरै गाँव पाटण आई। तिसै भींवोजी जाग्या। तिसै राजारा वले आदमो आया नै कह्यौ, सितावी[3] करौ, जषड़ारा षेत ल्यावो। तरै पिउसंधी भींवाजीनैं आय कह्यो, अै कड़ा मोती पहिरो, सिरपाव पहिरो नै तोबरो ले जावो नै कहिज्यो, सिकार मांहे जिनावरांरा डावा कांन कठै, सिकार खिलाई तिको षेत छः। इतरी बात सुणि घणो खुस्याल होय सारो सरजांम ले हजूर गया, मुजरो कीयो। राजारी निजर तोबरो मेल्यो। राजा कह्यौ, उणरी हकीकत कहो। तरै भींवैजी कह्यौ, तोबरा मांहे बसत[4] छः सो निजर मेली छः नै कड़ा मोती पहिचाणो, नै जिनावरांरा डावा कान कठे छः, ऊ[5] खेत छः। तरै राजा कह्यौ, तोबरो सूंधो[6] करो, देखां सूं। तरै जितरा जिनावर सिकार मांहे आया था, तितरांरा डावा कांनांरो ढेर हूवो। तरै राजा देखनै

१ है ही। २ मिलजुल कर। ३ ज़ल्दी। ४ वस्तु। ५ वह। ६ उलटा, सीधा।

हैरान हूवो । नाहर, सूर, सांभर, पाताळ-छोकला, काळिहार, खरगोश चीता, बघेरा, सीह—इतरां जिनावरांरो कांन ढेर हूवो । तद राजा कानांने देख भींवाजीनै कह्यौ—

दूहो

भूमि परेषो[१] हो नरां, कहा परेषो व्यंद[२] ।
भुंय बिन भला न नीपजै, कण, तृण, तुरी नरिंद ॥
हंजां[३] घरि हंजा हुवै, कग्गां[४] कगा विहाय ।
ऊढाणी घर जष्षड़ो, नग नीपजै स न्याय ॥

औ दूहा कहि सिरपाव देनै सीष दीधी । तरै गांव आया ।

अबै बरस दोयनैं भींवैजी राम कह्यौ, तरै जषड़ो टीकै बैठो । मुषड़ो मूंढा आगै दौड़ै धावै । इसी भांति दोनूं भाई घणा हेत प्यार मांहे रहै । प्रिथमो मांहे दूणा मारणा[५] सूं नांव पायो । दातारां झूझारांरा नांम छः, तिणसूं चारण-भाट देस-देसरा रूपक[६] ले आळ[७] आवै । तिके लाष-पसाव[८]

१ पहिचान । २ अन्यथा । ३ हंसों के । ४ कौवों के । ५ दान देने और युद्ध में मारने से । ६ कविता । ७ पास । ८ लाख-पसाव देने की प्रथा राजपूताने के राजाओं में बहुत प्राचीन काल से रही है । कवियों को सर्वदा लाख रुपये ही नहीं दिये जाते थे वरन् भिन्न-भिन्न राज्यों में कम-बेशी परिमाण में हाथी, घोड़े, रोकड़ी रुपये, सिरपाव, वस्त्राभूषण इत्यादि के रूप में लाख-पसाव दिये जाते थे । उदाहरणतः—दयालदास कृत राठौड़ों की ख्यात में एक जगह विवरण दिया गया है कि कविराज गोपीनाथ गाडण को बीकानेर के महाराजा गजसिंहजी ने संवत् १८१० में उसके काव्य-ग्रंथ "ग्रंथराज" पर लाख-पसाव दिया था जिसका परिमाण इस प्रकार

पावै । काला-गैहला[१]-रो-दातार कहांणो । इसी भांत बरस २२/२३ मांहे हूवा । मा पिउसंधी अकाईरी राड़सूं जषड़ानै झाली-दिसा[२] कोई कहै नहीं नै जषड़ानै याद नहीं । तठै आषाढ लागतै पिउसंधी आपरा मालिया[३] मांहे पौढी छः । नै पांवडा पांच-सातरै आंतरै जषड़ो आपरा मालिया मांहे पोढियो छः । तठै दिषणाधी झालावाड़-दिसी मेह बीजली सिलाव लेती दीठी । तरै पिउसंधी मोटै साद बोली, आजरी बीजली नै मेह म्हारा जषड़ारै सासरा ऊपर छः । औ सबद जषड़ारै कांने आयो । जषड़ै सोचियो, व्याह तो तीन छः, तिके उगूणाऊ[४] कै उतराधा छै नै माजी दषणाधू सासरो कह्यौ, तिको किसी भांति । राते निद्रा नाई । पोह पीली हूवां[५] सेतषांनै[६] जाय हाथ पग ऊजला करि दांतण कीधो नै स्नान-सेवा कार माजीरैं दरसण आया । मुजरो करिनै आगै बैठो नै जषड़ै कह्यौ, माजी आप राते म्हारा सासरा-दिसी कह्यौ, सो इण-दिसी सासरो किसो । तरै पिउसंधी मन मांहे विचारियो, मो पापणीरी जोभ रही नहीं, बेटारै कांने पड़ो । तरै मा दीठो झूठ बोलियां वणै तो सषरो । तरै मा कह्यौ, बेटा, मैं नींद में बहिक[७] नै कह्यौ होसी नै थारा सासरा तीन छः, तिके तूं जांणे हीज छः। तरै जषड़ै कह्यौ, माजी,

---

दिया गया है—रुपया २०००) रोकड़ी, हाथी १, हथणी १, घोड़ा २, सिरपाव १, मोतियों की कंठी ।

१ आपत्ति के मार्ग या समय पर सहायक। २ झाली की ओर। ३ महल । ४ पूर्व दिशा की ओर । ५ पोह पीली होते, पौह फटते, उषाकाल में । ६ पाखाने में । ७ बहक, उन्माद, उन्निद्रावस्था

साच हीज फुरमावो, नहीं तो आपच[1] करिस्युं। घणो हठ हूवौ। तरै माता दीठो दोनूं बातां बिगड़ै छै। तद मा कह्यौ, बेटा, हठी झालारी बेटी तोनें बालपणै परणाई थी। तिणनैं बरस २० हुवा। तिको बिचै आंतरा भीलरा भाई अकाईरा गांवां मांहे राह छै, कोस सौ एक ऊपरै सासरौ छै नै कोस ८० तांई अकाईरी सींव छै, तिण सूं हूं जायनैं बहू ले आवस्यूं, थे अठै जाबता करौ। भीलांसूं दोय बैर छै। तठै थांरा सिधावणरो कांम नहीं। तरै जषड़ै कह्यौ, वाह-वाह, भली बात कही।

हिवै जषड़ै रैबारी[2]नैं तेड़ तूछियौ, घणी फरवी[3], चलाक सांढ हुवै तिका बताय। तरै रैबारी कह्यौ, महाराजा, रावलै[4] झोक[5] नव छै। तिणमें अकालगारी तिणरी नांनी बनास पांणी पिवती नै नागरवेली री पनवाड़ी चरनै घरे आवती। तरै जषड़ै उण सांढनैं सारणी[6] मांडी। तिका मास एक मांहे सझाई। तिका कोस पचास जायनैं एकै ढांण[7] पाछी आवै। तिण माथै कसणा करायनैं सांवणरी तीज ऊपरै साव[8] केसरिया कसूमल पोसाष वणाय भारो गहणो पहिर सासरैनै चलाया। तिके आधेटे[9] पोता। तठै दिन पोहर एक चढियो छै। तिको अकाई भील आदमी सौ-दोयसूं तलावरी पाल ऊपरां वड़ांरो छाहड़ी हेठो बैठो छै। जांगड़िया[10] गावै छै। अमल गलै छै। तिण समीयै जषड़ो जाय नीकलियो। तरै भीलां दीठो नै कह्यौ, श्री माताजी लुंबो[11] दीधो। इतरै भील बोल्या, जीवतो छूटो, कपड़ा ग्रहणा उरा आप[12]। जद

---

१ हठ। २ ऊंटों का चरवाहा। ३ तेज। ४ आपके यहाँ। ५ तेज सांढ। ६ तैयार करना। ७ एकसार तेज चाल से। ८ पूरे। ९ आधी दूरी। १० गाने बजाने वाले कमीन, ढोली। ११ प्रसाद, पुरस्कार। १२ दे डाल।

जपड़ कह्यौ, थे कहो छो सो सगलो तयार छै, पिण हूं आसालंधो[१] झालांरै सासरै पडवा[२] कीधाँ जावूंछूं, पाछो विरतो देस्यूं। तरै भीलां पूछियो, केही षांप[३] छै, किणरो डीकरो[४] छै। जपड़ै कह्यौ, षांप नै बापरो नांव तो रजपूताणी ले आवस्युं तरै कहिसूं। तरै अकाई कह्यौ, वारू-वारू, जा बापा हषरू कह्यौ[५], रजपूताणी वेगो लेनै आवज्ये. बाप बोल मोटियारांरै[६] एक हीज छै। जरै जपड़ै कह्यौ, आवतो थांसूं जुहार करि सीष मांगि घरे जास्यूं। इतरो कहि मारग चाल्यौ, तिको सासरै गयो। घणी खुस्याली हुई। वधाई बांटो। दिन १५/१७ रह्यौ। घरांरी सीष मांगो। तरै झालां ओझणांरी[७] तयारी कीनी। जपड़ै कह्यौ, म्हे नै झालीजी एकै दिन मांहे माजीरै हजूर जास्यां पाधरै मारग नै ओझणांनै दिन १०/१५ लागसी आवतांनै, बीजै निरभै गैलै जासी। इसौ कहि सांढ ऊपर कसणा कराया नै असवार हूवो, तिके दिन पोहर दोढ तथा पूंणा दाय पोर चढायो छै। जठै अकाई भीलांरो झूल[८] लीयां त्यूं हीज बैठो छै। अमल गलणीयै बाढियो[९] छै। कसुंभा वत्तीसा[१०] नीकल़ै छै। कैइक भील अमलांरी झोकां[११] खायनै रह्या

---

१ आशालुब्ध, प्रेमातुर। २ चलान। ३ जाति। ४ लड़का, पुत्र। ५ वारू वारू जा बापा हषरू कह्यौ=भीलों की भ्रष्ट भाषा का नमूना है। अर्थ—वारी जाऊँ (बलिहारी जाऊँ), बापू, तू ने बहुत ठीक कहा है। ६ बाप बोल मोटियारांरै—वीर पुरुषों के बाप और वचन एक ही होते हैं। ७ विदाई में वर के साथ भेजा जाने वाला सामान और अनुचरवृन्द। ८ झुंड। ९ अफीम गलने के वास्ते पीसा जा रहा है। १० बत्तीस बार पीस कर छाना हुआ अफीम। ११ झोंके, तरंगें।

छै । कैइक सांपोला[1] करै छै । क्यां इक अमल चिपठिए[2] चाढियो छै । घणां भीलां अमल कीयो छै । तिसै सजोड़ै[3] जपड़ो आंवतो दीठो । तरै भील मांहो-मांहे बोल्या, म्हारै डीकरै रपचूयै[4] हत्येक[5] दाष्षु[6] छै, कह्यौ हतो त्यूं हीज आयो । तिसै जषड़ै अल़गै ऊभै जुहार कीयो, सांढ भेकी[7] नै रजपूताणीनै कह्यौ, थे सावचेत रहिज्यो, हूं जायनैं पाछो आऊं तिसै थे सांढरी मोहरी[8] लेनै हाथ मांहे आगलै आसण बैसि जाज्यो नै हूं पाछले आसण बैसि जास्यूं, पछै देखां किसी एक सांढ ताती तीखी खड़ौ[9] छो । वांसै[10] आवसी तिके हूं जांण् नै उवै जांणै नै सांढ चलावणी थांनै भल़ै[11] छै । इसी भांति भालीनैं समभाय अकाई भील कनै आयो । तरै अकाई कह्यौ, जुहार-जुहार, पिण ग्रहणो तो उतारे आपि नै जोर रपचूताणी[12] काई हवरी[13] दीसै छै, जांणे पावाहररो हांह[14], तो रपचूताणी अमनैं आपि नैं थारा हाच[15] ऊपरां जीवतूं[16] नै हथियार वगह्या[17] । तरै जषड़ै कह्यौ, तो म्हारी नैं म्हारी रजपूताणीरो गैहणो भेलो करि ल्याऊं छूं । इसो कहि पाछो फिरियो, तिको सांढि कनै आयो । भालीनै कह्यौ, आगिलं आसण

---

१ नशे में मस्त होकर डिगमिगाना । २ लोहे का वह अंकुश जिसमें बंधी हुई कपड़े की छलनी में अफीम छाना जाता है । ३ वर-बधु के जोड़े में । ४ भीलों की भ्रष्ट भाषा में "राजपूत" (रपचूय) । ५ एक ही बात । ६ कही । ७ बिठाई । ८ ऊँट की नकेल । ९ चलावो । १० पीछे । ११ जिम्मेवारी । १२ रजपूतानी । १३ सुन्दर । १४ पावाहर रो हांह= पाबासर (मानसरोवर) का हंस । १५ हाच (भ्रष्ट भाषा =साच, सत्य । १६ जीव, जिन्दगी । १७ बक्सिस की, छोड़ी ।

बेसि जावो। तरै झाली मोहरी हाथ मांहे लेनै चढी नै जषड़ै टांग वाली[१] नै कांब[२] चलाई नै सांढ पवने पवन लागी[३]। जिसै जषड़ै कह्यौ, पांच भाटी, बापरो नांव भींवो, मा पिउसंधीरो बेटो छूं। थांतैं वैर लेणी आवै छै तो वेगा आवज्यो। इतरा वचन सुण्या नै पोला[४] हूवा नै भील गांव-गांव खबर देणनै, मारग बांधणनै दौड़ाया नै अकाईरा आदमी दोयसै भील, एक मोभी[५] बेटो घेवरा, तिको साथ लेनै पोहता। तिको जषड़ो वांसले[६] आसण भीलां सांमो बैठो। तीर एकैसूं भील ७ तथा १० फोड़ै, तिके वलै पांणी न मांगै। इसी भांति घेवरै-सुधा भील अढाईसै मारिया नै अकाईरै बांह में तीर लागो, तिको बेऊं बाहां फोड़ि नाषी। अरजल[७] हूवो पड़ियो। तठै जषड़ानै पण[८] छै, जिको लड़ाई करि मरै तिणनैं वासदे[९] में घालि पछै आघो जायै। तदि सांढ झेकी नैं झालीनै उतारिनै कह्यौ, थे मोहरी झालियां ऊभा रहौ, म्हारा हथियार छै तिका संवाहो[१०], सूरा-पूरा[११] भील कांम आया छै, तिके भेला करि लाकड़ी द्यां। इसो कहिनै घींस-घींस[१२] नैं सांढ कनै न्हाषिया[१३], नैं अकाई भीलनै सुसकतो देष घावांसूं रंज्यो[१४] नांख्यो। जषड़ो दूजां दिसी गयो। × × × × ×

जिसैं जषड़ो मडां[१५] री टांगां पकड़-पकड़ घींसियां लायौ। सैह[१६]

---

१ एड मारी। २ चाबुक। ३ पवने पवन लागी (मुहा०)=हवा हो गई। ४ ढीले, शिथिल, हतोत्साह। ५ लाडिला। ६ पिछले आसन (बैठक) पर। ७ व्याकुल। ८ प्रण, प्रतिज्ञा। ९ अग्नि। १० सँभालो। ११ शूरवीर। १२ घसीट घसीट कर। १३ डाले। १४ भरपूर, सराबोर। १५ मृतकों की, शवों की। १६ सभी।

भेल़ा किया । अकाई नैड़ो पड़ियो देखै छै । तितरै अकाईरै मन मांहे ऊपनी अस इण मौके अचाचूक[१] रो वार करूं नैं जषड़ानै मार झाली उरी ल्यूं । जिसैं चकमकसूं वासदे पाड़ि[२] जषड़ो पूलो लेनैं फूंक नीची नस करि देतौ थो, तिसै अकाई तरवारि वाही । जषड़ारो माथो ढह[३] पड़ियो । झाली देषती हीज रही, क्यूं समझियो नहीं । तरै लपेटो[४] माथै मेल्ह नं उण हीज सांढ माथै बैसि झाली लेने अकाई गाँव आयो । भील़ांने गलि लाया । आपरै पाटा-पीड़[५] कराई । झालीने मेहलां मांहें राषी । तिसै दिन १५/१६ में घाव फूहे आया[६] । पाटानंध-[७]नैं बधाई दीधो । भीलां निछरावल़ कीधी । झाली घणो कोप कीयो नैं आपघात करणी मांडी, पिण अकाईरै घरवास[८] करणो कबूल्यौ नहीं । तरै अकाई घणो रीसाणो होइ नै झालीनैं पकड़ाई नैं ग्रैहणो उरो लीधो नै पचास जूत्यांरी दिराई । वले कह्यौ, हमेसां सांपेरो गोबर भेल़ो करावो नै थपावो नं दोय अढाई मणरी घरटी दोल़ी[९] बैसाणो नै सवामण धान हमेसा पीसाड़ो नं अरटियै[१०] पाव एक सूत कनावो, पुराणा जव सेर एक खाबानें द्यौ नै अभूनै[११] नौहरै पड़ी राखौ, हमेसा दिन ऊगतै पचास पैजारां[१२]री द्यौ । इसा हवाल मांहे नौहरै राषी । तिको हमेसा कह्यो जितरो करै । कपड़ा मोटसूता, तिके धोवण पावै नहीं । कांगसी केसां फेरण पावै नहीं । माथो धावण पावै नहीं, केस पराकण[१३] पावै नहीं । झाली मांहे अै थोक[१४] है ।

---

१ अचानक । २ जला कर । ३ गिर पड़ा । ४ साफ़ा, पगड़ी । ५ मरहम पट्टी । ६ घाव मिलने को हुए । ७ पट्टी बांधने वाला । ८ गृहवास, स्त्री बन कर रहना । ६ चक्की के पास । १० तकली पर । ११ सुनसान, निर्जन मकान में । १२ जूतों की । १३ सुलझाने । १४ यंत्रणाएँ ।

हिवै लारै ओझणो पोहतो। तठै पिउसंधीनै जषड़ारौ घणो सोच ऊपनो, जषड़ो कुसल़ नहीं, बिच्चै भीलांरै हाथ बेऊँ रह्या, पिण मारियाँ पकड़ियाँरी निघै[1] नहीं। तरै चारण एक करणीदांन, तिण जषड़ारा दांन—घोड़ा, ऊंट, सिरपाव, कुरब[2] घणा पाया था। तिण मैला कपड़ा पहिर अकाईरै गाँव आयो। तिको अकाईसूं सुभराज[3] कीयो। तिसै उठारा चारण भाट अमलांरा कोट आया। आवतां हीज कह्यौ, जषड़ारा भुजारा भांजणहार, कलियां बैरांरा काढणहार[4]नैं घणी आसीसां पोहचै। तरै ऊकाई घणो आदर दीधो। इसा सुभराज चारण बैठे-बैठै सुण्या। तिसै दरबार बडो कियो[5]। अकाई कह्यौ, दूबल़ो-सो चारणियो छै, अणनैं[6] नोहरै डेरो दिराड़ो[7], झाली-तीरै[8] बाटी करै षवराड़ो[9] रूड़ां जिमाड़ज्यो[10]। तद चारण चारणनैं लीयां नौहरै आयौ। आटो घी दीनो नै कह्यौ, झाली, चारणनै बाटी करै आपज्यो। तरै चारण तूटै सै मांचै बैठो। झाली रोटी करै छै। चारण पूछियो, थारो रैहणो किसे मैहल छै। इतरो सुण झाली बेऊं हाथांसूं छाती माथो कूटण लागी, हाथ बाढ-वाढ खांण लागी। तिके हाथांरै लोहीरी धारां छूटी। तरै चारण नैड़े जाय ऊपरांसूं धूजतै-धूजतै[11] हाथ पकड़िया नै कह्यौ, लिषमी माता, तोनैं पूछियो तो कोई अनरथ कीधो नहीं। झाली आपरी

---

१ खबर। २ प्रतिष्ठा। ३ चारण लोग राजाओं के सामने "शुभराज" शब्द कहकर आशीर्वाद कहते हैं। ४ कलिकाल में प्रतिशोध लेने में समर्थ। ५ दरवार बड़ो कियो (मुहा०)=दरबार समाप्त किया। ६ इसको। ७ दिलावो। ८ झाली के पास। ९ खिलाओ। १० जिमाओ, भोजन कराओ। ११ काँपते काँपते।

त्रिपत थो त्युं कही, भींवा भाटीरा मोभीरी परणी छूं[१]। सरब बात चारण सांभली। रोटी क्युं षाधो क्युं न षाधी। पाछो पाटण दिन पाँच मांहे आयो। सरब मांडिनै बात कही। तरै मुषड़ै नै पिउसंधीनै जषड़ारो घणो सोच हूवो, पिण झाली दासीपणैं, [illegible]।

तरै मुषड़ै गायांरा छांग[३] मांहे टोघड़ा[४] दोय मोटा, जातीला[५] सांडरा था, त्याँनै घणा जावता मांडि दूध धषाऊ पावै, वलै घोरी चूनड़ी[६] करनै दीजै। तिसै बरस १५ मांहे सारिया, रातब दांणो दीजै। इसी विध बरस दोय हुवा, तरै नाथिया[७]नै पैंटावणां[८] माँडिया। तिके पांच कोस जायनै बैल[९]-जूतां पाछा आवै, बिच मांहे पोटा[१०] छंगास[११] करै नहीं। इसी भांत कोस ४० जायनै चालीस पाछा दौड़िया नै दौड़िया हीज आवै। जरै मुषड़ै हलकी गुजरातण बैली जोति नै हथियार बांधि, तरगस दोय, कवांण दोय बैल ऊपरां मेलि[१२] चलाया। तिके दिन एक मांहे गया। अकाईरै गाँव जाय पोहतो। दरबार गयो। अकाईनैं खबर हुई, चारण एक आयो छै। तरै भीलां अकाईनै कह्यौ, बापा, फूला चारणिया कन्है केहड़ी[१३] धांहषरा[१४] वलधिया[१५] छै; बापा, तुम्हारी अहवारी[१६] जोगा छै। तरै अकाई कह्यौ, वारू, नोहरा मांहे उतारो दिरावो, चारणियानै मारे ठोके नैं उरा लेहां[१७]। तिसै चारण आय कह्यौ, गढवा डेरो ल्यो। मुषडो बैल बैठो नौहरे आय

---

१ विवाहिता स्त्री हूँ। २ कलंक, दुःख। ३ टोला, झुंड। ४ सांड, युवा गोवत्स। ५ अच्छी जाति के। ६ घी में सनी हुई आटे की बाटियाँ। ७ नाथ डाली। ८ जोतना। ९ बहली, रथ, गाड़ी। १० गोबर। ११ गोमूत्र। १२ रख-कर। १३ कैसी। १४ उत्तम जातिके। १५ बैल। १६ सवारी। १७ छीन लेंगे।

ऊतरियो। चाकर झालीनैं आयनैं कह्यौ, चारणनैं बाटी करनैं आपज्यो। तिसै झाली मुपड़ारी सवी[1] देष रोवण लागी। तरै मुषड़ै पूछियो, वेदल[2] क्यूं हुवै। तरै झाली कह्यौ, भींवा भाटीरा बडा बेटारी परणी छूं, मो पापणीरो घणो खोटो जमारो छै। तरै मुखड़ै अठी-उठी जोयनैं कह्यो, झाली, तोसूं एक बात दाखूं[3] किणीनैं न कहै तो। तरै झाली बोली, मो पापण मांहे तो घणी विपत पड़ी छै, वलै अबै सूं करिस्युं। तद मुपड़ै आपरो आपो परगासियो[4] नै कह्यौ, जो थांहरै सासरै चालणो हुवै तो उठो, पिण बैल पड़ज्यो[5], बैलरो जाबतो घणो करिज्यो नै वांसै आवसी तिणनैं हूं घणो ही समझावसूं। इतरो सुणत-समान[6] झाली बैल ऊपरां बैसी नै जषड़ै बैलिया जोतिया नै गाँवरै बारै बैल लीधी नै कह्यौ, झाली लियां जावूंछूं, मुषड़ो माहरो नांव छै, नै आवै तिको ठाकुर बेगो आवज्यो। तरै आ बात भीलां सुणी नै ढोल हूवौ। तरै अकाई बेटा-सूधो भील २०० लेनै चढियो। तिका मुषड़ो हलवै हलवै बैल षड़ाई। भील ताता हूवा आंण पोहता[7]। तरै मुषड़ो एकै तीरसूं भील १०/१५ फोड़ै। तिकै धरती हीज पड़ै। अकाई दोय बेटां सूधो मारिया। भील पाछो एक ही न गयो। सरब भील मारिया।

इसी भांति मुषड़ै जषड़ारौ बैर काढियो नै घरै आयो। जठै झाली रांम रांम करि ऊठी नै मुषड़ासूं कह्यौ, देवर थांरी घणो बेल पसरो[8], पूतरा[9] पोतांसूँ वधो, धान धीणो[10] धापो, घणो राज चढतो होज्यो।

---

१ मूर्त्ति, आकृति। २ दुःखी। ३ कहूं। ४ आत्मत्व प्रकाशित किया। ५ चलाना। ६ सुनते ही। ७ आ पहुँचे। ८ बेल बढ़े, वंश-लता बढ़े। ९ पुत्र। १० गाय बैल आदि धन।

कोई वळै रजपूतरो बेटो इसी भांत बैर लेज्यो। पिण मो पापणीनै लाकड़ी दे[1], ज्यूं पाप तो कटै नहीं, पिण क्यूं हळकी होऊं, थांहरा भाईरी षवासी[2] मांहे रहूं। तरै मुषड़ै कह्यो, भली विचारी। तद अरोगी[3] चिण सत्य करायो[4]। तिका सत्यलोक पोंहती।

दूहो

खूटी[5] ताइ खांनाह, जिण नीपायो जष्षड़ो।
मिले नवि मेलंतांह, मांटी दूजा मांटव्यां॥
विहदातार विनाह, जाचक क्युं जीवै नहीं।
खूटी ताइ खांनाह, जिणै नीपायौ जष्षड़ो॥
पांतरियां पहलो इ, जाइ जुहारो जष्षड़ो।
नर बीजा निरलोइ, आंष्यां तळ आवै नहीं॥

इति जषड़ा मुषड़ारी बात कही। सूरवीर दातारां लही।
॥ इति श्री जषड़ा मुषड़ारो बात सम्पूर्णम्॥

---

१ लकड़ी दो, दाहसंस्कार करो। २ चाकरी, सेवा। ३ चिता। ४ सती कराई। ५ दूहा-अनुवाद—(१) वे कानें (खजाने, खान) ही समाप्त हो गईं, जिन्होंने जषड़ा-जैसे वीर-पुरुषों को पैदा किया। दूसरे पुरुषों में ऐसा पुरुषश्रेष्ठ खोजने पर भी नहीं मिलता।

(२) दातारों के बिना याचक किसी प्रकार जी नहीं सकते। वे खानें ही खूट गईं जिनमें जषड़ा जैसा वीर पैदा हुआ।

(३) वीरों की पंक्तियों में सब से प्रथम जषड़ा का अभिवादन (जुहार) करना चाहिए। (उसकी तुलना में) दूसरे निरलोभी (निस्वार्थी) लोग आखों के तले नहीं आते—ठीक नहीं जँचते।

जैतसी ऊदावत

—+*+—

संवत् १४९६ भाद्रवा सुदी ४ राव सूजाजीरो[1] जन्म। संवत् १५४८ राव सूजोजी देवलोक हूवा। राव सूजारै पुत्र वाघो १ नरो २ ऊदो ३ सांगो ४ प्रियाग ५। प्रथम राव सेखो देइदास। राव सूजैजी बैठां वाघैजी रांम कह्यौ[2]। पछै टीकै[3] राव गांगो[4] बैठा। वीरमदे वाघावत[5] सोझत राजथान कीयो। सेखैजी[6] पीपाड़ राजथांन कीयो। इण तरा राजै रहै छै।

[अथ वारता]

राव गांगोजी जोधपुर राज करै। तरै धरतीरो वेध[7], राजरा अर्णेसा[8] ऊपरां नागोर दोलतियाखांन पातिसाही करै। तरै सेखैजी दोलतियाखांनसूं बतगाव[9] कीयो, जोधपुर सूधी[10] आधी धरती थांरी नै आधी धरती म्हांरी, नै थे मदत करो तो राव गांगानै

---

१ मारवाड़ के राव जोधाजी की दूसरी रानी हाडी जसमादे थी, जिनके तीन पुत्र नींबा, सूजा, सातल हुए। जोधाजी के बाद सूजाजी राव बन कर राज्यगद्दी पर बैठे। २ मर गये। ३ राजगद्दी पर। ४ गांगो जी राव सूजाजी के पौत्र थे। ५ बाघा के पुत्र। ६ ये भी बाघाजी के एक पुत्र थे। ७ वैर। ८ ईर्षा। ९ सलाह की। १० समेत।

सोरो[१] हाइ। तरै इण बातरो पिण डूंगरसी ऊदावत हांकारो भरियो। बीजी बात, आपरै हाथे सांग छःताकड़ीरैल[२] रहै, तिणरो नांव नागण। तिका तेजसी डूंगरस्योतनै दीधी नै कह्यो, तेजा, आ थारै हाथ राखे। तीजी बात, आपरै पहरणरो बगतर 'जलहर' थो, तिको जगनाथनै दीधो नै कह्यो, चोथी वात करड़ी[३] छै, जिणरी आसंग होय तिको हांकारो भरो। तरै तेजसीजी बोलिया, काकाजी, करड़ी बात जैता भतीजनै फुरमावो। जरै सेखैजी कह्यौ, स्यावास जैता भतीज, तो बिना इसी आसंग[४] कुण करै।

अबै सेखोजी कहै छै :—

रजपूत एक म्हारो, जाति में सूंडो, नांम राजो, मोसूं रीसायनै समाणसो[५] छडाणो कीयो[६]। तिको सूराचन्द गयो। तठै पतो चहुवांण राज करै। तिको दसरावो आयां माताजी री पूजा करै, तिणमें माणस[७] एक चढावै। तिको राजो सूंडो तिण दिन जाय पहुतो। आगै कोई चोर पकड़ नै माताजीनै चढ़ावँता। तिको उण दिन चोर कोई नहीं। तरां आदमी चाढणरी बिरियां[८] हुई। रात पोर सवा[९] आई। राजा माताजीरै देवरै पूजारो साज लेनै बैठा छै। चाकरांनै हुकम कीयो छै, आदमी ल्यावो। तरै चाकर दौड़िया। आगै बाजार में आवै तो सूंडै राजैरो बेटो वरष सात में थो, तिको बाजारमें रमै थो। तिणनै चाकरां पकड़ियो। टाबर थो, घोघावण[१०]

---

१ चित्त शान्त हो। २ छः तराजू के वजन का, छः घड़ी तौल का (एक घड़ी कम से कम ५ सेर की गिनी जाती है)। ३ कठोर। ४ सामर्थ्य। ५ स्त्री-पुत्र सहित। ६ छोड़ चला। ७ मनुष्य, नर-बलि। ८ के समय। ९ सवा प्रहर। १० दहाड़ मार कर रोने लगा।

लागो । तरै राजो दोड़ चाकरांरो हाथ पकड़ बोल्यो, क्युं भायां, आजरौ दिन भूखो सिपाई आय बाजार में वासो लीयो छै, म्हांतो थांरा देसरो विगाड़ कीयो सूझै नही नै इण टाबर नै पकड़ियो तिको कासूं कहो छौ। तितरै बाजाररा बांण्यां बोल्या, अरे परदेसी, थारा बेटानै माताजीनै चढावसी। तरै राजौ सूंडौ आपरा बेटानै छाडाय माताजीरै थांनक[१] जाणनै साथे हुवो। आगै राजारै हजूर ले गया, मालुम कीयो। तरै राजा कह्यौ, तयारी करो। इसो राजै सुणीयो। तरै कह्यौ, राजाजी, हूं सूंडो रजपूत छूँ, सेखा सुजावतरै वास वसूं छूं नै म्हारा धणी[२] सूं आंमनो[३] कर दांणो-पाणी[४] अठै लायो छै नै थे बिना खून-तकसीर[५] बिना मोनै मारो छो, पिण ठाकुरे म्हारो धणी छै तिको वैर लीयां बिना रहैलो नही, पछै थांरी खातर में आवै त्युं करो। अबार तो जोर नही, पिण पगपीटो[६] तो सेखोजी करसी। तरै राजा कह्यौ, सेखो सूजावत पहुँचै तिण दिन वेगो मोनै मारिज्यो। इतिरो कहि राजा सूंडानै माताजीनै चाढियो। राजारी रजपूताणी नै मोटियार[७] पोपाड़ अफूटा[८] आया। तरै सेखैजी सूराचन्द ऊपरा दोड़ण[९] री मनसा घणो कीवी, पिण जोग कदेहो मिलियो नही नै अठै सेखोजी कांम आया लोहे भर पड़िया। तरै कह्यौ, जैनसी भतीज, तूं रजपूताई में सखरो[१०] छै, कलियां वरांरो वाहरू[११] छै, तिको औ वैर

---

१ देवालय। २ स्वामी। ३ रीस, क्रोध। ४ अन्नजल। ५ कसूर। ६ पैर पीटना, उद्योग। ७ आदमी। ८ वापिस। ९ आक्रमण करने की। १० ओ-जस्वी, बड़ा। ११ कलिकाल के अथवा पुराने वैर का प्रतिशोध करनेवाला।

पहिर[१] । तरां जैतसी हांकारो भरियो । सेखोजी तो मोखंतर हूवा । तरां संसकार करि नै रावजी सहिर जोधपुर पधारिया नै जैतसी ऊदावत छिपीयै आया (राजथांन छिपीयै[२]) । तिको पांचा मांहे बैर पैहरियो । तिण वैर काढण[३] री घणी फिकर रहै । राते नींद आंख्यां नावैं । ढोलिया ऊपर ढाल गोडां[४] मांहे देनै योगेसर-ज्यूं बैठो रहै । नीसासा चतुर-पोहर मेलै । इसी तरै जैतसी रहै ।

एकै दिन प्रस्तावै[५] सोलंखणीजी जैतसीजीरी मासूं कह्यौ, बहूजी साहिब[६], राजरा बेटानै मोसूं मूंढै बोलियांनै मास च्यार हुवा, न जांणी-जै देही चाक[७] छै कै न छैं; कनां कोई मोटो सोच छै, तिणसूं म्हारी तो आसग[८] पूछणरी नहीं, राज आरोगणनै मांहे पधारै, तरै पूछज्यो । इतरो कहि नै कांम लागा । तितरै जैतसीजो मांहे आरोगण[९] नै पधारिया । तरां बहूजी बोल्या, बेटा जैतसी, थारो डोल तो गाढो[१०] चाक दीसै छै नैं थे राते पोढो नही, सुख न करो छो, तिको कासूं जाणोजै । तरै जैतसीजी नीसासो[११] मेल नै कह्यौ, बहूजी साहिब, काको सेखोजी कांम आया, तरै राजा सूंडारो बैर पहिरियो थो, सो दसराहो पिण दिन २० में आयो नै बोलरो सल्रक[१२] दीसै नहीं

---

१ स्वीकार कर । २ राजस्थान के ठिकाने "छिपियै" में । ३ प्रतिशोध करने । ४ घुटनों में । ५ के समय । ६ राजपूत घरों में माता को बच्चे 'बहूजी सा', 'बहूजी सा'ह', 'बहूजी' इत्यादि सम्बोधन से पुकारते है, बच्चा अपनी दादी और दादे का अनुकरण करके ऐसा कहता है । ७ स्वस्थ । ८ हौसला, हिम्मत । ९ भोजनार्थ । १० खूब तन्दुरुस्त । ११ निश्वास, दुःखभरी दीर्घ स्वास । १२ निबाहने का ढंग ।

छै। भायां में हासो[१] होसी। सूराचंद पिण अलगो[२] नै राजासूं मामलो करणो, तिणसूं फिकर घणी। दीहां[३] आवड़ै[४] नहीं, राते नींद आवै नहीं। इण सोच मांहे सूझै नहीं। इण भांति कहिनै बारै आयो। साथ लेनै तलावरा वड़ां पीपलां हेठै बैठा छै। जांगड़िया ऊलगै[५] छै। अमल गलीजै छै। कसुंभो निकलै छै।

तिण समै रजपूत एक, साख पंवार, नांम राघोदे। तिणरो वास रातां-ढूंढां[६] छै। तिको दोयनड़ी[७] चहुवांणरै परणियो थो। तिको सासरै जातो थो। तिणरै फाटो बागो[८], फाटी पाघ, तूटी-सी पैजार[९], तूटा-सा हथियार। तिणसूं अलगो लाजतो[१०] कैरां[११] मांहे छांनो[१२] नीकलियो। तिको जैतसीजीरै निजरां चढियो। तरां आदमी मेल बुलायो नै पूछियो, कठै वास, कठै जास्यो, नै छांना अलगा टलता कूं निकलो। तरै राघवदे कह्यौ, महाराजा, तूटो[१३] सिपाई सांमांन विना छूं, तिका दोयनड़ी जैतारण[१४] रो गांव छै। तठै ओभूणो[१५] लेणनै जाऊं छूं। तरै जैतसीजी कह्यौ, भली वात। तिण हीज वेला आपरा कड़ा, मोती, सिरपाव दीधा, नै अमलरी गोटी[१६] एक, मिठाईरो करंडियो[१७], दारूरी वतक, पानांसूं भरनै पांनदांन दीधो, और

---

१ हँसी। २ दूर। ३ दिन में। ४ मन का लगना। ५ ढाढी लोग गाते हैं। ६ लाल मिट्टी से पुते हुए टूटे-फूटे कच्चे मकान। ७ गाँव का नाम। ८ अँगरखी। ९ जूते। १० लज्जित होता। ११ करीलों। १२ छिपता हुआ। १३ गरीबी का मारा। १४ मारवाड़ के जैतारण परगने में दोयनड़ी नामक गाँव। १५ गौना, स्त्री को अपने पीहर से लाना। १६ टिकिया। १७ छबड़ी।

सेम्भवालो[१] जोताय आदमी च्यार साथे देनै बिदा कीयो। जांगड़ियांरो[२] जोड़ी साथे दीधी। इतरा देनै बिदा कीयो नै कह्यो, रावजी, सासरै जाईजै तिको इण भांति जाईजै, सासरारा सुख नै सरगापुर[३]रा सुख सरीखा छै, पिण दिन पांच तथा दस रहै तो घणो आघ[४] वधै। इण भांति कहि रुपिया सौ-एक खरचीरा बंधाया सासरै गोठ सारू। असै तरै सूं बिदा करि आप दरबार आया। अबै राववदे सासरै गयो। दिन पांच रह्यौ। आणो[५] करि छिपीयै आयो। तिको जैनसीजीरै वास बसियो।

अबै जैतसीजी सूराचन्द ऊपरै चढणरी तयारी कीधी। चोबीस तो आपरा रजपूत, पचवीसमो राघवदे नै छावीसमा आप चढिया। तिकै आछा सांवण[६] मांग्या। तरै पहिली हिरण मालाला हुवा[७]। तिण ऊपरां रूपां[८] मालाली हुई। तरां पछै गोरहर[९] मालालो हुवो। तरा पछै नाहर[१०] वडाक[११] उवेड़ो[१२] हुवो। तरां सांवणियां[१३] सावण वेध्या[१४]नै कह्यो यां सांवणां सूराचन्दरो राजा तो हाथ चढै नै आपां मांहि कुसल बरतै नै वेढरो मांमलो छै, खित्रीरो धरम छै, पिण सूराचन्दरो राजा तो मारियो। इसी तरै सूं उछाह करता उमंग मांहि घोड़ा धीमा-धीमा खड़ै[१५] छै। तिकै पहिलो महिलांण[१६] बीलाड़ै[१७]

---

१ रथ, सुखपाल। २ ढोलियों की। ३ स्वर्ग-भूमि। ४ मान, आदर। ५ गौना लेकर। ६ शकुन। ७ सामने से गुजरे। ८ एक प्रकार का पक्षी। ९ बन का एक प्रकार का पशु (?) १० बैल, सांड। ११ दीर्घकाय। १२ भेंट हुवा। १३ शकुनियोंने। १४ विश्लेषण किया, अर्थ किया। १५ चलाते हैं। १६ पड़ाव। १७ मारवाड़ का एक प्राचीन नगर।

कीयो। बीजै दिन कूच कीयो। जरां[1] वळे[2] सावण हूवा। तिणमें फूही[3] डावी-थकी बोली। दुहियापूछि[4]रो दिठालो[5] हुवो। रूपां मालाली हुई नै वळे कोड कीयो[6]। आगै नाहर उवेड़ो हूवो। जरै मन विवणो[7] हूवो। सारां सिरदारां सांवण बांद[8] आघा चलाया। तिको कोस दूसरै माथै मैलांण कीयो। तीजै दिन चढिया। तरै सांवण हूवा, सांड धड़ूकियो[9]। आगै देवसादी तठा आगै बांहपूरै डावो राजा सादियो। तारां जैतसीजी सांवण बांद घणा राजी थका चढिया। दिन सातमै मारग जातां मांहे सारा साथनें त्रिस लागी नै सूराचन्दसूं कोस च्यार तथा पांच ऊपरां पोहता। तिसिया[10] पांणी जोवै छै। तरै कोहर[11] एक निजर आयो। तिण ऊपरां लुगाई एक पांणी भरै छै। तिका देखनै जैतसी आपरा साथसूं[12] कोहर आया नै कह्यौ, बाई रांम-रांम, पांणी पावो। तरां आसीस दे डोल भरी नै काढियो। तरै जैतसी जी आपरा घोड़ारै पताकां[13] झारी थी, तिण ऊपरां जळ आरोगणरो रूपैटो[14] थो। तिको भरनै जैतसीजी जळ अरोग्यो। तिणहीज रूपोटास्यूं सर्व साथ जळ आरोगियो। जारां[15] कूवा ऊपरै ऊभी थी, पाणी पावै थी, तिण देखनै कह्यौ, रावतां भायां, साच बोलज्यो, थां मांहे जैतसी ऊदावत किसो ? तारां इसो सांभळ सर्व साथ चमक[16]

---

१ जब। २ फिर। ३ एक जानवर। ४ एक जानवर। ५ दिखलावा, दर्शन। ६ हर्ष किया। ७ चिन्तित हुआ। ८ शकुनों का स्वागत करके। ९ दहाड़। १० तृषित, पियासे, प्यासे। ११ कुँआ। १२ साथियों सहित। १३ जीन का पिछला भाग। १४ प्याला। १५ जब। १६ चमत्कृत होकर।

अचम्भै रह्यौ, जांणियो काई सगत[१] देवी छै । तरै जैतसीजी बोल्या, बाई, म्हे तो राजाजीरा उमराव छां । तारां पिणहारी कह्यौ, हां बीरा, थे कहो तिको सोह[२] साच छै पिण, एक म्हारी बात सांभलो । जैता-रणरै पड़गनै गांव बलाड़ो छै, जठै सीलगो करमाणंद[३] छै, तिणरी हूं बेटीछूं, म्हारो नांव हरकुंवरी छै । तिको मोनै आईदांन खड़िया[४]रा बेटारै परणाई छै । तिको गांव राजावासरो सासरो छै । तिको अठाथी अधकोस ऊपरा छै । ओ कोहर राजावासरो छै । तिणसूं मैं जैतसी ऊदावतरो नांव लीयो छै । नै थे छो इसा असवार, एकै रूपटै जल आरोगियो, तिको यूं हीज इसा इकलालिया[५] होसी, त्यांरो हीज कारज सुधरसी । नै वले एक बात सांभलो । अठै थांहरो ओद्रावो[६] घणो होय रह्यो छै; जैतसी ऊदावत दसराहा ऊपरां राजा सूंडारा वैर मैं सूराचन्द ऊपरां दोड़ करसी, तिणसूं सूराचन्दरा राजारै आज दसराहेरो घणो जतन करै छै । पांच-पांच सै रजपूतांरी चोकी सात बैठी छै । घणो गाढ[७] हुवै छै । बाहिरलां-मांहिलांरी घणी निधै[८] कीजै छै । सो थे उठीनै सूराचन्दरा झाड़ां खेह लगावण[९]नै जावौ छो तो हूं थांरी धरमरी पींपलो[१०] छूं । राज मो आगै आपो परगासो[११],

---

१ शक्ति । २ सभी । ३ चारणों की सीलगा शाखा का कर्मानन्द नामक चारण । ४ खड़िया नामक शाखा का आईदान नामक चारण । ५ एकता, प्रेम का बर्त्ताव करने वाले । ६ आतंक । ७ विचार, खोज, ध्यान । ८ खोज । ९ झाड़ां खेह लगावणनैं (मुहा०)=के मानमर्दन करने को । १० बहिन, 'कूंकूंकन्यां', 'पीपल-कन्या', 'छुआसणी'—ये नाम राजस्थानी में बहिन के वास्ते आते हैं । ११ आत्मत्व प्रकाशित करो ।

ज्यूं हूं पिण थांनै मांहिला भेदरी वात कहिनै सुणाऊं। तारां जैतसीजी जैतारणरी बोलीरी पारिखा करिनै जांण्यो करमाणंद सीलगासूं घणो रांम-रांम छै। तरां जैतसीजी कह्यौ, बाई, हूं जैतो नै आयो तो राजा सूंडारा वैर ऊपरां छूं, पगपोटो-सो करण सारू[१], पिण बाई, थे तो घणो गाढ बतायो, म्हे झूंब[२] किसी विध करां। तरां बाई बोली, आज दसराहो छै, थे म्हारै सासरै आयनै उठै म्हारो नांम पूछता आवज्यो। आगै थांनै म्हारै सासरिया[३] पूछसी, कठै वास, आगै कितरेयक कांम, कुण साख। तरै थे कहिज्यौ, साख तो गोड़ छां, वास तीवीजी[४], म्हारो नांव सरवण, आगै सूराचन्द चाकरीनै जावां छां, म्हानै परवांनो दे बुलाया छै, आज घणा कोसांरा खड़िया आया छां दसरावारा जुहार सारू[५]। अठै आईदांन खड़ियारो बेटो परणियो छै, तिण बाईसूं दोय संदेसा कहिणा छै। तरै म्हारा सासरिया पूछसी, राजरै बहूसूं कठारी सैंध[६]। तरै थे कहिज्यो, म्हारै पीळी आंखांरो धणी[७] सांमदांन आसियो[८] छै। तिणरी भाणेजी छै। तिका नांनेरै[९] आवणेसूं दरबारसूं घणो विवहार छै नै म्हारै पिण भाणेजी छै, नै म्हे बाईनै पूछियो थो, थारो सासरो कठै किसै गांव छै, तारां बाई राजावासिया-दिसां कह्यौ थो। नै वळै अबार म्हांनै राजाजीरो परवाणो आयो। तरै सांमदानरै तो खेतपात[१०] ल्यैण-दैणरो कांम

---

१ निरर्थक उद्योग मात्र करने के लिए। २ आक्रमण। ३ ससुराल वाले। ४ गाँव का नाम। ५ दशहरे के अभिवादन के लिए। ६ पहिचान। ७ पीली आँखोंवाला। ८ आसिया शाखा का सांमदान नामक चारण। ९ ननिहाल में। १० खेती-बेती का काम।

हुवो। तरै म्हांनै सांमदान कह्यो, थे बाईसूं बिगर-मिल्यां[1] जावो मती, क्युं[2] सवागिरो सांमांन[3] मेलियो छै। तिणसूं म्हाँनै आज सूराचंद जावणो नै महाराजसूं मिलणो। तिणसूं अठै घोड़ाँनै सास खवावां[4] नै म्हे पिण घड़ीयेक कड़लोळा[5] करां। पछै आघा चढिस्यां।

इसी भांति समझाय घड़ो भरिनै आप तो घरांनै आई अनै तेजसीजी घड़ी दोय बीती पछै घोड़ांनै धीमा-धीमा खड़तां राजा-वासियै आया नै पूछियो, अठै आईदांन खड़ियैरी कोटड़ी कठीनै छै। तारां चारणांरो साथ असवार तरैदार[6]-सा देखनै हथियार बांधि बांधि नै भेळा हुवा नै पूछियो, कठारा असवार, कठै वास, आगै कठै जास्यो नै आईदांन खड़ियारी नै थांरै कठारी ओळखांण[7]। तरै जैतसी कह्यो, तिवीजी बसां छां, साख गोड़ छै, म्हांरो नांम सरबण छै नै म्हांरो चारण सांमदांन छै, तिणरी भांणेजो सीलगा करमाणंदरी बेटी छै। अठै परणाई छै। जिकणनै क्युं वेस-वागारो मेलियो छै। नै आगै तो राजाजो परवांनो दे बुलाया छै, जिको आज दसराहो छै, जुहार करण सारू हजूर जांणो छै। नै घणी दूर रा खड़िया आया छां, नै बाईसूं मिलणो छै। तारां खड़ियांरा साथ नै परतीत आई। सगांरा नांम-ठांम ठीक पहुता, वेसास्या[8]। तरै खड़ियै आईदांन आय सुभराज कीयो। तरै जैतसीजी घोड़ासूं उतरिया। बांह पसाव[9] करिनै मिलिया। आईदांन साथे होय

१ बिना मिले हुए। २ कुछ। ३ सुहाग-सामग्री। ४ साँस खिलाने को। ५ कमर सीधी करें। ६ तरहदार से, ओजस्वी से। ७ जान पहिचान। ८ विश्वास किया। ९ भुजाओं से आलिंगन करके मिले।

कोटड़ी आया। आयनै कोटड़ी में एक अलायदो[1] नोरो[2] छै, तिणमैं डेरो दिरायो। हथियार छुडाया। मांचा[3] ढालिया। मांहे खबर दीधी। जैतसीजो मांहे जुहार कहाड़िनो[4]। आईदांन मांहे जाय बहूनै. पूछियो, बहू, थे इयां रजपूतांनै ओळखो छो। तारां बहू बोली, बापजी, तिबीजी मुसाल[5] छै, गाँवरो धणी सरवण गोड़ छै। ताहरां निसंदेह वात मानी। जीमणरी ताकीधी[6] कीधी। जरै जीमणनै पंच-धारी लापसी[7] मोकली[8] मंगलीक[9] कीधी। घणा दाळभात वणाया। घणा बेसवारां[10] राँधिया सालणा[11] बणाया। जीमण तयार हूवो। तरां आईदांन जैतसीजी कनै गयो नै कह्यो, पधारीजै, रसोड़ो तयार हूवो छै। तरां जैतसीजी मन माँहे सोच कीधो जे म्हाँनै तो चारण, भाट, बाँमण[12] सवासणी[13]रो खाणरो पण[14] छै, पिण वेल्याँ देख विणजै सो बाणियो[15], नहीं गिंवार। इसो आलोच[16] करिनै मन ऊपरलो गाढ[17] कीयो, पिण मांहे अरोगणनै पांतियै बैस आरोगिया। जीम चळू[18] भरि पांन-बीड़ा आरोगनै नोहरै आया। कड़लोळा

---

१ एकान्तवर्ती। २ नोहरा, वासस्थान। ३ चारपाई। ४ कहलाया। ५ ननिहाल। ६ त्वरा, शीघ्रता। ७ एक प्रकार का मीठा पकवान। ८ खूब। ९ मांगलिक—'लपसी' मांगलिक अवसरों पर राजस्थान के सभी गृहस्थों में पकाई जाती है। १० मसालों से मिश्रित। ११ शाक, चटनी आदि। १२ ब्राह्मण। १३ बहिन, बुआ इत्यादि। १४ इन सब के घर का अन्न खाने का प्रण। १५ वेल्यां······बाणियो (मुहा० =समय देखकर उचित व्यवहार करे वह तो चतुर वणिक अन्यथा···। १६ विचार। १७ ऊपरी मन से घनिष्ठता दिखलाई। १८ आचमन करके।

कोया। नै कह्यो छै,—'जीम्या जद ही जांणियै टुक हेक वासो तांणियै[१]'। इतरै आईदांन आपरा समस्त साथ ले मांहे जीमण गया। पांतियै[२] बैठा। तरै बाई बारै आई। जेतसीजीनैं डेरौ दीयो तठै आई। आसीस देनै धरती बैठी। तरै जैतसीजी बोल्या, बाई, म्हांनै पण छै, बांमण, चारण, भाट, सवासणी—इतरांरो बिस्वो[३] खांणरो पण छै, सो पण भांज्यो थारा दाखीण[४] सूं। इतरो कहि कटारीरी पड़दड़ी[५] मांहि सूं मोहर च्यार काढि छांनी-सी हाथ मांहे दीनी नै कह्यो, बाई, रजपूत छूं तो थारो अवसाण[६] कदेही भूलूं नही, पिण अबै काई सला[७] दो नै कहो, म्हे किसी भांति सूराचन्दसूं झूंब[८] करां। तारां बाई बोली, सूराचन्दरो राजा छै सो तिको लाखेरीरो गोड़ रांमजी तिणरी बेटी परणियो छै। तिकणरो नांम विजैकुँवर छै। तिणनै बरसा-बरस[९] व्यास तथा प्रोहितरै साथे सवागो मेलै छै। तिके असवार पचीस तथा तीसांसूं आवै छै। तिके कदेही दिन आथमियै[१०] आवै छै, कदेही घड़ी च्याररी रात गयां आवै छै। तिके अठै होयनै नोकळै छै। कदेही पोर दोढ रात गयां आवै छै। सु कदेहीक इण गांव में बळ करै छै। बळ[११] करनै दिन आथमतै चढै छै। तिणसूं थे सूराचन्द जास्यो तरै चोकीदार खड़भड़सी[१२]। उवे जांणसी जैतसी ऊदावत

---

१ जीम्या···तांणियै (मुहा०)=भोजन किया हुवा तभी समझना चाहिये जब थोड़ी देर ठहरा जाय। २ पक्ति में। ३ अन्न पदार्थ आदि यत्किंचित्। ४ दाक्षिण्य से, चतुराई से। ५ कोष में। ६ अहसान, उपकार। ७ सलाह। ८ युद्ध। ९ प्रतिवर्ष। १० अस्त होते समय। ११ भोजन। १२ चौंक जावेंगे।

अवसि दसराहै भूंब करसी । इण ऊपरै आजरै दिन घणो जाबतो करै छै । तिणसूं चोकीदार पूछसी तरै थे मैं कह्यौ ज्यूं कहज्यो—लाखेरीरो राजा रांमजो, तिणरो प्रोहित हरदेवजी छै, बाई सारू सवागो ल्याया छै। तिण ऊपरां थांनै मांहे लेसी नै अठै थांरो सबोल[1] होय तो म्हारो फूटरो[2] दीसै। कह्यो छै—

पूणो पीहरियां तणो सासरियै न षमाय।
पीहरड़ै सबलाइयां बेटी दूणी थाय[3] ॥

इणरै वासतै राजसूं मोनै इतरो कहिणो पड़ियो । इतरी वात कहि नांवं-ठांव बताय आप तो घर मांहे गई । अबै आईदांन खड़ियो जीमनै बारै आयो । जैतसीजीसूं बातां करै छै । जारां कह्यो, ज राजसूं म्हे इतरो गाढ[4] पूछणरो कीधो, सो राज सुणियो होसी । अठै आगै बरस च्यार पहिलो रजपूत एक साख सूंडो राठोड़ राजो नांम, तिको आपणै राजा माताजोनै चाढियो । तारां तिण मरतै सेखा सूजावतरो नांम लीयो नै कह्यौ, म्हारै पाछै सेखो सूजावत मारवाड़रो धणी, तिको म्हारो वैर मांगसी । तिणसूं राव गांगाजीरै नै सेखाजीरै लड़ाई हुई। तरै सेखोजी कांम आया । तिण वरियां जीव निकलतां जैतसी ऊदावत छिपोयैवास, तिणनै बैर सूंप्यो छै । तिणरी बात अठै जासूसां आंण कही छै । जैतसी ऊदावत दसराहा बिना कदेही बैरमें दोड़ै नहीं ।

---

१ बोलबाला, सफलता, विजय । २ भला, अच्छा । ३ ससुराल में पीहर के सुख का पौना अंश भी नहीं रहता; पीहर में फलीफूली हुई लड़की, उसी सुख से जीवन में दिनदूनी बढ़ती है । ४ रहस्य ।

तिणसूं सूराचन्दरै गोरवैं[1] चोताळ[2] असैंधा[3] असवार देखै, तरै पूछण रो गाढ घणो करै। तिण ऊपरां राजसूं पूछणरो गाढ कीयो। राज तो मोटा सरदार छो, मोटां राजांरा सगा छो नै राज इण दिन इण मोसर पधारिया तिको राजरो बडौ सो मुजरो सझियो। अबार दिन दस पहिली सुणियो छै, जैतसी ऊदावतरै आवणरी तयारी कीधी छै। तिणसूं राज पधारिया, बडो अवसांण[4] पूगो। जैतसीजी बोल्या, तो म्हांनै सिताब[5] जाय भेळौ हुवणो नै राजाजीरै चोकी पोहरारो जाबतो करिणो।

इतरी वात करतां तीजो पोहर आयो। तारां जैतसी जी नै सारो साथ फेरां-सारां[6] गया; हाथ पग ऊजळा कीया, अमल गळिया, तिके करड़ा अमल[7] कीया। पछै आख्यांरा गोख[8], कानांरा मोर[9] छांटिया, तीखा कुरला कीया, घड़ी एक अमलनै पोढाड़ियो[10]। पछै सिनांन-संपाड़ो करि पाघ बांधी, तुलछीदळ पाघ मांहे मेल्यो, काया श्रीनारायण प्रीत संकल्पी[11]। अबै सारो साथ हथियार बांधै छै। तिको हथियार किसा-एक छै—तरवारियां किसी-एक छै—थेट[12]री नीपनी[13], सीरोही दांणादार[14], दोय आंगळ वाढ[15] फेरियां छकड़ामें वाहै तो एक घाव दोय टूक करै—तिसड़ी तरवारियां

---

१ शहर के पास कोस २/३ की दूरी पर की गोचारण की भूमि या चरागाह। २ चौताल, बड़ा ताल, मैदान, चौगान। ३ अपरिचित। ४ औसान हुवा, कार्य सिद्ध हुवा। ५ जल्दी। ६ घूमने-फिरने। ७ अफीम का गहरा नशा। ८ आँखों के पलक (गवाक्ष)। ९ कानों के पृष्ठ। १० जमाया। ११ श्री भगवान के प्रीत्यर्थ समर्पित की। १२ ठेठ की, खास। १३ उत्पन्न, पैदा हुई। १४ दानेदार किस्म का असली फौलाद, जो सिरोही की तलवारों में लगता था। १५ काट करने पर।

बेवड़ी[१] कड़्यां[२] बांधी । पछै कटारी बांधी । तिका कटारी किसी-एक छै—थेट बूंदीरी नोपनी, कड़कती वीजळी, छेड़ी सांपण[३], घणा सोना में गरगाब[४] कीधी, सकलात[५]रा म्यांन मांहे लपेटी, उचाढा[६] में गरकाब कीधी थकी बांधीजै छै । तरां पछै तरगस कड़ियां लगावै । तिकण में कालबूत[७]री नीसरी, सांठी[८] कांकरै[९] गजवेलरा भळका[१०], सोनैरी नखसी[११], तिके बांधीजै । पछै कबाणां चाक[१२] कीजै छै । तिके किणहेक भांतरी कबांण छै—असल सींगण[१३], सेर-जवांन खांचतां बड़बड़ाट[१४] करै, कायर देख भागै, अढारटांकरै[१५] चिलै लागै, लंकी कबूतररो गरदन ज्यूं बांकी । तिके बांहां में घालीजै छै । तठा पछै ढालां बांधीजै छै । तिके किसी-हेक छै—असल साखी[१६] गैंडारी, घणांरी मारी वधै, मोहर-तोलै[१७] रंग लागै । तरवार, तीर, बरछीरो दाव[१८] लागै नही । इसी ढालां अलीबंध नाखीजै छै । तठा पछै सेल, तिके किसाहीक[१९] छै—सोपारीरै छड़[२०], सार[२१]रै फळ सूधो सवारी झळझळाट करै, बैरियांरा रगतरी भूखी । तिका हाथ में झाल फेरीजै छै । इसी भांति सांमांन करतां दिन घड़ी एक पाछलो आय रह्यो ।

---

१ दुहरी । २ कमर में । ३ छोड़ने पर सर्पिणी की तरह वार करने वाली । ४ जड़ी हुई । ५······(?) । ६······(?) । ७ कलाबुत्तू । ८ मज़बूत, सुन्दर (सुष्ठु) । ९ दानेदार, उभरी हुई । १० दमक । ११ नक्काशी । १२ तैयार । १३ सींग की बनी हुई । १४ टंकार । १५ अट्ठारह टंक भार वाले चिल्ले पर चढ़ती है । १६ साक्षात् असली, बिलकुल असली । १७ मोहर के बराबर तोले जाने वाले अर्थात् बहुमूल्य । १८ प्रहार, घाव । १९ कैसे-एक । २० सुपारी के पेड़ की लकड़ी से बने हुए डंडे वाली । २१ लोहा ।

सूरज रसणां[१] मांहे जाय पोतो। तिण समै श्रीमाताजीनै समरि श्रीनारायणजीनै नमस्कार करि घोड़ांसूं असवार हुवा। तारां बाईसूं मिळिया, मोहर चार सिरपाव, सवागारी[२] दीधी नै सीख मांगी। तारां बाई आसीस दीधी, मनोकामना सिद्ध। इतरो कह्यौ, असवार हुवा। आईदांन खड़ियो पोहचावण सारू साथे हूवो, मारग बतायो। तारां जैतसीजी ऊभा राखिया, सुभराज कीयो। तारां आपरा कंड़ारी जोड़ी, मोती सिर-पाव देनै सीख दीधी। आप आघा खड़िया—

श्लोक

उद्यमं साहसं धीर्ज्यं बलं बुध्य पराक्रमं
षडेते जस्य होवंती तस्य देवापि संकती ?[३]

वारता—

इसी भांति घोड़ा धीमा-धीमा खड़िया, हथियार चलावता जायै छै। राति पोहर एक बितीत हुवां थेट[४] सूराचन्दरै गोरमै पोता। आगै कोस ऊपरै चोकां मारवाड़-सांमो पांचसै सूं[५] बैठा छै। तिके साथ आवतो देख खड़भड़या; हाकां हलवलो[६] पड़ियो। तारां असवार एक आगै दोड़नै कह्यो, साथ मांहिलो[७] छै, लाखेरीसूं प्रोहित हरदेवजी

---

१ पृथ्वी, क्षितिज। २ सौभाग्य-सामग्री। ३ यह श्लोक बोलचाल की भ्रष्ट संस्कृत में लिखा हुवा है—शुद्धरूप ऐसा होगा।

उद्यमं साहसः धैर्य्यं, बलं बुद्धि पराक्रमम्।
षड़ेते यस्य वर्त्तन्ते, तस्य देवापि शंकिता॥

४ ठीक, ठेठ, ऐन। ५ के साथ। ६ हलचल। ७ अन्दरूनी, अपने ही।

आई सारू सवागो ल्याया छै । तारां उठी[१] रा साथमें खबर मेलाई[२] जो लाखेरीथी प्रोहितजी आया छै । मांहिसूं हुकम आयो, प्रोहितजी छै तो आवण द्यो । तारां जैतसीजी आपरा साथसूं घणो सावधांन हुवा थका मांहे गया नै चलाया[३] । तिके चोकी साते हो लांघी । कोठड़ी प्रोल गया । पोलियां नै पूछिया, राजाजी कठीनै[४] छै । तारां पोलियै कह्यो, माताजीरै देवल मांहे छै नै गोड़जी पिण हजूर छै, तिके पूजा में छै, और तो सारी पूजा हुई छै, पिण मांणस चढावणरी तयारी करै छै सो राज सांमला[५] महिलां मांहे डेरा दिरावो । तारां जैतसीजी देवल-सामां चलाया, सूधा देहरै ही गया । घोड़ासूं उतरिया नै दोढी लोप[६] मांहे गया । आगै देखै तो राजाजी उघाड़ै माथै माताजीरै आगै हाला-दोली[७] करै छै । चोर एक बांध्यो छै । तिणनै चाढण[८] री तयारी कीधी छै । तिण समै जाय जैतसीजी राजानै वकारियो[९] । कह्यो, राजा सूराचन्द, थांहसूं[१०] सूंडा राजारो बैर मांगूं, तोमें रजपूती होय तिका करि । तारां[११] सूराचन्दरा राजासूं तो काइं हुवो नहीं । राघोदे आघा बधतो थको[१२] सेलरी राजारै घमोड़ी[१३] । तिका पैलै[१४] पार नीकली । तरै गोड़[१५] दीठो, दीखै तो

---

१ उधर के । २ पहुंचाई, भिजवाई । ३ चल पड़ने की आज्ञा दी । ४ किधर । ५ सामने वाले । ६ उलाँघ कर । ७ स्तुति-प्रार्थना । ८ बलिदान करने की । ९ प्रचारा । १० तुझसे । ११ तब । १२ आघो बधतो थको= आगे बढ़ते हुए । १३ मारी । १४ दूसरी ओर । १५ गौड़ी-रानी ।

नोटः—"वकारियो कह्यो, राजा" से आगे के ४/५ शब्द हस्तलिखित पोथी में अंतिम पंक्ति हैं और कटे हुए हैं ।

बैरायत[१]। जरै सूराचन्दरा राजारै हाथरो सेल देहरैरै खूँणै[२] ऊभो थो, तिको गोड़ हाथ में लेनै राघवदेरै घमोड़ी। तिको राघवदे पँवार कांम आयो। तिण समै चोर बांध्यो थो, तिण जैतसीजीनै कह्यो, माहराज, मोनै बांध्यो छै, तिको म्हारा हाथ छोडो ज्यूं मोसूं चाकरी हुवै तिका करूं। तरां चोर बांध्यो थो, तिको छोडियो नै तरवार हाथ में दीधी। उण चोर गोला[३], माहिलवाड़ियां[४] रो साथ सारो बाढियो[५] नै जैतसीजी कोट मांहिला[६] रजपूत चोकी बैठा था त्यां ऊपरां पाड़िया[७]। मांहिलो साथ हाकियो-वाकियो[८] हुवो, रंग मांहे भंग कीयो। इणां तो लोह बजायो। आदमी सौ-दोढ मारिया। तरां चोर कनासूं मड़ांरा[९] माथा मँगाय माताजी आगै बाबर-कोट[१०] करायो नै जैतसीजी कह्यो, माता, धाई[११] कै न धाई, जो धाई न होय तो वळ चढाऊं। तरै माताजी प्रश्न[१२] होय नै कह्यो, इतरा दिन आदमी मांगती, अबै आजसूं हीज धाई नै थारै साथ सहाई छूं। इसो बर दीयो।

अबै सूराचन्द मांहे रोळ[१३] पड़ी, कूकवो[१४] हूवो, चोकीवाळां नै खबर दोड़ी, वेगा आय भेळा[१५] हुवो, जैतसी आयो—छांनो नायो, राजासूं धोह[१६] हुवो। इसो सांभळ नै सगळै साथ दोड़ मची[१७]। बाहिरला-माहिंलारी कांई खबर पड़ै नहीं। आपचक[१८] लागी। तिण

१ बैर-प्रतिशोध लेनेवाला है। २ कोने में। ३ सेवक-चाकर। ४ राज्य-महल में रहने वाले नौकर-चाकर। ५ काटा। ६ अन्दर वाले। ७ पड़े। ८ हक्के बक्के। ९ मृतकों के। १० टीबा, ढेर। ११ तृप्त हुई। १२ प्रसन्न। १३ शोरगुल। १४ कूकना, रोना। १५ एकत्रित। १६ धोखा। १७ हड़बड़ी मची। १८ घबराहट।

समै जैतसी ऊदावत आपरा साथसूँ पाछा मारवाड़नै चलाया। तिके दिन चार में छिपीयै आया। जरै आगै बधाईदार आयो। तरै गांव मांहिसूं ढोल नगारा ले बधायनै मांहे लीया। कलियां वैरांरो वाहरू, इसो विरुद[1] लाधो।

इसी भांति जैतसी ऊदावत सेखा सूजावत कनांसं वैर ओढ[2] नै कीयो। सम्बत १८६८ मांहे जैतसीजी हुवा।

॥ इति श्री जैतसो ऊदावतरी बात संपूर्णम् ॥

---

१ प्रशस्ति, यश प्राप्त किया। २ लेकर।

पाबूजीरी बात

—+*+—

धाँधलजी महेवे रहै सू अै उठेसूँ छोड-अर अठे पाटणरे तलाव आय उतरिया। अठे तलाव ऊपर अपछरा उतरै। ताहराँ धाँधलजीरो डेरो थकाँ[1] अपछरावाँ ऊतरी। ताहराँ धाँधल अपछरावाँ देखनै एके अपछरानूँ आपड़[2] राखी। ताहराँ अपछरा बोली। कही—बडा रजपूत, तैं बुरी कीवी, मने अपछराने अपड़नो न हुतो। तठे धाँधलजी कही, जू तू म्हारे घर-वास रह[3]। तद अपछरा बोली। कही—जे थाँ म्हारो पीछो सँभालियो[4] तो हूँ थाँसूँ परी जाईस। ताहराँ धाँधल कही—थारो पीछो कोई सँभालाँ नहीं। अै बोल करनै रह्या अर उठै पाटणसूँ चालिया सू अठे कोलू आया।

अठे आगे पमो घोरंधार राज करै। ताहराँ धाँधल पमे पास तो न गयो अर कोलू आय गाडा छोडिया। तठे रहताँ अपछरारे पेटरा दोय टाबर हुवा। अेक बेटी तैरो नाँव सोना, अर अेक बेटो तैरो नाँव पाबू। तद अपछरारो मोहल[5] एकायँत[6] कीयो। उठे अपछरा रहै। धाँधलजी अपछरारी वारीरे दिन आप जावै। तद अेके दिन धाँधलजी विचारी

---

१ होते हुए। २ पकड़। मेरी स्त्री हो। ४ आगेपीछे की खबर की। ५ महल। ६ एकांत में।

जू देखाँ, अपछरा कही हती जू म्हारो पीछो सँभाले मती, सू आज तो जाय देखीस, देखाँ कासूँ करै छै। तद पाछले पोहररो धाँधल अपछरारे मोहल गयो। ना देखे आगे अपछरा सिंघणी हुई छै अर पाबू म्हहजे सिंघणीनूँ चूँघे छै। तद धाँधल दोठो। इतरे अपछरा फेर आपरो रूप कीयो, पाबू मिनख हुवा। तद धाँधल मोहल भीतर गयो। ताहराँ अपछरा कही—राज, म्हाँ थाँसूँ कवल[1] कियो हंतो जू जेही दिन पीछो सँभालियो तेही दिन हूँ थाँसूँ परी जाईस, सू आज दिन थाँ पीछो सँभालियो छै सू म्हे जावाँ छाँ। इबरी कहने अपछरा उडी सू पाधरी अकास चढ गई। धाँधल देखतो हीज रह्यो।

तद वाँसे[2] धाँधल पाबूने उठे हीज राखियो छै। धाय पास रहै। अर छोकरी[3] हती सू राखी। तठे धाँधलजी तो कितरे दिने देवलोक हुवा। अर पाबू अर बूडो दोय बेटा। तद बूडो टीके बैठो। लोक-चाकर सरब[4] बूडेरा हुवा। पाबूजी पासे कोई नै[5] रह्यो।

तठे धाँधलरी दोय बेटी। तैमें पेमा तो जींदराव खीचीने परणाई अर सोना देवड़े सिरोहीरे धणीने परणाई।

तठे बूडो तो राज करै अर पाबू बरस पाँचेक माँहे, पण करा-मातीक[6]। सू एके साँढ चढियो सिकार ले आवै। तद इये भाँत रहताँ सात थोरी—चाँदियो, देवियो, खाबू, पेमलो, खलमल, खाँधारो, बासल—औ सात भाई। सू औ आने बाघेलेरे चाकर। सू आनेरे देस माँहे काल। तद थोरियाँ एक जिनावर विणासियो[7]। तद आनेरे

[1] कौल, प्रतिज्ञा। [2] पीछे। [3] दासी। [4] सर्व, सब। [5] नहीं। [6] करामातवाला। [7] विनाश किया, मारा।

कवरनूँ खबर गई जु[१] थोरियाँ जिनावर मारियो छै। ताहराँ[२] कंवर आयनै थोरियाँने हटकिया[३]। तठे[४] थोरियाँ अर कँवररे खाजाजंगी[५] हुई। तेसूँ कँवर काम आयो। ताहराँ अै थोरी कंवरनूँ मार गाडा जोड़ने टावर लेनै नाठा। तठे आनेनूँ खवर गई जू थोरी कँवरनूं मार अर नाठा आवै छै। तठे लारांसूँ आनो चढियो। तद आनो आय पहूँतो[६]। ताहराँ अै लड़िया। तेसूँ थोरियाँरो बाप काम आयो। आनो इहाँरो बाप मारनै पाछो विरियो। तद अै थोरी जैरे ही वास[७] जावै तिका ही राखै नहीं। कहै—आनै वाघेलेसूँ पोहचाँ[८] नहीं। तद चालिया-चालिया पमेरे आया। ताहराँ पमे थोरियाँने राखिया। तद कामदाराँ-परधानाँ कही—राज, अै थोरी आनेरे बेटेनूँ मार-अर आया छै, जो थाँ राखिया तो आनेसूँ बेर पड़सी, आपाँ पोहचाँ नहीं। तद पमे पण आनेसूँ डरते थोरियाँने विदा दीवी। कही—धाँधल[९] जावो, थाँने राखसी। ताहराँ अै थोरी गाडा लेनै बूडेजी पासे आया। आय बूडेजीसूँ मुजरो कियो। कही—राज, म्हाँने राखो तो म्हे रहाँ। ताहराँ बूडे तो नीछो[१०] दियो। कही—राज, म्हारे तो दरकार काई[११] नहीं, पाबू भाईरे चाकर न छै, ओ थाँनै राखसी।

तद अै गाडा छोडने पाबूजीरे महल आया। कह्यो—पाबूजी कठे? ताहराँ धाय कही जू पाबूजी सिकार गया छै। तद अै पण वाँसे[१२] सिकार गया। आगे पाबूजी हिरणनूँ तीर साँधियो

---

१ कि। २ तब। ३ डाँटा। ४ उसके बाद। ५ लड़ाई। ६ पहुँचा। ७ गाँव। ८ पार नहीं पा सकते। ९ धाँधल का देश या राज्य। १० जबाब। ११ कोई। १२ पीछे-पीछे।

छै । साँढ बैठी छै । इतरै थोरियाँ पूछियो । कही—रे छोकरा, पाबूजी कठै छै ? तद पाबूजी बोलिया । कही—पाबूजी आप सिकार खेलणनूँ पधारिया छै । तठै थोरी पण उठै ऊभा । तद थोरियाँ आपस में समस्या बोली[1] । कहियो—छोकरो ऊभो छै, जो आपाँ साँढ लेवाँ तो आजरी आपणी वळ[2] कराँ । इतरी थोरियाँ विचारी । तठै पाबूजी तो कारणीक मरद[3], पाबूजी इयाँरै जीवरी लखी । तद पाबूजी बोलिया । कही—रे आ साँढ थे ले जावो, थाँरै डेरै आजरी वळ करो, पाबूजीनूँ हूँ कह लेइस । तद थोरिया साँढ लेनै डेरै गया । तठै इयाँ साँढ मारनै डेरै वळ कीवी । अर पाबूजी हिरण लेनै डेरै आया ।

तठै पाछले पोहररा थोरी पाबूजीरै मुजरै आया । आगे पाबूजी बठा छै । तठै थोरियाँ विचारियो । कही—रे ओ तो ओ हीज, जै[4] आपाँनै साँढ दई हती । तद थोरियाँ धायनै पूछी । कही—पाबूजी कठै ? ताहराँ धाय कह्यो—रे वीरा, अै बैठा, तूँ ओळखै नहीं ? तद इयाँ पाबूजीसूँ सिलाम कीवी । तद पाबूजी चाँदेनै कही—रे चांदा, म्हारी साँढ तनै भळाई हंती सू कठै ? ताहराँ चाँदै कही—राज, थाँ म्हाँनै दीवी वळ माँहे, सू म्हाँ खाधी छै । ताहराँ पाबूजी कही—रे अैसी किसी हुई छै सू साँढ खाधी, वळनूँ सीधो दिरासाँ, पण साँढ किसी भाँत खाधी छै ? ताहराँ पाबूजी कही—साँढ थाँ खाधी काई नहीं । ताहराँ चाँदै कही—राज, खाधी, सु हमे[5] कठैसूँ ले आवाँ ?

---

१ समस्या बोली=सलाह की । २ मांसयुक्त भोजन । ३ कारण-वश मनुष्य बने हुए, अवतारी, लीला-पुरुष । ४ जिसने । ५ अब ।

ताहराँ पाबूजी साथे माणस[1] देनै[2] कही—घरे जाय खबर तो करो। ताहराँ थोरो माणसरे साथे हुयनै डेरे जाय देखै तो कासूँ[3] ? साँढ बैठी छै, जीवै छै। तद थोरियाँ आपरी बैराँने[4] पूछी। कही—हे, आ साँढ अठे के[5] बाँधी ? ताहराँ बैराँ पण[6] कही—राज, आगे तो नहीं थीं, पण हणे होज[7] म्हारे निजर आई। ताहराँ थोरियाँ विचारी जू ओ बडो रजपूत करामातीक छै, आपाँने ओ राखसी। तद अै साँढ लियाँ-लियाँ पाबूजी पासे आया। तद पाबूजी कही—रे, साँढ थे कहता हता जू खाधी ! तद थोरियाँ कही—राज समधा[8], म्हाँनूँ राज परचो[9] देखायो। ताहराँ पाबूजी कही—तो थे रहसो ? ताहराँ थोरियाँ कही—राज, म्हे रहसाँ। तद थोरो पाबूजी पासे चाकर रह्या। अै इये भाँत रहे छै।

पछे बूडेजीरी बेटी केल्हण गोगेजी चवाणनूँ परणाई। तद केई[10] गायाँ सँकळपियाँ, केई कँई[11] सँकळपियो, अर पाबूजी कही जू बाई, हूँ तने दोदे सूमरेरी साँढाँरा बरग[12] आँण देईस[13]। तद गोगोजी हँसिया। कही—ओ दोदो सूमरो छोटो रावण कहीजै, तैरी साँढाँ किसी भाँत ले आसी ? तठे पाबूजी बोलिया। कही—साँढाँ आण देईस। गोगाजी तो परणीजनै हलाणो[14] ले गाँव गया छै अर वाँसे पाबूजी हरिये थोरोनूँ कही—रे हरिया, दोदेरी साँढाँ हेर आवज्ये, साँढाँ बाईनूँ आण देवाँ, बाईने सासरिया हँससी, कहसी काको साँढाँ कद आण देसी।

---

१ आदमी (नौकर)। २ देकर। ३ क्या। ४ स्त्रियों को। ५ किसने। ६ भी। ७ अभी। ८ सामर्थ्यवान्। ९ चमत्कार। १० किसीने। ११ कुछ। १२ झुंड। १३ लादूँगा। १४ दहेज आदि।

तठे हरियो तो सांढांरो हेरू[1] गयो छै अर चाँदियो रोज पाबूजीनै कहै जू आनै बाघेलैरे माथे म्हारो वैर छै, मनै वैर दिरावो।

तठे एके दिन सिरोहीमें देवड़ेरी वाघेली राणी अर सोना महलायन में बैठा चौपड़ खेलै छै। सू बाघेलीरे बाप गहणो दियो हंतो, तैसूं बाघेली गहणेरी बडाई करै, आपणो गहणो बखाणै, अर सोनल रूपरी फूटरी सू आपरो रूप बखाणै। तठे अै आपसमें बोलियाँ[2]। ताहरां बाघेली सोनानूँ मेहणो दियो। कही—थारो भाई थोरियाँसूँ भेलो जीमै। तठे सोनल रीस कीवी। तैसूँ देवड़े पण कही जू थे रीस क्यों करी, साच कहे छै जू पाबू थोरियाँसूँ भेलो तो बैसै छै। तद सोना कही—थे कहो सू खरी, पण जिसा भाईरे थोरी छै तिसा थांरे अमराव[3] ही कोई नहीं। इतरी सोना कही। तैसूँ देवड़ो रीस कर उठियो। तठे ताजणो[4] देवड़ेरे हाथ हंतो। तैसूँ देवड़ै तीन ताजणा मारया। तद सोना कागद लिखनै पाबूजीनूँ मेल्हियो। लिखियो जू इमै भाँत बाघेलीरे कहे देवड़े मोनूँ चोट वाही। कागद आदमी ले जाय नै पाबूजीरे हाथ दियो। तद पाबूजी कागद वाँचने चाँदेनूँ बुलाय अर कही जू तयारी करो, आपाँ देवड़े ऊपर जासाँ, बाईरो कागद आयो छै।

तठे अै सात असवार थोरी नै[5] अेक असवार पाबूजी। पाबूजीरे चढण कालवी[6]। काछेला चारण समुंद्र खेप भरण[7] गया हंता। सु

---

१ खोज में। २ बोलचाल हो गई, बात-ही-बात में छेड़छाड़ हो गई। ३ उमराव, सरदार। ४ चाबुक। ५ और। ६ घोड़ी का नाम। ७ व्यापार के लिए सामान।

इहाँरे एक घोड़ी। जद अै समुद्ररे काँठै[1] आय उतरिया, तद रातरो जल-घोड़ो नीसरनै घोड़ीनूँ लागो। तैरी कालवी घोड़ी नीपनी[2]। सु आ घोड़ी काछेली पासाँ जींदराव खीची माँगी। तद चारणाँ न दीवी। अर बूडे माँगी तद पण न दीवी। काछेलाँ घोड़ी पाबूजीनूँ दीवी। तद कही—राज, थाँने घोड़ी देवाँ छाँ सू थे म्हाँरी परबर-दास्त[3] घणी करज्यो। तद पाबूजी कही—थाँनूँ काम पड़ियाँ जूती पहराँ[4] नहीं। ओ बोल कर लीवो। तैसूँ जींदराव अर बूडे दोनाँ ही चारणासूँ रीस कीवी, दुख पायो।

तठे पाबूजी असवार हुयनै बूडेरे डेरे आया। बूडेसूँ मुजरो कियो। तठे पाबूजी भीतर भाभीनूँ मुजरो कहायो। ताहराँ छोकरी भीतर जायनै डोड-गहेलड़ीनूँ कही जू बाईजी राज, पाबूजी थाँनूँ जुहार कहावै छै। ताहराँ डोड-गहेली छोकरीनूँ कही जू देवरने कह जू थाँने बाईजी भीतर बुलावै छै। ताहराँ पाबूजी भीतर गया। तद डोड-गहेली पाबूजीनूँ कही जू पाबू, थाँने चारण पासे घोड़ी लेणी न हुती, थाँरे भाई माँगी हंती तैने लेणी नहीं। ताहराँ पाबूजी कही जू जो भाभेजीरे[5] लेणी छै तो आ हाजर छै। ताहराँ भोजाई कही जू हमे काहणनूँ[6] लेवै, पण तूँ घोड़ीरो कासूँ[7] करीस, खेत वाह अर बैठो खा, पण दीसै छै घोड़ी लीवी छै तो धाड़ा करसी। ताहराँ पाबूजी कही जू जो बूडेजीरे घोड़ी लेणी छै तो लेवो अर जो थे

---

१ किनारे। २ जनमी। ३ पालना, रक्षा। ४ जूती तक पहनने की ढील न करें, शीघ्रातिशीघ्र आवेंगे। ५ बड़े भाई के। ६ किस लिए। ७ क्या।

मेहणा बोलो छो तो म्हे राजपूत, घोड़ा म्हाँने ही चाहीजै छै, अर धाड़ेरो कहो छो तो डीडवाणेरा[1] होज धाड़ा ले आवाँ।

इतरो पाबूजी कही तद डोड-गहेली बोली। कही—जासो तो सही पण म्हारा भाई असा न छै जिके थाँने धाड़ो ले आवण देवै, का तो पोहच अर राखै अर जो जाणै जू बहनोईरो भाई छै तो मारै नहीं तो अव्वल आँसुवे रोवावै। तठे पाबूजी कही—म्हे राठोड़ छाँ, डोडां कदे राठोड़ कोई मारियो सुणियो नहीं।

डीडवाणै डोड राज करता हंता। तठे बूडोजी परणिया हंता। तठे पाबूजी भोजाईसूँ वाद करनै उठे डेरै आया। तठे चाँदेनूँ बुलायनै पाबूजी कही जू चाँदा, आपाँ देवड़े पछे जासाँ पण पहली डीडवाणेरो धाड़ो ले-अर आसाँ। तद अै चढिया। पाबूजी असवार नै थोरी साते भाई था। तठे अै चालिया सु डीडवाणेरे निजीक आया। ताहराँ पाबूजी तो अेक थल माथे तरगस ऊँधो नाखनै, आप घोड़ी बाँधनै, गोडी[2] खाय बैठा अर थोरियाँ साँढाँरा वग लिया। तठे थोरियाँ जायनै सात-सात आपड़नै चढ़-अर साँढाँ चलाई। तद रैबारियाँ जायनै डोडाँ आगे पुकारियो। कही—साँढाँ लीवी, वाहर[3] चढो। तद डोड पूछी। कहो—रे कितरा एक असवार छै। ताहराँ इयाँ कही—राज, सात प्यादा थोरी चोरटा छै, तिके लियाँ जावै छै। ताहराँ वाहर चढिया। तठे थोरी तो साँढाँ लेनै आवा निसरिया अर वाँसेसूँ वाहररा असवार जे थल पाबूजी बैठा हंता तै थलरी बराबर

---

१ डीडवाणे में डोड राजपूतों का राज्य था, डोड गहेलड़ी वहीं की राजकुमारी थी। २ घुटने के बल। ३ रक्षार्थ।

आया । तठे पाबूजी तीर-कारी[1] कीवी । तेसूँ असवार दसेक मार लिया । तठे पाबूजी चाँदेनूँ अर बीभा थोरियाँनूँ साद[2] कियो । कही—पाछा आवो । ताहराँ थोरी पाछा विरिया । तठे घोड़ा लेनै थोरी चढिया[3] । इतरे बाँसे सिरदार दोड़ आय पहूँता । ताहराँ इयाँ पावूजीरे साथरा थोरियाँ डोडाँनूँ आपड़ लिया । ताहराँ बाकीरी फौज पाछी विरी । तद पाबूजी कही—रे साँढाँ छोड देवो, आपाँने इयाँ डोडाँसूँ काम हंतो सू ले हालो । ताहराँ अै डोडाँने लेनै रातूँ-रात चालिया सु कोलू आया । तठे डोडाँनूँ तो कोटड़ी माँहे राखिया अर आप मोहलमें जाय पोढिया ।

तद परभात हुवो । ताहराँ पाबूजी जागिया । तद पाबूजी धायनूँ कही—धायजी, थे डोड-गहेलीनूँ जाय अठे ले आवो, कहो जू पाबूजी कह्यो छै जू थे भाभीजी आयनै म्हारो मालियो देखो, मैं नवो करायो छै । तठे धाय तो बूडेरी बहूने लेण गई अर पावूजी थोरियाँनूँ कही—थे डोडाँने पाचसूँ मुस्कियाँ बाँधनै चूँटिया तोड़ रोवाय झरोखे नीचे आय ऊभो । इतरे धायजी डोड-गहेलीनूँ कही—राज, थाँने पाबूजी बुलावै, कहै छै जू म्हाँ नवो मालियो करायो छै सु थे पधारनै देखो । ताहराँ डोड-गहेली बहली बैसनै पाबूरे महल आई । आगे पाबूजी बैठा हंता सू उठ मुजरो कियो । कही—भाभीजी राज, झरोखे नीचे ख्याल[4] छै, देखो । ताहराँ आ झरोखे नीचे देखण लागी । नीचे जैसो ही देखियो तैसो थोरियाँ डोडाँरे चूँटी तोड़ी । तैसूँ

---

१ तीरंदाजी । २ शब्द किया, पुकारा । ३ थोरियों के पास अभी तक चढ़ने को घोड़े नहीं थे । ४ तमाशा, खेल ।

डोड रोवण लागा। तद डोड-गहेली देखै तो कासूँ ? भाई नीचे बाँध्या छै अर रोवै छै। ताहराँ डोड-गहेली कही—पाबू, ओ कासूँ सूल[1] छै, मैं तो तोनूँ हँसती वात कही हती। तद पाबूजी कही—भाभीजी, हूँ पण हँसतो ले आयो छूँ, पण रजपूतानूँ वैण बोलजै नहीं, महणा कपूतानूँ कहीजै। तद डोड-गहेली कही—भली कीवी, हमैं छोडो। ताहराँ पाबूजी डोडाँनूँ भोजाईनूँ दिया अर आप डेरै बैठा। तठे डोड-गहेली भायाँनूँ ले जाय दिन च्यार राखनै पछै घराँरी सीख दीवी छै।

अर पाबूजी देवड़े ऊपर चढण लागा। तठे पाबूजी असवार हुवण लागा। इतरै हरियो साँढाँ हेरनै आयो। पाबूजीनूँ कही-राज, दोदेरी साँढाँ आपाँरै हाथ न आवै, दोदो जोरावल छै, दोदेरो राज बडो राज छै, बीच पंचनद[2] बहै छै, ओ दूजो रावण बाजै छै, आपाँ उठे जावणरा नहीं। इतरी हरिये थोरी आपनै कही छै, आपां उठे जावणरा नहीं। तठे पाबूजी कही-तो भले घिरता समझ लेसाँ, हणे तो देवड़े ऊपर हालो। तठे अै आठ असवार नै एक हरियो प्यादो नवै आदमी सिरोही ऊपर चढिया। तठे बीच आनो बाघेलो रहतो। आनेरो बडो राज हंतो, पण अै तो करामातीक। तठे बीच जाँवताँ साँढे कही-राज, ओ तो अठे रहै छै, अर म्हारो बैर छै। ताहराँ अै चालिया। आनेरै सहर आया। आनेरो बाग हंतो जू जिको बाग आय उतरतो तेनूँ जीवतो जॉवन देतो नहीं। तठे आनेनूँ माली जायनै कह्यो जू राज, केई

1 बर्ताव। 2 संभवतः सिन्धुनदीसे तात्पर्य है।

असवार आय उतरिया छै, बाग सरब खोस खायो। तठे आनो इतरी सुणनै असवारी करनै, चढियो। तठे पाबूजी अर आनेरे लड़ाई हुई। तेसूं आनेरो सरब साथ मरांणो। आनो पण काम आयो। तद पाबूजी आनेनूं मारनै आनेरे कँवरनूं कही-तने पण मारीस। तठे आनेरे बेटे आपरी मारो गहणो पाबूजीरी निजर कियो अर पाबूजी कँवरनूं टीके बैसाणियो। आनेरे बेटेनूं टीके बैसाणनै आप आय देवड़े ऊपर गया।

रातूँ-रात जायनै सिरोही घेरी। तठे देवड़ेनूँ पाबूजी कही जू देवड़ा, तूँ जाणीस जू पाबूजी मैंसूँ मिलण आयो छै, सू हूँ मिलण नायो[1] छूँ, तैं बाईने चाबखा वाह्या छै तेरे वास्तां आयो छूँ। तठे देवड़ो पण असवार सरब भेला करनै पाबूजीरे साह्मो[2] आयो। तठे लड़ाई हुई। तद पाबूजी चाँदेनूँ कही जू चाँदा, देवड़ो आपाँ मारो मती, आपड़[3] लेवो। तद औ लड़िया। तेसूँ देवड़ेरो साथ सरब मरांणो अर देवड़ानूँ आपड़ आ कही—देवड़ेरे खाँडो·········मारो मती। नाहर पाबूजीरी बहन बहली बैसनै भाई पासे आय कही—भाई, देवड़ानूँ मने काँचलीरो[4] दे। तठे पाबूजी देवड़ानूं बहननूं काँचलीरो करनै छोड, आनेरी बेटी बाघेलीरो मारो गहणो बहननूँ देनै कही-बाई, ओ गहणो तने दायजेरो छै। तठे सालो-बहनोई आपसमें रस हुवा[5] छै। ओ पाबूजीनूँ लेनै सिरोही गढ माँहि गयो छै। तठे

---

१ नहीं आयाहूँ। २ सामने। ३ पकड़। ४ बहिन को बड़ा भाई काँचली (अंगिया) पुरष्कारस्वरूप में देता है, ऐसी कौटम्बिक प्रथा है। ५ मित्र होगये।

सोनलने पाबूजी साथ लेनै बाघेलांनूं बाघ सुणावणने[1] गया छै। तठे सोना बाघेलीनूं कही जू बाईजी, थे लोकचार करो, थांरे आने बाघेले बाघनूं म्हारो भाई मार आयो छै—धोरियांरे वैर मांहे। तठे बाघेली बापरो गोडो वळायो छै[2]।

पाबूजी अठै कहनरे भात करनै जीम-अर आप उठेसूं चढियो। तद चांदेनूं कही, थांरे बापरो पण वैर लियो छै अर बाईरो पण वैण पालियो छै, हमे[3] चालो दोदेरी सांढां ले आणनै भतीजीनूं देवां, उवेनूं पण सासरिया महणा[4] देसी। उठेसूं चढिया सू अै दोदेरे चालिया। हरियेनूं आगे कियो। तद बीच मिरजो खान रहै। तठे इयेरे पण एक बाग। तेमें उतर सकै कोई नहीं। जिको उतरै तेनूं मारै। इयेरो पण बडो राज। ताहरां पाबूजी चालिया। मिरजे खानरो सहर-बाग आयो। तठे बागमें जायनै बाग सौ[5] तोड़ खुवार[6] कियो। ताहरां[7] माळी उठे जायनै पुकारियो छै जू असवार अेक उतरियो छै सू बाग सरब विधूंसियो[8] छै। तद इये पूछी। कही-किसो एक रजपूत छै। तद माळी कही—राज, हिंदू छै, डावी पाघ बांधै छै जी, इयेसूं आपां पोंहचां नहीं[9], जे आनो बाघेलो मारियो तेसूं आपां पोंहच सकां नहीं, साहमो रसाल[10] ले हालो। तठे मियो घोड़ा, कपड़ो, मेवो लेनै साहमो बाग आयनै

---

१ अशुभ समाचारों को सुनाना राजस्थानी में 'सुणावणो' कहलाता है। २ अंतिम संस्कार किया है। ३ अब। ४ ताने, व्यंग्य। ५ समस्त, सब। ६ ख्वार, बरबाद। ७ तब। ८ विध्वंस किया है। ९ बराबरी कर सकते नहीं। १० सन्धिसूचक हरा फल, डाली, सौगात।

पाबूजीसूँ मिळियो। तठै पाबूजी इयेसूँ राजी हुवा। तद बीजो तो सरब पाछो दियो नै अेक घोड़ो राखियो। ते ऊपर हरियेनूँ चाढियो।

अठै इयेसूँ मेल करनै पाबूजी आप चढ़िया छै तिके पंचनदी[1] ऊपर आय ऊभा। ताहराँ पाबूजी चाँदेनूँ कही— चाँदा, पाणीरो थाग[2] ले, देखाँ कितरोहेक ऊँडो छै। ताहराँ चाँदिये थाग लियो, नदी वाँसाँरे डाँभ[3] वहै। तद चाँदे कही—राज, पार हुई सकाँ नहीं, अर अठै डेरो करो, कदे उले[4] पार साँढाँ आसी तद आपाँ लेसाँ। इये भाँत बात करताँ पाबूजी माथा फेरी तेसूँ पेले[5] पार जाय ऊभा रह्या। ताहराँ चाँदे फेर परचो[6] पायो। ताहराँ चाँदेनूँ कही— चाँदा, साँढाँरा वरग[7] घेरो। तद थोरियाँ जायनै साँढाँ सरब लेनै टोळेनूँ बाँध लियो। अै साँढाँ लेनै पाबूजी पासे आया। तठै पाबूजी टोळै रेबारी हतो तेने छोडनै, बाँडे[8] ऊँट चाढनै कही— रे तूँ दादेनूँ कही जू साँढाँरा टोळा राठोड़ लियाँ जावै छै, जो वेर सकै तो वेगो आये। तठै रेबारी तो जाय पुकारियो। कही—रावण सिळामत, साँढाँरा वरग सरब लिया। ताहराँ दोदे कही—रे भाँग खाधी छै नहीं, इसो आज कुग छै जो दोदे सूमरे[9] सूँ वैर करे, साँढाँ

---

१ पंजाब। २ गहराई, थाह। ३ बाँसोंभर डूब जाने वाली थाह (गहराई)। ४ इस तरफ़, इधर वाले। ५ परले, उधरवाले। ६ पराक्रम का प्रमाण। ७ वर्ग, झुंड। ८ अंग-भंग वाला ऊँट, शैतान ऊँट। ९ सूमरा अथवा ऊमर-सूमरा भाटी जातिके क्षत्रियों की एक शाखा का नाम है जो ले पश्चिमी राजस्थान में रहते थे।

लेवै ? ताहराँ रेबारी कही—राज, इतरी कही छै जू राठोड़ साँढाँ लियाँ छै, जो आय सकै तो वेगो आये।

इतरो साँभळनै दोदो सूमरो साथ भेळो करनै चढियो छै। अर पाबूजी साँढाँ लेनै मेल्हनै धाकळी[1] सू पाँणी माँहे दीवी। तेसूँ साँढाँ जैसो आड[2] फिरै ते भाँवरी तिरनै साथ पार नदी करी। करनै आघा चालिया। तठे दोदे मिरजे खानरे सहर आयने मिरजेनूँ कही जू राठोड़ साँढाँ लीवी, तूँ पण वाहर आव। मिरजो दोदेरो चाकर हुँतो। तद मिरजो पण चढ दोदेरे साह्मो आयो। ताहराँ मिरजे कही जू दीवान, थे आघा मती जाओ, साँढाँ पाबू राठोड़ लियाँ छै, आपाँ घोड़ा मारियाँ पोंहचाँ नहीं, पाछा हालो, नै आनो बाघेलो मारियो छै सू थाँसूँ पण मरै नहीं। तठे मिरजे इतरी कही तेसूँ दोदो पाछो फिरियो।

दोदो तो फिरनै घरे आयो। अर पाबूजी साँढाँ लियाँ सोढाँरे सहर माँहे निसरिया। तठे कोटरे नीचेकर निसरिया। तठे सोढी झरोखे माँहे बैठी पाबूजीनूँ दीठी। तद सोढी मानूँ कही जू पछे हो मने परणासो तो पाबूजी जावै छै, मने परणावो। ताहराँ इये आपरे माँटीनूँ[3] कहाई। तठे सोढे आदमीनूँ वाँसे[4] मेल्हियो नैं पाबूजीनूँ कहायो—राज, म्हारे परणीजनै पधारो। ताहराँ पाबूजी कही जू आज तो धाड़ो[5] लियाँ जावाँ छाँ, पाछे आय परणीजसाँ। ताहराँ सोढे आदमी साथे नाळेर मेल्हियो[6]। ताहराँ आदमी टीको काढ,

---

१ हाँक लगाई। २ मगरमच्छ। ३ पतिको। ४ पीछे। ५ धाड़, डाका। ६ नरियल भेजा, सगाई करते समय राजस्थान में लड़की की ओरसे लड़के को नारियल भेजे जाने की प्रथा है।

नाळेर पाबूजीरे हाथ देनै सगाई कर पाछा फिरिया अर पाबूजो पावरी[1] साँढाँ लेनै ददरेवे[2] आया।

आगे गोगोजी विराजै ।ताहराँ केल्हण घर माँहे बैठी हंती। गोगोजी केल्हणनूँ रोज हँसता। कहता जू काको दोदेरी साँढाँ कद आण देसी। इतरें हरियो आयो। आयनै कही जू केल्हणबाई घरे छै नहीं ? तठे केल्हण कह्यो-हवै[3] वीरा, छाँ। ताहराँ हरिये कही—बाई, पाबूजी पधारिया छै, दोदेरा वरग तने सँकळपिया[4] हंता सू ले आया छै, सँभाळ लेवो। तठे गोगोजी बाहर आया नै पाबूजोसूँ मिलिया। तठे साँढाँ सरब सँभाळ भतीजीनूँ दीवी अर कही—एके बाँडे ऊँट विना बीजा वरग सरब छै सु ले। तठे सरब गोगेजो सँभाई[5]। पण गोगेजीरे मन माहे विश्वास रह्यो जू दोदो आज बडो जोरवळ छै, तैरी साँढाँ केसूँ लीवी जावै छै, कठे बीजी जायगाँसूँ ले आयो छै। तठे गोगेजी पाबूजीनूँ भगत कीवो नै विचारी जू पाबूरी करामात पण देखीस !

जीमनै बैठा ताहराँ गोगेजी पाबूजीनूँ कही जू पाबूजी, म्हारे केईरो नाँव लियो वैर छै सू जो थे अठे रहो तो म्हारो वैर लेवो। ताहराँ पाबूजी कही—बोहत भलाँ, रहसाँ। ताहराँ रात पड़ी। तठे गोगेजी पाबूजीनूँ कही—आपाँ परभाते सौण[6] लेसाँ, जो सौण हुवा तो वैरनै चढसाँ। ताहराँ पाबूजी कही—सौण किसो लेसो ? आपाँ

---

१ सीधी। २ राजस्थान के एक गाँवका नाम। अब यह बीकानेर राज्य में है। ३ हाँ। ४ संकल्प करके दिया था। ५ ग्रहण को, संभाल ली। ६ शकुन।

जठे चढसाँ जठे फते कर आसाँ। तो पण गोगेजी कही—आपरी धरती माँहे सौग हीज छै। तठे रात तो अै पोढ रह्या छै अर परभात हुवाँ गोगोजी पाबूजी बेऊँ[1] घोड़े चढ़नै सौणनूँ निसरिया। तठै सौग तो कोई हुवो नहीं। ताहराँ अेक रूख नीचे जाय जाजम बिछायनै सुता अर घोड़ो-घोड़ी दोनाँने कायजाँ[2] ढाळनै चरणनूँ छोडिया छै। इतरै ठंडो वखत हुवो। ताहराँ अै जागिया। तठै गोगोजी उठिया। कही—घोड़ा ले आवाँ, पछै आपाँ घरे जावाँ। तद पाबूजी कही—राज बैसो, हूँ ले आईस। ताहराँ गोगेजी कही—थे छोटा तोई सुसरा छो, पण बडा छो, थे बैसो, हूँ ले आईस। ताहराँ पाबूजी कही—आ तो साँची, पण थे बूढा छो अर म्हे मोटियार[3] छाँ। ताहराँ पाबूजी घोड़े-घोड़ीरी खबर करणने गया। आगे जाय देखै तो कासूँ ? नाग दोय छै तिके खड़ा-खड़ा घोड़ो-घोड़ी चारै छै अर दोयाँ नागाँरो घोड़ाँरै पगाँ माँहे दावणो छै। तठे पाबूजी देखनै विचारी जू आ मने गोगेजी करामात दिखाळी छै। तठे पाबूजी पाछा आया। पाछा आयनै गोगेजीनूँ कही—राज मने तो घोड़ा दीसै नहीं, कठे निसरिया, मने तो मिळिया नहीं। ताहराँ पाबूजी जाजम बैठा अर गोगोजी बरछी लेनै खबर करणनूँ गया। आगे देखै तो कासूँ ? पाणीरो बडो हवद छै, भरियो छै, तेमें एक नाव छै, तेमें घोड़ा दोनूँ छै, सू नावमें तिरै छै, हवद ऊँडो बहोत। गोगेजी विचारी जू आ मने पाबूजी करामात देखाळी छै। आ जाणनै

---

१ दोनों। २ जानवरों के पैरों में बंधन अथवा अर्गला डालना, जिससे वे भागकर न जा सकें। ३ जवान।

गोगोजी पाछा पाबूजी पासे आया। ताहराँ पाबूजी कही—राज, घोड़ा लाधा ? ताहराँ गोगेजी कही—राज, म्हारे मन माँहे संदेह थो सू हमें मिटियो, मैं थाँने लाधा[१]। तद पाबूजी गोगोजी भेला हुयनै घोड़ाँनूं गया। आगे देखै तो कासूँ ? ऊभा छूटा चरै छै। तद अै घोड़ा लेनै, लगामाँ देनै, असवार हुयनै गोगेजीरी कोटड़ी ले आया छै। पाबूजीनूँ भगत[२] जिमायनै विदा दीवी छै। पाबूजी अर थोरी असवार हुयनै साँढाँ देनै कोलू आया छै। तठे बरस अेक पाबूजी कोलू रह्या।

पाबूजीनें बरस बारह हुवा। ताहराँ सोढे सावो[३] लिख मेल्हियो। कही—जान कर वेगा आवज्यो। तठे पाबूजी जानरी तयारी कीवी। जोंदराव खीचो बुलायो, गोगेजीनूँ बुलाया अर बूडेजी जानरी तयारी कीवो अर देवड़ो न आयो। तठे जान चढी। ताहराँ चाँदेरी बेटीरो पण सावो हंतो। तद सातगाँव बेटी दीवी हंती तेरी सात जानाँ आवो। ताहराँ चाँदेनूँ पाबूजी कही जू चाँदा, थारे पण विवाह छै, तूँ अठे रह। तद चाँदियो तो डेरे रह्यो अर देवियो साथे हुवो। ताहराँ जानियाँ बीच जाँवताँ जाननूं वडा कारा[४] सौण हुवा। ताहराँ लोकाँ सौणियाँ[५] कही—राज, सौण भला न हुवा छै, पाछा फिरो, बीजे सावे परणीजसाँ। ताहराँ पाबूजी कही—थे पाछा फिरो, हूँ तो कोई फिरूँ नहीं, लोक कहसे जू पाबूजीरी तेल चढी रही। ताहराँ पाबूजी तो आघा चढ़िया। साथे अेक देवियो हुवो अर बीजा सरब पाछा फिरिया।

---

१ आपका भेद पालिया। २ भक्तिपूर्वक। ३ विवाह-लग्न। ४ खराब। ५ शकुन बूझनेवालोंने।

ताहरां पाबूजी घड़ी दोय रात गयां धाट[1] जाय पहूँता। उठे सोढां भली भांतसूँ विवाह कियो। ताहरां पाबूजी फेरा लेनै हालण लागा। ताहरां सोढां कही—राज, म्हांमें चूक किसी जू जीमो नहीं नै कोई भगत लेवो नहीं सु किसे वासते, दिन दोय च्यार रहज्यो, जान दायजो देनै विदा करां। ताहरा पाबूजी कही जू म्हांने सौण लावा[2] हुवा छै, तेहूँ रातेरात घरां जाईस, पाछे मासेकनूँ[3] भगत दायजो ले जाईस। ताहरां सोढां कही—तो चढो। तद पाबूजी चढिया। तठे सोढी पण कही—हूँ पण नहीं रहूँ, साथे हुईस। तठे सोढीजी पण वहली वैस साथे हुवा छै। ताहरां वहली वांसे[4] राखी। पाबूजी सोढीनूँ आपरे वांसे कालवी ऊपर चढाय लीवी। उठेरा चालिया रातों-रात कालू आया। पाबूजी अर सोढी जाय मोहलमें पोढिया छै अर देवो आपरे घरे जाय सूतो छै।

तठे जानी जींदराव आयो हंतो। तठे पाबूजी बूडेजी जींदरावनूं सीख दीवी। ताहरां जींदराव जांवते मारगमें काछेलांरो धण सरब लियो। ताहरां गोरी[5] आय पुकारियो। कही—जींदराव खीची धण[6] सरब लियां जावै छै। तद विरोड़ी चारण आयनै बूडे आगे कूकी। कही—बूडा, बाहर धाय, खीची गायां घेरियां। ताहरां बूडे कही—हे चारण, म्हारी आंख दूखै छै, आज तो कोई चढां नहीं। ताहरां चारण कूकती-कूकती पाबूजीरे महल आयनै चांदेनूं कही—चांदा, पाबूजी नहीं अर खीची धण सरब लियो, तूँ चढ। ताहरां चांदे कही—हे कूक ना,

---

१ सोढोंका देश। २ खराब। ३ एक महीने के लगभग। ४ पीछे। ५ गाय बैल चरानेवाला। ६ गाय-बैल।

पाबूजी आया छै। इतरे पाबूजी पण झरोखे माँहे गलो काढियो। कही—कासूँ छै ? ताहराँ चाँदे कही—विरोड़ी चारणरो धण जींदराव लियो अर बूडो चढै नहीं। ताहराँ पाबूजी घोड़ी जीण करायनै चढिया नै आहेड़ी[१] पण सरब चढिया। सातबीस जानी नै सात चाँदेरा भाई अै पाबूजी साथे चढिया। तिके जाय पहूँता। उठे लड़ाई हुई। ताहराँ खीचीरो लोक सरब घिरियो। पाबूजी धण सरब लेनै चालिया अर धणनै गूजत्रे कोहर[२] चाढियो। पण पाणी नीसरै नहीं। तद विरोड़ी कह्यो—बडा राठोड़, ज्यों फेरिया[३] त्यों पाय[४]। तठे वांसे कोहर माँहे घातनै पाबूजी आप वारो लेवण लागा। तठे अेक वारो काढियो। तेसं काठा कूँडी खेली अेके वारेसूँ सरब भरिया। धण सरब पायो ।

अर वाँसे वीरोड़ीरी छोटी बहन बूडेनूँ जाय पुकारी। कही—बूडा, हमे तू कितरा-एक काल जोवीस, पाबूजो तो काम आया। इतरी इये कही तेसूँ बूडेनूँ छोह[५] छूटो। बूडोजी असवारी कर चढिया। तेसूँ पहूँता ताहराँ जींदरावनूँ कही—रे खीची, ऊभो रह, पाबू मारने कठे जाईस। तद खीचो सोस[६] कियो। कही—राज, पाबूजी तो धण ले पाछा फिरिया, थे लड़ो मती जाँणे। पण बूडो मानै नहीं। तठे लड़ाई हुई। बूडोजी काम आया। ताहराँ खीची आपरे लोकाँनूँ कही जू आज आपाँ पाबू मारियो नहीं तो पछे आपाँने नहीं छोडेलो, मारो। ताहराँ, जींदराव कुडल[७] पण पँमे घोरंधारनूँ कह्यो जू अै

---

१ थोरी, जो चाँदे के यहाँ बराती होकर आये थे। २ गूजवा नामका कुँआ। ३ लौटा लाया (गाय-बैलोंको)। ४ पिला। ५ प्रेम। ६ आवाज की। ७ पँमेकी राजधानी।

राठोड़ छै, थारी धरती दबाँवता-दबाँवता सरब राज लेसी अर जो
आवै तो आज़ दाव छै, पाबूनूँ माराँ। ताहराँ पँमो पण चढियो। अै
भेळा हुयनै पावूजी ऊपर आया। तठे पावूजी गायाँ पायनै छोडी छै।
इतरै खेह दीठी। कही—रे चाँदा, आ खेह केरी ? तद चाँदे कही—
राज, खीची आयो। अर पहलड़ी लड़ाई माँहे चाँदे खोचीनूँ तरवार
वाही हंती। तद पावूजी तरवार आपड़ लीवी। कही—मारो मती, बाई
राँड हुसी। तद चाँदे कही—राज, आप तरवार आपड़ी सू बुरो
कीवी, अै छोडै (?) छै, मराया भला। पण पावूजी मारण दिया नहीं।
तठे फोज आई। तद चाँदे कही—राज, जो मारियो हुवै होत तो पाप
कटियो हुत, हरामखोर आयो। तठे पाबूजी तो वुहा[1] ने लड़ाई कीवी।
बडो रिठ वाजियो[2]। तेसूँ पाबूजी काम आया। सात-बीस अहेड़ी ।५
हंता सु सरब काम आया। खीची तो लड़ाई करनै आपरे घरे गयो
अर पावूजीरे सोढी सती हुई। अर डोड-गहेलोरे सात मासरो गरभ
सू आ सती हुई तद लोकाँ कही—थारे पेट माँहे बेटो छै सू सती
मती हुवो। ताहराँ डोडगहेली छुरी लेनै पेट झरड़ने[3] माँहे बेटो
काढियो अर धायनूँ दियो। कही—इयेनूँ पाळे, ओ बडो देवनीक[4]
मरद हुसी। तठे नाँव झरड़ो दियो। पछे झरड़ो बरस बारहरो
हुवो। ताहराँ झरड़े काके-बापरो बैर लियो, जींदराव खीचीनूँ
मारियो। तिको झरड़ो अजे जीवै छै। तेनूँ गोरखनाथजी मिलिया।

---

१ चले। २ घोर युद्ध हुआ। ३ काटकर। ४ देव-तुल्य।

टिप्पणियाँ

(१) जगदेव पँवार

(१) प्राचीन काल में परमार जाति के राजपूत बड़े प्रतापी हुए। सिंध से लेकर मालवा तक का विस्तृत देश उनके अधिकार में था। उनके बड़े भारी प्रताप और महान् साम्राज्य के कारण ही यह कहावत प्रसिद्ध हो गई कि—

पिरथी-तणा पँवार, पिरथी परमाराँ-तणी।
एक उजीणी धार, बीजो आबू बैसणो ॥

उस समय परमारों के दो राज्य थे। पश्चिमी अर्थात् राजस्थानी राज्य की राजधानी आबू में थी और पूर्वी अर्थात् मालवीय राज्य की राजधानी धारा।

(२) राजस्थान के प्राचीन इतिहास-ग्रंथों, ख्यातों और कविपरंपरा में अणहिलवाड़ पाटण के राजा सिद्धराज सोलंकी जयसिंह और जगदेव पँवार की बात प्रसिद्ध है। नैणसी की राजस्थान की ख्यात में सोलंकियों की वंशावली दी हुई है। वहाँ लिखा है कि सं० १०१७ विक्रमी में मूलराज सोलंकी ने चावड़ों से पाटण का राज्य छीन लिया और ४५ वर्ष तक राज्य किया। इसके बाद ४० वर्ष तक उसके दो उत्तराधिकारियों ने राज्य को अपने बाहुबल से खूब बढ़ाया। सिद्धराज जयसिंह देव विक्रमी संवत् ११५० में

पाट बैठा और उसने ४६ वर्ष तक राज्य किया। इसने अपने समय में रुद्रमाल का प्रसिद्ध शिवालय बनाया था जिसको बादशाह अलाउद्दीन ने गुजरात-विध्वंस के समय नष्टभ्रष्ट कर दिया था। सरस्वती नदी के तट पर माधव का प्राचीन मंदिर और सिद्धपुर नामक छोटा सा नगर भी इसी राजा ने बनवाया था। लगभग २२५ वर्षों तक सोलंकियों का राज्य पाटण में रहा। बाद में सं० १२५३ में वहाँ सोलंकियों की दूसरी प्रबल शाखा बघेलों का अधिकार हो गया। सोलंकियों के राज्य का विवरण ख्यात में इस प्रकार दिया है—

कबित्त—

मूलू पैंतालीस, बरस दस कियो चन्दगिर।
बलभ अढाई बरस, साढ बारह द्रोणागिर ॥
भीम बरस चालीस, बरस चालीस करणगह।
एक घाट पंचास, राज जयसिंह बरणाह ॥
कुंवरपाल तीस त्रिहुं, आगल बरस तीन मुलराजंह।
बिलसी भीम सत्तर सहरस वरस साठ अगलीक चह ॥

(३) जगदेव पँवार के सम्बन्ध में नैणसी की ख्यात में परमारों की एक वंशावली में लिखा है कि उदैबंध (चंद) अथवा उदयादित्य नामक पँवार के दो पुत्र रणधवल और जयदेव (जगदेव) हुए जिनमें रणधवल तो राजधानी (धार) में राज्य करता रहा और जगदेव ने सिद्धराव सोलंकी की चाकरी ग्रहण की और कंकाली (देवी) को अपना मस्तक दिया।

(४) उदयादित्य प्रसिद्ध दानवीर भोज के उत्तराधिकारी जयसिंह के पीछे मालवे का अधीश्वर हुआ। उसका शासनकाल शिलालेखों से १११६ से ११४३ वि० सं० तक ठहरता है। संभव है उसने और आगे तक राज्य किया हो। शिलालेखों के अनुसार उसके दो पुत्र थे—(१) लक्ष्मदेव, और (२) नरवर्मा। जगदेव का उल्लेख नहीं मिलता। उदयादित्य प्रतापी राजा हुआ है। उसका माँडू के सुलतान के अधीन होने की कथा भाटों की कल्पनामात्र है। जगदेव का उल्लेख मालव-नरेश अर्जुन वर्मा ने अपना पूर्वज कहकर किया है जिससे उसका ऐतिहासिक व्यक्ति होना सिद्ध है। भाटों में और जनता में जगदेव का नाम बहुत प्रसिद्ध है।

---

(२) जगमाल मालावत

(१) मारवाड़ राज्य को स्थापित करने वाले राठौड़ राव सीहोजी की आठवीं पीढ़ी में राव सलखोजी बड़े प्रतापी क्षत्रिय हुए। उनके पुत्र राव मल्लीनाथजी हुए जो अपनी वीरता और धर्मनिष्ठा के कारण राजस्थान में देवता की तरह पूजे जाते हैं। जोधपुर राज्य की प्राचीन राजधानी मंडोर में राव मल्लीनाथजी की विशाल मूर्ति अब भी विद्यमान है। इन्हीं राव मल्लीनाथजी के पीछे जोधपुर राज्य का दक्षिण-पश्चिमी भूभाग 'मालाणी' कहलाया जो मारवाड़ राज्य की सीमा पर स्थित है और जिसका मुख्य नगर बाड़मेर है।

राव मल्लीनाथजी के सुपुत्र कुँवर जगमालजी अपने पिता की तरह ही इतिहास-प्रख्यात वीर हुए। दोनों पिता-पुत्र मारवाड़ के महेवा नगर में रहते थे। मल्लीनाथजी तो वृद्ध हो गये, अतएव सात्विकी वृत्ति धारण कर रात-दिन ईश-भजन में समय बिताते थे। राज्य का कार्य कुँवर जगमालजी करते थे।

(२) राजस्थान में चैत्रशुक्ला ३ को गणगौर का त्यौहार बड़े समारोह के साथ मनाया जाता है। दशहरे के बाद यही त्यौहार राजस्थान का सर्वप्रधान सार्वजनिक त्यौहार कहा जा सकता है। तृतीया को सन्ध्या के समय भिन्न २ हिन्दू जातियों के स्त्री-पुरुष ईश्वर (महादेव) और गौरी (गणगौर) की प्रतिमाएँ सजा कर गाते बजाते हुए जलूस निकालते हैं। जलाशय पर जलूस समाप्त होता है जहाँ पर पूजा होती है। "अनुमान से यह त्यौहार पार्वती के गौने (मुकलावा) का सूचक है। मुद्राराक्षस आदि संस्कृत नाटकों में "बसंतोत्सव" के नाम से जो उत्सव वर्णित है, शायद उसी ने गणगौर का रूप धारण कर लिया हो।"

स्त्रियाँ और लड़कियाँ इस त्यौहार को विशेष निष्ठा के साथ लगभग १५ दिन तक मनाती हैं। लड़कियों की भक्ति में आदर्श वर-प्राप्ति की कामना रहती है और स्त्रियों की पूजा में सौभाग्य-रक्षा की।

(३) राव जगमालजी और गींदोली की बात के अतिरिक्त ऐसी ही एक दूसरी बात राजस्थान में प्रसिद्ध है, जिसका स्मारक "गणगौर"

त्यौहार के अवसर पर गाया जाने वाला 'घुड़लो' गीत है। कहते हैं कि सं० १५४८ विक्रमी चैत्र कृ० १ शुक्रवार के दिन मारवाड़ के गाँव कोसाणाँ (पीपाड़ के पास) की बहुत सी क्षत्रिय कन्याएँ बस्ती से बाहर तालाब पर गौरी की पूजा के लिए गई थीं। उनमें से १४० को अजमेर का मुसलमान सूबेदार मल्लूखाँ पकड़ ले गया। यह खबर पाते ही मारवाड़ के राव सातलजी राठौड़ ने चढ़ाई की और उन कन्याओं को लौटा लाये। साथ में मुसलमान अमीर उमरावों की कई कन्याएँ भी ले आए जिनमें एक घुड़लाखाँ सेनापति की कन्या भी थी। इस युद्ध में घुड़लाखां का सिर रावजी के सेनापति सारंगजी खीची के तीरों से बिंध गया था। इस छिदे हुए सिर को खीची सरदार ने प्रतिकार के रूप में उन तीजणियों को भेंट किया। आज भी इस घटना के स्मारक-स्वरूप गणगौर त्यौहार के दिनों में सन्ध्या के समय कुमारी कन्याएँ अनेक छिद्रवाला घड़ा सिर पर लेकर और उसमें दीपक रखकर कुटुम्बियों के घरों में घूमती हैं। चैत्र शु० ३ को इस घुड़ले का सिर तलवार से छेदा जाता है, क्योंकि इसी दिन घुड़लाखाँ का शिरच्छेद हुआ था।

---

(३) वीरमदे सोनगरा

'नवकोटी' मारवाड़ के राज्य में जालोर का परगना प्राचीन काल से वीरभूमि की तरह राजस्थान में प्रतिष्ठित रहा है।

दुर्ग के पूर्व की ओर एक मील पर अर्बली पर्वतमाला से

निकलने वाली शूकरी नामक बरसाती नदी बहती है। जालोर परगने के अन्तर्गत इस नदी द्वारा सींची हुई ३६० गाँवों की उर्वरा भूमि पड़ती है। पहले यह किला पँवार राजपूतों के अधिकार में था। परन्तु १३ वीं शताब्दि में चौहान राव कीर्त्तिपाल ने उसे पँवारों से छीन लिया। तबसे कई शताब्दियों तक चौहानों की एक शाखा सोनगरा—राजपूतों के अधिकार में यह दुर्ग रहा। इन्हीं सोनगरों के राव कान्हड़दे के राजत्वकाल में दिल्ली के बादशाह अलाउद्दीन ने इस किले पर आक्रमण किया। अलाउद्दीन जैसे प्रबल शत्रु के विरुद्ध चौहानों ने १२ वर्ष तक इसकी वीरता के साथ रक्षा की और अन्त में आपस के वैमनस्य के कारण यह किला विक्रम संवत १३६८ वैसाख शु० ५ बुधवार के दिन अलाउद्दीन के हाथ में चला गया।

विक्रमी सं० १३३९ से १३५४ के बीच में जालोर में रावल सामन्तसिंह राज्य करता था। उसके कान्हड़दे और मालदेव नामक दो पुत्र हुए। पिता के बाद ज्येष्ठ कुमार कान्हड़दे जालोर की राजगद्दी पर बैठा। इसी कान्हड़दे का परम प्रतापी वीरपुत्र वीरमदे हुआ।

---

(४) कहवाट सरवहियो

(१) सरवहिया या संखरिया सोलंकी राजपूतों की १६ शाखाओं में से शाखा है (टाड)।

---

(६) जैतसी ऊदावत

जोधपुर राज्य के बसाने वाले राव जोधाजी राठोड़ राजस्थान में बड़े पराक्रमी राजा हो गये हैं। इनका जन्म सं० १४८४ के वैसाख में हुआ। संवत् १५१५ में इन्होंने जोधपुर नगर बसाया। राव जोधाजी की ७ रानियों से १५ पुत्र उत्पन्न हुए, जिनमें सातलजी अपने पिता की मृत्यु होने पर संवत् १५४५ में जोधपुर की गद्दी पर बैठे। तीन वर्ष के बाद इनकी मृत्यु होगई और राव सूजाजी सिंहासनासीन हुए। इन्होंने २५ वर्ष तक राज्य किया।

राव जोधाजी के पुत्रों में सभी बड़े उत्साही और पराक्रमी वीर हुए। इन्होंने मारवाड़ राज्य को खूब विस्तृत किया और अच्छे २ नगर बसाये। कुँवर दूदाजी ने प्रसिद्ध नगर मेड़ता बसाया। इन्हींके वंशधर राठोड़ वीर जयमलने बड़ी वीरता के साथ चित्तौड़ की अकबर के विरुद्ध रक्षा की थी। कुँवर करमसिंह और रायपाल ने खींवसर, सांवतसिंह ने डाबरा और भारमल ने बिलाड़ा बसाया। कुँवर बीकाजी ने बीकानेर राज्य की स्थापना की। कुँवर बीदाजी ने बीदासर बसाया।

इस कहानी के प्रारम्भिक भाग में प्रस्तावना के रूप में राव सूजाजी से पहले के मारवाड़ के राजाओं का वृत्तान्त दिया हुआ है जो कहानी में विशेष महत्व नहीं रखता, परन्तु ऐतिहासिक विज्ञप्ति की तरह पाठकों को रुचिकर हो सकता है। अतएव उस अंश को यहां पर अविकल उद्धृत कर देते हैं—

राव जोधा भार्या हुळणी[1] जांमणादे—पुत्र, जोगा १, भारमल २, कुम्भकन ३। जोधा भार्या दूजी हाडी जसमादे—पुत्र,नींबा १, सूजा २, सातल ३। तीजी राव जोधा भार्या भटियांणी—पुत्र, वरगवीर १, करमसी २, रायपाळ ३। चौथी रांणी राव जोधा भार्या सांखली नवरंगदे—पुत्र, वोका १, वीदा २। पांचमी राव जोधा भार्या देवड़ी सूरवदे—पुत्र, सावतसो १। राव जोधा भार्या छठी वाघेली मंणलदे पुत्र—सिवराज १। राव जोधा भार्या सातमी सोनगरी चांपां—पुत्र, दूदा १, वरसिंघ २। सू राव जोधैजीरै पाट सूजोजी बैठा। संवत् १५४५ राव जोधोजो देवगत हुवा नै सूजोजी पाट बैठा। संवत् १५१६ चैत्र सुदि ६। वरसिंह १ दूदैजी मेड़तो वसायो। दूदैजी मेड़तै राज कीयो। पछै संवत् १५२२ मिती वैसाख सुदि ३ दूदासर खोदायो। करमसी रायपाळ खीवसर बसायो। सिवराज धूनाड़ो वसायो। राव जोधा पुत्र सांवतसी तिण डांबरो वसायो। भारमल वोलाड़ो बसायो। संवत् १५४५ मिती वैसाख सुदि १ शनिवार बीकैजी बीकांनेर वसाई। संवत् १५४५ वीकै कोटरी नींव दोनी। पहिली जांगलू गांव रेहता, पछै संवत् १५६८ वीदै बीदासर वसायो। सातल वरस त्र पछै जोधाजी रै टीकै बैठो। पछै सूजोजी पाट बैठा। तिण सातल नडो धण लै छै। संबत् १५१७ चैत्र मांहे राव जोधैजी वरसिंह दूदाजी नै देसोटो दीधो। तिको देवड़ीजी समेता गांव गगडांणारै तळाव सेभवाळो छुडायो। तिण समै गगडांणा मांहे जैतमल रावत ऊदो रहै।

---

१ गुहिलोत वंशीय क्षत्रियों की शाखा 'हुल'—उसकी कन्या।

तिण वरसिंघ दूदानै घणो मोहतव[1] दे कोटड़ी मांहे राखिया। तिण समै लखमण गहलोत कूचौरे राज करै। तिणरै ऐराकण घोड़ियां तिको वरसी नै नरसिंघ सींधल जैतारण राज करै। तरै लखमण गहलोत, वछेरा २ ऐराकी नरसिंघ खींदा सिंधलरै निजर मेलिया। तिके गगडांणा माहे होयनै जांता था। तरै रावत ऊदै घोड़ा खोस[2] लीया। तिण ऊपरै लखमण गैहलोत नै खींदो सींधल चाढनै आया। तरै बडी लडाई हुई। खींदो लखमण न्हाठा[3]। वरसिंघ दूदैजी हाथ दिखाया। पछै भैंसियां गगडांणारी ऊछरी[4] थी तिके वेभपारी भंगी[5] भाडां[6] मांहे पाणी देख बैस रही। तरै सारो साथ खोभणनै[7] चढिया। तरै वरसिंघजी दूदोजी घोड़ै चढिया वेभपै लाधी[8]। तिके लेनै गगडांणै गया। तरै बरसिंघजी दूदैजी रावत ऊदानै कह्यो जे थे कहो तो वेभपा तीरै[9] बास अेक बसीनै बसावां। तरै जोसी तेड़नै मोहरत पूछिया नै कह्यो, अठै आगै मांनधातारो बसायो मेड़तो छै, तिको मोटो सहिर थो। एकै दिन अतीतनै[10] संतायो तिणरा सरापसूं ऊजड़ हुवो छै, तिको वसावो। तिको कनै गांव धोलेराव छै। तठै मेरां[11] रो थांणो रहे छै। तिको मेरांनै दाल[12] देतानै रहता। इतरो सुण मेरांसूं वतगाव कीनो,-थांरै पाडोस राव जोधाजीरा बेटा वरसिंघ नै दूदो थांहरो पाड़ोस वसै छै, थांहरा कांमनै तयार छै। मेरां परमांण कीनों। मेडतो बसियो। पछै मेर जोरावर देखिनै वेसासिया[13]।

---

१ मुहब्बत, इज्जत। २ छीन लिया। ३ भाग गये। ४ निकली थी। ५ बीहड़, घनी। ६ दरख्तों। ७ खोजने। ८ पाई। ९ के पास। १० योगी को। ११ मारवाड़ की एक जंगली जाति। १२ कर, दातव्य। १३ विश्वास किया।

होती है । ग्रामीण जनता में इनके प्रति अनन्य भक्ति देखी जाती है ।

(२) पाबूजी के प्राणोत्सर्ग की कथा एक दूसरे रूप में भी प्रचलित है जो नीचे दी जाती है—

[पाबूजीरी वात बीजी]

नागोर कने जायल नाँव गाँव । उठे जींदराव खीची राज करै । देवलजी नाँव चारणी पण उठै रहै । सु अै देवलजी देवीरो अवतार । देवलजी पासे कालमी नाँव अेक घोड़ी हंती सू घणी फूटरी[1] अर देवनीक[2] हंती । सारी बात समझती । सु आ घोड़ी देवलजी पासे जींदराव माँगी पण देवलजी नै दीवी । तेसूँ जींदराव घणी रीस कीवी । दुख पायो । और देवलजीनूँ सँतावण लागो । ताहराँ देवलजी आपरा धण सरब लेयनै पाबूजी पासे आय रह्या । तठे पाबूजी घोड़ीरो वखाण घणो साँभलियो । देवलजी पासे घोड़ी माँगी । ताहराँ देवलजी कही—घोड़ी थाँनूँ देसाँ पण म्हारे धणरी रुखाली थानूं करणी पड़सी । ताहराँ पाबूजी बोल कियो । कही—थाँरे काम पड़ियाँ म्हे जूती पण पहराँ नहीं । ओ बोल कर घोड़ी लीवी ।

तठे आ वात जींदराव साँभली जू चारणी घोड़ी पाबूजीनूं दीवी । ताहराँ घणी रीस करी । देवलजीरो धण ले जावणनूं घणी कोसीस करै पण पाबूजी थकाँ जोर काँई चालै नहीं ।

तठे ऊमरकोटमें सोढा राज करै । इयाँरे अेक राजकँवरी । कँवरी पाबूजीरो घणो वखाण साँभलियो । ताहराँ विचारी—वर

---

१ सुन्दर । २ देव-वंशीय ।

मिलै तो पाबूजी जिसो। ताहराँ कँवरी आपरी माँने कही—मने परणावो तो पाबूजीनूं हीज। इये आपरे माँटीनूं कही। ताहराँ सोढे आपरा आदमी सगाई करणनूं मेल्हिया। सू अै पाबूजी कने आया। ताहराँ पाबूजी कही—मैं म्हारो माथो देवळजीरे धणरी रुखाळी खातर दियो छै सू कुण जाणे कद काम आऊँ। तेसूँ हूँ विवाह करूँ नहीं, थे कँवरीरो विवाह दूजी जायगाँ करो। तठे आदमी पाछा ऊमरकोट आया। समाचार सरब सोढेनूं कह्या। ताहराँ सोढी कह्यो—हूँ परणूँ तो पाबूजीनूं हीज। तठे सोढे आदमी भळे[1] मेजिया। आदमियाँ जायनै पाबूजीनूं हकीकत सरब कही अर सगाई करनै पाछा फिरिया।

पछे सोढाँ साहो लिख मेल्हियो। कही—जान कर वेगा आवज्यो। ताहराँ पाबूजी देवळजी पासे गया। कही—सोढी हठ पकड़्यो छै सू आज्ञा होय तो ऊमरकोट जाऊँ। ताहराँ देवळजी कही—राज, भलाँ ही पधारो. लारेसूं जींदराव धणनूं घेरसी तो काळमी आपनूं कहसी, तठे थे एक खिणरी पण देर मती करीज्यो। इण भाँतसूँ आज्ञा लेयनै पाबूजी फिरिया अर जानरी तयारी करी। पछे जान चढ़ी सू ऊमरकोट दिन दोय में जाय पूगी। सोढाँ घणी भगत कीवी अर भली भाँतसूँ विवाह कियो। वींद अर वींदणी चँवरीमें बैठा। फेरा हुवण लगा। इतरामें पाबूजीरी घोड़ी काळमी हींस मार उठी, सू पाबूजी तो झट हथलेवो छोडनै चँवरी माँहे ऊभा हुवा अर तुरन्त काळमीरी पीठ आया।

---

१ फिर।

तठे सोढाँ कहीं—राज, म्हाँमें चूक किसी सू इण भाँतसूँ हालिया।
तठे पाबूजी बोलिया। कही—राज, चूक कांई नहीं, पण म्हाँ बोल दियो छै, आगे आ घोड़ी चारणाँ पासे हंती सू जींदराव खीची माँगी पण चारणां नै दीवी अर घणाँ सरदाराँ माँगी पण नै दीवी, पछे मनै दीवी अर कही—राज, घोड़ी थांनूँ देवाँ छाँ सु म्हाँरे कामरे खातर थाँनूँ माथो देणो पड़सी। जद मैं बोल कर घोड़ी चारणाँ पासे लीवी अर आज चारणाँ माथे संकट पड़ियो छै सू म्हे अबे ठहराँ नहीं। इतरी कहनै पाबूजी हालिया।

अठे पाबूजी ऊमरकोट परणणनूँ गया ताहराँ जींदराव खीची विचारी जू चारणाँसूँ बदलो लेवणरो मोको हणे[१] छै। ताहराँ जींदराव जायलसूँ निसरियो अर धाँधले आयो। देवलजीरो धण रोहीमें चरतो हंतो सू घेरियो अर लेनै हालिया। तठे गोरी देवलजी पासे जायनै पुकारियो। कही जू जींदराव खीची धण सरब लियाँ जावै छै। ताहराँ देवलजी पाबूजीनूं याद किया अर ऊमरकोट में कालमी हाँस मारी। ताहराँ पाबूजी ऊमरकोटसूँ हाल-अर[२] कोलू आया अर जींदराव ऊपर चढिया। जींदराव धण लेयनै चालियो जावै छै। इतरामें पाबूजी औचक आयनै पड़िया अर धण सरब घेरनै पाछा फिरिया। पण अेक बाछड़ो आयो नहीं जिणसूँ दूजो वार भले खीचियाँरे लारे गया। तठे खीचियाँ पाबूजीनूँ अेकला देखनै घेरिया। घमासाण माचियो। तठे बींदरे वेस माँहे ज पाबूजी काम आया। सोढी साथे सती हुई।

---

१ अभी। २ चलकर।

पाबूजी के विषय में अनेक गीत प्रसिद्ध हैं जिनमें से एकाध के कुछ अंश नीचे दिये जाते हैं—

(१) गीत पहलड़ो

नेह निज रीझरी बात चित्त ना धरी,
प्रेम गवरी-तणो नाँहि पायो।
राजकँवरी जिका चढी चँवरी रही,
आप भँवरी-तणी पीठ आयो ॥[1]

(२) गीत दूजो

(१)

प्रथम नेह भीनो, महा क्रोध भीनो पछे,
लाभ चँवरी समर झोक लागै।
राम-कँवरी वरी जेण वागे रसिक,
वरी घड़ कँवारी तेण वागे ॥[2]

१—गीत का अनुवाद—अपनी रीझ के स्नेह पर तनिक भी चित्त न दिया, गोरी (अपनी व्याही हुई स्त्री) का प्रेम भी नहीं पाया। राजकुमारी चौंरी (विवाह-मंडप) में चढ़ी रही और स्वयं काली घोड़ी (कालिमी) की पीठ पर सवार होकर चल पड़ा।

२—(पाबूजी) पहले तो प्रेम से सिंचित हुआ, बाद में महाक्रोध से। चौंरी (विवाह-मंडप) का लाभ समर के आक्रमणों में पाया। रसिकवरने जिस सुसज्जित वेष से राजकुमारी को वरा, उसी वेष से शत्रु की कुँवारी (अप्रतिहत) सेना का वरण किया (परास्त किया)।

(२)

हुवे मंगल़ धवल़ दमंगल़ वीर हक,
रंग तूठो कमध जंग रूठो ।
सघण वूठो कुसुम वोह जिण मोड़ सिर,
विखम उण मोड़ सिर लोह वूठो ॥

(३)

करण अखियात चढियो भलां काल़मी,
निबाहण वयण भुज बांधिया नेत ।
पँवाराँ सदन वर-माल़सूँ पूजियो,
खलाँ किरमाल़सूँ पूजियो खेत ॥

१—इधर चारों ओर धवल मंगल (विवाहसम्बन्धी मंगलगीत) हो रहे। उधर युद्ध में वीरों का कोलाहल और युद्ध सम्बन्धी मारू गीत हो रहे हैं। राठौड़ वीर पाबू इधर विवाहमंडप में प्रेम से उल्लसित हुआ, उधर युद्ध में क्रोध से क्षुब्ध हुआ। विवाह के समय जिस मुकुटशोभित सिर पर कुसुमों की सघन वर्षा हुई थी उसी मुकुट-शोभित शीश पर युद्ध में लोहे की विषम वर्षा हुई।

२—पाबूजी अपना यश प्रख्यात करने को श्रेष्ठ घोड़ी कालिमी पर चढ़े, वचन निबाहने के लिए, नेत्रों को लक्ष्योद्दिष्ट किये हुए और भुजाएँ सन्नद्ध किये हुए। जो मस्तक पँवारों के घर में वरमाला से पूजा गया वही रणक्षेत्र में शत्रुओं द्वारा तलवार से पूजा गया।

(४)

सूर वाहर चढे चारणाँ—सुरहरी,
इतै जस जितै गिरनार—आबू !
बिहँड खल़ खीचियाँ—तणा दल बिभाड़े,
पोढियो सेज रण—भोम पावू ![1]

१—चारणों की गायों की रक्षा के लिए शूरवीर पाबूजी रक्षार्थ चढ़े। उनका यश तब तक रहेगा, जब तक आबू और गिरनार पर्वत अटल रहेंगे। दुष्ट खीची-क्षत्रियों के दल को नष्ट-भ्रष्ट करके वीर पाबू रणभूमिरूपी शय्या पर सदा के लिए सो गया।